Home

अंक-81-82
सितं० -2016

पाती

(भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका)

सहयोग-₹40/-

'गाँव आ गँवई-संस्कृति' पर केन्द्रित विशेष अंक

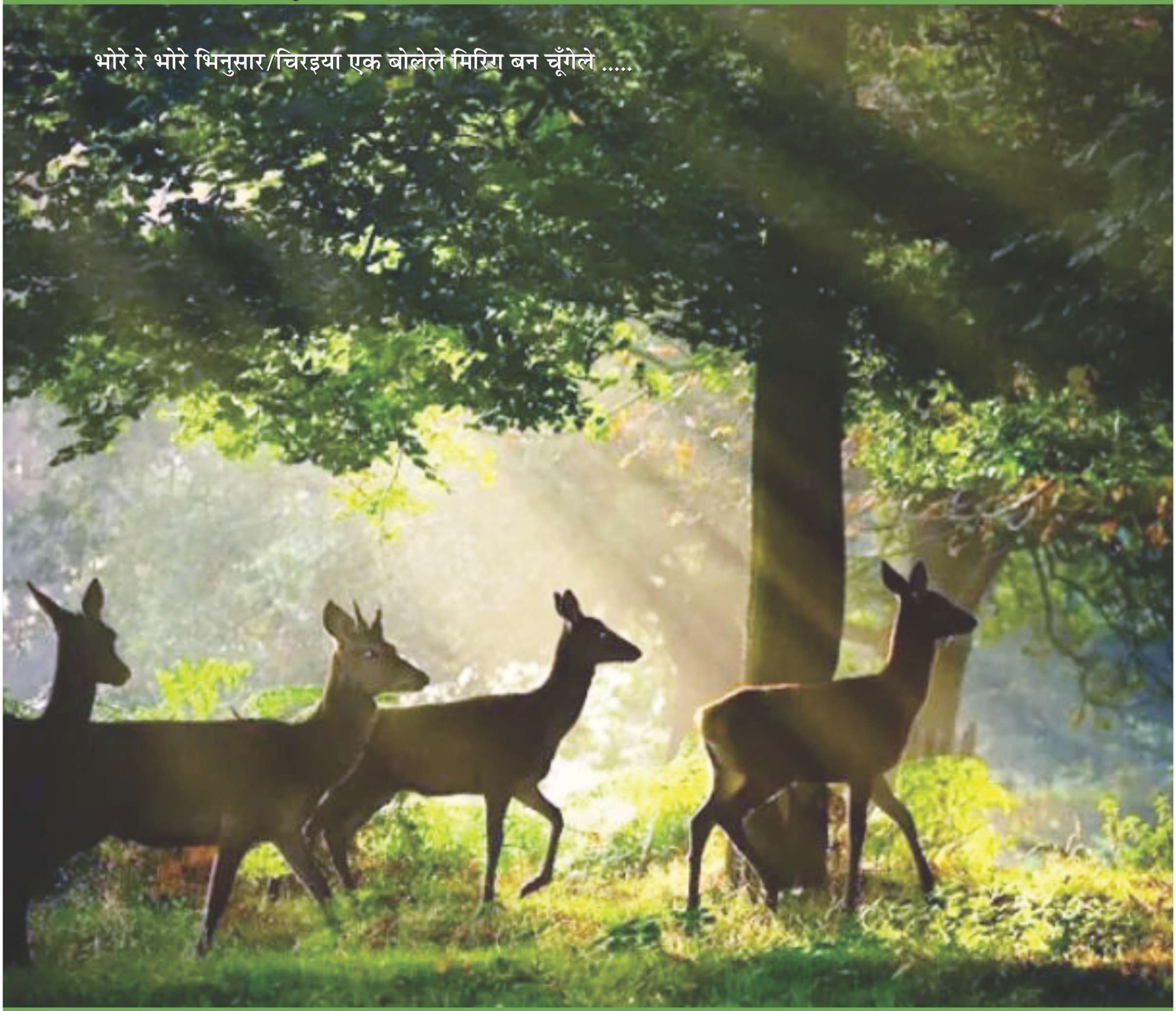

एह अंक में - व्यक्ति विशेष में श्री सतीश त्रिपाठी आ अर्चना रामासुन्दरम् पर विशेष । डा० प्रेमशीला शुक्ल, डा० प्रमोद तिवारी, आनंद संधिदूत के विमर्श । डा० आशारानी लाल, डा० रमाशंकर श्रीवास्तव, गंगाप्रसाद 'अरुण' के संस्मरण । डा० रामदेव शुक्ल, भगवती प्र० द्विवेदी, राजगुप्त के रिपोर्ताज । डा० नीरज सिंह, कृष्ण कुमार, शिवकुमार पाण्डेय आदि के लेख । डा० सुमन सिंह, शारदा पाण्डेय, अजय कुमार के कहनी-कथा का सँगे डा० अशोक द्विवेदी के आत्मकथा-अंश । जगन्नाथ, पी. चन्द्रविनोद, कमलेश राय, पाण्डेय कपिल, सौरभ पाण्डेय, शशि प्रेमदेव, मिथिलेश गहमरी, उमेश चतुर्वेदी 'कक्का', अशोक तिवारी, अक्षय कुमार पाण्डेय आदि के कविता । डा० प्रकाश उदय के कथक्कड़ी का साथे स्थायी स्तम्भ में लघुकथा, किताब समीक्षा आ गतिविधि।

कन्हैया पाण्डेय के कहानी संग्रह ''जिनिगी के जुआ'' के विमोचन करत मुख्य अतिथि आ विशिष्ट अतिथि गण

पाती

(भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका)

अंक: 81-82 (संयुक्तांक) | www.bhojpuripaati.com | (तिमाही) सितं0 2016

प्रबन्ध संपादक
प्रगत द्विवेदी

उप-संपादक
विष्णुदेव तिवारी

सह-संपादक
हीरा लाल 'हीरा', सान्त्वना,
सुशील कुमार तिवारी

कंपोजिग/ग्राफिक्स
शैलेश कुमार, सत्यप्रकाश

इन्टरनेट मीडिया सहयोगी
डा0 ओम प्रकाश सिंह

संपादक
डॉ0 अशोक द्विवेदी

संचालन, संपादन
अवैतनिक एवं अव्यावसायिक
e-mail:-ashok.dvivedipaati@gmail.com

संपादन-कार्यालय:-
टेगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया–277001 एवं
एफ–1118, आधार तल, चितरंजन पार्क, नई दिल्ली–19
मो0– 08004375093, 91–9919426249, 91–8373955162

एक अंक पर सहयोग-50/-
सालाना सहयोग-200/-
(डाक व्यय सहित)

(पत्रिका में प्रगट कइल विचार, लेखक लोग के हऽ ओसे पत्रिका परिवार के सहमति जरूरी नइखे)

एह अंक में....

'पाती' अंक 81-82 (सित० 2016)

हमार पन्ना
- चलीं भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग / 3–4
- घेरि घेरि आवे सावन / 5–7

विमर्श
- धरम बहाल रहे / डा0 प्रेमशीला शुक्ल / 12–13
- गाँव अपना के कतना चीन्हेला / डा0 प्रमोद तिवारी / 14–15
- बदलाव में कुछ छूट रहल बा / आनन्द संधिदूत / 55–56

गाँव-जवार से
- व्यक्ति विशेष / श्री सतीश त्रिपाठी / 51–52

माटी के महक
- व्यक्ति विशेष / श्रीमती अर्चना रामासुन्दरम / 53–54

उपलब्धि
- विश्व भोजपुरी सम्मेलन / जगदीश नारायण उपाध्याय / 50

कविता/गीत/गजल
- पी0 चन्द्रविनोद / 8 • डा0 कमलेश राय / 9 • जगन्नाथ / 10
- अशोक द्विवेदी / 10 • शशि प्रेमदेव / 11 • मनोज भावुक / 11
- अक्षय कुमार पाण्डेय / 16 • अंचित / 17 • सौरभ पाण्डेय / 22
- मिथिलेश गहमरी / 27 • जयशंकर द्विवेदी / 19

संस्मरण
- गड़ही क तीर / डा0 आशारानी लाल / 18–19
- बगइचा में डोली / रमाशंकर श्रीवास्तव / 25–27
- बहुत इयाद आवेला गाँव / गंगा प्रसाद अरुण / 37–39

रिपोर्ताज
- गाँव में केतना गाँव / डा0 रामदेव शुक्ल / 62–68
- भँवर में नाव / भगवती प्रसाद द्विवेदी / 42–46
- गँउवाँ हेराइल हमार / राजगुप्त / 81–82

कहनी-कथा
- मउगा चच्चा / डा0 सुमन सिंह / 20–22
- ठेहुना क घाव / श्रीमती शारदा पाण्डेय / 28–31
- ककिया हमरा गाँव के / अजय कुमार / 40–41

हमार गाँव
- शहर बनत एगो गाँव / डा0 नीरज सिंह / 33–36
- हमार गाँव लहुरी दिल्ली / कृष्णकुमार / 47–49
- कुंड वाला 'दलछपरा' / शिवकुमार पाण्डेय / 54–58
- गाँव तब आ अब / शिवजी पाण्डेय / 59–61
- पुरनका छूट रहल बा / सत्यप्रकाश / 69–71

कथक्कड़ी (लोककथा)
- बाहबाही में दाढ़ी / प्रकाश उदय / 23–24

समय के व्यंग
- बात के बतंगड़ / डा0 ओमप्रकाश सिंह / 100

कविता/गीत/गजल
- उमेश चतुर्वेदी 'कक्का' / 36 • अशोक कुमार तिवारी / 73–76
- कन्हैया पाण्डेय / 77 • उमेश कुमार पाठक / 78–79 • गायत्री सहाय / 79
- पाण्डेय कपिल / 80 • कमल प्रसाद सिंह / 80 • सूर्यदेव पाठक / 99
- रामेश्वर सिन्हा 'पीयूष' / 99

आत्मकथा
- जीवन समर में गाँव / डा0 अशोक द्विवेदी / 83–98

लघुकथा
- बेटा के भविष्य / जनार्दन सिंह / 32 • मियाँ के जूती / विनोद द्विवेदी / 68

किताब-चर्चा/
- कठकरेजी काल में : 'खरकत जमीन.... / भगवती प्रसाद द्विवेदी / 101–102

समीक्षा
- हास्य व्यंग के सधल कविताई: 'सब ठीक ठाक हौ' / डा0 सान्त्वना / 102–103

गतिविधि/समाचार
- पाती 'अक्षर–सम्मान' समारोह आ विश्व भोज0 सम्मेलन बलिया इकाई के अधिवेशन / हीरालाल 'हीरा' / 103–104

29/09/2026, 16:56 Paati-81 (September 2016)

चलीं भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग !

ए इ यात्रा-वृत्तान्त से चिहुँकला क बात नइखे। दरअसल बहुत समय से हम पिटल-पिटावल लीक पर चलत पिसत उबियाइ गइल रहनी हँ। एही से, एह बेर संपादकी के ढंग-ढर्रा बदले आ लीखि बदले के बिचार आइल हा। हालहीं पंद्रह अगस्त बीतल हा, हफ्ता भर "जय हिन्द" आ "जय हो" के उदघोष कइला आ आजादी के महानायकन के सुमिरन कइला का बाद हम ए बेरी के संपादकीय के बिषय बदल दिहनी हा। मुम्बई से बाबा भोलेनाथ क दरस-परस क, के लवटला के बाद मनवा अबहियों बैरागी-भाव में डँउड़ियाइ रहल बा। मन त मने नू हउ, एकरा से ढेर बरिआई कइल ठीक नइखे। त चलीं ए बेरी रउरो सभ के, बाबा का पवित्र स्थान से घुमा लियाईं।

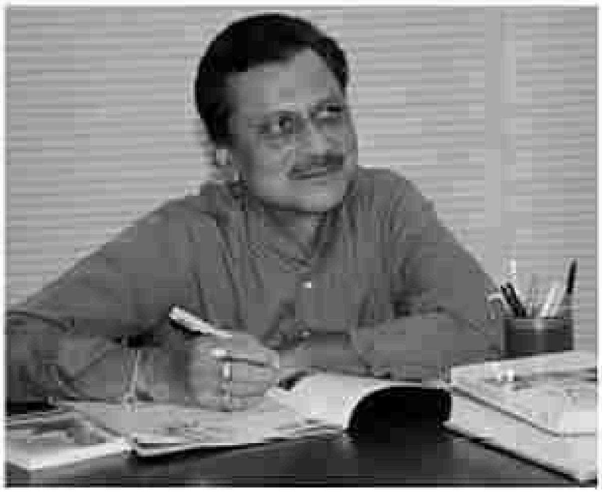

काल्हु भोरे क निकलल रात एक बजे घरे पहुँचनी। ए साल के सावन में बलिया बनारस ढेर इयाद आइल बाकि महाराष्ट्र में भीमा शंकर ज्योतिलिंग के दरस परस खातिर कइल यात्रा अपना आप में अनूठा आ अविस्मरणीय रहल। पहाड़, झरना, वन से हरल प्रकृति के अनुपम सुघराई, उहाँ झिमिर झिमिर बरखा में। रहस्य रोमांच से भरल, हरियरी के ई निसर्ग सुघराई खाली देखल आ अनुभव कइल जा सकेला। घुमरियावत ऊँचाई वाली सड़कन से गुजरत, बादर का रेशम जाल में कुहा आ भाप लेखा धुआँ से तोपाइल गरब से छाती उतान कइले ऊँच परबत चोटियन के बोंगनुदा हमके बारंबार हैरत में डालत रहे। हम सोचत रहलीं कि आदिदेव महादेव के ढेर ज्योतिर्लिंग नदियन का आसपास, पहाड़न आ जंगलन का निसर्ग रूप वाला स्थाने पर काहें बा? चमक दमक, आ साज सज्जा से बिरत, एतना सरल, एतना मौलिक कि सादगी लजा जाय तवन देव हमनी के ई भोला बाबा हउवन। वन के बेलपत्तर, भाँग-धतूर ,मदार आ वनफूलन से सजे आ खुश होखे वाला अइसन उदार-निधार, अगड़धत्त, बउड़म देवता दुनिया में कहाँ मिलिहें? ई हमनियो का लोक में नू भेंटइहें काहें कि उनका चिता भसम रमावे वाला बैरागी रूप का पाछा छिपल सुन्दर,सत्य शिव (कल्यानकारी) रूप आदि काल से लोक मंगल क सिरिस्टि(सृष्टि) करत आइल बा। पुरान पोथियन में शिव क कतने खिस्सा कहनी बा। उनुका गिरहस्थियो के चरचा बा। उनका पूजा ,साधना क बिधि-परम्परा आ अभिषेक क पूरा ढंग बतावल बा, बाकि ए औढरदानी के अइसन प्रकृत-रूप कि बरखे -बूनी से जुड़ा जइहें, इनका स्वागत में बदरयो रूई का फाहा अस गलइचा आ कालीन बन जइहें स, बाकि जइसे उनका एहू से मतलब नइखे। अइसन गुनिया कि एकदम निछक्क निरगुनिया! पलियावे वाला बाड़न आ पाथर लिंग रूप में पुजात बाड़न। जहवाँ बिराजत बाड़न, ऊ वन जंगल आ दुर्गम पहाड़न वाला बीहड़ पथ बा। भीमाशंकर लिंग के-पहाड़, वन घोरियवले कइसे मिलित? इहाँ त्र्यम्बकेश्वरो लिंग नासिक का लगे बा। मुम्बई से गइलीं त अइसहीं पहाड़ के ऊँचाई लाँघत, वन क्षेत्र से जाए के परल। ओहू घरी बदरी आ कुहा से तोपाइल पहाड़न क अनगिन चोटी सवकलो से, ओहू बेरी भीजत-नहात दर्शन भइल रहे। उहीं सह्याद्रि पर्वत से निकलल गोदावरी नदी मिलली आ इहवाँ भीमा नदी। एहू बेर मुम्बइये से जात बानी।

हमके बुझला ड्राइवर टेढ़ रस्ता पर घुमा देले बा, दू-तीन गो पहाड़ लाँघ चुकल बानी, बाकिर बाबा बाड़न कि निगिचाये क नाँवे नइखन लेत। अभी सड़क क बोर्ड प टाँकल लउकल हा भीमाशंकर 92 किलोमीटर। टेढ़ मेढ़, ऊँच खाल पहाड़ सड़क, कहीं हाली त एकदम समकोने पर घूमल बा। हमनी क यू०पी०, बिहार रहित त एही सड़किया प हजारन गड़हा आ ऊबुक मिलित 'सावधानी हटल कि दुर्घटना घटल'। गनीमत बा कि ई महाराष्ट्र हवे। एही तरे पछिला साल हम ओंकारेश्वर (मध्य प्रदेश) गइल रहलीं त सड़कियो बरोबर आ चिकनाह मिलल रहे ।उहवाँ वन पहाड़ी भेंटाइल रहे, बाकी में ओतना ना, बाकि जब नर्मदा नदी तट आइल त ओंकार परबत मिलल। नदी का ओपार सटले ओंकारेश्वर आ एह

file:///media/om/Rathod/pdffiles/Paati-PDF/paati-com/Paati81-images/Paati81-01.htm 5/109

पार अमलेश्वर(ममलेश्वर)। नदी पर तीन गो बढ़िया मजबूत पुल पैदल आवे जाए खातिर। ओइसे नीचे नदियो में एह पार से ओ पार जाए खातिर पाँच कि दस रुपया में चटपट नाइ आ स्टीन बोट रहे। बगले में नर्मदा डैम रहे, ओ बेर का यात्रा क अलगे सुख सवाद भेंटाइल रहे। उहवाँ सरकारी इंतजाम बड़ा टंच रहे। नर्मदा के पानी, क्षिप्रा (शिप्रा) नदी में मिलावे खातिर मोट मोट पाइप बिछावे क काम रातो दिन चलत लउकल । अब त ऊ पूरो तियरा गइल आ कुंभो बीत गइल। बारह ज्योति लिंग में ओंकारेश्वर का अलावा ओइजा उज्जैन में महाकालेश्वर बाड़न शिप्रा का पावन तट पर । इहाँ क शाक चौकंद इंतजाम में एम.पी.टूरिज्म लोगन का ठहरे खातिर बढ़ियां रिसार्ट बनवले बिया। ओंकार पर्वत अजुओ अपना कथा किंवदन्तियन का अनुसार नौलिक सुघराई लेले विराजमान बा। हम उहाँ रात भर रुकलो रहलीं। जान लीं कि ओघरी उहाँ से आवे क हमार मनवे ना करे। बाकिर हमरा इन्दौर लवटे के रहे, तबे दुसरा दिन उज्जयिनी का शिप्रा नदी आ महाकालेश्वर के दर्शन हो पावल ।

भीमाशंकर के एह डहर में अबे एक घंटा पहिले "नालेज वाट" नाँव से प्रसिद्ध ऊँच पहाड़ क ऊ कटान प्वाइंट गुजरल हा । नया जुग के लइका लइकिन खातिर एने क नैसर्गिक पर्वतीय सुघराई पिकनिक स्पाट क मजा देत बा। कतने जियतार जल प्रपात, झरना आ पहाड़ काट के ठहराव थल (स्पाट) साइत नयका मन का सेल्फी आ यादगार फोटो लेवे खातिर उकसावेला। इहवाँ सेल्फी लेवे वाला लोग खड़ा मिलल।

टप्पा टोइया ,नियरा–दूर बसल गाँव आ सुघ्घर खेती लउकत बा ऊंच पहाड़ का उपरो। हम अचंभित बानी एह कृषि के उपजाऊ उन्नत रूप के देखि के। बरखा का जल के रोक–बान्हि के रोपल धान लहलह करत बा। ऊखि, मकई(मक्का) अतना बियार कि अपना जवार क खेती मन परले लाजो लागत बा। हँसत बिहँसत छोट गाँवन के सानन्द आ पुरुसारथ साजे लउकत बा। सड़क का किनारा वाल भूंजि के बेचत कतने लइका उपरा पहड़वो प मिलल रहले हा से। अब फेर हमनी का तिसरको ऊंचाई प चढ़ जा रहल बानी जा। फेर ऊहे टेढ़ मेढ़ घुमावदार पातर सड़क, सामने से छोट गाड़ियन क रेला । महादेव का दर्शन में जोखिमो बहुत बा । तबो हजारन लोग जा रहल बा, ना जाने कतना सरधा बिसवास आ साध–सपना जोहियवले । हमहूँ ओही लोक में बानी। सँगे हमार सहचरी पत्नी आ छोट बेटी बिया। ओ लोगन क साध सपना, सरधा अलगा बा हमरे संग जोराइल ,नधाइल। पहाड़ के एह तिसरकी ऊंचाई का बाद फेर नीचे क ढलान। त बाबा भीमाशंकर नीचे बाड़न का बूझला ?

पहुँचला पर गाड़ी पार्किंग के अजब व्यवस्था नजर आइल। हमनी के अढ़ाई किलोमीटर पहिलहीं रोक दिहल गइल। एकोरा ऊबड़ खाबड़ ऊंच पहाड़ पर हजारन गाड़ियन का बीचे हमरो गाड़ी ठेल दिहल गइल। अब पैदले रूट मार्च। आगा एक किलोमीटर बाद दोसर पार्किंग रहे। उहाँ हजार गाड़ी ठुँसाइल लउकली से। हलांकि लोगन के ढोवे खातिर सात आठ गो मिनी बसो ठकचल जात लउकली से, बाकिर सैकड़न लोगन सँगे हमनियो का पैदले गइल नीक लागल। राह भर पहाड़ से झिर झिर झरत छोट छोट झरना आ वनवृक्ष। पहुँचला का बाद एक किलोमीटर के लमहर लाइन। आहू के एकदम नीचे उतरे के रहे। सड़क का दूनो बगल सैकड़न गो दोकान खाये पिये के ,बाल उसिनल आ भूंजल दूनो। केरा आ सेब। लाइने में चार घंटा अउर लाग जाई, लपटल लोगन में से एगो भाई बतवले कि नीचे उतरला प मंदिर का सहन में पांच सौ रुपया देके रसीद कटाईं आ वी.आइ.पी. लाइन में जाईं। ऊहो लाइन बरियार रहे। बाबा के गोहरावत लाइन में लाग के दर्शन भइला का बादे मन ठंढाइल।

एह कठिन, ना भुलाये जोग यात्रा के अउर आजु बाजु कतने अकथ कहानी बा । सोचीं त बहुत कुछ, ना सोचीं त कुछ ना ! एगो ईहो कि जात खा आ लवटत खा के अलगा अलगा अनुभव में सराहे जोग नागरिकता देखे के मिलल। कतने जगहा गाड़ियन क जाम पुलिस ना, एने क भलमानुस लोग छोड़ावत लउकल। रात एक दस बजे ,का बाद जब हमनी का जाम में फँसल रहनीं जा, त उहाँ के मलिक वालंटियर बन के जाम छोड़वलस। आगा त पुणे वाली शानदार एक्सप्रेस वे मिल गइल आ हमनी का थाकल मानल, बाकि तृप्त मन घरे पहुँचलीं जा। ••

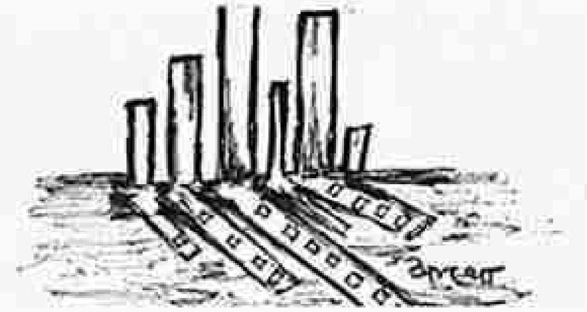

'घेरि घेरि आवे सावन के बदरिया ना...!'

घाम आ गर्मी से जरत खेत–मैदान आ पहाड़न के आत्मा जुड़वावे वाली बरखा, शुरू होते देह में जान आ जाला। हवा एगो मनभावन सोन्ह गंध से भर उठेले। गाँव के उघार लागत खेत–बधार बरखा के झिर–झिर करत फुहार से रसे–रसे जुड़ाये लागेला। उमड़त–घुमड़त बदरन से झर–झर झरत जलबुनियन का बीचे, रहि–रहि के कड़कड़ात बिजुरी जिउ डेरवाइ देले। पावस के बरखा देह में फुरहुरी जगावत, सीतलता त भरबे करेले, सुतल प्रकृति के जइसे नींन से जगा देले। अकास में कजराह मेघ दउरे शुरू करेलन सड़ त, बरखा का बाद, बहत पानी के कल–कल सुर में सुर मिलावत दादुर, झींगुर, पपिहा आ मेढक बहरियाइ जालन सड़। वन–झाड़ी के लुकाइल मोर पाँख फहराइ के नाच उठेलन सड़। सावन से भादो ले बरसे वाली बरखा, बोवे, रोपे आ सोहे वाला कृषि–लोक के उल्लास, उमंग में बोरत, प्रेम–विरह के सहजानुभूति वाला लोकराग के गीतन के लय–धुन से लैस करेला। रस–रंग से रातल कजरी एही घरी गवाले। एह गीत के गति आ लय के एगो अलगे चटक रंग आ स्वाद होला। ननद–भउजाई के जोड़ी जब धान के रोपनी खातिर घर से निकले त लोक–सुर उभरेला... 'घरवा से निकलेली ननदी–भउजिया / कटीली दूनू जोड़ी अरे साँवर–गोरिया!'

'कजरी' अइसे त बरखा–बहार के पर्याय मानल जाले, बाकि कतने जगह ई तिहुवार आ उत्सव लेखा मनावल जाले। ओसारा–दलान आ दुअरा पेड़ का डाढ़ि पर झुलना हिंडोला परि जाला। कुँवारि त कुँवारि, अहिवाती मेहरारुओ झुलुवा झूलि–गाइ के सउँसे वातावरन के रस–राग से भर देली सन। एह में रहि–रहि कुहुकत–पिहिकत चिरइन के बोली जइसे ए राग में नया सुर भरत लउकेला। टहकार आवाज में गवात 'कजरी' के बाते कुछ अउर बा–

> 'कइसे खेले जइबू सावन में कजरिया
> बदरिया घेरि आई ननदी!
> घटा घेरले बा घनघोर, बिजुरी चमके चारू ओर
> ननदी रिमझिम–रिमझिम बरसेले बदरिया
> बदरिया घेरि आई ननदी!'

मिर्जापुर, बनारस में त पहिले कजरी के खेल, मेला आ गवनई के दंगल होत रहे। दादरा आ 'कहरवा' के ताल जहाँ मिर्जापुरी 'कजरी' के आधार बने, त बनारसी कजरी 'कहरवा' देस प गवाव। पटना का ओर, 'हरि–हरि', 'ए हरी' आ 'ना' के टेक, पर 'कहरवा' के ठेका चले। कहल जाला कि विन्ध्य क्षेत्र का पहाड़न पर, भादव के बदरियो, कजरी उत्सव मनावे खातिर उमड़ि आवेली सड़ तबे नड़ कवनो लोक कवि का कंठ से ई फूटल होई–

> 'खेले मुतरिया झुलुवा, बिजुरी खींचे रसरी /
> घेरि–घेरि विन्ध्य के, बदरिया गाये कजरी!'

आदि काल से पावस ऋतु कवियन खातिर प्रिय वर्ण्य विषय रहला बा। बाल्मीकि, कालिदास, भवभूति, माघ, भारवि के संस्कृत–साहित्य में एक से एक अनुपम चित्र मिली, हिंदी साहित्य में रीतिकालीन कवियन के चित्रांकन अलगे बा। करिया बादरन से भरल बरखा ऋतु के 'कज्जल' कजराह महिना का कारन, 'कजरी' बने में कतना देर लागेला। जार्ज ग्रियर्सन अपना भाषा सर्वेक्षण में, एके 'कजली तीज' से जोड़ि के देखले बाकिर, 'लोक' आ लोकवासी एह कजरी पर गावे बजावे आ उत्सव मनावे लगले। कुछ लोग माता पार्वती के नाँव श्यामा, विन्ध्या आ कज्जला से जोड़ के, कज्जली देवी माने त कुछ किंवदन्ती ईहो सुने में आइल कि विन्ध्य के पराक्रमी राजा दनर्धराइ के सुन्नर आ रूपवती बेटी के नाँव कजली देवी रहे। लड़ाई में कजली के बाप आ पतियो मारल गइले। कजली पति का वियोग में, ढहल किला का खूह पर बइठि, जवन विथा–राग छेड़लस कि चुनचुन के हिया पघिल गइल, मेहरारुन का आँख से बहल लोर आँखी के काजर धोवे लागल। तबे से कजली के नाँव पर मेला लागे लागल। मिर्जापुर में त गंगा अस्नान का बाद लोहंदी महादेव के दर्शन होला फेरू 'कजरइया इनार', ओझला के पुल आ लोहंदी महादेव के मेला घूमल जाला। उहाँ कजरी उत्सव होला। लोकगीतन में, कजरी के टहकार धुन अइसन जोर पकड़लस कि भारतेन्दु हरिश्चन्द, बदरी नरायण 'प्रेमघन' जइसन साहित्यिक लोग एसे जुड़ल। बनारस से मिर्जापुर ले कजरी के कतने गावे वाला अखाड़ा बन गइल। शिवदास मालवीय, बाबूलाल, मतिराम, नजर मुहम्मद आ जहाँगीर के अखाड़ा, एह विधा के स्वतंत्र पहिचान बनावे में आपन भूमिका अदा कइलन सड़।

'कजरी' में तुर्रा आ कलंगी के जवन प्रचलन चलल, ऊ पहिरावा का अधार पर रहे। हिन्दू आ मुसलमान दूनों के रचनात्मक पहिचान देवे में 'कजरी–गायन' के बड़हन दायरा अपना आकर्षण में खिंचलस। जनानी आ मरदानी सुर, लय, ताल में गावल जाए वाली ए कजरी के जबर्दस्त लोकप्रियता मिलल। लमहर आलाप वाली शैली मर्दाना लोग के रहे आ छोट–छोट 'बहर' आ छंद में कम खिंचाव आ तेज प्रवाह वाली कजरी मेहरारुन में लोकप्रिय भइल। ढुनमुनिया शैली में छोट छन्द वाली कजरी ज्यादातर मेहरारुवे गावेली सन। बलमुआँ, साँवरिया, साँवर गोरिया, जिरवा झालरिया, अरे रामा, हरि–हरि, ए हरी आदि लटका, झटका त खैर कजरी के लोक–सुभाव वाला स्वर हइये हड़। खेती–बारी में, बोवे, घास गढ़े, सोहनी आ रोपनी में ई कजरी श्रम–गीत के रूप

धे लेले। इहाँ हास–परिहास, ठिठोली आ चुहलबाजी के सरस छिटिकी मारत लहरा में; दाम्पत्य, परिवार आ ननद–भउजाई के तकरार प्रमुख रहेला –

'नइहरे में रहली, बहुत सुख पवली
खेलत रहनी गोटी, आरे साँवरिया
आवते ससुरवा, सुनावे सासु गरिया
पोवइ के परे रोटी, आरे साँवरिया!'

एह सब का साथे प्रेम, विरह, गृहस्थी से जुड़ल आपुसी कटाक्ष भरल रस–बरखा से गीतन में वर्ण्य–विषय बदलत देरी ना लागे–

'ऊपरा साहब के बँगलवा
नीचे होले कजरी
देहियाँ क लामी देवरा रहि–रहि टोके
फेरू मारे नजरी!
x x x x
आइल सावन के प्यारी बहार पिया
पड़ेला फुहार पिया ना!
पड़े सावनी फुहार/लागे जिया ना हमार
भरे जियरा में रहि रहि गुबार पिया
पड़ेले फुहार पिया ना!
आवे सुधिया तोहार/लगे आँख ना हमार
सून सेजिया पऽ आवे ना करार पिया,
पड़ेले फुहार पिया ना!
x x x x
कइसे खेले जइबू सावन में कजरिया,
बदरिया घेरि आई ननदी!
तूं त चलेलू अकेलि/तहरा संग ना सहेलि
गुन्डा घेरि लिहें तोहके डहरिया
बदरिया घेरि आई ननदी!'

गृहस्थ जीवन में, पति–पत्नी के हास–परिहास, नोक–झोंक, ओरहना, प्रेम आ विरह के सरस व्यंजना 'कजरी' में चटकार रंग भरेला, ननद–भउजी के तकरार त अलगे बा–

'रुन–झुन खोलऽ ना केंवड़िया
हम बिदेसवा जइबे ना!
जो मोरे सँइया तूं जइबऽ बिदेसवा,
हम नइहरवा जइबे ना!
हमरा भइया के बोलवा दऽ,
हम नइहरवा जइबे ना!'

लोकराग के ए बिधा– 'कजरी' में भक्ति भावो क झलक लउकेला। मिर्जापुर विन्ध्याचली भवानी, का दरबार में, देवी के रिझावे वाली कजरी गवाले। गायकन के मंडली उहाँ रात भर दंगल करेले। माई चनन झुलना झूल रहल बाड़ी....

'मइया, झूलइ चनन झुलनवाँ
पवनवाँ चँवर–डोलावइ ना!
अमरित से पद धोवे बदरिया
रहि–रहि आरती उतारे बिजुरिया
अच्छत फूल लुटावइ ना।
पवनवाँ चँवर–डोलावइ ना!

राधा–कृष्ण के प्रसंग में त अनेकन कजरी प्रचलन में मिलेले। कान्हा के माध्यम बना के, लौकिक प्रेम–विरहानुभूति प्रगट करे के सामरथ एह कजरी के अउर जनमनरंजनकारी बना दिहलस–

'झुलना झूलें राधा–प्यारी/संग में कृष्न–मुरारी ना।
कथी क पलना, कथी क डोरी, कथी क गेंछिया ना
झुलना झूलें राधा प्यारी...
सोने क पलना, रेशम क डोरिया, चनन गेंछिया ना
झुलना झूलें....'
x x x x
हरि–हरि कृष्न बने मनिहारिन
पहिरि के सारी ए हरी!
सिर लेले डगरिया भारी
चुड़ियन रंग निराली ना...
x x x x
अरे रामा बने कन्हइया वैद/नंद के लाला ए हरी!
दवा बटोरि के भर–भर झोरी
घूमें ब्रज की खोरी–खोरी रामा
अरे रामा कोई सखी बीमार बिरज के बाला ए हरी!
x x x x
कान्हा बिनु ना बदरिया सोहात बा,
दिन–दिन भर रात बा ना!
नैनन निनियाँ न आवे/सुधिया निस दिन सतावे
ई चुभन नाहीं हमसे सहात बा
दिन–दिन भर रात बा ना!

लोकरंग में कालक्रम आ समय–संदर्भ का कारन कजरी के धुन लय ताल में नया प्रयोग का कारन परिवर्तनो लउकेला जइसे 'दादरा' ताल में पुरबी धुन। एकर प्रयोग महेन्दर मिसिर जी कइले रहले–

नदिया किनारे कान्हा बँसिया बजावे
हो पवनवाँ झुर–झुर बहेला ए राम.. हो पवनवाँ झुर–झुर..
बाट के बटोहिया तूंहूं लगावऽ मोर भइया
हो सनेसवा हमरो, ले ले जा ए राम.. हो सनेसवा हमरो..
चारु–ओरिया ताकी हम त घेरले बा बदरिया
हो चुनरिया मोरी भींजेला ए राम.. पवनवाँ झुर–झुर...

कजरी में चित्रात्मक उरेह तब देखे के मिलेले जब ओकरा में अरथवान अभिव्यक्ति होले। बरसात के उमड़त–घुमड़त बदरी, बेटी कहीं से घूम के घरे लवटल त ओकरा अँचरा में झालर–मोती देखि बाप शंकाकुल भइल। बाप के शंका निवारन करत बेटी के जवाब कजरिये में मिलल–

बाबा पूछे बतिया नयनवाँ भरि लोरवा
कि आहो बेटी, कहवाँ से पवलू झालर–मोतिया?
खेले गइलीं कजरी, कन्हइया धइलें अँचरी
अँचरिया में लागल हो झालर मोतिया...! अँचरिया में...

कजरी के परंपरा बहुत पुरान हऽ। एकर प्रमान तब मिलेला जब अंग्रेजी राज का समय स्वतंत्रता खातिर लोकमन के भावभूमि तइयार होत रहे। अंगरेजन के दमन चक्र चालू रहे। आजादी के नायकन के जेल आ काला पानी दियात रहे। मिर्जापुर आ बनारस का बीच बहे वाली गंगा छिटफुट नायकन के दमनचक्र क साखी बनली। लोकस्वर में गूँजे वाली पीर के अभिव्यक्ति एगो कजरी में मिलेला, जवन अपना समय–संदर्भ के लेके बहुत प्रसिद्ध भइल–

सबकर नइया जाले जहवाँ
काशी आ बिसेसर रामा,
अरे रामा, 'नागर'–नइया जाले
कालापनियाँ ए हरी!

सुराज–आन्दोलन का चेतना से जुड़ल कतने कजरी ओह समय लोकप्रिय भइली स, इन्हन में देश खातिर त्याग, समर्पण आ सरबस न्योछावर करे वाली भावन क अभिव्यक्ति रहे। औरतन में लोकप्रिय एगो 'कजरी' में पत्नी के भाव देखे जोग बा–

जो पिया बनिहें मोरा देसवा लागि जोगिया रामा
हमहूँ बनि जइबो तब जोगिनिया ए हरी!
देसवा क निनियाँ रामा, सोइबों अरु जगबों
सारी देहियाँ में रमइबों हम भभूतिया ए हरी!
जहवाँ–जहवाँ जइहें रामा, हमरे रावल–जोगिया रामा,
सथवें–सथवाँ डोलबि भरल झोरिया ए हरी!

लोक–स्वर के इ अद्भुत जागरन गीत, सुराज–चेतना के भास्वर रूप देखाइ रहल बा। त्याग, समर्पण आ बलिदान के दोसर रूप का होई जब अंतिम लाइन आवत–आवत, अइसन भाव प्रगट होत बा...

मुखिया–पियरिया रामा तनिको ना लगिहें राम
बजर बनाइबि आपन देहिया ए हरी!

सगरी सुख–सुविधा त्यागि के देश सेवा क ई ब्रत–संकल्प लियाइल होई। ओह समय गान्धी बाबा के चरखा, सुराजी आंदोलन क प्रतीक बनल रहे। एगो कजरी में गाँधी जी का चरखा के चेतना एह तरह से लउकत बा–

सावन–भदउवा, बरसतिया के दिनवाँ रामा,
बइठि के चरखा, घरवाँ कातबि ए हरी!
अपने त कातबि, सँगवाँ सखियन से कतवाइब रामा
गान्ही के हुकुमवाँ हमहूँ मानबि ए हरी!

कजरी के वर्ण्य–विषय लोकजीवन के बदलाव, रंग–राग, भजन–भाव सब काटे। अगर उल्लास–उमंग, प्रेम–विरह बा त देशकाल के पुकारो बा। आध्यात्मिक भावो बा। संसार के क्षणभंगुरता आ शरीर के नश्वरता क वर्णनो–बखान बा–

सउदा ले लऽ बाँकी रनियाँ
दुकनिया साते दिन के बा!
बा अतवार, सोमार आ मंगर
बुध, बियफे औ सुक–सनीचर, साते दिन के बा
दोकनिया साते दिन के बा।

अइसे गुन–गिहिथान भरल मेहरारू के भीतर ध्यान भरत कजरी के ई भाव त अद्भुत बा, जेम्मे पति अपना संगिनी के सिखावत बा–

काम–क्रोध के काटे बदे/कटारी बनतू गोइँयाँ तूँ
खा ले कपट पिया के/अइसन प्यारी बनतू गोइँयाँ तूँ!

एगो कजरी में, पत्नी के अंतिम इच्छा क, कतना मर्मस्पर्शी आ करुन भाव बा–कि मन विह्वल हो जाई—

हमरे मटिया क गति तूँ करायऽ पिया
तीरे पहुँचायऽ पिया ना!
तेल–फुलुल लगाय, कुसुमि चुनरी ओढ़ायऽ
अपने हथवा से सेनुरा पहिरायऽ पिया,
तीरे पहुँचायऽ पिया ना!
लकड़ी चनन क मँगायऽ, चिता हथवे से सजायऽ
अपने हथवा से अगिया धरायऽ पिया
तीरे पहुँचायऽ पिया ना!'

एह उदाहरन से लखार होत बा कि 'कजरी' लोकजीवन आ संस्कृति के जियतार पक्ष के उजागर करे वाला ऊ 'लोक–स्वर आ लोकराग' हऽ, जेकर बहुआयामी रूप–रंग, लय–विधान विस्तार आ गहराई बा। जीवन के प्रकृति आ मानवीय पक्ष से जोड़े वाला मरमस्पर्शी लोकराग के गीत–विधा हवे 'कजरी'। उत्तरी भारत में प्रचलित एह विधा के शास्त्रीयो गायन में अपनावल–सजावल गइल त, एही कारन कि ई अति लोकप्रिय रहे, दूर–दराज, गाँव–देहात, खेत–बधार, जंगल–पहाड़ नदी से जुड़ल, लोगन का हृदय के नगीच रहे। आजु जब तमाम तरह के नया–नया प्रयोग आ पच्छिमी अंधानुकरण गीत–गाना में हो रहल बा, त लोकराग के एह संपन्न आ लोकप्रिय परम्परा के उपेक्षा काहें? अपना लोक–संस्कृति आ लोक–स्वर के जोगावल आ संरक्षित कइल अपना 'मूल' के बचावल न कहाई। महान बा ऊ लोग, जे अपना 'मूल' के माने समझत बा आ भितरे–भीतर अपना मन के ओसे जोरि के रखले बा। अइसन लोगन के हमार प्रनाम! ••

अशोक द्विवेदी

पी. चन्द्रविनोद के दू गो गीत

[एक]

रसगर भाव सरग उधिआइल
मन पर छपलस धूर!
पछुआ बहल बेयरिए जुलुमी
बाँचल ठूँठ बबूर!

उखड़ल
रहल गड़ाइल जे
अँगना का बीचे बाँस।
सरधा से
माथा पर ढोअल
आजा के बिसवास।
बर पाकड़ के समय सिराइल
बिहँसल ताड़ खजूर!

अदरा में
बदरा घेरेला
दुअरा बाप उदास।
महतारी
लोरे में छानस
दलही भूँठी खास।
बबुआ दुल्हिन रिंकू पिंकी
जे नगिचा से दूर!

केकरा अब
मतलब का केकर
चूल्हा परल उपास।
केकर बेटी
रहल कुआँरी
केकर छूटल साँस।
लसगर लाग रहल जे लहसल
छन में भइल कपूर!

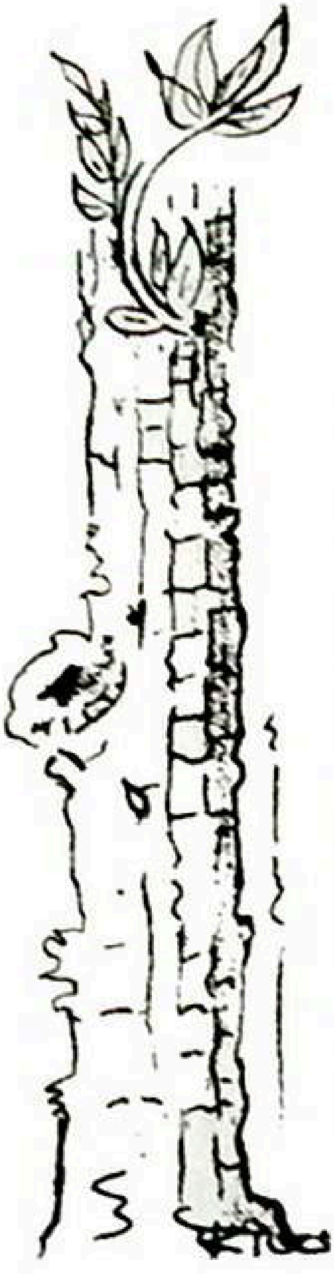

[दू]

जोहत बाट नयन भरि आवे
पावस झरे अँगनवाँ ना!

छलकल लोर सोन्हाइल धरती
कतहीं हरियर कतहीं परती
अचके कतहीं आग लगावे
बिजुरी हरे चएनवाँ ना!

नाचल मोर पसारे पाँखी
निर्मोही खोले ना आँखी
लागल धूप–छाँव फरिआवे
अस अनबूझ सपनवाँ ना!

मन के रूप भुलाइल दरपन
सरबस बा जेकरा से अरपन
सुधियन के सघोर सरिआवे
बैरी भइल गगनवाँ ना!

नटखट श्याम ओढ़ के बादर
लुक छिप करत न ढारे गागर
कइसन मोहपाश फइलावे
कउआइल मधुबनवाँ ना! ••

कमलेश राय के दू गो गीत

[एक]

मटिया के नयवा छपरवा न छन्हिया
रहिया रोकेले जहाँ पाँव रे,
रितिया पिरितिया कऽ बिखरल पँखुरिया
सूझे ना कहीं मोर गाँव रे!

टूटि-टूटि बिखरे सनेहिया के पलना
दिनवाँ जहरवा, रएनि भइली छलना
अँखियन लोरवा बहावे अमरइया
बिहँसे बबुरवा क छाँव रे!

हरदी क दिनवा, सगुनवा उदासल
सिरहेला रँगवा, फगुनवाँ पियासल
कदम के डरिया प कलपे कजरिया
थइके सवनवाँ क नाँव रे!

कगवा बोलेला, भोरे बोलिया कुबोलिया
अमवा क डरिया प सिसके कोइलिया
कुँइँना के ओरहन धरावेले गगरिया
छूटे पनपटवा क ठाँव रे!

सून भइल मन, दहके धरतिया
पसिजे न कबहूँ बजर भइली छतिया
गिरत बटोहिया, सम्हारे नाहिं बँहिया
आपन जोहेले अब दाँव रे!

रितिया-पिरितिया क बिखरल पँखुरिया
सूझे न कतहिं मोर गाँव रे!!

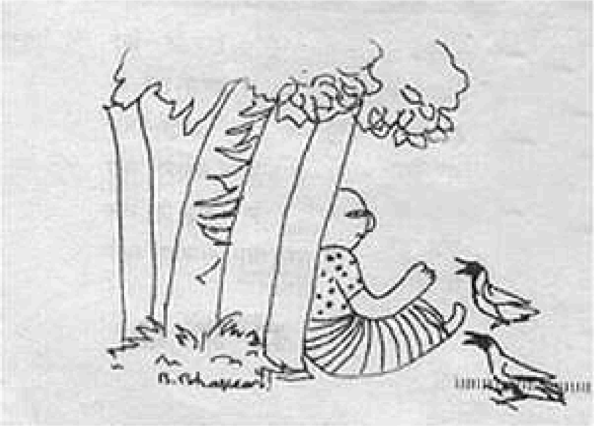

[दू]

सूखल कुआँ, तँवाइल पनघट
गगरी फूटि गइल!
रीत गइल पानी जिनिगी के
बदरी रूठि गइल!

कोइला होखल जात आज सोनामाटी
आगि-धुआँ कऽ अइसन कारोबार भइल
असरा जोहे जाय कहाँ अब बनपाखी
डार-पात सब दहकि-दहकि अंगार भइल
अँगना भइल अलाव, छाँह के बखरी टूटि गइल!

मन भीतर हँड़वार हारि के लोग इहाँ
हाथ बढ़ा के नाता के इजहार करे
ना जाने पसरल बा कइसन रोग इहाँ
ना केहू पर केहू अब एतबार करे
मिसिरी-बोली, हँसी-ठिठोली, सगरी छूटि गइल!

पहिले वाला आब कहाँ बा अँखियन में
मन में अपनापन के ऊ एहसास कहाँ?
बोके नागफनी घर घर में, गलियन में
जोहे जाता लोग, भला मधुमास कहाँ?
फागुन के अल्हड़पन अउर मसखरी लूटि गइल!

सूखल कुआँ, तँवाइल पनघट
गगरी फूटि गइल! ••

ग़ज़ल

जगन्नाथ

[एक]

इन्सानियत के भाव गिर गइल बाजार में
रस्ता भुला गइल अँजोर के, अन्हार में।

हमरा के जनाईं जनि, का नीक का जबून
झूठो के, के परी एह अउँजा-पथार में।

बाँचल ना पास कुछ अब, ना जिन्दगी ना मीत
सब कुछ दहाइ गइल दरद का दहार में।

बहुते बा बात सोच करे के जहान में
के सोच करो, का बा लिखाइल लिलार में।

लिखला से लिखाइल ना, अपने लिखा गइल
जब-जब हिया के पीर ना आइल सम्हार में।

[दू]

सूखल हिया के घाव अददियाह हो गइल
सुधियन से फेरु मन के बा पराह हो गइल।

हियरा में रखाइल जे गँठिया के बात-बात
अतना ई सोझ जिन्दगी अझुराह हो गइल।

हमरा नजर के दोस कि हऽ नेह के असर
उनुकर सुभाव सोझ, पुरचियाह हो गइल।

सउँसे शहर के लोग बा, हतास आ उदास
मौसम के मन तनी जे अनमनाह हो गइल।

हियरा के भेद आँखि से टोहे के तजी बान
दुनियाँ के हर निगाह बा छनकाह हो गइल। ••

अशोक द्विवेदी

[एक]

नेह-छोह रस-पागल बोली
उड़ल गाँव के हँसी-ठिठोली।

घर-घर मंगल बाँटे वाली
गइल कहाँ, चिरइन के टोली।

सुधियन में अँजिया उभरेली
जतने मयगर ओतने भोली।

सपना, साध, हुलासल ममता
उड़ल जीव, रहि गइल खटोली।

आपन आपन बाटे महता,
का माटी, का चन्नन रोली।

पँवरी नेह के दरिया उहे
जे हियरा के बान्हन खोली।

आपन, आन न चीन्हे रस्ता-
जे जाई, ओकरे सँग हो ली।

[दू]

दिहलीं न भाव जेके कबो, हम उछाह में
जाये के परल आखिर ओकरे पनाह में।

बहते-बहत बहाव में भेंटल इ मिरिग-रेत
घामा से जरत अइनी तरकुल क छाँह में।

मिल के ऊ जीत का मिलल जब उहे ना रहल
नीमन रहे ऊ दुश्मनी, हमरा निगाह में।

गँउवाँ से कुछ लगाव आ शहरो क कुछ खिंचाव
जिनिगी सिरा गइल बुला एही निबाह में।

इहवाँ त हँस के जे मिलल, धइनी बधाके हम
भलहीं न साथ दिहलस उ जिनिगी के राह में। ••

दूगो ग़ज़ल

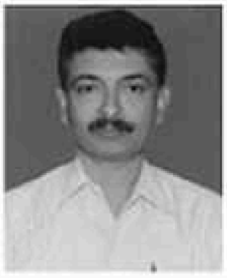

शशि प्रेमदेव

[एक]

के माटी से नेह लगाई? कोई खुरुपा-खाँची के?
सभे शहर क राह धरी तऽ, फलऽ, गाँव में बाँची के?

लैपटॉप, टेब्लेट, मोबाइल, इण्टरनेट का एह जुग में-
खेली 'ओका-बोका-तीन-तड़ोका... लवँगा-लाची' के?

एह बेरा तऽ केहुए ठाकुर-बाभन ले कमतर नइखे
रूप बना के मेहरारू कऽ, अब फागुन में नाची के?

नई नसल तऽ मोटर-बँगला-ओहदे में बा अझुराइल
जल, जंगल, जन का सवाल पर सोची अउर लवाची के?

ढेंगे-ढेंगे देखि-देखि के मलजिद्दू लड़िका लोचऽता-
सैंतालिस में देश छोड़ि के, आखिर गइल करांची के?

लाँचो बब्बर शेर खड़ा बा आ की पुतला माटी कऽ
जानल तऽ चाहत बा सभहीं, बाकिर छू के जाँची के?

[दू]

कि जइसे लोरि माटी, खेत-पैदावार कऽ रिश्ता!
कहाँ रहबऽ, खतम होई ना तोहसे प्यार कऽ रिश्ता!

बिला जाई महल-कोठी, खजाना खाक हो जाई
रही लेकिन सलामत फूल से गुलजार कऽ रिश्ता!

रही कुछऊ ना सुबहित--गीत, खुशबू, नेह--दुनिया में
खतम होते चकोरी-चान में, अभिसार कऽ रिश्ता!

'नमस्ते' तक सिमट के रहि गइल सम्बन्ध उनुका से
जवानी में रहल जेकरा से भर-अँकवार कऽ रिश्ता!

अनाड़ी बा अगर माँझी तऽ बेड़ा पार ना लागी
भले मजबूत होखे नाइ से पतवार कऽ रिश्ता!

कलम का धार पर बाजार हावी हो रहल बाटे
बुझाता टूटि जाई साँच से अखबार कऽ रिश्ता! ••

प्रवक्ता अंग्रेजी, कुँवर सिंह इ० का० बलिया

गजल

मनोज भावुक

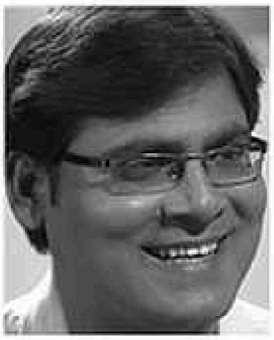

अगिये बा गोड़थानी हमरा, अगिये बा सिरहानी
आग के बिस्तर पर हम जाने कब से लेटल बानी

लोग समुंदर में हमके फेंकलस कि मछरी खाई
आ हम मुँह में मछरी लेके बाहर निकलल बानी

पहिले अपना चंचल मन के शांत करीं, फिर सोचीं
साफ तबे लउकेला जब, अस्थिर हो जाला पानी

चिउँटी से नीमन नैतिक शिक्षा ना देला केहू
बाकिर उ नैतिक शिक्षा के कबहूँ बात बखानी ?

जहवें छेद मिलेला, उहवें से ताके-झाँकेले
आवारा सूरज बाबा के हद्द देखीं मनमानी

जे आके जाये ना कबहूँ, ओकर नाम बुढ़ापा
जे जाके आवे ना कबहूँ ओकर नाम जवानी

दिल लेके दिल देले बाड़ू, मँगनी नइखू देले
तुहूँ पापड़ बेलले बाड़ू, हमहूँ बेलले बानी

शायर के बीबी बोले कि हम पागल के बीबी
अब जे-जे शायर होखे, ऊ बूझे एकर मानी। ••

विचार विमर्श

धरम जहाल रहे

प्रेमशीला शुक्ला

कवनो आदमी जो पाँच दस साल बाद अपना गाँवे जाये तऽ गाँव का सिवान पर पहुँचते, ओकरा आपन गाँव बदलल लागी। ई बदलाव के समझे खातिर आधुनिक अर्थशास्त्र आ समाज शास्त्र के सिद्धान्त नाकाफी होई। भारत में मोहनजोदड़ो का खोदाई में नगरीय सभ्यता के चीन्हा रहला के प्रचुर सामग्री मिलले बाकिर ई सर्वमान्य हऽ कि आज के पहचान गाँव ह. जवना के जाने-पहचाने खातिर विवेक सम्मत इतिहास-बोध आ भारतीय सांस्कृतिक परंपरा के स्पष्ट पहचान करे वाला मन चाहीं।

'सत्य कहहु लिखि कागद कोरे' कि हम मसि-कागद तऽ छुवले भरि कइनीं। जिनगी के मरम समझे वाली कूवत अपना में पैदा ना कऽ पवनी। एसे ना 'स्व' के चीन्हि पवलीं ना 'पर' के तऽ गाँव के चीन्हल का हँसी ठट्ठा बा? गोड़े में कादो लगला से परहेज करे वाला नजिगर लेप लगला के पहिचान कइसे कऽ पाई? एकरा खातिर तऽ खेत का भीतर जाये के परी, माटी-कादो से इयारी करे के परी, कान्हे कुदारी धरे के परी। ई सहूर तऽ बा ना। एसे मेड़े पर खड़ा होके जवन बुझाता तवने बोल रहल बानी. अधजल गगरी छलक रहल बा। एतना सन्तोष बा कि गगरिया भले अधजल होखे, छलकत तऽ जलवे बा-पवित्र, जीवनदायी जल।

बात बेटी से शुरू कइल जाये। बेटी होले सुरुज के किरिन। ओकरे जनमले घर उजियार हो जाला. बिना ओकरे धरम ना हो सकेला। ई बात बेटी के आपन बड़बोली ना हऽ। ऊ तऽ बाप से पुछलसि -'का बिनु ये बाबा बंस ना बाढ़ेला, का बिनु धरमो ना होय?' जवाब मिलल-'पूत बिनु ए बेटी बंस ना बाढ़ेला, धिया बिनु धरम ना होय।'

बेटी धरम के हेतु हई। धरम के माध्यम हऽ दान। एह से दुलारी बेटी दान में दिया जइहें। उनुके खातिर उनुका जोग वरेण्य वर खोजल जाई। जो ना मिली तब? बाबा का चैन ना मिली, नींद ना परी। राजा जनक एही मनःस्थिति में कहले 'वीरविहीन मही मैं जानी' आ एगो साधारण पिता कहले, 'तुहरही जोगे बेटी बर नाहीं मिलेला, अब बेटी रहऽ ना कुँआर।' राजा जनक के खोज पूरा भइल, बाकि अइसन सब पिता के ना होला। जोग मिले चाहे कुजोग बेटी बिआहल जइहें। पिता का केतना धरम होई, ई धरम जाने; बेटी आदमी से गाय बनि जइहें। जवने खूंटे बान्हि दिहल जाई, बन्हा जइहें। बेटी के एगो नाम मिल जाये, कवनो हरज नइखे। कहल जाये उनके - 'सुरुजापती'।

तऽ सुरुजापतियो का साथे कुछ अइसे भइल होई। इहो तनी बिलमे के परी। सुरुजापती का समय नारी स्वातंत्र्य के धून मचल बा। कविता-कहानी, रेडियो, टी.वी., अखबार सब एकर जयकार कऽ रहल बा। नया-नया कानून बना के सुरुजापतियन के सशक्त कइल जाता। अब ऊ अनबोलता ना रहिहें। बाकी का बोलें, कइसे बोलें, अपना परिवेश के कइसे स्वस्थ बनावें- ए पर ध्यान नइखे जात। मन के सँवरले से सब सँवरी- ई बात ए जमाना का कंठ का नीचे उतरत नइखे। नयका कानून का बल पर सुरुजापती अपना भाई से जायदाद में हिस्सा ले लीहें, दू कट्ठा पइहें, चाहे चार कट्ठा पइहें। ओपर खेती करइहें का? आ कि बसिहें? ना, ऊ आधा-पवना का भाव पर बेच के आपन राह देखिहें। उनुका भाई का एकर जन्मसिद्ध अधिकार बड़ले बा।

एह नयका जमाना में सबसे ढेर दुर्गति माटी के बा। पहिले के बुजुर्ग मानें कि माटी माने माई। माटी के बेचल माने माई के बेचल। अब माटी माने माटिओ से गइल गुजरल। शहर में डेढ़ बित्ता में घर बनवला का बात जवन आवा बित्ता 'बाउण्ड्री वाल' का भीतर बचऽता ओकरो माटी के तोप-ताप के 'सिमेंटेड' कवा दीहल जाता। पूछे केहू शहरतिअन से कि कहीं माटी खुलल ना रही, धरती पानी ना सोखी तऽ गरमी तपी ना, तऽ का तुहके ठण्डई मिली। गँउवो में लीपल-पुतल अँगना चीतल जमाना के चीज हो गइल, गावत करऽ- 'गाई के गोबरे अँगना लिपावऽस' आ जाके चुमा जा। 'बाउण्ड्री वाल' के बीमारी गाँवों में पहुँच रहल बा। नाम में तनी फरक बा। इहाँ ओके कहल जाता-हाता। सब आपन-आपन घेर रहल बा, गेट लगावऽ आ ओही में बन्द हो जा। खुलल सहन गायब होता। आवाजाही घटत जाता। पड़ोसी का घर में कुछु होखे, हमार मतलब का? जब ई सोच बनी तब एक घर पहुना अइले पर दूसरा घर से सजाव कहीं कइसे पहुँची? छोट-बड़ सबके इज्जत-आबरू कइसे बनल रही? सब उघार भइल जाता। सउँसे गाँव एही बीमारी का हद में बा। खेती-बारी में से बारी गायब हो गइल। कहाँ बा अन्हारी बारी, डीहीं बारी, अलाने बारी-फलाने बारी? सब साफ। कवन कइसन सरकारी परियोजना आइल रहल कि एकर जरूरत पड़ल? कवनो ना बाकी ई इंजू-बीजू आम वाणिक होई का? के बीनी महुआ? लगावे के होई तऽ यूकलिप्टस लागी, चाहे सीसो या सागौन। नकदी मिली ओसे। आम खाये के होई तऽ हाता में आम्रपाली लाग जाई। दुइये बरिस में फरे लागी। के सोचे नाती-पनाती-सनाती का बारे में? गइल नऽ चीन्हिअवा, ठोरिअवा, कोनहवा, खटहवा......। ना पेड़

लागी तऽ कटलका पेड़वन का जगह घर बनि जाई। गड़्वाँ का भीतर बड़ा सकिस्त बा। गाँव थकल जाता, मन सिकुड़त जाता। अब कहाँ रहिहें कोइलरि, कहाँ पड़िहें झुलुहा? कहाँ कइसे महकी मोजर, कइसे सताई महुवा? कवने खोंतवा में लुकइबू आहि रे बालम चिरई??........।

गाँव से शहर में पलायन से ज्यादा खतरनाक बा गाँव में शहरीकरण के प्रवृत्ति के आगमन। रहन–सहन, खान–पान, पहिरन–ओढ़न — हर जगह ए बात के देखल जा सकेला। जहाँ मेंडी, उहें लेगिंग्स उहे अधकचरी छुट्टी वाली। बहुवरि के नांव बुला गइल, साड़ी पार्टी वियर बनि गइल। बाप–भाई आ ससुर–भसुर आपन नजर नीचे करे लाग, बेटी–पतोही का फैशन के भूत धइले बा।

गाँव के खतरा एगो गाँवा से बा। ओ गाँव के हम नाम दिहल चाहब अर्बन विलेज। शहर में नव धनाढ्य एगो अइसन वर्ग के उदय हो रहल बा जवन खेत के खेत ना रहे दिहल चाहता, बीघा–बीस बीघा खेत के खरीद के फार्म हाउस में तब्दील कऽ दीहल चाहता, कट्ठा–दस कट्ठा खरीद के रिसार्ट बनावल चाहता आ गाँव के विज्ञापन के मसाला बनाके फन एण्ड इन्ज्वाय इन नेचुरल लाइट का माध्यम से वेडिंग प्वाइण्ट, हनीमून प्लेजर खातिर अति उच्च वर्ग के ललचावता। एकर परिणाम का होई, अन्दाज लगावल जा सकऽता। गाँव तऽ पहिलहीं से खाली बा। जेकरा तनिको बल–बेंवत बा शहर में घर बनवा के राजा हो गइल बा। गाँव का घर में चाहे ताला लटका दिहल बा चाहे बूढ़ माई–बाप के बइठा दिहल बा। कथा सुनावे वाला गाँवे बा, सुने वाला शहर में। जो एक्आध घर में सुनेवाला बटलो बा तऽ ऊ नाविता–सुजुकी का चक्कर में टी.वी. पर ओठंघ गइल बा। अब का ए गाँव के अर्बन विलेज में कन्वर्ट होखे खातिर छोड़ दिहल जाई? केहू बा जे राह रोकि के चुनौती दी? माटी माई के पूजे वाला खेतिहर का भीतर बहुत ताकत बा। आवाह में समहुत अबे होता। अपना के दाँव पर लगाके माटी के कमार पर मरे वाला खेतिहर वर्ग सब कूड़ा कचरा का साथ माटी में के रतन सहेजी। गाँव के सांस्कृतिक वैभव के कड़े जोगाड़ के अक्षुण राखी। हालांकि सामने अनेक तरह के कठिन चुनौती बा। खेती कइल आसान नइखे। समय से कबो बीज मिली तऽ खाद ना, पानी आ खाद मिली तऽ दवाई ना। सरकारी तंत्र के खूब अइसन फंसाई कि किसान की जान पर बनि आई। एह से ऊ कइसहूँ उबरी तऽ दईब कबो समय से पानी दीहें, कबो ना। खेत में काम करे वाला मजूरन के घटत संख्या एगो अलगे बड़का समस्या बा। अपना के असम पाके बहुत लोग आपन खेत बटाई पर दे देत रहे। अब बटाईदारो के सब परेशानी का बजह से बटाईदारो खेत लेवे के तइयार नइखे होत। हर तरफ से घिरल किसान चेहरा निराश हो जाता, आत्महत्या खातिर मजबूर हो जाता, तबो एमे दू राय नइखे कि इहे किसान गाँव के भौतिक आ सांस्कृतिक रूप से बचावे वाला एकलौता आधार बा।

सुखद बा कि आर्थिक रूप से गाँव निश्चित रूप से पहिले से बेहतर स्थिति में बा। केहू अब गोंयड़ा नइखे छानत, आमे के अँतुली के रोटी नइखे बनावत। शिक्षा के तरफ बढ़ल सम्मान गाँव के तस्वीर बदलले के संकेत देता। आसमान में उड़त पंछी की कतार अइसन स्कूल जात लइका–लइकी भविष्य के मजबूत नींव रखिहें। गाँव में दृश्य–अदृश्य अनेक तरह के बदलाव आइल बा, जवन इकहरा नइखे। सामाजिक बदलाव कबो इकहरा होखबो ना करेला। संश्लेषणात्मक बदलाव के रूप में एकर कई आयाम होले। परत–दर–परत एकरे रूप में कहीं न कहीं अंतर मिलेला आ तबो ई एक–दूसरे जुड़ल रहेले। समझे खातिर एगो छोट उदाहरण लिहल जा सकेला। शिक्षा का प्रसार आ सामाजिक बदलाव का चलते काली माई के मंदिर में अब सबके आवाजाही बा। बाकी आर्थिक सुदृढ़ता के चलते अब ऊ वर्ग काली माई के बनावल पीठा लेवे के तइयार नइखे जवन सदियन से लेत रहे। परिणाम में अब नया स्वस्थ परंपरा पड़ल कि पीठा चढ़ाई से खाई चाहे गाई के खिआई।

भीतरी स्तर पर हर तरह के परिवर्तन एतना आसानी से स्वस्थ तरीका से सम्भव नइखे। विकास के प्रक्रिया बहुत स्तर पर अइसन रूप ले लेता, जवन गाँव खातिर कल्याणकारी नइखे। पहिले गाँव में आपसी तालमेल पर आधारित जीवन शैली रहे। गाँव एगो स्वायत्त इकाई रहे। अब बहुत कुछ छिन्न–भिन्न हो गइल बा। तमाम कार्ड–लेवार रिस्ता–रिस्ता जेंव गइल बा, जवन व्यक्ति परिवार वर्ग जाति सबके रूप बिगाड़ रहल बा। मूल्यहीनता आ संवेदनहीनता के पाँव, गाँव तक पसरि गइल बा। तकनीक आ प्रविधि के दैत्य गाँव के सौन्दर्य के नष्ट करि रहल बा।

देखल जाय त इ दैत्य के छाया पूरी पृथ्वी पर बा। शहर आ देहात चाहे भारत आ अमेरिका के फरक दैत्य ना करी। नेट पर अगर वाशिंगटन मौजूद बा, दिल्ली मौजूद बा, त बरौली आ धुकरौली भी। पहिले सुनल जात रहे कि राजा आ राजा में लड़ाई होखे। फेर सुनावे लागल कि सभ्यता आ सभ्यता में लड़ाई हो रहल बा। बाकी आवत समय में लड़ाई आदमी आ मशीन में बा, सर्जना आ तकनीक में बा। ए लड़ाई में गँवई जीवन शैलिये काम आई। आदमी कोर्ट–कचहरी में गीता पर हाथ रखके भले झूठ बोल ले, तुलसी आ गंगा जल के हाथे में लेके ई कबो झूठ ना बोलि सकेला। ओकर ई स्वभाव जब तक कायम रही ओकर धरम बहाल रही। लाल–करिया का फेर में ना परि के धरम के इ उज्जर झंडा फहरात रहे, धरम बहाल रहे, काली माई से इहे विनती बा। ●●

■ 'स्वर्णिमा', सविता हनुमानगर, देवरिया,२७४००१

29/09/2026, 16:56 Paati-81 (September 2016)

गाँव अपना के कतना चीन्हेला ?

डा० प्रमोद कुमार तिवारी

गाँव के नाँव लेते लोग दु तीन गो सवाल पूछेले– का हेरा जाता? गाँव के चिन्हेलऽ, गाँव इयाद आवेला? गाँव खातिर का कइले बाड़ऽ? हम एह सवलिया के तनी पलट के पूछल चाहत बानी। हम गाँव के चिन्हेली कि ना, ई छोड़ीं, पहिले ई बताईं कि गँउवाँ अपना आप के केतना चिन्हइलस? ई बताईं कि गँउवाँ में गाँव केतना बाँचल बा? तनी ई बताईं, कि गाँव के अल्हाई के बचावेवाला लोग के गाँव केतना सम्मान देवेला? अइसन लोगन खातिर गाँव में केतना जगह बाँचल बा? हम गाँव समझ के जवना जगहि पऽ जात बानी अगर उहाँ हमरा के गाँव ना मिले तऽ हम का करीं? जवन अकेलापन आ कुफुत दूर करे खातिर हम महानगर से गाँव पहुँचत बानी अगर ओहिजा हमरा के उहे सारा देखे–सुने–झेले के मिले तऽ का करीं? रउआ चाहीं तऽ एह सवलिया के तनी बदल के पूछ लीं कि, गाँव माने का?

नदी–नार, माटी–खपरइल के मकान, ताल–पोखरा? गाँव माने का? गाँव माने खेत–खरिहान, बाग–बगइचा, गाय–गोरू,बैलवार? गाँव माने का? गाँव माने कीचड़, गरीबी, बेमारी, ओझइती, भुखमरी? गाँव माने का? गाँव माने अशिक्षा, मजबूरी, बड़कवा–छोटकवा, बाबाजी आ नान्हा जात? गाँव माने का? गाँव माने डीजे के गाना, कि रिमोट से लहँगा उठाना, गाँव माने ताड़ी गाँव माने नेता के पिछाड़ी? आखिर गाँव माने का?

ई कवन मजबूरी हऽ कि जब कबो गाँव के बात छाँटीं तऽ ओह लोग के निहोरा करए लागी जे गाँव छोड़ देले बा आ साल, पाँच साल पऽ एक बेर गाँव में दर्शन दे देवेला। केह लोग तऽ ई जाँचे खातिर गाँव आवेले कि जमीन बेचे जोग भाव मिलत बा कि ना, कि मन से तऽ ऊ गाँव में रहल चाहत बाड़न बाकिर मेहरारू आ बच्चा के खरचा आ मजबूरी में बेच के जा रहल बाड़े। जे ई देखावेले कि गाँव से उनुका केतना प्यार बा आ उनुका भीतर गाँव केतना भरल बा आ दु दिन रहते पचास गो समस्या गिनावे लागेले, हफ्ता बीते से पहिले दस तरह के आदत आ बीस तरह के रोग गिना के शहर के ओर पराइ चलेले। ई कवन मजबूरी हऽ कि जब ले केहू धन–बल से ना पहुँच में तनी दमदार ना हो जाला आ गाँव छोड़ के निकल ना जाला तब ले गाँव के ओकर इयाद ना आवेला।

गाँव खाली नदी ताल आ खेत खरिहान से ना बनेला, ऊ अपना भीतर बसेवाला लोग आ उनुका व्यवहार–विचार–संस्कार से बनेला। गाँव एगो लगाव के नाँव हऽ, साझेदारी के नाँव हऽ, साथे जिये–मरे आ संगे संगे जूझे के भावना के नाँव हऽ। तमाम तरह के फरक के बादो एकजुटता के नाम ह। प्रकृति से जुड़ाव के नाँव हऽ बाकिर जब गाँवही के लोग के भीतर से गाँव लगातार छिला रहल बा, जब एही लोग के माटी से घिन आ गोबर से बदबू आवे लागल बा त गाँव के बचावे आ चिन्हे खातिर दूर जाए के का जरूरत बा?

जब गाँवही में रहेवाला दु अच्छर पढ़ल लोग के लागत बा कि गाँव के लइकन के संगे खेलला से आ भोजपुरी में बतियवला से हमार बेटवा (बिटिया के तऽ बाते छोड़ दीं) खराब हो जाई तऽ अइसन गाँव के रउआ केतना दिन सम्हारब लेब। गोबरछत्ता जइसन उगल अंग्रेजी स्कूलन के लइका पढ़ला के बाद अपनहीं माई–बाबू के पिछड़ा कहे ना चूकिहन स जब कि ओही लोग के अपना भाषा आ संस्कृति पऽ भरोसा नइखे।

गाँव खाली सुविधा के नाँव ना हऽ ठीक ओइसहीं जइसे शहर में रहेवाला सब लोग विद्वान आ समझदार ना होला, सब लोग चकाचक जिनगी ना जियेला। दुनिया के सबसे बजबजात, गंदगी आ हर तरह के मजबूरी से भरल आबादी वाला मोहल्लाव गाँव में ना शहर में होखेले स।

ई कहे में संकोच ना होखे के चाहीं कि गाँव के आत्मविश्वास आ ओकरा रीढ़ के तूर दिहल गइल बा, बार–बार ई अहसास दिलावल गइल कि गाँव के मतलब पिछड़ा होला। गँवार जइसन ढेर शब्द बाड़े सऽ जवन गाँव के लोग के मजाक उड़ा रहल बाड़े स। गाँव आ शहर सुविधा आ जीवन शैली से बेसी एगो सोच के नाँव हऽ, एगो मानसिकता के नाँव हऽ। कि शहर ना गइलऽ त जिनगी बेकार बा। कि करजा के घर–गाड़ी आ शीशा के चमकत ऑफिस असली सुख हऽ।सुख के मतलब डांकल, पियाला, सत्ता के पीछे भागल, तनाव आ बीपी से लेके तमाम तरह के दबाव झेलत शहर के तऽ कबो इयादे ना रहल अब एह सुख के गाँवो लगातार भुला रहल बा।

तीज–त्योहार से लेके गरीबियो में उलक आ भाव से भरल जिनगी गुजारे वाला गाँव लगातार डिप्रेशन आ हीनताबोध के शिकार हो रहल बा। जाति, धर्म आ अमीर गरीब के खाई अपना क्रूरतम रूप में गाँव में जड़ जमा रहल बा। पहिलहूँ [illegible] आ दूसरा जाति के लोग थरिया धोवत रहे आ शीशा के गिलास में पानी पियत रहे, पहिलहूँ बहुत लोगन के खटिया प बइठे के अधिकार ना मिलल रहे बाकिर भीतरघात के अइसन नंगा नाच पहिले ना रहे। अब घर के भीतर बइठा के एक जइसन थरिया में जेवना त परोसल जा रहल बा बाकिर मन में जवन खटास भरल बा ऊ घटे के बजाय बढ़त जा रहल बा। ऊपरा सब कुछ ठीक बा, कवनो भेद नइखे बाकिर भीतर कड़वाहट के समुंदर लहरा रहल बा। गाँव के कल्पना

file:///media/om/Rathod/pdffiles/Paati-PDF/paati-com/Paati81-images/Paati81-01.htm 16/109

बिना समूह भाव आ साझा भाव के कइल मुश्किल बा. एही से गांव के दुश्मनन एह साझापन के तूरे में लागल बा। सामूहिकता, खटिया से लेके तोसक रजाई तक मांगे के। कई तरह के अंतर के बादो संगे गावे बजावे आ खेले कूदे के। गांव एह से खास हऽ कि ऊ अकेले ना चले, ऊ लोग के लेके चलेला। पूरा देश कई तरह के खांचा में बंट रहल बा, सब जानत बा कि एकरा पाछे राजनीति बा बाकिर गांव ई कह के अपना जिम्मेदारी से ना बांच सके कि बाहर वाला राजनीति कऽ के हमनी के खतम कर रहल बाड़े स। सौ सवाल के एक सवाल कि गांव का करत बा। ऊ आपसी लगाव, प्रकृति से नेह आ समूह के आत्माप के बचावे खातिर का कर रहल बा?

एकर मतलब ई नइखे कि समय के साथे गांव के ना बदले के चाहीं। ई संभव नइखे आ स्था माथिको नइखे। गांव के बदले के चाहीं, अंबेडकर गांव के नरक कहले रहले, बहुत लोगन खातिर आजुओ ऊ नरक बा आ अब ओह नरक से बाहर आइल समय के जरूरत बा बाकिर कवना कीमत पर। ओह नरक से निकले के बजाय ओकरा के अउर बढ़ावल जा रहल बा आ दुसरका ओर जवन कुछ गांव के नीमन चीज रहल ह ओहू से किनारा कइल जा रहल बा।

इयाद करीं कि गांव कइसे गांव बनल रहे। गांव में लड़ाई–झगड़ा, ईर्ष्या आ राजनीति के कवनो कमी कभियो नइखे रहल बाकिर एकरा साथे–साथे पर्व त्योहार में बहुत तरह से एकरा के तोड़ल जात रहे। दशहरा होली में सबके घरे जा के गोड़ लागल जरूरी रहे। जेकरा घरे से दुश्मनी होखे उहो परब के समय इंतजार करे कि देखीं फलनवा कब आवत बा। जमीन के केस लड़ल जात रहे आ संगे संगे यात्रा होखे, भाड़ा दियाए आ कई बेर कचहरी में एकही झोरी में से सतुआ निकाल के घोरा जाए।

आपस में झगरा रहे, देखनहरू सब के काटे से लेके उलटा कान भरे तक के घटना खूब होखे बाकिर इत कवनो एक आदमी के ना पूरा गांव के होत रहे। दामाद आ सार के जेतना घरवाला लोग गरियावे ओकरा से बेसी गांव के लोग चिढ़ावे। परिवार में बासन टकरात रहे बाकिर भाई लोग अपना बेटा के छोड़ के भाई के बेटा बेटी के दुलरावत रहे।

गांव एही साझेदारी के नींव हऽ. दुख कष्टक सब ओर बा, गांव में गरीबी कहीं जादा बा बाकिर एह सब के बीच सामूहिकता पऽ आंच ना आवे देवे के जज्बा के नींव गांव हऽ। दू गो लुग्गा, बा, दयादी के कटही भउजी से कालेज मेंठा के ले के झगरा भइल रहे, बाकिर दयादी में हीत अइले त नीमनकी साड़ी कटही भउजी के देवे के मजबूरी के नांव गांव हऽ। गांव अकेले ना चल सके, गांव खाली पइसा से ना चल सके जवना के कोशिश कइल जा रहल बा। पइसा से सुविधा कीनल जा सकत बा, भाव आ सम्मा न ना। पइसा से कुछ देर खातिर आराम (सुख ना) मिल जाई बाकिर समूह के साझेदारी आ प्रकृति से समभाव के पइसा के बल पऽ पावल मुश्किल बा। बाजार आ पूंजी के नियंता लोग हर चीज के पइसा से जोखे में लागल बा बाकिर एकरा भीतर के कुरूपता के अहसास लोगन के होखे लागल बा। जवना सामूहिकता के गांव के सबसे बड़ कमी बतावल जात रहल हऽ ऊ ओकर ताकत हऽ एकर अहसास विदेश के सुखी–व्यक्तिवादी मनोरोगियन के होखे लागल बा। मूल बात ई बा कि गांव एकरा के कब ले समझत बा आ अपना रूढ़ियन से पीछा छोड़ा के साझेदारी के ताकत के संजोवे खातिर कब खाड़ होत बा। साफ बा कि शहरी बाबू लोग के भरोसे गांव ना बांची, कवनो इमारत बाहरी रंग रोगन आ सुंदर फूल पत्तीस से ना टिके ऊ अपना नेंव के भरोसे खाड़ रहेले। गांव एह नेंव के मजबूत करे खातिर का कर रहल बा? ऊ अपना जड़ में पइसल घून, दीमक सब से बांचे खातिर का कर रहल बा? हितचिंतक के नांव पऽ बइठल दुश्मन से ऊ कइसे निपटत बा ई महत्वपूर्ण सवाल बा जवना के जवाब केहू अउर ना गांवे दिही आ एह जवाब पऽ पूरा दुनिया के नजर टिकल बा। ••

गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय,गांधीनगर

Home About पत्रिका आ किताब पुरस्कार अंजोरिया भोजपुरी लिंक सम्पर्क राव

भोजपुरिका (www.bhojpurika.com)

मनोरंजन फिल्म सरोकार देश आ समाज खबर साहित्य भाषा स्तम्भ ब्लॉग

अब गाँव ओइसन ना रहल

अक्षय कुमार पाण्डेय

जीयत बा जे लोग
अपना सफेद मोंछ के मलगुजारी पर
सुत गइल बा/पसार के धूप में ऐना

हम तोहरा मन के चउकठ पर
दीया जरावल चाहत बानीं मिन्टू !

उपजाऊ नइखे रह गइल ऊ
पुरुखन के ईमान के माटी
चिरई गावत रहली से बसन्त कवो
हरियर पतई काम आवत रहे बाउर दिनन में,
सबका भीतर रहे एगो सुरसुर सिरकन
सबका भीतर रहे एगो मीठ ताल,
अब गाँव ओइसन ना रहल मिन्टू !
ना रहल अब गाँव ओइसन
कि दिन के कुल दुख - दर्द भुला के
रात में हरखु ढोल बजइहें, चइता गइहें
अब गाँव ओइसन ना रहल मिन्टू !

ना रहल लोग
कबूतर के गुटरगूँ
चिउँटी के भाषा समझे वाला,
नोना लागल भीत अस
भसक गइल बा
साँच सनेह साहस सुघराई जिद जिजीविषा
उजास के खोंखर चादर से
ढँकले रहे कवो पूरा गाँव के
एगो इज्जतदार मुहावरा
अब गाँव ओइसन ना रहल मिन्टू !

बाजत बा बाजार/खून में
वायलिन बन के,
सड़क नियर सपाट
करिया हो गइल बा जिनिगी
ऊपर चढ़त जा रहल बा
आचरन के नंगापन
बदबू हो रहल बा हवा,
लूट ले गइलन सऽ लुटेरा --

फूल के खुशबू
फल के मिठास
रोशनी के आखिरी किश्त
बाँचल आग;
बाँचल का अब (?);
थूक रहल बा समय
हमनी के हद में महकत अन्हार,
अब गाँव ओइसन ना रहल मिन्टू !

ध्यान से सुनऽ,
हम तोहरे से पूछ रहल बानीं --
कब मरी
तोहरा खून में खाइ चुप्पी,
कब हँसी
तोहरा भीतर के रोवत नदी,
कब गढ़ी
तोहरा आँख में
थाकल पानी के उदास रंग,
हम तोहरे से पूछ रहल बानीं
कब गढ़ी
आखिर कब गढ़ी मिन्टू ! ••

रेवतीपुर (रंजीत मुहल्ला) गाजीपुर - २३२३२८ (उ०प्र०)

अंचित के चार गो कविता

(एक) चिरईं

अनाज के ललक में
चिरईं चल जाले सब जगह,
एक एक दाना खातिर
लगावेले सब जोग,
सब डर छोड़ देले अपना पोंसला पर.
हमार माई रोज भोरे
दुआरी पर डालेली अनाज
कि कौनो बच्चा भुखाइल ना बचे,
सब के सीखे के बा
उड़ान!

(दू) नींन

नींन खातिर रामासरे काका
सब जुगत भिड़ावत रहनी.
उनकरा रहे, नींन ना आवे के बीमारी.
ओसारा में पटाइल पूरा रात
कुछो ना कुछो बोलत रहनी भोर ले।

गाँव भर में तरह तरह के किस्सा फइलल रहे,
नऊआ कहस कि चाची चुड़ैल बाड़ी,
मिसिर बाबा, रामासरे काका के शमशान में भूत काटे के
खिस्सा, जे पूछत रहे ओकरा बतावत रहले.
बचवन सब सोचिहे सन जे
समसान में कोई तंत्र मन्त्र करत रहले,
कौनो मुर्दा उनकर नींद खा गइल।

रामासरे काका जबहूँ बकनी उलुल जुलुल
अकेलापन में
हमनी दू चार संगी सुनत रहनी छुप छुप के.
हमेसा एक्के जगह फंस जात रहनी जहाँ का
खेती के जमीन पर बेटवा डाल देलस एगो
रिचार्ज के दूकान, धरती मइया के का जवाब देब ?

(तीन) किस्सा

दादी के अंचरा में खूब खिस्सा रहे.
के केतना जमा कइलस ई जोड़े के कवन फायदा?
दादी भंडारा रहली,जे जेतना लूट सकल
लूट लेलस.
हमरा हिस्सा आइल उनकर सुनावल सब खिस्सा.

सहुली गाँव में इहो समय रहल कभियो
कि हमेसा झुक के चले वाली दादी, रहली एगो
पोखरा जाए वाली लइकी, जब दादी
देह सेहारते सेहारते, हमर बुखार में सुनावत रहली
हंसी छूट जात रहे,
जइसे डर जात रहे आदमी रतिया के जब्बो
दादी धामिन सांप के कहानी कहत रहली
कि कइसे खलिहान में उनकर सखी के पाँव गल गइल.
खिस्सा से खूब गमकत रहे दादी के अंचरा।

अपना मरे के बाद जेतना बार दादी अइली सपनो में,
कौनो न कौनो किस्सा लेके अइली अपना संगे.

हमनियों में सब जाना कहाँ रख पावल ई किस्सा सब अपना पास.
तनका दिन के बाद, "दादी" शब्दो जानी का बच्चा लोग ?

(चार) सरकार

जे बानी रउवे बानी.
हमनी के
सर के छत्ता, निच्चे के जमीन
हवा, पानी, खाना...
जब से अंजोरिया रात अउरी
अंजोरिया भोर के फर्क समझले बानी सन,
तब से बिना पढ़ले
ई सब कइसे सीख गइनी सन
रउरा समझवले बिना ई का बुझाई.

तनियो पहुँचत आवाज
के साथे साथे राउर आसिर्वादो-
त हमनी ला बैकुंठ हो जाइत।

रउआ, सुनेनी भगवान के अवतार बानी,
रउआ गरीब भक्त लोगिन के एक बार त दर्शन दीं! ••

अंचित द्वारा-तुषार कांत उपाध्याय
मेन रोड , बुद्धा कलोनी, पटना - ८००००१

संस्मरण

गड़ही क तीर

डा० आशारानी लाल

एतना बड़ शहर में आके अब हमनी के रहे–सहे के मौका भेंटाइल बा जेके खाली नगर नाहीं महानगर कहल जाला। एतना दूर तक के सफर पूरा करे में तऽ ई बार करिया रहिए नइखे गइल, पूरा के पूरा उज्जर भऽ गइल बा। पहिले जब हम छोट रहीं तब सुनले रहीं कि दिल्ली त देसा कऽ ओर बसल बा। दिल्ली के बारे में सोचली हमरा खातिर अँगूर खट्टा बा के तरे रहल मन में दिल्ली देखला क चाह तऽ भरपूर रहे, तऽ उहो हमरा जमाना में ना पूरा भइल, बाकी लइकन क राज आवत–आवत ई कुल अब आसान भऽ गइल बा।

हम एतना बड़ जगह दिल्ली में रहे तऽ लगली, तबो हमार मन इहाँ ना रहत रहे। ऊ तऽ अजहूँ भाग–भाग के ओह लइकाई के छोटहन गाँव सेंवरूपुर के छोटहन घर में चल जाइल करत रहे, जवन खपड़ा–नरिया से छवाइल घर रहे। ऊ घर एगो गड़ही कऽ तीरे बसल रहे। पढ़ले रहीं कि कवि रसखान क मन घेर–घेर भाग के जमुना तीर पर के बसल गोधन में चल जाइल करे, इहे हाल हमरो भऽ गइल रहल। केतनो एह मन के बान्हल चाहत रहीं ऊ धरइल ना करे।

हमरा गाँव के गड़हिए हमरा खातिर जमुना क तीर बनल, जहाँ हमार एगो माटी–गारा से बनल घर रहे। ऊ दिन तऽ हमरा कबो ना भुलाई कि जब ओह घर में पाती के सुतल रहत रहीं तब भोर होते, आँख मलत उठके हम अपना घरवा के पिछुअरवा ओटर के पहुँच जात रहीं जहाँ पियर–पियर पूफल पियर महुआ क पथार परल रहत रहे। हमरा ओइजा पहुँचे से पहिले टेंसिया काकी अपना बेटा–बेटी संगे डलिया, पुरुरई, खाँची आ दउरी लेके पहुँचल रहत रहीं, आ हाली–हाली डलिया कुरुई में महुआ बीन–बीन के अपना खेंइचीं, दउरी–दउरा में धरत जात रहीं लोग। हमहूँ उंहे जाके लागत रहीं ओह काकी के बिटिये संगे महुआ बीने। एही बीचे काकी जोर से चिल्ला के कहेंस कि 'ए बबुनी, महुअवा मुँह में मत डलिहऽ, एह में मद भरल रहेला खइला पर आदमी मात जाला। हमरा पूछला पर कि तूं काहें के उठावतारू, ऊ बतवली कि एके सुखा के हम धरब। जब बरसात के दिन में पानी परी तब हम एके कूट के लट्टा आ ठेकुआ बनाइब, तब तोहरो के खियाइब।

रोज रात में ऊ महुआ के पेंड़ एतना ढेर अपन महुआ नीचे गिरा देत रहे कि धरती तऽ कहीं लउकते ना रहे। एहिसे बिना हाथ–मुँह धोवले हम उठ रोज पहुँच जाइल करीं, जवना के इयाद आज इहाँ दिल्लीयो में अबो आवत रहता।

मैं एगो बात अउरी देखलीं कि, बियाह–शादी चाहे अउरी कवनो घरी में थोरे देर लें एइजा फूल बरसावल जाला, बाकी ई फूलवा पर के
निबिया क फेड़वा जवन अपन
पियरकी पतइया चउबिसो
घरी गिरल करे ओस तऽ कन
लउके। एतना पीयर नीन के
पतई फगुनहटा गिरल करे कि
धरती सदी में ढका जात रहे। नीम के जर–फूल बात त दूर बा, ऊ सुखलकी पतइयो कहीं अब देखे के नइखे मिलत। फगुनहटा बहते पतई आ चइत, बइसाख अइते पियर–पियर नीम के फर एतना बरखा करे कि सब देखते रह जात रहे। पतई तऽ बटोर के जरा देत रहल बाकी ओकरा फरवा के टेंसिया काकी ओसहीं बीन–बीन भर लेत रहीं, जइसे महुआ।

काकी कहेंस कि एह निबिया के फरवा के सूखा के ऊ धरिहन, फेरु तेल निकलवइहन, जवन गाय–गोरू के घाव पर दवाई के काम करी आ ओकर खरियो बनावल जाई। टेंसिया काकी हमके नीम के बारे में बतवले रहीं, कि एकरा छाल से, पतई से, दूना से बहुत दवाई के ई रहे कि उ दवाई क फेड़ हमरा घर कऽ दुअरवे पर लागल। गाँव में तऽ नीम के दतुअनो कइल जात रहे, एहीसे केहू के मंजन के जरूरत ना परत रहे।

काकी के दुअरवा पर गड़हिया के किनारे एगो बड़ा मोटहन बरगद के पेड़ रहे। जेकरा छाँह में दिनभर अलमिए नाहीं कुकुर, बकरी, गाय–गोरू, ग सबकर बड़की गरमी क दुपहरिया में मइल करत रहे। गरमी होला, जेके सब उदास दिन कहेला। इहाँ दिल्ली में तऽ सबकर खिरकी घाम चढ़ते बन्द हो जाला, काहें कि घर गरम हो जाई, बाकी में ई बात ना रहे। सब अपना दुअरा के ओसारा में चाहे, बरगा के छाँह में बइठ के गलचउर कइल करत रहे, जहाँ फुर–फुर बयार चलत रहत रहे। केहू के चिन्ता फिकिर ना सतावे कि बिजली बा कि ना। बयार खातिर कबो केहू के बिजली के मुँह ना देखे के परत रहे। बरगद के गोदा तऽ कुल कइगो छोट छोट लइका बीन–बीन के खातो रहे सऽ। ओकरा पतइया के दोना बना के ओमें लगवे थोरिका दूर पर जामुन क फेड़ रहे, ओइजा से जामुन बटोर के धरत रहनसन। जमुनिया बड़ आ चटक करिया फरत रहे, जेके फरेम जामुन लोग कहत रहे।

गर्मी के दिन में तऽ गाँव रहला के मौजे–मजा दुफछ अइसिए रहे। बगइचा में दउर–दउर के आम के टिकोरा बिनल, फेरु आम खाइल कवना लइका के भुलाई। इहाँ दिल्ली में तऽ बिना पइसा–रुपिया भेंटाइ न आम–जामुन। तरबूजा–खरबूजा तऽ दुअरवे पर बिकाए त ओहू खातिर पइसा क जरूरत ना परे। घर में से नानी डलिया में

file:///media/om/Rathod/pdffiles/Paati-PDF/paati-com/Paati81-images/Paati81-01.htm 20/109

मोट अनाज जइसे–साँवाँ, कोदो, जव, मटर जइसन अनाज लेके सब लइकन के ओही अनजा से तउलया के खरबूजा–तरबूजा देत रहीं। ई कुल दिल्ली में कहीं लउकबे ना करी, तब बताईं कि के माटी के घर उहो गड़ही तीरे के ना इयाद आई। के भुला जाई। चारा लगा के गड़हिए में से मोट–मोट गरई आ सिधरी मछरी मारल जात रहे।

अपना घरवा के ऊ अँगनवा तऽ आँखी क सोझा से हटबे ना करे। एक ओरी के ओसरवा में चउका रहे। उहें चुल्हिया जरत रहे आ खयका बनावल जात रहे। चउका में माई कबो–कबो चाउर धऽ देत रहे तऽ ई फरगुदिदया जाके खाये लागत रहिसन। एह घड़ी उन्हनी में माई कही कि ई–तऽ हमरा के उबिया के धऽ दिहले बाड़ी सऽ। खेत में एतना अनाज छितराइल बा उहाँ नइखी स जात आ खात। ई कुल रहँस तब नऽ ई–तऽ तीन–चार गोले खोंता कहीं–कहीं हमरा घरे लगा लेले बाड़ी स। अबरो कहीं नऽ जातारीस, नऽ बिलातारीस। हमके घऽ देलेबाड़ीस। होत भिनुसहरे, चीं–चीं– चीं–ची क के उदबेग देलीसन। का कहीं लोगवा कहेला कि घर में गौरइया के शुभ मानल जाल, बाकी हम का करीं। जने देख तेने उन्हनिए क राज बा।

हमरा कबो कबो माई के औजियइलका बतिया के इयाद परेला कि ई दिल्ली कइसन देस बा, जहाँ एवको गो गौरइया नइखी सऽ। घरन क शुभ कइसे होई। अब तऽ इहाँ मन तरस जाता देखे खातिर।

चिरई–चुरुंग, कुकुर–बिलार, गाय–गोरु के रहला से आदम रहेला, तबो उदास ना लागे। ई मनवा उन्हनिए से बतियावल करेला। एह दिल्ली में तऽ खूबे आदमी भरल बा, जेकरा बीचे रहलो पर उदास बानी। सभे अपने–अपने धुन में आ काम में डूबत–उतरात रहता। केहुये से बोलहूँ–बतियावे के मोका नइखे भेंटात। जइसे कहल जाला। सकेता में रहलो पर हमरा अइसन बूढ़ के उहे मछरिए अइसन हाल भऽ गइल बा। जब–जब संघरुपुर के ओह लरिकाइ के घर क ऊ रूप हमरा मन के कुरेदेला तब–तब अजहूँ हमार मनवा अपना ओही गड़हिया कऽ तीरे वाला घरवा दुअरवा भाग के चल जाला। तब ओही घड़ी हमके कहे के परेला कि ई मन "अजाँ चलि जात रही, ओहि गड़ही कऽ तीर।"••

२७६३ टी II, टाइप V,
एम, ब्लाक, नेताजी नगर, नई दिल्ली, २३

हेराइल आपन गाँव

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

इयाद आवत बा...
लरिकाई में
कोइला से पटरी चमरल फिर
लुखा के ओपर शीशी बोटल आज
इयाद आवत बा इस्कूल से लवटले पर
माई क, रगरि के हमार मुँह पोंछल।
ई दुलार/लाड औ प्यार
भला के भुलाई?
ऊ माइये रहे, जेकरे मीठ झिड़की बदे
हम माटी में सउना माई
बाबूजी हँसें, 'बबुआ बा भकुआइल
तनिका एकर रूप देखऽ!'

लुका-छिपी, आइस-पाइस
ती ती ती ती खेलत सतहिया सरिहाने में
पीठी गेना क मार झेलल
भला भुलाये जोग बा?
गाँवहे राखी क धुर दिन में
त सपना में लउके गोबरउर
सुहानी, ज्वन भेंटाय
बसियाइल ना कहाय!

बदले के त बहुते बदल गइल गाँव
भीतर से बाहर ले
घर से दुआर ले
खेत से खरिहान ले
मड़ई से मचान ले
कुच्छो त नइखे देखात
इहाँ तक कि
छान्ही प फरल लउकी तक।

सून-सून एकोरा पीपर का छाँह
जुड़ाये वाला
बगइचा में दुपहरिया बिताबे वाला
लोग कहाँ गयल?
गाँव में नन्हकु साव क डुगडुगी
सुनात त कुछ मनसायन होत....
झाल-मजीर ढोल क गोल
दिखाई नइखे पड़त अब

लगत बा नन्हकु साव...
अपने सँगहीं
गाँव क ऊ रौनको ले गइले। ••

सी-३९, सेक्टर-३ चिरंजीव विहार, गाजियाबाद

कथा–रेखाचित्र

मउगा चच्चा

डा0 सुमन सिंह

'ए आजी! कृष्णा चच्चा क का हाल ह हो?' बियाह के बाद पहिली बेर हम अपने गाँवे गइल रहलीं। कुल बचपन के संगी–साथी, गइया–बछिया, नोकर–चाकर, मास्टर –मुंशी जी, अड़ोस–पड़ोस सबके बारे में पूछ डललें रहलीं कि एकाएक हमके कृष्णा चच्चा क याद आइल।

'के मउगा ? ठीके न होई कुल खेत–बारी बेचाय गयल। घर–मकान दर–दयाद हड़प लिहलन अब त खइले बिना मरत होई। हम त ओह टोला जइबे ना करीला जे जानी।' आजी पाहुर गिन के नाउन के देत रहलीं बयना बांटे के।

'कृष्णा चच्चा के घरे भी त जाई न पाहुर, कि ना?' आजी जब कुल दयादी–पटीदारी गिन घलीं बाकिर कृष्णा चच्चा क नाम ना लिहलीं त हम पुछलीं।

'अब के ओ मउगा घरे से नेवता–हँकारी करी ए बचिया। तोहार बाबा–पापा खिसियाए लगेलन।' नाउन पाहुर क परात ढाँपत कहलीं।

'ऊ काहें ?' हमरे अचरज क ठेकाना ना रहे।

'अब आयल हऊ सादी के बाद पहिली बेर त आराम से हफ्ता–दस दिन रहा ए बाची। टोला–मुहल्ला घूम–फिर आवा धीरे –धीरे कुल पता चल जायी।' कह के नाउन चल गइलीं बाकिर हमार बेचैनी बढ़त चल गइल। दुआरे गइलीं बाबा के लग्गे त गाँव भर क कुल हाल समाचार डोखे लागल। हम डेराते–डेरात कृष्णा चच्चा के बारे में पुछ बैठलीं। चच्चा क नाम सुनते बाबा हंसे लगलन।

'का रे बछिया अब मउगे रह–गयल ह हाल –समाचार जाने बदे ?' बाबा के हंसी से हमार साहस बढ़ल।

'काहें उनके सब मउगा–मउगा कहेला हो बाबा। हमहन क त बचपने से देखत हईं जा कि ऊ बहुते नीक, सीधा–सादा अदिमी हउवन, सबकर मदद करे वाला।' हमार अचरज बेअसर रहे बाबा पर।

'ससुर ऊ पहिले आपन मदद करें तब दोसरे क करीहन। उनके मउगीन में बइठ के गलचउरा करे में मजा न आवत रहे। जब कुल घर–दुआर खेत–बारी लुटा–पटा गयल तब आँख खुलल। सारा ...एकदम से मुँहचोर न ह ससुरा।' बाबा क नफरत जस–जस बढ़े तस–तस कृष्णा चच्चा खातिर गारी निकले उनके मुँह से। हमके ई कुल सुन ना जात रहे। हम उँहा से उठ के फिर अँगना में आ गइलीं। एक –एक कर के गाँव क कुल चाची–ताई, फुआ –बहिन सब मिले –भेंटे आइल अउर चल गइल। दू दिन ले त बहुत मनसायन रहे फिर बाद में घर सूना लगे लागल। आजी एक्के बतिया फेंटे ओहिजा नीक से हईं न, पाहुन मान–जान करें लें न। सास –ससुर माने लें लोग न।' खात बनावत, सुतत–उठत उनकर इहे कुल सवाल क जवाब देत – देत हम उबजियाय गइल रहलीं बाकिर संकोचन ना कह पायीं कि काहें एक्के बतिया बार–बार फेंटत हऊ। आजियो के गाँव घुमले तीन दिन बीत गयल रहे ओहो संकोचन ना कह पावत रहली त हमहीं कहलीं – ए आजी ! जगदीश बो आजी क का हाल –चाल हो?'

'ठीके ह ए बाची, कहले रहलीं ह सखी हो बचिया आई त ओके लियाव के अइहा।' आजी क खुसी क ठेकान न रहे।

'त चला, हमरो मन करत ह उनसे मिले क।' हमहूं आजिए नियन खुस रहलीं।

'नाहीं ए बाची। पहिली बेर आयल हऊ हमरे इँहा कुल भूत कय दिहल त त तोहरे ससुर पालन के का जवाब देब जा हमहन के?' आजी क बात सुनके हमके हंसी आ गइल।

'काहें भूत करिहन। ऊ त तोहार सखी हईं न बचपन क। बतावा ऐसे बढ़िया केकर किस्मत होई कि बचपन से लेके बुढ़ापा तक सखी बने के मिले। एक्के गाँव में पैदा होके, एक्के गाँव में बियाह हो जाय एसे नीक बात का होई। कुल्ह जीवुइए क सुपिला। दुःख में, सुख में इहां तक कि केहू क कुचुराई बतियावे में सखी से ढेर के नीक संगी होई ए आजी।' आजी प हमरे हंसी–मजाक क ढेर असर ना पड़ल। ऊ भूत के डर से हमके घरे से बहरे ना निकले दें। इहाँ तक कि अपने दयादी –पाटीदार में भी ना जाए दें। जवन घर–आँगन बचपन में हंसे –खेले क ठिकाना रहे उहे अब बन्दीगृह नियन लागे लगल।

साँझ ले त दुआरे बइठ के सबके आवत–जात देखत, नमस्कार–प्रणाम करत बीत जाय बाकिर अन्हार होते–होत मन उदास हो जाय। गाँव में रात भर बिजली ना रहे अन्हारे कहुँतरे ढिबरी–लालटेन बार के खाना बने अउर खायल जाय। आठ बजत–बजत गाँव भर में सुत्ता पड़ जाय। अबहीं हम सोचबे करीं कि नींद आई कि ना, आजी लगें नाक बजावे। घर–दुआर सब सन्नाटा हो जाय त हमार मन अपने बचपन ओरी लौट जाय।

बचपन से लेके शादी से पहिले हर गर्मी क छुट्टी

हमहन क अपने गाँवे में बितार्इं जा। बचपन क सबले बड़ा आकर्षण रहे अरवँरी के झाड़ में काँटा बझावत बइर बिनना अउर कुल लइकिन के दुआरे बटोर के गोटी खेलल। ओ समय क संगी–साथी याद आवें अउर पता ना काहे कृष्णो चच्चा बहुत याद आवे लागल रहलन।

सब उनके आड़–अलोते मउगा कहे बाकिर हमहन बदे ऊ नेह–छोह से भरल चच्चा रहलन। हम जब कक्षा तीन में रहलीं जब उनके चीन्हे–जाने लगलीं।ओ समय उनकर उमर बीस–बाइस साल के नियरे रहल होई।कवनो कार–परोजन पड़े त आजी उनके बोला के नमकीन –मिठाई बनावे के अउर ऊ धउरल आवें।हमहन के दूरे से उनके दुनिया छानत,चाशनी बनावत अउर दुन्नू तरहत्थी से गोल–गोल लड्डू बान्हत देखीं जा।खाजा –टिकरी ऊ एतना बढ़ियाँ बनावें कि मुँह में डालते घुल जाय।उनके मिठाई बनावत हमहन के दूरे से बइठ के देखीं जा अउर ललचा–ललचा के मुँह से लार चुवावीं जा बाकिर आजी के डर से माँगे के हिम्मत ना पड़े। कृष्णा चच्चा हमहन क दीन–दशा पर मुस्किआएं अउर आजी क निहोरा करे लगें– 'अरे ई का न लइकवन के लड्डुवा ए बड़की माई! काहें लइकन क जीव जरावत हऊ तों रे बझिया, जो माँग जो लेके।' आजी हँ.. हँ ..हँ करत रह जाएँ अउर हमहन के मिठाई खात, चहकत, कूदत दुआरे भाग जाईं जा।

कृष्णा चच्चा लइकन के संगे लइका बन जायं। कब्बो केहू के संगे गोली खेले लगें, कब्बो केहू के परेता लेके मक्कटे–मक्कट करत पतंग उड़ावे लगें, कब्बो लइकिन के गोल में बइठ के गोटी खेले लगें। कृष्णा चच्चा सबकर छोट से लेके बड़ काम दउड़–दउड़ के निस्वार्थ भाव से करें। कब्बो जा के कवनो बहिन क चूड़ी–सेनुर ले आ दें त कवनो भउजाई क चप्पल–सैंडिल। गाँव भर में सबही के कृष्णा चच्चा से काम पड़त रहे अउर सबही क काम मनभाव से कइले कब घलें।

सबकर सेवा–टहल कइलहूँ के बादो जेकर जब मन करे उनके मउगा उपनाम से संबोधित करे लागे। कृष्णा चच्चा के मउगा कहल मर्द लोगन के ओरी से शुरू भयल बाद में मेहरारू आ ऊ लोग जिनकर काम निकल जाय उहो कहे।

हमहन क तब मउगा क मतलब ना समझ पावीं जा बाकिर जब बड़ भइनी जा अउर समझे –बूझे लगलीं जा त कृष्णा चच्चा के प्रति सबकर ई दुर्व्यवहार देख के बहुत तकलीफ पहुँचे।

कृष्णा चच्चा केहू क अनभल ना कइलन अउर केहू उनकर भला ना कइलस। सब उनकर बुराइये बतियावे। एतना बरीस बीत गइला के बाद उनके खातिर केहू के मन में मोह –माया ना रहे इ सोच –सोच के बाते काहें हमार करेजा करके लागल रहे। हम मन बना लेले रहलीं कि कृष्णा चच्चा से मिले जइबे करब। बिहान होत आजी से काली माई क दर्शन के बहाने जमकरिनिया आजी के संगे चल दिहलीं कृष्णा चच्चा के घर ओरी। काली माई क गोड़ लाग के जमकरिनिया आजी से जब हम कृष्णा चच्चा के घर ओरी चले के कहनी त पहिले त ऊ आजी के डर के मारे मना कय दिहली फिर बहुत मनावन के बाद मान गइलीं। रस्ता भर कृष्णा चच्चा के बारे में बात होत गयल अउर पता चलत गयल कि उनकर मेहरारू एकदम अवखज आइल रहे। खाना से लेके ओकर गुग्गा फींचे–कचारे क काम उहे करें लन। पहिलवें क मउगा रहलन अउर अब त एकदम्मे से मेहरी क गुलाम हो गयल हउवन। खेत –बारी बिला गयल त अब लइकन के दुआरे बइठा के ट्यूशन पढ़ावेलन ओही से खींच–तान के गुजारा होला। ई कुल सुन–सुन के हमरे मन में कृष्णा चच्चा से मिले क उतावली बहुत बढ़ गइल। पूरा गाँव जेकरे घरे –घरे जा के ऊ कार–परोजन सम्हरले रहलन। बियाह–सादी में भोज–भात क कुल जिम्मेदारी उठवले रहलन। मुफ्त में गाँव के लइकन के पढ़वले रहलन आखिर अइसन इंसान क तारीफ करे के बजाय सब उनकर बेइज्जती काहे करत ह? इहे कुल जाने खातिर मन व्याकुल होत जात रहे।

कृष्णा चच्चा क घर आ गयल रहे। हमके देखते ऊ चिहा के उठलन– 'अरे हमार बाची ! आवा –आवा सुनले रहलीं ह कि बाची आइल रहली ह बाकिर घर से निकले क छन भर क मौका ना लागल ह। आवा बइठा..बइठा।' हमके अँगना में मचिया दे के बइठवलन। हमके देख के चच्चा एतना खुश रहलन कि उनकर आँखी क कोर भीज गइल।

'अच्छा त अपने चाची के पंजरे बइठा हम अबहियें आवत हईं।' हमके चाची के कमरा में बइठा के ऊ सन्न से बहरे निकल गइलन। खइल–डिमलायल छरदीवारी से घिरल एकके गो कमरा रहे जवने में झीलगी खटिया पर चाची पड़ल रहलीं। हमरे भीतर घुसते ऊ सुतले–सुतल घूँघट काढ़ लिहलीं।

'तबियत ठीक ना ह का चाची, काहें एतरे पड़ल हईं ?' हमरे सवाल क जवाब चाची ओरी से ना आइल ना त ऊ घूँघट हटवलीं।

'ए चाची हम गाँवे क लइकी हईं बाकिर आपके कब्बो कलियो माई तर जात ना देखल हईं।काल्ह जायेके ह हमके ईहाँ से फिर ना जाने कब आइब आपलोगन से फिर भेंट–मुलाकात होई कि ना होई।' हमरे एतना कहते चाची धीरे से घूँघट हटा दिहलीं

अउर उनके देखते हमार साँस –परान टंगा गयल। कोटर में धंसल बड़ –बड़ आँख क बस पुतरी लउकत रहल। गाल–होंठ कुल धंस के कुरूप हो गयल रहे। कपार क आधे से ज्यादा बाल झड़ गयल रहे। गर्दन से लेके धड़ तक हमार नजर गईल त लगल कि एगो कंकाल के साड़ी ओढ़ा गयल ह। उनकर दसा देख के लगे कि इन ओहिजे रो देव। केहुतरे अपने के सम्हारत हम पुछलीं कि का हो गयल ह उनके त ऊ बतवलीं कि भीतरिया रोग ह। केहू कहेला थायराइड हो गयल ह, केहू कहेला किडनी में कवनो दिक्कत ह त केहू कहेला कि कैंसर हो गयल ह। बोलत–बतावत चाची हिचक–हिचक के रोवे लगलीं–

ए बाबी! हमरहीं पीछे कुल खेत–बारी बेचा गयल। नइहर –ससुरे सब मुंह फेर लेहलस आपके चच्चा से कहीला कि अब हमार इलाज जिन कराईं, छोड़ दिहीं भाग भरोसे बाकिर ना मानेलन। साड़ी –कपड़ा, ओढ़ना–बिछवना कुल उहे साफ करेलन। ए जी, मन करेला कि जहर–माहुर खा के मू जाईं। कवन सुख दिहलीं हम ए अदिमी के ...बियाह के अइले के साल भर बाद ई मेहरारू क सुख ना जनलन। हमरहीं पीछे फेफियायिल फिरेलन...दई हमार खोजियो नइखन करत।' चाची हिचक–हिचक के रोवे लगल रहलीं तब्बे चच्चा आ गइलन, प्लेट में पेठा अउर नमकीन सरिअवले।

'ला तू फिर आपन कथा –पुरान ले के बइठ गइलू। अरे एतना दिन प बाबी भेंटायल हईं , फिर पता न कब आवे क मौका लगी इनके। हाल–समाचार पूछे के त अपने दुख रोवे लगलू।अरे भाई तोहरे खातिर त हम हइये न हईं।' चच्चा चाची के पेठा क छोट टुकड़ा खियावत, पानी पिया के मुंह पोंछत, कहलन।

जब हम उहाँ से चले लगलीं त चाची के हाथ से खोंइछा देवा के असीसत घरे ले छोड़ अइलन।

जवने दिने गाँव से बिदा भइलीं तहिया सबके आगे कृष्णा चच्चा के ठाढ़ देखलीं। ई जानते हुए कि उनकर आइल हमरे बाबा के नापसंद हऽ तब्बो ऊ बस तक बैठावे अइलन। ••

अतिरिक्त प्रोफेसर (हिन्दी-विभाग), हरिश्चन्द्र पी. जी कालेज, वाराणसी-२२१००२

आपन गाँव-जवार के नाँवें छन्द

(दुर्मिल सवैया सगण X8)

सौरभ पाण्डेय

परतंत्र रहे तब देस भले, अब गीत सुराज क गावत बा
लगरे सुल्तान अँजोर बढ़ा, तबहूँ मन ओझ मचावत बा
दमदार रूमासुत पूत जहाँ तरुवो प बिकास रिगावत बा
अबले पुरवांचल छूटल बा, घर-गाँव क ढंग बतावत बा

घर बार बिलाइल जोत दहाइल गाँव-जवार उजार कहीं
सुख-चैन रहे जहवाँ निफ्फा, अब रोज इलाज-दुखार कहीं
लहलोट हुलास रहे कहियो अब आँखहिं लोर के धार कहीं
तुनु गाँव क हाल बयान करीं कि कपार प कील के मार कहीं

लइका हर गाँव के मातल बा, हर बातहिं मारि-फटान कहीं
खलला बतकूचन, गाल बजावल, रोज बवाल-गुमान कहीं
जहवाँ मुनि-संत समाज चलावलु, आजु उड़ान-पढ़ान कहीं
जिनिगी जस गोहुँ देंवात इहाँ, खर-मूसर-जाँत पिसान कहीं

जुटिके हमनीं क बिचार करीं कि समाज बिकास करी बढ़िया
कइसे पुरखाल सलामत हो, कइसे घर-गाँव भरी बढ़िया
कइसे खलिहान सजो निफ्फा, कइसे हर जोत फरी बढ़िया
लउके हर बालक जीतत बा, बिटिया लछमी सुघरी बढ़िया

खलिहान अनाज से बोझल हो, हर हाथ के काम मिले इहवाँ
मन में न मचान उठे फतही, अँगना-दुअरा न हिले इहवाँ
बरताव में लोग मुलायम हों, न सुभाव में डाह पिले इहवाँ
जब बोलत बोल झरे मुँह से जियरा बगियान खिले इहवाँ ••

एम-२/ए-१७, ए.डी.ए. कालोनी,
नैनी, इलाहाबाद - २११००८ (उप्र)

वाहवाही में दाढ़ी

प्रकाश उदय

('पाती' के एह नया स्तंभ 'कथक्कड़ी' के जरिए प्रकाश उदय हर अंक में आपन सुनल कवनो 'कहनी' सुनावे के सँकरले बाड़े। 'सुनल' ऊ ही सकेला कि समकर होखे, 'सुनावल' उनुकर आपन अगर होई त होई, ना होई त उहो उनुकर आपन ना होई। हो सकेला कि ऊ ओकर होखे, जेकरा से ऊ सुनले। अतना त तय बा कि ऊ अगर सुनवला.अस लिखे पढ़े आ रउरा अगर सुनला.अस पढ़े पाइब त जवन 'कहनी' बा, 'कथा', लिख.पढ़ लोगन के हिसाब से 'लोककथा', तवना के जहाँ तनी अधिका पढ़ें, रउरा तनी अधिका पाइब। त सुनल जाय 'कथक्कड़ी' के दुसरकी कड़ी में 'वाहवाही में दाढ़ी' – संपा.)

एगो मोल्वी साहेब रहन। मोल्वी साहेब मोहल्ला भर के बाल.बुतरुन के अटोर के बटोर के बइठावस पढ़ावस लिखावस खेलावस कुदावस आ बदला में जवने पावस तवने से आपन घर.परिवार चलावस, तवने से केहू के परले.हरले काने आवस।

बिधि के बान्हल बिधान कि सब दिन रहत न एक समान... त एक दिन के बात कि मोल्वी साहेब बेमार परि गइलें। हकीम साहेब कहले कि थोर.बहुत त दवा.दारू से राम होइहें, बहुत.बहुत राम होइहें त दुआ.इबादत से आ बहुतो से बहुत होइहें राम त आराम से, बिसराम से। त मोहल्ला भर कहल कि नेहे से धरम, मोल्वी साहेब सब काम छोड़ के कुछ दिन दवा, दारू करस, दुआ.इबादत करस, आराम करस, बिसराम करस।

मोल्वी साहेब गइलें दवा–दारू करे, दुआ, इबादत करे, आराम करे, बिसराम करे त बाल.बुतरू हरान. हलकान, उन्हनी के अटोराय.बटोराय के बान भर गइल रहे आ ओतने हलकान.हरान बाल.बुतरुन के महतारी.बाप, उन्हनी के अपना बाल.बुतरुअन के अटोरइला.बटोरइला के बान पर गइल रहे। त तले बाल.बुतरुन के अटोर के बटोर के बइठावे खातिर, पढ़ावे.लिखावे खातिर, खेलावे. कुदावे खातिर नया एगो मोल्वी साहेब के उपरावल गइल। नयका मोल्वी बदला में जवन पावस तवन ना अपने भर जनाव ना घर.परिवार भर। ईहो ना बुझाय कि पर.हर जाइब त अतना कम कमाई में के काने आई! त ऊ कुछ झारे कुछ फूँके के, कुछ भूत.प्रेत चढ़ावे.उतारे के नया एगो धंधा पसरले। कुछ त पसरले, कुछ जादे जब पसर गइल त कुछ अउरू पसार देले। रोज कुछ नया.नया जिन्न.जिन्नात उपरावस, रोज कुछ नया.नया बिध.बिधान से बाल.बुतरुन के आ बाल.बुतरुन के महतारियन के आ बाबियन के आ बाल.बुतरुन के बबवन के आ नववन के डेरवावस आ डेरवइला के बाद रोज कुछ नया.नया बिध.बिधान से ओह डर के सेरवावस। एह डेरवइला.सेरवइला के मेहनताना नयका मोल्वी साहेब के आज सेर भर मिलल त काल्ह सवा सेर . परसों डेढ़ सेर। ई जतने डेरवावत.सेरवावत गइलें, लोग.बाग ओतने मेहनताना बढ़ावत गइल; लोग.बाग जतने मेहनताना बढ़ावत गइल, ई ओतने डेरवावत. सेरवावत गइलें।

पुरनका मोल्वी साहेब जब थोर.बहुत दवा से आ बहुत.बहुत दुआ से आ बहुतो से बहुत आराम से बिसराम से रोग.बेयाध के पटक के पछाड़ के पहुँचले त पवले कि जगहे.जगहे मरिचाई के धूनी, गण्डा.ताबीज; घोड़ा के नाल, नाव के कील। पवले कि उनुका जगह प जे काबिज बा ओकरा कबिलाय के जहाँ देखऽ तहीं मुरीद। बुधमान रहन मोल्वी साहेब, बूझ गइलें कि इहाँ के दाना से, इहाँ के पानी से उनुकर नाँव खारिज। त कहले कि हे मन, चलऽ कहीं आउर चलीं। उहाँ, जहाँ तोसर कवनो जाड़ा.पाला, तोसर कवनो लूक.घाम, तोसर कवनो बाढ़.बरखा। जात.जात बाकिर, बाल.बुतरुअन में जवना के माथा प धइले हाथ तवने के पवले रोज.रोज बढ़िआत भूत.प्रेत.जिन्न.जिन्नात से थर.थरथरात। थथम गइले, ऐंड़ी से मुँड़ी ले अपने थरथरा के। मने.मने कहले कि सभकर भूत त नयका मोलबिया भगा दी, बाकिर एकर भूत के भगाई! पहिले एकर भूत भगाइब, तब कहीं अनते जाइब त जाइब, ना त ना जाइब।

त नयका मोल्वी से कहले कि राउर त मोलवी साहेब, तख्त बेसकीमती, बखत बेसकीमती। त रउरा त सब काम तेज के, सकल संसार भर, फुरसत से, जतना बने ततना, रहम.करम.किरपा बरखाईं, लरिका. गदेला पढ़ावे में, हमरा अस आकर के रहते, रउरा जो आपन बखत बेसकीमती गँवाइब त हम ऊपरवाला के कवन मुँह देखाइब! त हुकुम जों होय त हमहीं कुछ इन्हनी के पढ़ाईं. लिखाईं, कुछ राउर गुन गाईं कुछ इन्हनी से गवाईं...

ईहे त चाहते रहन नयका मोलवी। लइका पढ़ावे से छुट्टी। सोचले कि एकरा से पढ़वाइब आ अपने असर के पसर के बनाइब। घोंजा न पाइब त एकरो के दे देब मुट्ठी दू मुट्ठी। दू कवर खाई, परले.हरले छाँवो. गोड़ दबाई, अकाजे.सुकाजे कामे आई!

पुरनका मोल्वी बाल.बुतरुन के पढ़ावस, देखस

नयका मोल्वी के एहर.ओहर मँडरात त उनके सुना के उनके कुछ गुन्न.गुन्न गायस। सुन.सुन के नयका मोलवी फूल.फूल कुप्पा।

त एक दिन उनका एह कुप्पा में पुरनका मोल्वी डेढ़ सेर तेल त पयका उड़िलले, जब कहले कि अबकी के जुम्मा के संउसे मुहल्ला के मजलिस लगावल जाय। सबके बटोर के रउरा कुछ जिन्न.जिन्नात के बात बताईं आ हम राउर सुन.सुन कुछ गुन्न.गुन्न गाईं, राउर कुछ पर.परताप बखानीं कि हमहूँ कुछ धरम.करम कमा लीं, हमहूँ कुछ पाप.ताप आपन कटा लीं...।

मजलिस बइठल। नयका मोल्वी बतवले कि पाछा जवन तीन गो तरकुल बा तदना में से बिचला प से एगो कींचिन उल्टा मुँह उतरत बिया, छू करब त अँटक जाई फूँ करब त लटक जाई! बँवारा प बानत बा, दहिनवारा प बेताल। जे जहाँ बा, बइठल रहे, हिले मत, डोले मत, घूम के ताके मत, भागे मत; एक लौंग गाड़ब, किचिन के कचार देब, बानत के बोखार उतार देब, बेताल के पहिलके पैंतरा में पटक के पछाड़ देब, .. जेकरा के ठोंक देब ओकर नजर.गुजर सोख लेब। जेकरा के तावीज पहिरवली, डॉक्टरो डाइन खबड़िये ना ओकर बिगाड़ कबो पवली...

'सही बात सही बात' – छँउक के कहले पुरनका मोल्वी आ ऊ.ऊ कसीदा कढ़वले, नयका मोलवी के तयन.तयन बखनले कारनामा कि सुन.सुनके नयका मोलवियो भँउचक्का। बतवले कि हजूर के देह में त छाड़ीं, ठढ़ियो में खुदा के नूर। एक बार जेकरा के दे दी उखाड़ के, ओकर सब रोग.सोग दुक्ख.दलिद्दर, सम्तर.के.सम्तर, से जोजन दूर। अन्न से पानी से सोना से चानी से ओकरा पलानी के कोना.कोना भूरम्भूर...

एक बेर कहले, दुइ बेर कहले, तिसरको बेर कहले त दुखिया एक जगले। धरती प नाक रगरले आ कुछुओ ना, एक बार दाढ़ी के नयका मोलवी से मँगले। मगनमन नयका मोलवी नोचले आ दे देले कि ले, लेके जो, कि हो जाय रोग.सोग दुक्ख.दलिद्दर तोर, सम्तर.के.सम्तर, से जोजन दूर, कि अन्न से पानी से सोना से चानी से तोरा पलानी के कोना.कोना भूरम्भूर...

दुखिया जी बार पा के चलले त डँटले पुरनका मोल्वी कि वाह रे, वाह.वाह ना कहबे?

त दुखिया जी कहले कि वाह.वाह।

दुसरका दुखिया पवले त बिना कहवले ऊ कहले कि वाह.वाह। तिसरको। चउथको। पँचवो। छठवों जो पा जइते दाढ़ी के बार त कहबे करिते वाह.वाह, बाकिर का, कि मँगले त नयका मोलवी से भरखर डँटा गइले। सतवों त दू झापड़ खा गइल। अठवों के त बुझाइल कि नयका मोलवी भरेटी दबा दीहें। त नउओं आ दसवों, एगरहवों.बरहवों के बुझा गइल कि मँगला से ना भेंटी दाढ़ी के बार। अपने से लेवे के होई, अपना हक.हिस्सा के बार। बाकिर ईमान से, जे पावे, एक बेर बोले जरूर कि वाह.वाह।

उखाड़ल त सभे, अपना जाने में त अपने बस हिस्सा के, ले.देके खाली बस एक्के गो बार, बाकिर जब देखलस कि चुटकी में चार.चार गो बाटे त चार बेर बोलल, ईमान से, कि वाह.वाह। पाँचो बेर बोलल केहू.केहू...। दसो बेर बोले भरल जेकरा, बोलल, बिना कवनो हुज्जत के कि वाह.वाह।

साँझ के दाढ़ी गइल, पता चलल काजिरे कि झलि गइले नयका मोलवी सनुख्खा। के जाने के बता देलस उनके कि लोगन में चर्चा बा कि ना सही दाढ़ी के, सेही के बार के बहुत.बहुत अउर.अउर जगहा बा, जहँवा से जवने मिल जाय, कौन हर्जा बा!

बाकिर, नयका मोलवी के ना पाके लोग बाग सबहूँ पछताइल कि अब के भगाई ए भाई, घर.घर से भूत.प्रेत.जिन्न आ जिन्नात.. अब केकरा छू से अँटक जाई, अब केकरा फूँ से लटक जाई! अब के ठोंकी आ नजर.गुजर सोखी...

पुरनके मोल्वी तब देले दिलासा कि बड़ा भारी गुनी रहन, पुनी रहन नयका मोलवी। अपने साथे ले गइले सब जिन.जिनात कि इन्हनी से दाढ़ी में अपना फिटकिरी लगवाइब...

त जे सुनल सेही कहल, जोड़ के हाथ आ नवाके माथ, बिना कहवले कि वाह.वाह...। ••

■ असिस्टेन्ट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
श्री बलदेव पी.जी. कॉलेज, बड़ागाँव, वाराणसी २२१२०४

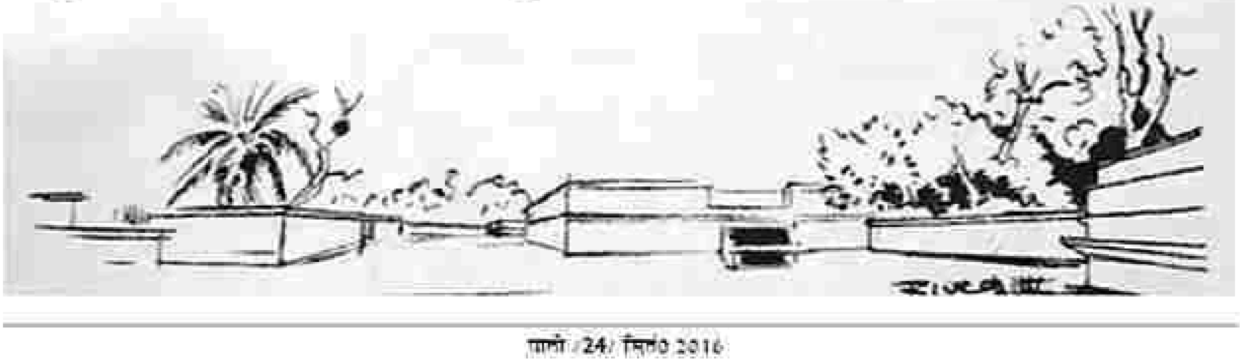

गँवई–कथारस

बगइचा में डोली

डॉ. रमाशंकर श्रीवास्तव

सत्यनारायण भगवान के कथा के अब तीने दिन बाकी रह गइल रहे। चहल–पहल अभिए से शुरू रहे। पंडित जी के नोताविक सामग्री जुटावल जात रहे। कोईरान के टोला के जगरनाथ जी सायक–सायक समझा देहले रहले कि कथा का दिने सात गो हंड़िया आ चार गो दीया आ जाये के चाहीं। टाइम से पहुँचा जइहऽ।

हजामिन से कहाइल कि घर के ओरी आ अंगना में वंदनवार लटकाये के बा। आम के पल्लो सबेरही पहुँचा जइह!

हजामिन दू घंटा बाद आम के पाँच गो पल्लो ले के अइली। कहली–पल्लो कहीं मिलत नइखे।

नलकिनी झुंझुअइले बोलली–आ तुरो। इ पाँच गो पल्लो से का होखी ए हजामिन।

हजामिन बतवली कि गाँव के बगइचा सब कटा गइल। लोग खेत बना के जोत रहल बा। आम के बगइचा कहीं लउकत नइखे।

ताज्जुब के बात रहे–एतना लमहर गाँव आ आम के पल्लो नइखे मिलत। हजामिन के महेन्दर साह के पोखरा पर भेजल गइल। आध कोस जमीन चल के पोखरा पर से आम के पल्लो आइल।

एगो समय रहे कि बाग–बगइचा गाँव के सुन्दरता के प्रतीक मानल जाव। केतना गाँव अपना बगइचा से जानल जाव। फल लागे त दुनिया के लोग खा के अघा जाव। तब फल के चोरियो कम ना होखे आ उहे लेके आपस में लड़ाई–झगड़ा हो जाव। पाँच गो टिकोरा तूर के चटनी बने। चोरी के टिकोरा के चटनी के वतिये दोसर होला। अब गाँव में टिकोरा नइखे मिलत, लोग शहर से कीनत बा। लड़ाई झगड़ा के कारण लोग तुरहा के ठेका पर बगइचा दे देत बा। पइसा–रुपया पर भा बटइया पर।

बगइचा जिन्दगी के सुख के केन्द्र रहे। हारल–थाकल देह बगइचा के छाया में सुस्ताय आ नीक अंधी में सुख बटोरे। आसपास इनार होखे त ढोल से पानी निकाल के मुसाफिर लोग भर ढीक पानी पिये।

गाछ के कोटर में चिरई–चुरुंग आपन खोंता लगावे, अंडा सेवे आ बच्चा पाले। बगइचा में चिरई के सांझ सबेरे के आवाज झुनझुना नियर लागे। फल के लालच में कहीं से हनुमान–बानर भी आ जाव। नीमन–बाउर काम में एही बगइचा के लकड़ी काम आवे।

गाँव के पहचान बगइचा से होखे।

एगो जमाना रहे जब गाँव अपना बगइचा से जानल–पहचानल जाव।

एने पचास साल में गाँव के जीवन बहुत बदलल बा। ओइसन अब ना देहात रहल ना गाँव के परिवेश रहल। पहिले कुछ लोग के दुआर पर बैलगाड़ी खड़ा रहे। दुगो पट्ठा बैल खींचऽ सन। सामान ले जाये भा वर–विदाई कराये में बैलगाड़ी के महत्व रहे। गाँव के बढ़ई बैलगाड़ी तइयार करस। दसो देखनिहार लोग आसपास खड़ा रहस। घर–घर में समाचार के जिकिर होखे कि अमुक के दुआर पर बैलगाड़ी बन रहल बा।

बैलगाड़ी के कठही पहिया धीरे–धीरे टायर वाला पहिया के स्थान ले लेहलस। आ अब त अइसन बदलाव आइल कि बैलगाड़ी के जगह ट्रैक्टर ले लेहलस। बगइचा के उपयोग तरह–तरह से होखे।

गाँव के हर क्षेत्र में परिवर्तन लउकत बा। बात बगइचा से शुरु भइल ह। थाकल–पियासल कहार डोली रख के इनार पर भर ढीके पानी पीयस। पालकी में बइठल दुलहा उतर के कनिया से पूछ लेस–हमनी का बगइचा में रुकल बानी सन। पानी–वानी पीए के होखे त पी लऽ।

गाछ के डाढ़ी पर बइठल कोयल, कउवा, पंडुक, गिलहरी सभे के एहसास हो जाव कि अभिए बियाह क के लउटल कनिया डोली के भीतर चुपचाप बइठल बाड़ी। कनिया के डोली देखे में चिरइयो–चुरुंग के मन खुब लागे। केतना डाढ़ी पर चिरई सन के नाक झोंक चले।

तब बगइचा लगावल पुण्य के काम मानल जाव। आम के साथे महुआ, जामुन, अमरूद, आंवड़ा कटहल आदि के गाछ भी ओही बगइचा में शोभा देव। गाछ–बिरिछ के देखे आ मने मन बतियावे में आदमी के केतना मन लागे। एही गाछ के छांह में लइकन के चिका–ढाढ़ी कबड्डी आ छुअन–छुआई के खेल चले। मनोरंजन से भरपूर रहे उ सब बगइचा।

गाँव के निचिका घना बगइचा भइल भी लोग खातिर खतरे रहे। एगो घटना के हम प्रत्यक्षदर्शी बानी। एगो रिश्तेदारी के शादी में गइल रहनी। आसपास कुछ गाछ रहे आ सामने तालाब रहे। चाँदनी रात में चबूतरा पर बइठ के हमनी का हँसत–खेलत खूब गप कइनी सन। सूते खातिर जइसे बिछावन पर गइनी सन तले एक जाना घबराइले–डेराइले लगे आके धीरे से बोलले–रउरा लोगिन पाहुन बानी। बाहरी गाँव में सावधाने होके सूते के चाहीं। बेसकीमती चीजा होखे

त छिपा–लुकवा के रखली। बगइचा में चोर आइल बाड़े सन। टार्च के अंजोर भक्–भक् लउकत बा। हर अन्हरिया रात में ई डाकू आ जाले सन। आज भी घड़ी अन्हरिया बा।

हमनी का आपन–आपन बिछौना छोड़ के उठ खड़ा भइनी सन। केतना लोग हनुमान चालीसा पढ़े लागल। हम केवल शिवजी के नाम जपत रहनी। कबो–कबो अपना गाँव के काली माई के इयाद करीं। घर के मालिक बहरा के कोठरी जल्दी–जल्दी खोलले। ओने पत्थर–ईंटा के टुकड़ा गांजल रहे। छपड़ी में भर–भर के बहरा रखल गइल। डाकू सन के आवते ओकनी पर पत्थर ईंटा फेंकल जाई।

हम मने मन पछतात रहनी। छोट भाई मना कइले रहले। उ गाँव बड़ा खतरनाक ह। तीन बार उनकरा घरे डकैती पड़ गइल बा। जान बूझ के आगी में ना कूदे के। जा मत, मनिआर्डर से नेवता भेज द।

गाँव के दखिन टोला से हल्ला मचल – जागरन, जागरन ! डाकू आ गइल बाड़े सन। रामजी रामजी करत रात कटल। डाकू कवनो दोसरा गाँव का ओर चल गइले सन।

गाँव कहे में त अच्छा लागेला मगर ओहीजा खतरो कम नइखे। दू चार लाश गिर जाई तब पुलिस आई।

जवना बगइचा में हमनी का ठहरल रहनी सन, उहो रात में अइसन भुतहा बन जात होई, चोर डाकू एहूजा, अन्हरिया में आवते होखिहें सन। गद घेर होत–होत कनिया के डोली–उठावे में डाकू देरी ना करीहें सन। नया नया गहना गुरिया के लालच में भला उ केकर सुनिहें सन।

बकरी चरावे वाला एगो लइका से मालूम भइल कि एहू बगइचा में पछरेनवा जामुन के गाछ पर एगो भूत रहेला। रात में एने कौनो मोसाफिकर अकेले ना आवेला। भुतवा सबे से सूरती चूना मांगेला, जे ना देला ओकरा के पीट–पीट के मुआ देला। बरिसन के बीस साल के लइका पर साल एही बगइचा में खून उकर के मर गइल।

इ सब कथा–कहानी सुनत केहू तरे तीन दिन बीतल। मगर भोरे–भोरे कोयल के बोली मन खुश कर देय। फलदार गाछ लगवला के संकटो कम नइखे। आम के गाछ पर केहू चढ़ के डाढ़ी हिला देय त दू झोंरा कांच पाकल आम धरती पर पसर जाला। लूट खातिर लइका आपस में मार पीट कर बइठेले। जामुन, आम, अनार इ सब फल अइसन ह कि लोगन में लड़ाई झगड़ा आ मुँह फुलौवल तक हो जाला। सुने में आइल कि दोसरा के गाछ से आम तूरला खातिर एक जाना मोकदमा ठोक देहले। तीन साल के दुश्मनी के आग अब ले बुतावल नइखे। आपसी खान–पान बन्द बा। इजानिन आ घर से बेर–बेर बायन सौंटा के ले आवेली।

शिवनाथ बो के पतोह जब पहिले पहिल बियाह के अइली त कहारन सब के हिदायत देहल गइल रहे कि ओह बगइचा में डोली मत रखिहन सन। तबो एगो कहार ताड़ी पी के ओहीजा डिमला गइल। डोली नीचे रखे के पड़ल। सांझ के दुलहिन के डोली जब गाँव में पहुँचल त उनकर रंगरूप–मिजाज बदलल लागल रहे। कनिया पगला गइल रहली।

देहात में कवनो–कवनो बाग–बगइचा के बारे में अजब–गजब अंधविश्वास पकड़ल बा। बाकिर अब एकरो दिन गिनले गुंथल बा। ढेर बगइचा कटा गइल। जगह के लोग खेत में बदल दीहल। बहुत कम लोग अब नया बगइचा लागवत बा। सभे का डर रहता कि बगइचा के लेके तरह–तरह लड़ाई होत रहेला। ओने पक्की सड़क खातिर केतना बगइचा कटा गइल।

बाग–बगइचा प्रकृति के सौंदर्य होला। ओही में चिरई–चुरुंग के बसेर होला। लावन–लकड़ी त मिलते रहेला। मगर प्रकृति के उ सुन्दरता धीरे–धीरे गायब भइल जात बा।

आज देहात के रूप बदल रहल बा। एगो समय रहे कि बागे–बगइचा में गाँव के छोट–मोट जलसा होखे। आजो जहाँ बगइचा बा आ पानी के सुविधा बा त देहात के बारात बगइचे में ठहरावल जाला। गाछी के छाया के नीचे केतना लोग के बिस्तर लाग जाला। बगइचा के अलगे एगो दुनिया होला। परिवेश के परिवर्तन केकरा ना भावेला।

हँ... साँप–बिछी से डर लागेला। पहिले साँप कटी में लोगन के गोहार कर दीहल जात रहल। अब त अस्पताल के दवा–दारू से साँप के जहर मेटावल जात बा। पहिले गाँव में साँप कटी के मंतरिया लोग होखे। खबर होते उ पहुँच जाय लोग। मंत्र में शक्ति होखे कि साँप के काटल मरत–मरत आदमी जिन्दा हो जाय। प्रेमचन्द के कहानी मंत्र के मूल कथा साँप के विष उतारे पर ही निर्भर बा। कहानी के पात्र भगत अपना मंत्र से डॉ. चड्ढा के पुत्र के जहर उतार के जिन्दा कर देता आ एवज में बिना कुछ लेहले ओह भीड़भाड़ से गायब हो जाता।

गाँव में जब साँप लउक जाला त लोग – साँप साँप कहके ना पुकारे ला। कीरा (कीड़ा) कहेला। सुने में आवेला कि साँप कान से बहिर मगर नजर से तेज होला।

गाँवों में शिक्षा पर सरकार के नजर गइल बा। लड़की लोग के पढ़ावे खातिर तरह–तरह के प्रोत्साहन

29/09/2026, 16:56 Paati-81 (September 2016)

दीहल जा रहल बा। जइसे स्कूल में दिन के भोजन, लड़की लोग के साइकिल। एह कारण स्कूल जायेवाली लड़कियन के संख्या बढ़ल बा।

इ त अब साफे लउकत बा कि गाँव के परम्परागत काम–धंधा के रूप बदलत जात बा। अब घर के जाँत पर गेहूँ–मकई नइखे पिसात। जगह–जगह चाय के दुकान नियर तेल पेरे के मशीन, मसाला पीसे के मशीन लागल बा। जवन काम पहिले लोग अपना मिहनत से करत रहल, अब मशीन करत बा। इहे कारण बा कि आलसी देह के तरह–तरह के बीमारी दबावत बिया। शहरी नकल में गाँव आपन स्वास्थ्य सौंदर्य नष्ट कइले जात बा।

गाँव के अधिकांश लोग अब अपना कमासुत बाल बच्चा के लगे शहर चल जाता। गाँव के धरती पर बनल मकान धीरे–धीरे ढह बिला जाता। जे शहर जाए में समर्थ नइखे भा, जेकरा अपना धरती से ढेर मोह बा। ओकर अर्थी गाँवे में उठत बा।

विचार कर के देखल जाय त आज गाँव बड़ा भारी परिवर्तन के शिकार होत जात बा। गाँव में बानर– भालू लेहले मदारी भी कमे दिखाई पड़त बा। भागवत कथा भा रामायण पाठ में कम आ टी.वी. पर लोग ज्यादे जुटल रहता। ई जर जमीन के झगड़ा पर पैमाइश लेके अमीन–पटवारी लोग के खूब चलत बा। तनी–तनी–सा धरती खातिर लड़ाई आ मार–मोकदमा शुरू हो जात बा। पहिले एगो समय रहे कि रेलगाड़ी के सीटी, धुआँ देख के लोग डेरा जाय। भय के मारे घर में लुका जाय। आज निडर होके यात्रा करत बा। बहुत घर में मोटर साइकिल भा जीप–कार भी खड़ा दिखायी पड़ जाता।

कहे के मतलब ई कि आज भारतीय गाँव में परिवर्तन तेजी से आ रहल बा। बाग–बगइचा वाला

अंध विश्वास टूट रहल बा। डाइन भूत के भय कम बा। उल्टे ठगेवाला तांत्रिक लोग आपन दाँव चलावला से बाज नइखे आवत। आज नवविवाहिता कनिया डोली–पालकी में ना, जीप–कार में आवत बाड़ी। आर्थिक दशा कइसनो होखे, भाड़ा पर गाड़ी कके दुलहिन बिदा होत बाड़ी। ••

■ टॉवर १/६०१, तेबरली पार्क अपार्टमेंट,
सेक्टर २२/२ द्वारका, नई दिल्ली-११००७७

दू गो गजल

✍ मिथिलेश गहमरी

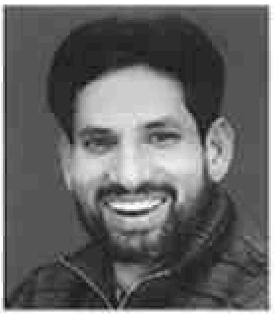

[एक]

मन के रकबा जदी सिमट जाई
भाव हर आदमी के घट जाई
कवनो मंतर लगी ना तोहरा पर
साँप जब काट के उलट जाई
देवता, लोग बन गइल, बाकिर
जाने कहिया ले छल - कपट जाई
लोग सपना रहल बा दिनहीं अब
चान निकलल बा रात कट जाई
हो गइल पलटीबाज ई दुनिया
खा के किरिया कबो पलट जाई
तोहरा पइली में बस बजन चाहीं
कइसनो नामिला सलट जाई
मेघ बरिसल जो छोड़ दी कहियो
पूल, समुन्दर के शान घट जाई
जाके देखतीं बहार हम, बाकिर
पाव परसाल के उपट जाई

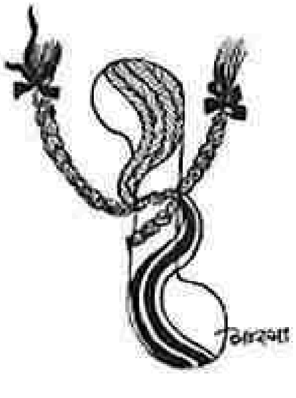

[दू]

लोग के दिल में नाज पत्थर के
कइसे देखी केहू, ई मंजर के
बाँसुरी पर बजल रहे, बाकिर
बात भुला चल रहल बा महुअर के
चील्ह बाटे मुंडेर पर बइठल
उड़ न जाए कहीं खुशी घर के
संग सबका जिये-मरे वाला
हो गइल लोग, फूल गूलर के
नेह के बीज कइसे अँखुवाई
मन के माटी बा जइसे बाँगर के
बानी हम असमसान में बइठल
राग कइसे कढ़ाई भीतर के
दूर अपनो से हो गइल जिनगी
घर में पइसल तनाव दफ्तर के
बनिके दीया कबो जरीं रउवा
जान जाइब हवा के सवँहर के ••

■ गहमर, गाजीपुर, उ० प्र०-२३२३२७

file:///media/om/Rathod/pdffiles/Paati-PDF/paati-com/Paati81-images/Paati81-01.htm 29/109

लोक कथा के कहानी

ठेहुना ले माथ

शारदा पाण्डेय

बहुत दिन भइल। कवनो गाँव में एगो महतारी बेटा रहत रहलन स। बड़ा निर्धन। कइसहूँ घर के खर्चा–पर्चा चलत रहे। ओह घर में कवनो तीज–त्योहार ना लउके। फगुआ में रंग–अबीर–गुलाल उड़े त माई बन में जाइ के कइसूँ टेसू तूरि ले आवे। राति खा पानी में भेंइ देव। जवन रंग बने ओही से ओकर बेटा, मोहन, लोटा में भरि के लइकन पर डालि आवे आ ओतने में प्रसन्न होइ जाय। ई जानतो कि ओकरा पासे पिचकारियो नइखे। कब्बो अपना माई से ना कुछु पूछे, ना जिद करे। माई अपना बेटा के समझदारी देखि के मने मन खुशी होइ जासु आ आपन गरीबी देखि के दुखिया हो जासु। अइसहीं दीपावली आवो त सभके घर जगमगाय, बाकिर मोहन के घर में दूगो दीआ के अलावा तिसरा ना जरे। एगो घर के दुआरी पर दोसरका भगवानजी के सोझा। मोहन थपरी बजा–बजा के खेलसु। दशहरा आवे त मोहन दउर के भगवती के पंडाल में जासु आ भगवती के गोड़ लागसु। ओह घरी ऊ एकटक भगवती के, उनुका शेर के आ राक्षस के देखसु। ओकरा गम्भीर होइ जासु। बाकिर ऊ का सोच तारन, ई केहू ना भाँपि पावे। उनुकर माई उनुका के लेके जरूर छठी मइया के घाटे जासु। मोहन देखसु आ खुश होइ जासु। धीरे–धीरे मोहन पाँच बरिस के हो गइलन। लइका पढ़े जा सन इनिको मन में आइल। अपना माई से कहलन। माई केहू तरे स्कूल में नाँव लिखा दिहली। मोहन पढ़े में तेज रहलन एही से गुरु जी अपना पास से इनकर फीस, किताब के व्यवस्था दिहलन। ऊ अपना कक्षा में पहिला पास हो गइलन। किताब आ छात्रवृत्ति सरकार देवे लागल। ई कुल्ही गुरुजी के किरपा से भइल। मोहन रोज जाइ के अपना गुरुजी के प्रणाम करसु, आ जवन पढ़ावल जाय ओके मन लगा के पढ़सु। पाँच कक्षा पार करत ऊ अपना माइयो के काम में हाथ बँटावे लगलन। छात्रवृत्ति से घरो में तनी सुधार भइल। माइयो के हाथ–गोड़ खुलल। लोगन से तनी मेल–जोल कइके काम के जोगाड़ कइली।

एक दिन मोहन देखलन कि कुछ लइका रंग–बिरंगा राखी पहिरले बाड़न। उनुका मन में आइल कि केहू हमरो हाथ में राखी बान्हित। बाकिर केहू से कुछ कहे के साहस ना कइ पवलन। उदास मन अपना ओसारा में आइ के बइठि गइलन। माई पुछली, 'का ए बबुआ, अतना उदास काहे बाड़?' मोहन पहिले त पटाइल रहले। फेरू उनुका आँखि में लोर भरि गइल। कहलन, 'ए माई! आजु रक्षा–बन्धन ह। लइकन के बहिन राखी बान्हतारी सँ। का हमरा कवनो बहिन नइखे?'

माई एकटक मोहन का ओर तनिकी देर तकली। फेरु कुछ कहे के भइली, बाकिर कुछु ना कहि के चुप रहि गइली। मोहन के बुझा गइल कि माई हमरा से कुछु छिपावतारी। माई के हाथ धइ के कहलन, 'माई का बाति ह? तू हमरा से का छिपावत बाड़? आजु ले ए घर में कबो केहू के आइल ना देखनीं। आजु बिना जानल हम ना रहबि।'

माई बूझि गइली कि अब हमरा मुँह खोलही के परी। धीरे–धीरे मोहन के हाथ सुहरावत कहली, 'मोहन! जब तूँ छव महीना के रहल, बुला दस–बारह बरिस के उमिर में तहार बाबूजी एगो धनिकहा किहाँ तहरा बहिन के बिआह कइ दिहलन। ऊ बड़ा सुन्नर रहे। दुर्गा जी नियर ओकर रूप रहे। जे देखे ऊ देखत रहि जाइ। एक दिन एगो अदिमी आइल ऊ एकोरा ले जाइ के तहरा बाबूजी से बतिअवलस आ अपना संगे बेटी रूपा के ले गइल। तहरा बहिन के ईहे नाँव रहे। ऊहे अदिमी जाइ के कवनो बड़ा धनी अदिमी से कहले रहे। आ रूपा चलि गइल ओकरे संगे। फेरु कबो हम ओकरा के ना देखनीं। काहे कि तहरा बाबूजी से ऊ वचन ले लिहलन सँ कि ऊ अपना बेटी से अब कवनो नाता ना रखिहें। ना अइहें–जइहें। ईहाँ तक कि कबो नाँवो ना लीहें कि उनुका कवनो बेटी रहल। कुछ दिन तक हम गाँव में बड़ा चैन से रहनीं। बुझाए जे घर में लक्ष्मी आ गइल बाड़ी। बाकिर ई सुख ढेर दिन ना रहल। गाँव में जने जाईं सभे तहरा बाबू के बेटीबेचवा कहे, हमरा के हीन बूझे। तहार बाबूजी गाँव छोड़ि के इहँवे आइ के बसि गइलन। बाकिर भीतरे–भीतर घुलल जात रहलें आ एक दिन खून–बोकारि के भगवान के लगे चलि गइलन। हमरा कि किरिआ खिआ गइलें कि ई बात हम तहरा से कबो ना कहीं। एह गाँव के लोग हमनी के कुछु कहल त ना, बाकिर हमनी के संगे कवनो संबंधो ना राखल। तहरा बहिन के कवनो जानकारी हमरा लगे नइखे। ई सुनले बानी कि जहाँ बिआ ओहू बड़ा खुश बिआ। कवनो चीज के कमी नइखे। ऊ बुला ईहो नइखे जानत कि हम कहाँ बानी? बेटा! गरीबी के कारण लालच में पड़ि के तहार बाबूजी जवन कइलन ओकर परिणाम हमरा देखे–भोगे के परल। जदि ऊ आज–काल्हो रहितन त आजु तहरा ई बात पूछे के ना परित। बाकिर तहरा नियर बेटा पा के हम निहाल हो गइनी। भगवान के ई दान हमार सभले बड़ धन बा।'

माई मोहन के अपना कोरा में लेके चूमे लगली।

मोहन के मुँह पर धूप–छाँह खेले लागल। अपना के छोटावत मोहन माई से पुछलन कि, 'माई का तूँ तनिको नइखे जानत कि बहिनिया कवना गाँव में बिआ? पाहुन के नाँव का हऽ?' माई कहलस कि, 'बाबू, हम खाली अतने जानीले कि नदी पार कइके जाए के होला। सभे उनुका के राजाजी कहेला, आ पूरब मुँहे गाँव बा।'

मोहन मन में कुछ सोचे लगलन। पूरा दिन चुपे रहलन। खाई में उनुकर मन ना लागल। किताब खोललन तऽ मन कतो अवरू रहे। रतिया अइसहीं बीतल कुछ सोचत, अपने में जीअत। माई चुपचाप देखत रहली। आपन काम करसु कुछु बोलस ना। पूरा घरवे जइसे सनसनात रहे। लागे कवनो बात हवा के झोंका से कहीं उधियाइ जनि जाउ।

दुसरा दिन मोहन पाठशाला गइलन। बाकिर रोज निअर ना रहलन। गुरु जी के धिआन गइल। पूछलन, 'मोहन! का बात हऽ?' मोहन कुछु ना बोललन। छुट्टी के बाद आपन बस्ता उठवले बाकिर घरे जाए के मन ना होखे। गुरुजी ताड़त रहलन। अपना लगे बोलवलन। उनुका से फेरु उहे प्रश्न पुछलन। बाकिर एह बेर मोहन के आँखि में लोर लहरा गइल। ऊ धीरे–धीरे आपन मन गुरुजी के आगा खोललन, एह बिस्वास के संगे कि गुरु जी एह बारे में केहू से कुछु ना कहिहें आ हमार सहायता करिहें। गुरुजी बड़ा बुद्धिमान रहनी। उहाँ के मोहन के अपना बेटा अइसन मानत रहनी। बिस्वास दिअवनी कि मोहन के मन राखब आ रूपा के खोजो करबि।

चार–छव दिन के बाद गुरुजी जी मोहन के बोलाइ के कहलन, 'हमरा जानकारी मिलल बा कि नदी पार के पुरुबहा गाँव में एगो राजा जी कहावे वाला धनी आदिमी के महल निअर घर बा। तूँ ओहिजा बटुक बनि के जा। राजाजी पढ़निहार लोगन के बड़ा मान–जान करेलन आ उनुकर घरवाली अपना सोझा बइठा के सभके खान–पान के व्यवस्था करेली। ऊ कवनो साधारण घर के रहली हा। ऊ घर के बहरी ना जा सकेली। अइसन ओहिजा के नियम बा।'

मोहन के मुँह चमके लागल। गुरु जी के चरण स्पर्श कइले आ फूल निअर मन ले घरे अइलन। माई मोहन के देखि के, उनुका मुँह के खिलल देखि के जानि गइली कि आजु कुछु अइसन जरूरे भइल बा जेसे मोहन गदगद बाड़न। मोहन हाथ–मुँह धोइ के खाये बइठलन, ओह घरी उनुकर मन नया हुलास से भरल रहे। माई के बड़ा संतोष भइल। कतना दिन के बाद मोहन के मुँह पर हँसी आइल बा। बेना डोलावत पुछली, 'बबुआ! का बात हऽ? बड़ा खुश बाड़?'

बिना कुछ छिपवले मोहन अपना माई के कुल्ही बात बता दिहलन। माई देखत रहली बुझाइल कि उनुकर बेटा बड़ हो गइल बा। मोहन के छोट–छोट हाथ गोड़, बालपन के आल्हर मुँह कुल्ही जइसे बाढ़ छोड़ि दिहलस। अतना गम्भीर, समझदार मोहन एही उमिर में कइसे हो गइले? अबले मोहन खा लेले रहले। कहलन, 'माई! तूँ का सोचतारू! तूँ देखिह हम अपना बहिनिया के पता लगाइब। भेंट करबि आ केहू के पता ना चली। बस हमरा के जाए के कहि दऽ। हम भुलाइब ना। नदी पार करबि आ चहुँप जाइब।' माई के मन संका गइल। कहली, 'ना, बबुआ! हम आपन बेटी गँवा चुकल बानी। अब बेटा ना गँवाइब।' ऊ मोहन के खींचि के अपना कोरा में अइसे झाँपि लिहली, जइसे केहू उनुका से उनुकर बेटा छीनत होखे। कुछु देर ले महतारी बेटा दूनू पटाइल रहल लोग। केहू कुछऊ बोले के स्थिति में ना रहे। उनुका माई के आँखि में अंतिम बेर एगो नया साड़ी में लपिटाइल रूपवा रहल, जे का जाने के लेके आइल रहे। अब तऽ ऊ देखलो पर ना जाने ओकरा के चीन्ही कि ना? आ मोहन के आँखि में लइकन के कलाई पर बान्हल राखी चमकत रहे।

भिनुसार होते–होत मोहन के आँखि खुलल। मोहन अपना लगे सूतल माई के देखलन। ओकर उदास मुँह देखते उनुका कुल्ही बात मन परि गइल। अब माई उठही के बिआ। ऊ फेरु से तनी आपन आँखि मूँद लिहलन। कुछ मन में निश्चय क लिहलन। माइयो रामजी के नाँव लेत उठल आ फेरु गेंदे से मोहन के लिलार चूमि लिहलस। मोहन जानि गइलन कि अब उठते माई अपना काम–धाम में लागि जाई।

आदित के उगे से पहिलहीं आकाश में लाली फइलल, चिरई बोले लगली सं। पिछुआरा के बँसवारि हवा से खरके लागल, चुचुहिया बोलल आ मोहन आपन बिछवना छोड़ि के खड़ा हो गइलन। आजु माई के जगावहूँ के ना परल। अपनहीं हाथ मुँह धोइके तेयार हो गइलन। माई अब ले चुप रहल। बुला काल्हु के बात सोचत रहल। माई चुहानी से जनेरा के दरिया आ आधा भेली गुर ले आ के पानी के संगे मोहन के सोझा धऽ दिहलस। मोहन खरमेटाव कइलन। बिना बस्ता के जाए लगलन। माई कहलस कि, 'ए बबुआ! किताब–कापी ना ले जइबऽ। खाली गुरुजी के गोड़ लागि के चलि आइब। तूँ तनी मीठा धइले रहिहे।'

माई अकबका गइल। मोहन गइलन आ तनिकिए देर में लवटि अइलन आ कहलन, 'माई! आजु हम नदी पार जाइब। बहिनिया के पता लगाइब। हमरा पूरा बिस्वास बा कि हम जोहि–लेब।' माई के आँखि लोरिआ गइल। मोहन के कोरा में लेके कहलस, 'बबुआ! अबहीं तूँ छोट बाड़ऽ। नदी पार कइसे जइबऽ? केहू तोहरा के

भोरवाद ली; ना तूँ रास्ता भुला जइबऽ।' मोहन कहलन कि, 'हम केहू के संगे ना जाइब। जवना रास्ता जाइब, ओही से आ जाइब। हमरा संगे तहार आ हमरा गुरुजी के आशीर्वाद बा।'

माई मोहन के माथ चूमि लिहली। मोहन माई के गोड़ छुअलन आ बहरिआइ गइलन। माई, जब तक लउकलन दुआर खड़ले मोहन के देखत रहली। अतना छोट लइका अनजान रास्ता कहाँ कइसे जाई? मोहन नदी के किनारा गइलन। नाव खुलल के देखत रहलन। एगो नाव अब खुलही के रहल। ओमे बइठल एगो भोट अदिमी जवन देखे में बाबा जी लागत रहलन, मोहन के खड़ा देखि के कहलन, 'का ए बबुआ! का देखऽ तारऽ। कतो जाए के बा का?'

मोहन कहलन, 'हँ बाबू जी! जाए के तऽ ओह पार बा, बाकिर हमरा पाले मल्लाह के देवे भर के पइसा नइखे।' बाबा जी के मोह लागल। कहलन, 'बबुआ! आवऽ पइसा हम दे देब।'

मोहन आइ के नाव पर बाबाजी के गोड़ छुअलन। उनुकर तिलक, लाल गमछा, धप-धप धोती पहिरले भेख देखि के मोहन के मन में श्रद्धा जागि गइल। सोचलन कतना मीठ बोली बा आ कतना दया-माया बा। हमार किराया अपनहीं देबे के कहि दिहलन। हम तऽ घर से अइसहीं चलि अइनी।

बाबा जी पुछलन, 'बेटा तहार कहँवा घर बा, आ कहाँ जाए के बा?'

मोहन आपन गाँव बतवलें आ कहले कि नदी पार के पुरुबहा गाँव में कवनो राजा जी बाड़े, ओहिजे जाए के बा। बाबा जी प्रसन्न हो गइले कहले, 'साँचे कहतारऽ। ऊ नाँवे के ना, कर्म आ सुभावो से राजा हउवन। दान-दया-धरम उनुकरा में कूट-कूट के भरल बा। उनुकर घरनियो ओइसहीं बाड़ी। आजु एकादशी हऽ। हमहूँ ओहिजे जा तानी। हमार बोलाहट बा।' मोहन मने-मन बहुत आनन्दित भइले, बाकिर ऊपर से शांत बनल रहले। नदी पार भइला पर बाबा जी के संगे मोहन चले के भइलन। देखलन कि बाबा जी के लगे एगो झोरा बा, ऊ ओकरा के उठा लिहलन बाबा जी से कहलन, 'बाबूजी! एकरा के हम लेके चलत बानीं।'

बाबा जी मोहन के विनम्रता आ आदर के भाव देखि के गदगद हो गइले। सिर पर आशीर्वाद के हाथ फेरले आ कहले, 'ठीक बा, चलऽ।'

दूनू जना राजा जी के दुआर पर पहुँचल त, ध्यान में तनी ताम आवे लागल रहे। देखल लोग, ओहिजा सात-आठ गो मोहने के उमिर के अउरू लइका आइल रहले। सभे दुआर पर बिछल खाटी मोढ़ा पर बइठल रहे। पारा-पारी सभ के हाथ मुँह-ओआ के एगो निश्चित स्थान पर बइठावल जात रहे। तनिकी देर में बाबा जी के संगे कुल्ही बटुक आँगन के भीतर से बोलाहट भइल। भीतर सभकर आसन बिछल रहे। लोटा पानी के भक-भक गिलास राखल रहे। सभका बइठला पर बाबा जी के फलाहार आ अउरू सभ के कई किसिम के भोजन परोसाइल। तले घर के लछिमिया आइ गइली। मोहन निहाइ के देखे लगलन। कइसन अद्भुत रूप रहे। गोर, सोना नियर रंग, सोना का गहना से ऊपर से नीचे तक सजल देह। देह के रंग में गहना के रंग अइसन एकमेक रहे कि धिआन से देखला पर बुझाए जे कहाँ सोना बा? लाल सिल्किक के सारी जेकर किनारा सोनहुला रहे। कलाई में लाल चूरी के आगा-पाछा बीच में सोने के मोट चूरी। मोहन के बुझाइल कि साक्षात दुर्गा जी आ गइल बाड़ी। इ मोहन के बहिन ना हो सकेली। मोहन टकटकी बन्हले देखे लगले। देखत-देखत बुझाइल कि बड़-बड़ करिआ आँखि त माई के हऽ। इनिका आँखि के उदासी आ माई के आँखि के उदासी एके नियर बा। मोहन छटपटाए लगलन। थरिया पर उनुकर हाथ रुकि गइल। एकहूँ कवर मुँह में ना गइल। गृहणी बुला धिआन से देखत रहली। उनुकर आँखि मोहन पर ठहरि गइल। ऊ एकहूँ कवर खइले ना रहले। ई देखि के ऊ ओहिजे बढ़ि गइली। पुछली, 'का ए बाबू! तूँ काहे नइखऽ खात? का खाएके मन नइखे करत? कवनो दोसर चीज खाए के मन होखो तऽ कहऽ मँगा दीं।'

मोहन चिहुँक गइलन। कहलन कि, 'ना कुल्ही ठीक बा आ खाए लगलन।' बाबा जी, मोहन के देखत आ आपत रहलन। गृहणी कुल्ही लइकन से पूछत रहली, नाँव-गाँव, पढ़ाई उनुका लोग के बाबूजी के नाँव। मोहना से पुछली, तऽ मोहन बड़ा सधल आवाज में आपन नाँव-गाँव बता के कहलन कि, 'अब हमनी ओह गाँव में ना रहि के दोसरा गाँव में आ गइल बानीं। हमरा बाबूजी के कवनो मजबूरी रहल।'

गृहणी के आँखि में एगो अजब चमक आ गइल। खाए के बाद सभके दक्षिणा दिहला के बाद, ऊ मोहन से कहली कि, 'बाबू! तूँ तनी ठहरि जइहऽ। तहरा दक्षिणा ले आवतानी। ना होखे तऽ तूँ हमरा संगे आ जा, भीतर से दक्षिणा लेके तोहरा के दे देब।' मोहन उनुकरा संगे उनुका कक्ष तक चलि गइलन। मोहन के अपना घर में कइ के ऊ उनुका से बाबूजी के नाँव पुछली। मोहन के नाँव बतावते ऊ उनुका के अपना कोरा में समेट लिहली, आँखि से गंगा-जमुना बहे लगली। मोहना के गोसाईं बरल बाकिर, ऊ अपना के सम्हार लिहली। रुपा देर तक ना कहली, माई के एगो नया गमछा, धोती दिहली, दक्षिणा के रुपया हाथ में

लघु–कथा

बेटा के भविष्य

जनार्दन सिंह

रघुबर बाबू के मरले 30 बरिस हो गइल, ओह बेरा बिरजन एके बरिस के रहलन। इमरितिया देवी के कनियाईं कान्ह पर घर–दुआर, खेती–बारी आ बिरजन के लालन–पालन के एकटहे भार आ गइल। बाकिर आज तक ले ना निकलल नइहरा के खेती–खरिहान के भार लेवे के परल। कुछ दिन बाद भाई–पटिदार लोग में हिस्सा बखरा के बतकही शुरू हो गइल। रघुबर बाबू गाँव जवार में काफी इज्जत पवले रहलन। कवनो पंचाइत होखे त रघुबर बाबू के बिना पंचाइत अधूरे रहि जाय। बाकिर खुद अपने घर में मरते–मरते भाई पटिदार लोग उनका के बदनाम आ हिस्सा हड़पला के आरोप लगावे से ना चुकल। सगरो महिला के सलटावत इमरितिया देवी चुपचाप अपना बेटा के पढ़ावत गइली। आखिर में एक दिन बिरजन के नोकरी लागिए गइल। उ बनारस में इनकम टैक्स अधिकारी हो गइल रहलन।

नोकरी लागते उनका बिआह खातिर देखनहरू दुआर पर आइल टूट लगलन। आखिर काहे ना, खेत–बारी के कमियो ना, एके गो बेटा, भरल–पुरल परिवार आ गाँव जवार में इज्जतदार परिवार। बगल के गाँव रामपुर के भीखन बाबू के बेटी से धूमधाम से बिआह भइल, लइकी बड़ा सुशील रहे, दहेजो खूब मिलल। तीस बरिस से घर में छवले उदासी अब दूर हो गइल रहे। इमरितिया के पतोह के देखिके अब गाँव के लोग जरे लागल।

बिरजन जब अपना नोकरी पर जाए लगलन त पतोहुओ संगे जाए खातिर जिद क दिहली बाकिर बिरजन उनके ले जाएके पक्ष में ना रहलन। ऊ सोचस कि हम अपना मेहरारू के ले जाइब त माई घर में अकेलही रहि जइहें। इनके देखभाल करे वाला केहु ना रही, बेराम पड़ला पर एक लोटा पनिओ देवे वाला केहू ना मिली। बाकिर इमरितिया के पतोहि ना मनली, खाइल–पियल छोड़ि दिहली, उनका आँखि से गंगा जमुना के धार बहे लागल। पतोहि के हालत देखिके उनका से ना रोकाइल, इमरितिया देवी अपना बेटा के बोलाके समझावे लगली। दुनिया के नीच–ऊँच के उदाहरण दिहली। जवान पतोहि के एगो बूढ़ मेहरारू के सहारे छोड़ला पर होखे वाला घाटा–नाफा के बतवली। अन्त में बेटा तइयार हो गइलन। ओही दिने ऊ लोग बस पकड़िके बनारस चलि गइल लोग।

घर में अकेले इमरितिया रहि गइली। बरिसन के उदासी फेरू उनका के जकड़ि लिहलस बाकिर एकरा के ऊ आपन किस्मत जान के, समय काटे लगली। समय बदलत रहेला ओकरा के केहू रोक ना सकेला। ऊ बिना कुछ देखले बढ़त जाला। अइसे साल बीत गइल उनके पते ना चलल। दु महिना से उनके बोखार परेशान कइले रहल। एक दिन पड़ोस के मइंईराम आ के कहलन कि चाची मिठाई खियाईं। इमरितिया देवी के इ मजाक नीमन ना लागल, ऊ पुछली कि कवना खुशी में हो मइंईराम? मइंईराम हँसत कहलन कि पोता भइल बा। हम बनारस गइल रहनी ह त बिरजन भाई से भेंट भइल ह। उहे बतावत रहलन। इमरितिया बहुत खुश हो गइली आ कहली कि मिठाई त बाद में खियाइब कम से कम मुँह मीठ कइके जा। कहत भीतरी गइली आ मिसरी के ढेला आ लोटा में पानी लेके अइली। मइंईराम खुश हो गइलन। बिहान भइला पर हनुमान जी के पूजा आ गाँवभर के भोज भइल। सब लोग खा–खा के बड़ाई करत जाय लोग। उनहूँ का मन में पोता से मिले खातिर बेचैनी बनल रहे। बाकिर बिरजन ना घरे आवत रहलन आ ना ऊ जात रहली। समय के फेरा बड़ा विचित्र होला। पाँच बरिस बाद ऊ अपना बेटा के लगे गइली। बेटा–पतोह दुनु जाना बड़ा खुश रहे लोग। उनके नाती आके अपना इया के गोद में बइठ गइल। बड़ी दुलार देवे लगली। अब दीपक अपना दादियो के लगे रहे लगलन। ई देखि के उनका पतोहू के खले लागल। साल भर बीत गइल। इमरितिया अपना बहू के कूटली आँखी ना सहन परस।

एक दिन रात के बेरा सुतला में इमरितिया के अचानके ऊँघी टूटल। त देखली कि उनके बेटा–पतोह में कहा–सुनी होत रहल। इमरितिया के बहू कहस कि माई के घरे पहुँचा दी ना त बबुआ अंग्रेजी ना पढ़ पाई आ फेलो हो जाई। माई त ओकरा से खाली भोजपुरिए में बतिआवेली। ना चाहेबावे त हमरा बेटा के जिनगी खराब हो जाई। बाकिर बिरजन कहले कि माई के कहवाँ भेजल जाव? आखिर उनहूँ त ओकरे लगे रहि के पढ़नी–लिखनी। लोग का कही? इमरितिया इ सब सुनली त उनकरा गोड़ के नीचे धरती खिसक गइल। आके सुत गइली। आँखि से लोर बहे लागल। रात भर सुत ना पवली। दु चार दिन बाद एक दिन ऊ वापस घरे जाए के जिद करे लगली। लाख मने कइलो पर ना मनली। हार थाक के बिरजन अपना माई के पहुँचावे चल दिहले। माई के गाँवे पहुँचवला के बाद वापस लवटत बिरजन के रहि रहि एक ही सवाल मन के बेचैन कइले रहे। कबो ओह दिन माई ओह मरद–मेहरारू के कहा–सुनी सुनि तऽ ना लेले रहे? एक–ब–एक अचानक ओकरा गाँवे जाए के जिद के पाछा आखिर कारन का रहे? अपना माई का लगे रहि के आज ऊ अफसर बनल बाड़े, उहे माई आज पोता के भविष्य बिगाड़े के जिम्मेवार कइसे हो सकेली? बिरजन उमचुभ भइले, बहुत सोचले गुनले बाकिर आखिरकार मेहरारू आ बेटा का भविष्य के खेयाल आवते मन मसोसि के रहि गइले। ••

मिश्रौली, मंझुल, देवरिया, २७४७०३

लघु–कथा

बेटा के भविष्य

जनार्दन सिंह

रघुबर बाबू के मरले 30 बरिस हो गइल. ओह बेरा बिरजन एके बरिस के रहलन। इमरितिया देवी के कनियाईं काल्हे पर घर–दुआर, खेती–बारी आ बिरजन के लालन–पालन के एकहठे भार आ गइल। बहरे आज तक ले ना निकलल मेहरारू के खेती–खरिहान के भार लेबे के परल। कुछ दिन बाद भाई–पटिदार लोग में हिस्सा बखरा के बतकही सुरु हो गइल। रघुबर बाबू गाँव जवार में काफी इज्जत पवले रहलन। कवनो पंचाइत होखे त रघुबर बाबू के बिना पंचाइत अधूरे रहि जाए। बाकिर खुद अपने घर में मरते–मरते भाई पटिदार लोग उनका के बदनाम आ हिस्सा हड़पला के आरोप लगावे से ना चुकल। सगरो ममिला के सलटावत इमरितिया देवी चुपचाप अपना बेटा के पढ़ावत गइली। आखिर में एक दिन बिरजन के नोकरी लागिए गइल। उ बनारस में इनकम टेक्स अधिकारी हो गइल रहलन।

नोकरी लागते उनका बिआह खातिर देखनहरू दुआर पर आइल टूट लगलन। आखिर काहे ना, खेत–बारी के कमियो ना, एके गो बेटा, भरल–पुरल परिवार आ गाँव जवार में इज्जतदार परिवार। बगल के गाँव रामपुर के भीखन बाबू के बेटी से धूमधाम से बिआह भइल. लइकी बड़ा सुशील रहे, दहेजो खूब मिलल। तीस बरिस से घर में छवले उदासी अब दूर हो गइल रहे। इमरितिया के पतोह के देखिके अब गाँव के लोग जरे लागल।

बिरजन जब अपना नोकरी पर जाए लगलन त पतोहुओ संगे जाए खातिर जिद क दिहली बाकिर बिरजन उनके ले जाएके पक्ष में ना रहलन। ऊ सोचस कि हम अपना मेहरारू के ले जाइब त माई घर में अकेलही रहि जइहें। इनके देखभाल करे वाला केहू ना रही. बेराम पड़ला पर एक लोटा पनिओ देबे वाला केहू ना मिली। बाकिर इमरितिया के पतोहि ना मनली, खाइल–पियल छोड़ि दिहली, उनका आँखि से गंगा जमुना के धार बहे लागल। पतोहि के हालत देखिके उनका से ना रोकाइल, इमरितिया देवी अपना बेटा के बोलाके समझावे लगली। दुनिया के नीच–ऊँच के उदाहरण दिहली। जवान पतोहि के एगो बूढ़ मेहरारू के सहारे छोड़ला पर होखे वाला घाटा–नाफा के बतवली। अन्त में बेटा तइयार हो गइलन। ओही दिने ऊ लोग बस पकड़िके बनारस चलि गइल लोग।

घर में अकेले इमरितिया रहि गइली। बरिसन के उदासी फेरु उनका के जकड़ि लिहलस बाकिर एकरा के ऊ अपन किस्मत जान के, समय काटे लगली। समय बदलत रहेला ओकरा के केहू रोक ना सकेला। ऊ बिना कुछ देखले बढ़त जाला। कइसे साल बीत गइल उनके पते ना चलल। दु महिना से उनके बोखार परेशान कइले रहल। एक दिन पड़ोस के मड़ईराम आ के कहलन कि चाची मिठाई खियाईं। इमरितिया देवी के इ मजाक निमन ना लागल, ऊ पुछली कि कवना खुशी में हो मड़ईराम? मड़ईराम हँसत कहलन कि पोता भइल बा। हम बनारस गइल रहनी ह त बिरजन भाई से भेंट भइल हऽ। ऊहे बतावत रहलन। इमरितिया बहुत खुश हो गइली आ कहली कि मिठाई त बाद में खियाइब पहिले त मुँह मीठ कइके जा। कहत भीतरी गइली आ मिसरी के ढेला आ लोटा में पानी लेके अइली। मड़ईराम खुश हो गइलन। बिहान भइला पर हनुमान जी के पूजा आ गाँवपालन के भोज भइल। सब लोग खा–खा के बड़ाई करत जाय लोग। उनहूँ का मन में पोता से मिले खातिर बेचैनी बनल रहे। बाकिर बिरजन ना घरे आवत रहलन आ ना ऊ जात रहली। समय के फेरा बड़ा विचित्र होला। पाँच बरिस बाद ऊ अपना बेटा के लगे गइली। बेटा–पतोह दुनु जाना बड़ा खुश रहे लोग। उनके नाती आके अपना इया के गोद में बइठ गइल। बड़ी दुलार देबे लगली। अब दीपक अपना दादियो के लगे रहे लगलन। ई देखि के उनका पतोहू के खले लागल। साल भर बीत गइल। इमरितिया अपना बहू के फूटली आँखी ना पसन परल।

एक दिन रात के बेरा सुतला में इमरितिया के अचकलिये ऊँघी टूटल। त देखली कि उनके बेटा–पतोह में कहा–सुनी होत रहल। इमरितिया के बहू कहत कि माई के घरे पहुँचा दीं ना त बबुआ अंग्रेजी ना पढ़ पाई आ फेलो हो जाई। माई त ओकरा से खाली भोजपुरिए में बतिआवेली। ना चोहँपाएब त हमरा बेटा के जिनगी खराब हो जाई। बाकिर बिरजन कहलें कि माई के कहवाँ भेजल जाव? आखिर इनहूँ त ओकरे लगे रहि के पढ़नी–लिखनी। लोग का कही? इमरितिया इ सब सुनली त उनकरा गोड़ के नीचे धरती खिसक गइल। आके सुत गइली। आँखि से लोर बहे लागल। रात भर सुत ना पवली। दु चार दिन बाद एक दिन ऊ वापस घरे जाए के जिद करे लगली। लाख मने कइला पर ना मनली। हार थाक के बिरजन अपना माई के छोड़वावे चल दिहलें। माई के गाँवे पहुँचवला के बाद वापस लवटत बिरजन के रहि रहि एके ही सवाल, मन के बेचैन कइले रहे। काहे ओह दिन माई ओह मरद–मेहरारू के कहा–सुनी सुनि तऽ ना लेले रहे? एक–ब–एक अचानक ओकरा गाँवे जाए के जिद के पाछा आखिर कारन का रहे? जवना माई का लगे रहि के आज ऊ अफसर बनल बाड़े, ऊहे माई आज, पोता के भविष्य बिगाड़े के जिम्मेवार कइसे हो सकेले? बिरजन उलझन भइले, बहुत सोचले गुनले बाकिर आखिरकार मेहरारू आ बेटा का भविष्य के खेयाल आवते मन मसोसि के पड़ा गइले। ••

मिश्रौली, मंझुल, देवरिया, २७४७०३

शहर जनत एगो गाँव – हमार गाँव

नीरज सिंह

'डुमरा गाँव गोविन्द के, बसे गंग के तीर' – इ कहाउत ह हमरा गाँव के बारे में। गाँव के बच्चा–बच्चा एकरा से परिचित बा। गाँव के उत्कर्ष भा पराभव से संबंधित कवनो आख्यान चलत रही त अंत होत–होत कवनो ना कवनो सुननिहार के मुखारविन्द से अपने आप एकरा उच्चरित होखही के बा – 'डुमरा गाँव गोविन्द के...'। मान लीहीं कि कवनो पड़ोसी गाँव में क्रिकेट टुर्नामेंट चल रहल बा आ ओकरा में भाग लेबे वाली गाँव के टीम पहिलके राउंड में हार के बहरिया गइल त समाचार सुने वाला के मुँह से निकलही के बा– 'डुमरा गाँव गोविन्द के...'। अगर मैट्रिक बोर्ड के रिजल्ट निकलल आ गाँव भर के लइका फर्स्ट डिवीजन से पास हो गइलन स, त गाँव के बड़परगी के बखाना एकरे से होई– 'डुमरा गाँव गोविन्द के...'।

एह गाँव के स्थिति ई बा कि पहिले के शाहाबाद आ आजु के भोजपुर जिला के मुख्यालय आरा शहर से बीस किलोमीटर दूर बसल लोग एकरा के शहर के हिस्सा मानेला आ हमनी अस गाँव से निकल के शहर में रहे वाला लोग गाँव। असल में डुमरा सात गाँवन के समूह के नाम ह5। सोभी डुमरा, मखदुमपुर, बड़का डुमरा, मेल डुमरा, सेंदपुर, निरमलपुर, सारंगपुर – ई सब गाँव डुमरा के हिस्सा हवन स। कुछ लोग मानेला कि सेंदपुर, निरमलपुर आ सारंगपुर अलग गाँव हवन स5। डुमरा में सात गो गाँव रहन स जरूर, बाकिर कालान्तर में तीन गो गाँव बड़का डुमरा में समाहित हो गइलन स। अब जवन होखे, बाकिर एकर पुष्ट परमान तब मिलेला, जब विधानसभा चुनाव के अंतिम चरण में मतगणना के काम चलत रहेला। आरा विधानसभा क्षेत्र के वोटन के गिनती जब अंतिम दौर में पहुँचेला त5 आगे चले वाला भा पीछे चले वाले उमेदवार के एही डुमरा गाँव समूह के मत–पेटियन के खुले के बड़ा बेसब्री से इंतजार रहेला। 'खुले द लोग बकसा–नकसा ना बदल जाई त हमरा नाम पर कुकुर पोस दीह5 लोग।' बाकिर अबही ले केकरो नाम प5 कुकुर पोसइला के जानकारी हमरा नइखे।

हमार गाँव ह सेसर बड़का डुमरा। एकरा के बड़का डुमरा काहे कहल जाला, एकर जानकारी कवनो आदमी के नइखे। पहिले से एही गाँव में पोस्ट ऑफिस बा, जवना के दायरा बहुत विस्तृत बा। एकरा सीमा में सातो डुमरा के साथे–साथे महुली जइसन बड़ गाँवो बाटे। बड़का डुमरा गाँव के स्थिति लगभग पोसईं बा। जइसे रेणुजी के मैला आँचल उपन्यास में चित्रित मेरीगंज के। डाक विभाग के नक्सा प5 त5 बड़का डुमरा गाँव बा, बाकिर बिहार सरकार के राजस्व गाँवन के सूची में एकर नाम मखदुमपुर डुमरा बा। पहिले ग्राम पंचायत के नाम बड़का डुमरा रहे, बाकिर अब ओकरा के बदल के मखदुमपुर डुमरा रख दिआइल बा। मखदुमपुर डुमरा के नक्सा दू पाट में बा – 'क' आ 'ख'। जवन 'क' पाट ह, ऊ बड़का डुमरा ह5, आ 'ख' पाट मखदुमपुर ह5। अब एह गाँवन के भौगोलिक स्थिति के एह तरह से समझल जा सकेला। आरा शहर से रउआ अगर सीधे उत्तर दिशा में बढ़िआइब त पुरनका सीमा रेखा के रूप में गांगी नदी मिली, जवना के गंगा नदी के छाड़न मानल जाला। लोग कहेला कि पहिले गंगा नदी आरा शहर से लगले बहत रहे। उनके कगार प5 प्राचीन सिद्धनाथ मंदिर अवस्थित बा, जवना के बारे में कहल जाला कि जब विश्वामित्र मुनि राम–लक्ष्मण के लेके जनकपुर जात रहन, ओही घरी एह स्थान प5 शंकर भगवान के पूजा–अर्चना कइले रहे लोग। एह स्थान से थोरिके दूरी पर नगर देवी– 'आरण्य देवी' के प्राचीन स्थान बा, जवना के पौराणिक शक्तिपीठ मानल जाला। त, एही गांगी नदी प5 बनल पुल के पार कइला के बाद, रउआ जहाँ पहुँचब, ओकरा के 'गौसगंज' कहल जाला। एहिजा से सड़क दू भाग में बँट जाता। एक रास्ता पूर्वोत्तर दिशा में 'एकवना घाट' चल जाता आ दोसरका पश्चिमोत्तर दिशा में सिनहा, महुली, बलुआ–त्रिभुआनी घाट के ओर। गंगा नदी के कगार पर स्थित कोइलवर से चौसा तकले फैलल एक विशाल भू–भाग के ढेढार आ दीयर कहल जाला– रेलवे लाइन से सटल भाग ढेढार आ गंगा नदी के किनारे के इलाका दीयर कहाला। आरा शहर के पश्चिमोत्तर कोन के ओर जाये वाली आरा–सिनहा रोड पर दू किलोमीटर गइला प सोभी डुमरा गाँव बसल बा। एहिजे शहर के सीमा–रेखा खतम होत बा आ मखदुमपुर डुमरा पंचायत के सीमा–रेखा शुरू। सोभी डुमरा से सटले पच्छिम मखदुमपुर बा, ओकरा बाद गांगी से जुड़ल एगो बरसाती सोता प बनल पुल के पार कइला के बाद हमार गाँव बड़का डुमरा। ओकरा बाद मेलडुमरा, सेंदपुर आ निरमलपुर। मेल डुमरा के दक्षिण मार्थे बसल बा सारंगपुर गाँव। दुनो गाँवन के बीच में बहुत पहिले गंगा नदी के प्रवाहित होखे के प्रमाण देत खलेटी जमीन, जवना के 'दह' कहल जाला। हमार गाँव एही 'दह' के उत्तर किनार प बसल बा। एही से हमार गाँव के बारे में 'गंग' के किनारे बसे वाला जवन कहाउत प्रचलित बा, ऊ साँच बुझाला। साँच पूछीं त आरा शहर आ डुमरा गाँव–समूह के बीच में खलेटी जमीन बा, जवना के बीच में कहीं–कहीं नया गाँव जइसन गाँव उग आइल बाड़न स।'

अब एक बात आउर। छोट–बड़ गाँवन के एह समूह के 'डुमरा' नाम काहे पड़ल? ई सवाल हम अलग–अलग

समय प अलग–अलग किसिम के लोगन से बार–बार पूछत रहल बानी। बाकिर संतोषप्रद उत्तर आजु ले ना मिलल। एकरा खातिर हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू–फारसी, अरबी–संस्कृत, कई गो भाषा के विद्वान लोग से भी सम्पर्क कइनी बाकिर सवाल आजु ले जस के तस। पूछे के कारण इ बा कि इ नाम खाली हमरे गाँव के नइखे। डुमरा जगह–जगह बा। जमालपुर (मुंगेर) मीरी रामपुर डुमरा बा, सीतामढ़ी जिला में डुमरा बा, पटना शहर के एयरपोर्ट वाला इलाका में डुमरा पुलिस चौकी बा, हमरा जिला के ऐतिहासिक स्थल – 'डुमरांव' बा, ओहिजे लगले एगो गाँव 'डुमरी' भी बा। कहे के मतलब ई कि डुमरा जगह–जगह बा, अगर नइखे त कवनो शब्दकोश में नइखे। चर्चा के दौरान हमार ध्यान संस्कृत भाषा के शब्द 'उदुंबर' के ओर गइल, जवना के अर्थ होला – गूलर के फल, गूलर के लकड़ी आ गूलर के लकड़ी से बनल यज्ञ–पात्र। एकर एगो अर्थ तांबा भी कहल गइल बा, जवना से हमार मतलब नइखे सधत। त, ले दे के 'उदुंबर' यानी 'गूलर'। हमरा लागत बा कि हमार गाँव दह (गंगा नदी के छाड़न) के कगार के जवना ऊँचास जमीन प बसल बा, उहवाँ पहिले गूलर के पेड़न के झुरमुट रहल होई। जानते बानी कि गूलर एगो अइसन वृक्ष होखेला, जवना के बागवानी ना कइल जाला। बिना केहू के बोअले–लगवले, पसवले ऊ जगह–जगह जाम जाला आ देखते–देखत पइड़न– महाकाय वृक्ष बन जाला। आ वृक्षो कइसन जवना के केहू फुलात ना देखे बाकिर फर से धरती पटा जाली। गूलर के कोंच फलन के तरकारी त हम खइले बानी, रउओ सभे खइलहीं होखब, बाकिर पाकल फलन के उपयोग आजु ले हमरा ना बुझाइल। हो सकता कि बर, पीपर, पाकड़ आ गूलर अइसन विशालकाय फलदार वृक्षन के प्रकृते चिरई–चुरुंग के जीये–खाये खातिर सिरिजले होखे। खैर, डुमरा शब्द के व्युत्पत्ति एह 'उदुंबर' शब्द से भइल होखी। उदुंबर से डुमरा शब्द के विकास के प्रक्रिया समझ में आ जात बा। हमनी इहाँ एगो चइती गावल जाला – 'पिया भइलन डुमरी के फूलवा ए रामा...'। कहीं–कहीं डुमरी के जगह 'गुलरी' गावल जाला। एही उदुंबर के आबाद झुरमुटन के अपना बउसाय से काट–छाँट के हमनी के पुरखा लोग अपना रहे लायक बनवले होखी। आवती बेर गइलन तबहुँओ ओह जगहन के डुमरा नाम प्रचलन में रहि गइल आ अबहुओं बा। आगहूँ रहबे करी। अब 'गंग के तीर प बसल डुमरा गाँव' के नामकरण के रहस्य त मोटा–मोटी उजागर भ गइल, बाकिर इ सवाल त अबहुओं मन में खटकते रहेला कि आखिर ऊ गोविन्द के रहले, जेकरा ओर संकेत क के कहल जाला कि 'डुमरा गाँव गोविन्द के...'। हम कटिए से एह बात के पता लगावे के कोसिस कर रहल बानी कि ऊ गोविन्द के रहले? खाली कहके डुमरा के रहन कि सातो डुमरा के रहन? इहो हो सकता कि ऊ हमरा गाँव के ना होखें, कवनो दोसरा डुमरा के पुरखा रहन त कवना टोला के रहन? कवन बिरादर रहन? हम एह सवाल के जवाब खातिर हरेक टोला के लोगन से सम्पर्क कइनी, बाकिर कतहीं से संतोषजनक उत्तर ना मिलल। अइसे 'गोविन्द' नाम मिलल हरेक टोला में। जइसे हमरे टोला में दू भाई रहल हा लोग– रामगोविन्द सिंह आ शिव गोविन्द सिंह, बाकिर ऊ लोग हो खानी के लोग ह– हमनी के देखल–सुनल। इ लोग ऊ 'गोविन्द' ना हो सके। असहीं बभन टोली में रामगोविन्द पांडे, हज्जाम टोली में 'गोविन ठाकुर' कोइर टोला में 'गोविन्द डाक्टर' जइसन कई गो गोविन्द नामधारी लोग हमरा गाँव में भइल बा – एगो गोविन्द दुसाध भी भइल बाड़न, बाकिर एह में से केहू ऊ गोविन्द नइखे हो सकत, जेकरा नाम से डुमरा गाँव जानल जात होखे। हम डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा द्वारा सम्पादित 'ज्ञानमंडल के बृहत हिंदी कोश' से सम्पर्क कइनी त ओहिजा 'गोविन्द' शब्द के अर्थ 'कृष्ण' के संगे–संगे गोपालक मिलल। बस, हम बेसी मगजमारी ना कइनी आ मान लेनी कि डुमरा गाँव में सबसे पहिले आवे वाला– गूलर के पेड़न के काट के आबाद करे वाला गोपालक समुदाय के लोगे रहल होइहन। ओहि लोग के उहाँ से आबाद एह गोधन के दह (गंगा के छाड़न) के कगार प बसला के चलते 'डुमरा गाँव गोविन्द के, बसे गंग के तीर' कहल गइल होई। अब इ दोसर बात बा कि ओह घरी गोपालन कृषक समुदाय मात्र के स्वाभाविक कर्म रहे, कवनो जात विशेष के ना।

हमार गाँव – बड़का डुमरा मिश्रित आबादी वाला गाँव ह। कहे के त ई बबुआनन (राजपूत जाति) के गाँव कहल जाला, बाकिर हउवे ई असल में कायस्थ जमींदारन के गाँव। गाँव के बीचो–बीच कायस्थ लोगन के घर पुरान जमाना के महलनुमा पक्का घर बाड़न सं। काफी बड़ रकबा में ओह लोग के घर बा। ऊहे लोग एहिजा के सबसे सम्पन्न, सबसे अधिका पढ़ल–लिखल आ सबसे ज्यादा रसूखदार लोग रहे। ओही लोग के चलते हमरा गाँव में सब जाति के लोग बा। राजपूत, अहीर, दुसाध ई लगभग बराबर संख्या में बा लोग। एकरा बाद ब्राह्मन, कहार, हजाम, बनिया, कलवार, कानू, तेली, कोइरी कुम्हार, कुरमी, माली, चमार, धोबी, लोहार एह सब जाति के थोर ढेर घर बाड़न सं। जइसे कि सरकार के राजस्व विभाग मानेला– मखदुमपुर के बड़का डुमरा के टोला मान लिहल जाय त सोनार, बारी, बढ़ई, पासी आ मुसलमान– सब जाति–बरन के लोग हमरा गाँव में मिल जइहन। एने हाल–फिलहाल एगो दलित परिवार धर्मांतरण क के क्रिश्चियनो बन गइल हमरा समझ से, शायदे दोसर कवनो अइसन गाँव होई, जवना में अतना जाति के लोग रहत होई।

हमरा गाँव में जतना मंदिर आ पूजास्थल बाड़न स, शायदे अतना आबादी आ अतना क्षेत्रफल वाला दोसर कवनो गाँव में होइहन स। बुढ़िया माई स्थान, पोखरा पऽ के सतीस्थान, बाती के ब्रह्मस्थान, राजपूत टोला के शिव मंदिर, बुढ़वा शिवजी के मंदिर, पदुमनलाल के शिवाला, शिवजी लाल के शिवाला, बचनलाल के शिवाला, पृथ्वराय के हनुमान जी, शिवशंकर लाल के हनुमान जी, नगीना लाल के हनुमान जी, देवकी लाल के हनुमान जी आ अउर कइगो छोट–बड़ स्थान; जइसे मँझी पाठक के घर के आगे के हनुमान जी। अब मंदिरन के साथे आदमी लोग के नाम जोड़ला से केहू के ई ना समझे के चाहीं कि व्यक्तिगत भा पारिवारिक प्रयास से बनला के कारण मंदिर छोट–मोट भा कम भव्य होइहन स। अइसन बात नइखे। एह में तीन गो शिवाला आ दुगो हनुमान मंदिर भव्य आ विशालकाय बाड़न स। देवकी लाल के हनुमान मंदिर में जवन प्रतिमा स्थापित कइल गइल बा, ओकर आकार पटना के राजवंशी नगर वाला हनुमान मंदिर से तनिको कम नइखे। फिलहाल, गाँव के बुढ़िया देवी माई के मंदिर के विस्तार कार्य बहुत तेजी से चल रहल बा। एह काम में जोश–जान से लागल लोगन के कोशिश एकरा के अइसन रूप देवे के बा, जइसन आस–पास के कवनो गाँव में ना होखे। बाकिर कुल मिला के गाँव के मंदिरन के हाल बेहाल कहल जाई। कारण, पुजारी लोग के अभाव। पहिले गाँव के कायस्थ जमींदार लोग अपना–अपना मंदिरन में पुजारी रखले रहे लोग। जमींदार आ जमींदारी बिलइला के बाद कायस्थ जाति के लोग लगभग–लगभग गाँवे छोड़ चुकल बा। घर खंडहर–डिहलात बेचिरागी भऽ गइलन सँ, तऽ मंदिरन में कइसन पूजा–पाठ आ कइसन संझा–पराती? खैर, गाँव के एह देव स्थानन के अतिरिक्त दु गो अउर महत्त्वपूर्ण स्थान अइसने बाड़न सऽ। पहिलका बा– गाँव के पश्चिम, मेलाडुमरा आ सेदपुर गाँवन के बीच के पहिले के निर्जन–एकांत वनइयन में स्थापित संसार बाबा के मठिया। एह मठिया के निर्माण हमरा गाँव के एगो भक्त–कवि रामायण दास उर्फ संसार नाथ पाठक जी अपना साधना–स्थली के रूप में कइले रहीं। असल में उहाँ के आरा कोर्ट में काम करे वाला एगो संत हृदय व्यक्ति रहीं, गृहस्थ रहीं। उहाँ के कवनो शिष्य–परम्परा नइखे। उहाँ के सैकड़ो भजन लिखले बानीं। उहाँ के भजनन के पुस्तकाकार प्रकाशनो कबहीं संसार प्रेस, आरा से भइल रहे। ऊ प्रेस उहें के नाम पऽ उहाँ के दौहित्र–संस्कृत आ हिंदी के विद्वान शिक्षक–साहित्यकार पं० कमलाकान्त उपाध्याय जी द्वारा स्थापित कइल गइल रहे। संसार बाबा के मठिया में अब कवनो साधु–संत ना रहसु। पहिले ओहिजा एगो सरकारी विद्यालय चलत रहे, जवन अबहियो चलत बा। बाकिर ओकर प्रसिद्धि शिक्षक पं० कमलाकान्त उपाध्याय जी के कारण रहे, जवन एगो सिद्धहस्त आयुर्वेदाचार्य रहन। दोसर स्थान हमरा गाँव से उत्तर–पूर्व दिशा में आरा–सिन्हा रोड के किनारे स्थित बा। एकरा के मधुबनदास के मठिया कहल जाला। मधुबन दास जी अपना समय के नामी संत रहन आ हमरे गाँव के एगो हजाम ठाकुर परिवार में पैदा भइल रहन। उनका जीवन–काल में एह मठिया के बड़ा प्रसिद्धि रहे। बीच के दौर में इ समाप्ति के कगार प पहुँच गइल रहे बाकिर एने कायम क्षेत्रीय जनता के प्रयास से एकर दिन बहुरल बा। अब धीरे–धीरे ई एगो रमणीक स्थान–धार्मिक पर्यटन स्थल बने के दिशा में अग्रसर हो रहल बा।

जइसन कि हम पहिले चरचा कर चुकल बानीं– हमार गाँव बाहर से आके बसल लोगन के गाँव ह। पहिले एहिजा कायस्थ जमींदार लोग आइल रहे, आ अपना साथे सब जात के परजा लके आइल रहे। ऊ लोग कहवाँ से आइल रहे, ई बतावे वाला अब ओह लोगन के परिवारो में केहू नइखे। दु हिस्सा लोग त गाँव छोड़ि के बिहार आ बिहार के बाहर अलग–अलग शहरन में बस गइल बा। अब खलिहा एगो–दुगो परिवार बा, जवन कवनो ना कवनो रूप में गाँव से जुड़ल बा। एगो नौजवान मणिभूषण श्रीवास्तव बाड़न जे अपना कुनबा के लोगन के साल में एक बेर गाँव में बटोरेलन आ अउर लोगन के भी गाँव लौटे खातिर उत्साहित करेलन। हमरा गाँव में अच्छा–खासा आबादी पंडित जी लोग के बा। ओह में कुछ घर सकलद्वीपी ब्राह्मण लोग के बा, जेकर पेशा पुरोहिताई बा। एह लोग में पं० केशव पाण्डेय जी के परिवार काफी प्रतिष्ठित मानल जाला। अइसहीं कुछ घर कान्यकुब्ज ब्राह्मण लोगन के बा। एही लोगन में से एगो खूँट पं० संसारनाथ पाठक जी के रहल हा, जेकर दौहित्र हमरा गाँव के उपाध्याय परिवार के लोग हऽ। उपाध्याय जी लोगन में पं. श्रीकान्त उपाध्याय उर्फ सर्वेश्वर उपाध्याय जी एगो निष्काम आ निष्णात संगीत सेवी के रूप में आपन पहचान बना चुकल बानी। बाकी पाठक वंश में एक से बढ़ के एक गुणी आ पढ़ल–लिखल लोग भइल बा। इ पाठक जी लोग उत्तर प्रदेश के मुडाडीह (बलिया) से आके बसल बा। जहाँ तकले हमनी के यानी राजपूत परिवारन के बात बा, त हमनियो के बाहर से आके एह गाँव में बसल बानी जा। बलिया जिला, उ0प्र0 के गायघाट, रेपुरा के मूल निवासी हमनी के एह गाँव में अइला के कहानी सन् 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ल बतावल जाला। ओही घरी कुँवर सिंह के साथे हमनी के पूर्वज गंगा पार कऽ के एह जिला में आइल रहलन। जइसन कि कहल जाला, महाविद्रोह के समाप्ति के बाद ऊ दूनो–तीनो भाई एही गाँव में बस गइल होंग। देखते–देखत बीस–पच्चीस घर हो गइल बा, बाकिर अब धीरे–धीरे नौकरी चाकरी के बहाने गाँव

छूट रहल बा। हमनियो के तीनों भाई गाँव से बाहर हो गइल बानीं जा आ तीन शहर में घर बना के रहत बानीं जा। गाँव के घर में ताला लगावे के तैयारी हो रहल बा। राजपूत टोला के लगभग हरेक परिवार के मकान अब आरा शहर में बन चुकल बा।

बाकिर हमार गाँव खलिसा खालियाते नइखे। दूरा–दराज के गाँवन के लोगन में शहरी आकर्षण के चलते हमरा गाँव के सड़क किनारे के जमीन तेजी से बिक रहल बाड़ी सँ। बंजर–बलुआही जमीन जवन सात–आठ बरिस पहिले दू लाख रुपया बिगहा महँग लागत रहे, अबे पाँच से आठ लाख रुपया कट्ठा बिकाये लागल बा। कारण दुगो बा, पहिलका तऽ महुली घाट प आरा आ बलिया के जोड़े वाला गंगा नदी प बनल पीपा पुल आ दोसरका हमरा गाँव के दक्खिन से निकट भविष्य में गुजरे वाली पटना–बक्सर फोर लेन सड़क। हमार गाँव अब पक्की सड़क आ शहर जइसन विद्युत–आपूर्ति के सुविधा वाला हो गइल बा। हमनी के पढ़त रहीं जा त, बरसात के दिन में बूनी–पानी आ बाढ़ के चलते गाँव से आरा शहर काफी दूर हो जात रहे। अब ओइसन बात नइखे। मोखरा पऽ टेम्पू सुबह छः बजे से रात के आठ बजे तक खाड़ रहेलन सँ। शहर आइल–गइल अब कवनो समस्या नइखे। छोट बच्चन के स्कूल ले जाये आ ले आवे वाला बस भोरहीं से चउकठे लागत बाड़ी सँ। अतने ना, बिजली के उपलब्धता के चलते घरे–घरे मोटर लाग गइल बाड़ी सँ आ छत पर पानी के टंकी। घर–घर में बिजली–पानी के सुविधा आ आरा स्टेशन के दूरी महज आठ किलोमीटर। शहर दोसर का कहाला? इहे सम पहिले ना रहे, जवना के चलते गाँव छोड़े के परल रहे। अब जब सुविधा सम्पन्न हो गइल बा हमार गाँव, तऽ एक मन करेला कि ओहिजे लवट जइती जा। बाकिर फेर लगले ई यक्ष प्रश्न खड़ा हो जाला कि मर–जी के कसहूँ–कसहूँ बनावल आरा शहर के ई घरवा का होई? रहे वाला त एहिजो केहू नइखे! बेटा सम अपना–अपना रोजी–रोजगार खातिर– देश के अलग–अलग कोना में! तुलसी बाबा रउँ बताईं, कहाँ जाईं, का करीं? ••

वीर कुंवर सिंह नगर, कतिरा आरा, ८०२३०१

व्यंग

वाह रे पनरह अगस्त !

अजय चतुर्वेदी 'कक्का'

वाह रे पनरह अगस्त!
सिपाही वसूली में/दरोगा दारू पी के मस्त
वाह रे पनरह अगस्त !!

सेवक केहू ना, सबे हवुवे मालिक
सब, सबके मुँहें पोतत ही कालिख
देश बहरे से कम, भीतर से ज्यादा त्रस्त !
वाह रे पनरह अगस्त!!

अधिकारी सारे मद में चूर
फाइलन पर छः–छः इंची धूर
बाबू कम्प्यूटर पर, ताश खेले में मस्त !
वाह रे पनरह अगस्त !!

रोटी से अधिका, धरम पर ही ध्यान
हवाला में केहू, केहू घोटाला में परेसान
साधू अपराधी, अपराधी देशभक्त !
वाह रे पनरह अगस्त !!

अन्न नाहीं पेटे में, न देहे कपड़ा
पढ़े चले, पढ़े चले, हड़ देखीं लफड़ा
आरक्षण में केहू, त केहू हवे ध्वस्त !
वाह रे पनरह अगस्त !!

हवाईजहाज, रेल, बस सब हवे घाटे में
देश कमजोर होत हवे, बनरबाँटे में
घर–घर में रावन, राम लछिमनई से पस्त !
वाह रे पनरह अगस्त !!

••

4-सी-85, विद्युत बिहार कालोनी,
शक्तिनगर, सोनभद्र 231222

ललित–संस्मरण

बहुते इयाद आवेला गाँव

गंगा प्रसाद अरुण

एगो फुटपथिया होटल में बइठल रहलीं चाह पीये। होटल मालिक बतिआवत रहले एगो गँहकी से– 'का जी, ओह केसवा के का भइल?' – 'होखी का? कुल रफा–दफा। ओह जनानी के का भइल, पता ना।' – 'कहाँ के रह ऊ लोग?' – 'हमरे गाँव के लगे बिक्रमगंज के पास पड़रिया के।' आपन गाँव के नाँव आ घटना–संदर्भ सुन के हमार कान खड़ा हो गइल।– 'ना जी, ऊ गाँव बिक्रमगंज भीरी ना, बुढ़वल–गोड़ारी के लगे बा।' – 'रउरा नइखीं जानत, हमरे चेलिस से एक्सिडेंट भइल आ हमहीं नइखीं जानत?' – 'ऊ भिनभिनइले।' – 'महाराज, हमरे मेहरारू के एक्सिडेंट भइल आ हमहीं नइखीं जानत कि हम कवना 'पड़रिया' के हईं!'... हमरो दिल धरि गइल। तब जाके ऊ चुपइले।

बिहार के रोहतास जिला के एगो थाना हवे काराकात जवन अब 'गोड़ारी' से काम करेला। आ एही गोड़ारी के आगे 'सकला' लाइन नहर के किनारे बुढ़वल से सटले बा हमार गाँव 'पड़रिया'। जिला–जवार में 'पड़रिया' नाँव के अनेक गाँव–बस्ती, आ खाली जिले में काहे, गाज़ी–भोपाल तक – 'पड़रिया' नामधारी गाँव के अस्तित्व बा। अब हम कवनो इतिहासज्ञ त हईं ना, ना कवनो भाषा–वैज्ञानिक कि 'पड़रिया' शब्द के निखोटी–निकोटी, बाकिर बाबा राहुल सांकृत्यायन के 'बाणभट्ट' संबंधित आलेख में देवमार्कण्डेय आ जगमत के माही के चर्चा आवेला। बतावत चलीं कि 'देवमार्कण्डेय' हमरा गाँव से कोस भर पुरुब पछिलका गाँव ह, आ बीच में 'गजपत्तीपुर' नाँव से एगो सिटकउर रहे जहवाँ एगो पुरान इनार हम अपना लड़िकाई में देखले बानी। हो सकेला, जगमत के माही उहे जगह होखे, जवन कालान्तर में 'गजपत्तीपुर' हो गइल होई।

कथा पढ़ाई–लिखाई, खेल–कूद, नाटक–गवनई में अव्वल हमरा डेढ़–दू सौ घर के गाँव पड़रिया के घरे–घरे के लोग नोकिरहा रहे। आस–पास के गाँवन खातिर परतुख। गाँव से सटले बहत 'सकला' लाइन के छोटकी नहर के आखिरी फाल हहरवा पड़रिये में। आस–पास के आधा दर्जन से अधिका गाँवन के सिंचाई–पटवन खातिर करहा–भइन के व्यवस्था एहिजे से। हहरवा से गिरत पानी में उछिलत–फानत रोहू–कतला–बरारी मछरी आ बझावे खातिर लागल 'बांधी' पर लोगन के बकुलवा ध्यान। गाँव का, एक तरह से मछरमरवन के ठिकाना। नहाहूँ जाये वाला के हाथे सेर–दू सेर मछरी। लोग अबहुँओ पुल पर जयरालन, बाकिर अब ऊ बात कहाँ? बिलायती खाद के चलते रोंपा के मछरी गायब, आ बहरवाँसुत लोगन के जहाँ–तहाँ बस गइला से, गाँवे ढुँढ–ओकड़।

तब भत साल गाँवे जाये के ललक रहत रहे फगुआ–नवरात में। नौकरि लागे हमउमिरियन के संग होरी के हुड़दंग आ नाटक–गवनई के रंग। तब भाँग के जमाना रहे, एगो अइसन चिनिस, जवना के निसा कबो निसा ना गइवहावे। पूरा हास–हुलास आ मेल–मिलाप के वातावरन होलरिये के दिन से। पुरुब भ बढ़की बगइचा के खोरा में होलरी जरे आ शुरू हो जाय उहवें से हुड़दंग। फगुआ–जोगीड़ा आ भाँक–पानी के खेल। नइकी नोरी के भाँक–पानी एकरा खातिर सहायक–उत्प्रेरक।

हई लीं ना, गइल भेंड़स पाँकी में। कहत जा जेथन साह लंगोंड़ नांज दिहले कनरटोली के कुइयाँ के बजबजात गड़हा में। दोहर ओढ़ले रहले, से पूरा देहिये पर पाँकी पलस्तर अइसन चढ़ गइल। हाथ दोहर के भीतरे। समिलाते गिरावल–उठावल गइल आ अछरंग लागल बहरवाँसुत गंगे भर। एने फगुआ के जुलूस निकलल बा। सतरंगा जेहरा बनवले गरदभ पर उलटा असवार गोबिन कोन्हार गरदन में बेंगनी के ओड़िया डलले। बीच–बीच में मुखलाल भाई मुँह से 'सिस्टिन' बजावल। मुखलाल भाई के लोग 'मनिआडर' कहे, एह से ना कि उनका लगे 'मनिआडर' आवे बलुक एह से कि कवनो कारन से उनकर एगो आँख 'मनिआडर' हो गइल रहे। हुललेले, लीहा–लीही, होली ह भाई होली हऽ। अब अइसन चमत्कार बिना भंग–भवानी के! गोपीचन मास्टर नएका रूमाल में गोलिआवल भाँग बाँटत चलत बाड़न। मुफुते के माल, एगो काहे, दू गो लेवऽ! गोबिनजी के ऊ गोली कुछ जादहीं तेज–तीकछ लागल– 'ऊँ भाई, सेंउक–गोल मिरिच कुछ जादहीं पर गइल बा, हरज ना करी!' अब एह उमंग–हुड़दंग–तरंग में भला केकरा पता चलो कि गोपीचन मास्टर के रूमाली झोरी में भांग ना, विशुद्ध गोबर के गोली रहे, 'बाबा' के विशुद्ध उत्पाद अइसन।

ओने भोरनभोरे परसाद ठकुराई बिना भाँग खइले बतलल बएल अइसन फोफिआत लढ़ाँग–फढ़ाँग करत खोजत–गरिआवत पटनहिया चिट्ठी उनका लगे पहुँचावे वाला के – 'भला अइसनो लिखल–फोटो बनावल जाला!' एह गली से ओह गली डोलडिया भांजत उत्तरवारा महाला में आ ओने दखिनवारा महाला में अइसने एगो पोस्काड पहुँचावे आइल बाड़न।

ठेकमुंशी माधो सिंह। अपढ़ निरिछ ठाकुर जिंदी बेंगवावल भड़कल जइसे कुकुर के पिछाड़ी में केहु

पेटरोल' डाल दिहले होखें— 'ख़खनुआ, तनी लो अइहें त टाँगी, इनकर मुड़िये छँप दीं।' गारी बकत पाइन। सिंठी में त अइसन नाहियें सिखाव। पलामू के जंगल महाल से आ के एह पतुरिया में बसल बिरिछ ठकुराई लगे टाँगी से बड़ हथियार होइये का सकत रहे? खुराफाती लोग मुस्किआत — रस लेव।

नवछेटिहा के गोल सुमन भाई के बेल—बथानी 'पारादाइज' में — 'निमला मने आसनी पर बइठ के रंग डलवाये के बा, ना त छात्रसंघ से बाहर।' झक—झक उज्जर कुरता—पैजामा आ रंगो खाली गुलाबियें। फिर बड़की दालान पर, जहाँ से फगुआ के गोल उठे — 'बृज में हरि होरी मचाई।' समय के साथे जाने कहाँ दो बिला गइल 'पारादाइज के बड़की दालान'। गाँवे गड़बड़ा गइल। मोछ के लड़ाई—दू गो गोल। मिलावे के चक्कर में हरान—परेशान मित्र—मंडली के गाँव के फगुआ के विसर्जन हो गइल गान्ही बाबा के पनरोह में। मुस्तकीम मियाँ के दोकान के सोझा, इनाम झउतरा पर अगिला अगिला गोल ठकठेन में अड़िया गइल आ ओने दोसका गोल पीठिये पर। फिर केहू फुसफुसाइल — 'पनुक लें आई का?' आ सुनते मातिर डाँड़ में खोंसल दोलिला निकाल के भोंज दिहले रामकेला 'ठाँय'। फिर त भाग—भगदड़, मारब—फारब, गारी—गुप्ता — फगुआ ओह साल के स्वाहा।

फगुआ के बाद 'चइता' के बहार—लहार रहत रहे 'चाँटो' के परपाड तक। दू सार—तीन लर में बइठे गोल आ बीच में 4—6 गो ढोलकफाड़ लोग। जथना में सुमन भाई गजब के ठेकइया — फाटे एनकर अँगुरी फाटे भा ढोलक के छाज। आ चइता बिना जोगी—जोगिन के! अजिगर अइसन आपन टेढ़कम्मक उठ लिहलें जोगी के रूप में किरित बाबा आ गाँव के परमानेंट जोगिन गम्माह के चइत नचनिया गोसाईं बाबा, ताल टूटला पर जेकर फिरकी—चक्कर अजगुत। एक बेर गोसाईं बाबा के ना अइले, गाँवहीं के 5—6 गो नवछेटिया लुग्गा—साड़ी पहिन के घुघ तनले हाजिर। के—के रहे, पतो ना चलल। एह झुनगज्जर में कतने लोग के गोड़—जाँघ कचटाइल, त का भइल — 'आजु चइत हम गाइब हो रामा, एही ठइयाँ।'

अइसही दुर्गा पूजा में तीन—तिनिया नाटक के आयोजन। मंडप के सोझा तीन—तीन गो सनेआना आ एकरा बाद मथुरा नौटंकी के तर्ज पर बनल स्टेज। नाटक खेले के साज—सामान अपने 'छात्र—संघ' के उपराजल शादी बिआह में साटा पर नाटक खेल के — 'बबुआ हो, एह मंडली के डाँसर 'गंगवा' फ्रूल पैंट पहिर के डांस करेला— बेजोड़ गला टइस — टाँसी के जबाव ना।'

छात्र—संघ के पहल पर एगो पुस्तकालय बनावल गइल। नामकरन हमहीं कइले रहीं— 'गांधी पुस्तकालय'। निरनय भइल कि संस्कार—निर्मान खातिर भोरे—भोर सबसे पहिले जे अपना से बड़ मिले ओकरा के परनाम करे के चाहीं। अउर लोगन के कइसन रहल, पता ना, बाकिर केवाड़ी खोलते अपना मउसरा पर लउक जास केसवर दादा। —'दादा परनाम!' पहिलका दिन त तनी चकचिहइलें आ हमरा कवनो फरक ना लउकल। दोसका दिन ऊ तनिका पितपिताइलें, आ घर—भीतर चल गइलें। बाकिर तिसरका दिन त गोजी लेके खेदे दिहलें हमरा के — 'सरऊ तू हमरा के कंठआवत बाड़ऽ — कहरा से आइल बाड़ऽ! हम तोहार ससुर हईं जे रोजे पाँव लागत बाड़ऽ।' — बस, हमार हवा निकल गइल सभ्य बने के। अइसे केसवर दादा बड़ा गेआनी पुरुष रहलें आ समाज में फइलल कुरीतियन पर चोट करे वाला— केहू उनुकर बात पर धेआन देव भा ना। बोल—चाल में लोग उनका के रोअन काका बोले आ हमार रचना —'अनकर अरजन पर अगराइल। लहसत धुन—धड़ाका बोले। का—का बोली हो मोर बबवा। काका बोलें' —उनकर बात—बिचार—बेवहार पर लिखाइल।

अब एक तरह से गाँव छूटिये गइल। नीम्हा—परिछा, लाज—लेहाज, अपनइती के केहू के खेआल ना। कवो के जीयत अपना टीक—नामी के गाँव के लइकन के गोल गप्प—सापा—तिकड़म में अझुराइल। साथी—संघतिया में कुछ त मर—बिला गइलें आ कुछ आन जगहा जा बसले आ जे गाँवे रह गइल ऊ अपने दुख—दरद में। गड़—छोड़ के छाँह भर—भउजाई लोग के इयादे भर बाँच गइल बा। तबो ऊ सब जगह, जहाँ बचपन—किशोर उमिर बीतल — ननू बाबा के बाग, नथुए साधु के बगइचा, मूलचापर कोठिया बगइचा, भदूका के आम, मगतिनिया के पीपर, जयखरिया पथार के महुआ—पाते, टाँड़ी पर के बगइचा, बँसवार—तड़बाना, उत्तरवारी बगइचा—खरिहान — बहुत इयाद आवेला।

बहुत इयाद आवेला — डाला में के चइता—नाटक, चमरटोली के गोर—बाजा के मस्ती— बोलरावन, बालदेव, बालकिसुन, केलास, जगरोपन, हीरालाल आ मोतीलाल के झाँझ पहिरले झुनगज्जर नचावत— 'ननदी—भउजिया हो रामा, ओखरिया कूटे हो धान, देवर माँगे खुदिया— कि देवर माँगे खुदिया हो रामा, भसुरवा मारे हो तान' — गीत पर बीच—बीच में सिंघा बाजा के धुत—तुतू। तजिया पहलाम के दिन सुमान चाचा के गीला आँख आ दाढ़ी से टपकत लोर—बून के साथे 'मर्सिया' गावत —'अस्सलाम ऐ फातिमा, जोहरा के प्यारे अस्सलाम, सर कटाने के लिए यों कर्बला जाता रहा' — बले—बले मठमदिया हुस्से—हास्से—हुस्से के बीच तीन फुटिया 'टई

मियाँ के सिफाड़ा मँजाई।

बहुते इयाद आवेला जयरथी फूफा के हाथी–कान पूड़ी के, उनकर सोरठी–बृजभार गीत–गवनई के –"हथली–केवली हई रामा, हाँकल उड़निया हो, जदुआ में हई बेसुमार नू रे की" – उनका घोनसार के गरम–गरम चना–भूँजा के, सीवन दुसाध के राह बाबा पूजा–देवास में उनका ऊपर असवार काली–माई के भारथ माता की जै के उद्घोष, गेआनी बाबा के रखवाली–चौकसी में कल्हुआड़ी से ऊख ले भागल, चाची–भउजी के सुनसान रात के जँतसार – "छव महिनवां के लरिका अलपेंतिया हो ना, ए रामा बाबा के पोखरिया मथवा मीसे हो ना।" – राह–बाट मोहर चाचा के एक से एक 'मलगर' कथा–कहानी, – नेहान के नांव पर काव–नहर–पोखर में घंटन छपकल – बाबा के गुस्सा, माई के दुलार बहुते इयाद आवेला।

अइसे त ढेरे चरित्र बाड़न जे बार–बार चिचिआत बाड़न– हमरो के लिखऽ– हमरो बारे में लिखऽ! अब का ई संभव बा, एह छोटहन रचना में कि पीस साधु, दमरी बाबा, कवि बाबा, पीर मोहम्मद, राहीद मियाँ, शौकत भाई, रामाधार पाँडे, जमुना ओझा, मेउर चाचा, सीकर साह, मुंशी मास्टर, चनरिका मास्टर, वसई पहलवान, राम सरूप भाई, मुखा सिंह, दुलार साधु, रामदेआल मछरमरवा के साथे कुछ अउर लोगन के शामिल कइल, जेकरा साथे अनेक कथा–प्रसंग जुड़ल बा। बाकिर 'कंपटीशन' के एह जुग में गाँव के मोहड़े पर के दू एकलाते भाई लोग के पारिवारिक कंपटीशन के संक्षेप में चर्चा जरूरी बुझाता, जेकरा चलते एक जाना के परिवार में दरोगा, सिपाही, दफादार, चकुदार के भरमार त दोसरा ओर फौजदार, कलहर, वोकील, मुंसिफ, मोख्तार नामधारी फउज तइयार।

असल में गाँव में जबसे होली में भाँग के जगह दारू के पइसार भइल, गाँव के कुल्हि ताना–बाना छितरा गइल। होली–फगुआ में आये लागल सिपाही–फउज में भरती लइकन के साथे 'रम' आ एह 'रम' में अतना रमल लोग कि लाज–लेहाज के बान्ह टूट गइल। मन परेला, पहिले आस–पास के गाँवन के टोले–मुहल्ला सब गोड़ारी–सकला 'मड़ी' का ओर रूख करत रहे आ मुँहलुकाने अरे–बरे करत माहुर थइले वापस। भट्ठिये–कलाली तक सुटुकल ई जिनिस अब 'पाउच' में गाँवा–गाँई, चउक–चउराहा पर हाजिर–पिआँक लोगन के पिआस बुझावत – संख्या बढ़ावत। हमरा अबहियों हँसी छूट जाला ओह प्रसंग पर। ससुरारी गइल रहीं। साँझि खा अपना छोटका सार से साइकिल मँगलीं सकला जाय खातिर– चाह–पानी, तफरीह हो जाई– त ऊ बोल उठलें–"बेड़ इहवें मिल जाई।" हम चकचिहइलीं –"मतलब?" –"सकला पीअही खातिर नू? इहवें मिल जाई।" हमरा हँसी आ खीस दूनों बरल उनका सोच–सिआई पर। जे कुछ होखो, ऊ दिन, ऊ जगह, ऊ लोग बहुते इयाद आवेला, खासकर वो बचपन के दिन–

दिन बचपनवाँ के
दिन सुबरनवाँ के
मन भरे, हिया कलकावेला
बहुते इयाद साथी आवेला। ●●

▪ निरसा नगर, जमशेदपुर, मो. ०९२३४८७२०४१

फोटो ग्राफर, लेखक, कवि भाई लोगन से निहोरा.......

(1) फुल स्केप कागज पर साफ सुन्दर लिखावट में भा कृतीदेव 10 फॉन्ट में टाइप कराके रचना–सामग्री आ फोटोग्राफ रजि० डाक से भेजी अउर ashok.dvivedipaati@gmail.com पर मेल करीं।

(2) पत्रिका में रिपोर्ताज रपट, फीचर सामग्री भेजत खा, साथ में ओह चित्र/फोटो भेजल जाय, जवन बढ़िया आ प्रकाशन जोग होखे।

(3) पाठक भाई लोगन से विनती बा कि पत्रिका का बारे में, आपन प्रतिक्रिया/विचार भेजत खा, आपन नाम पता, पिनकोड सहित आ मोबाइल नंबर भेजीं। पता पत्रिका में छपल बा।

(4) संस्कृति–कला संबंधी आलेख बढ़िया चित्र रेखाचित्र, फोटोग्राफ के साफ प्रिन्ट–आउट का साथे भेजत खा ओकरा तथ्य–परक प्रामाणिकता के जाँच जरूर करीं। संपादक का नाँवे ईमेल पर फोटोग्राफ भेजल जा सकेला बाकि लिखित रचना के प्रिन्ट डाक/कुरियर से भेजल जरूरी बा।

(5) निजी खर्चा पर निकलेवाली आ बिना लाभ के छपेवाली अव्यावसायिक पत्रिकन के सबसे ज्यादा सहयोग ओकरा लेखक कवियन आ पाठकन से मिलेला। ई समझ के एह पत्रिका के पहिले खुद ग्राहक बनीं अउरी दुसरो के बनाईं।

कथा–संस्मरण

'ककिया' हमारा गाँव के

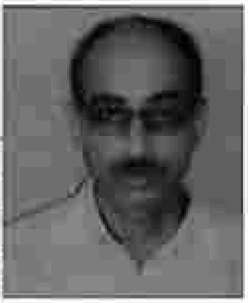

अजय कुमार

आज पूड़ी–जलेबी के फुह उड़ गइल. पूरा गाँव–जवार सभे, अंटे–पोठो खा के जी गइल, अघाये काहे ना. ककिया के कान जे रहे. उहे ककिया के जवना के जवार के, के ना चीन्हत रहे? ककिया जिनिगी भर गली–गली छिछियात रह गइल. कान–किरिया अइसन भइल जवना के केहू उमेदो ना कइले रहे। ककिया आपन उमिर पूरा कके अइन छठे के दिन सबसे लमहर जतरा पर निकल गइल रहे। ओने छठ के तउरा सजात रहे, एने ककिया के बिमान बनत रहे।

ककिया के जबले हम देखली अभावे में, ना गोड़ में एगो सुबहित चट्टी ना, जाड़ा में देह प एगो नीमन चदर–साल, बाकी एगो चीज के कमी ककिया भीरी कहियो ना रहे– ठठा के निकलत हँसी आ गारी। गारियो अइसन जवन सुने वाला के नीक लागे। लोग कही कि कहीं गारियो नीक लागेला। त हँ गारियो नीक लागेला, जे भाव में सउनाइल होखे। ककिया गाँवइल लइकन के कहीं– 'का रे नतिया, गुंडा, काहे रोअतारऽ सऽ?' त रोवत गाँवइल लइका चुप जइहें स। हम अपना होसे से ककिया के बूढ़ देखले रहीं। केश सन नीयन ऊजर, रंग धप–धप गोर, मोटा थुलथुल देह बाकी फुरती गजब के. नवो लोग के कान काटे। काका त हमरा से बड़ी दिन पहिलहीं गुजर गइल रहन। काकी उनुको के गरियावे कहे– 'का रे नतिया काहे गाँजा पियतारस?' लेकिन काका गाँजा फूँकत–घींचत साफ हो गइलन बीसो बरीस पहिले। ककिया काका के गारियो देवे आ नानो–आदर करे. जवने रहे तवने नेह से खियावे–पियावे।

ककिया के तीनगो बेटा रहइक आ तीने गो बेटी रहइक। एह वजह से बराबर अभाव रहे। तबहूँ ककिया जेने तेने से जोगाड़ कके घर चलावे। बजका बराबर बनावे। कोंहड़ा के फूल होखे भा पोय के पत्ता के बनावे। अगल–बगल के लोग–बाग बजका मांगे, मले ककिया के अपने मत मेंटो, काकी जात–परजात केहू मुँह खोल दी, तब जवने रही तवन दे दी। ना, कबो ना करी। एक बेरा त दरोगा जी तकले ककिया के बजका खाके दुपहरिया में पानी पियले रहन। कवना तरे ककिया के सब बेटा–बेटी के सादी–बियाह भऽ गइल। सब बेटी अपना घरे बसल आ बेटा लोग अपना–अपना परिवार के साथे बहरा के राह धइलन आ ककिया सही माने में अगसरुआ भ गइल। आज–काल इहे होता जहाँ बियाह भइल तहाँ परिवार लेके बहरा पराइल आ माई–बाप के तेयागल आम बात बा।

ककिया के घर के नाम पर एगो घेरा रहे, कोठरी त एक रहे लमहर ओही में रहऽ भा बनावऽ खा। ओसरा फूस के मड़ई के रहे जवने में माटी के चूल्हा बन्हले रहे। ओहिजा बराबर दू–चार गो बरतन परल रहे आ राख–माटी छितराइल रहे। धुआँ से ओकर बांस–बल्ला, मलिबथन आ कनरबल्ला तकले करिया होके मानो लोहा के भऽ गइल रहे। ककिया दिन भर जेने–तेने घूमत रहे। ओकरा गोड़ में जइसे चकरी लागल रहे।

1992 के साल रहे, हल्ला मचल कि बिहार में बटाई–बिल लागी माने जे जवन खेत जोतता ओकरे हो जाई। लागल खेत बटाईदारन से छिनाए। ढेर लोग के नया ऊपर खेती–बारी भइल। एकले एक नेही लोग बाप–दादा के खेत बचावे खातिर पार्टी में सनाए खातिर तइयार हो गइलन। बैल–बछिया त कुछो रहबे ना गइल। ट्रैक्टर के भरोसे खेती चलाइल। एने ककिया खेती नचलस। कवनो बेटा ना अइले स। कवना के फुरसत रहे कि इतिना दूर आपन रोजिगार छोड़ के खेती करावस? पाँच दू बीगहा में जवन होई तवना से बेसी त कमा लीहें स। कवनो ना जुटल। काकी के खेत जेने तेने रहे। ट्रैक्टर कम रकबा वाला खेत जोते के तइयार ना होखस। कवनो–कवनो तरे ककिया के अगात–पिछात सब खेत रोपाइल। पहिले के जवन बटाईदार रहे तवने के परिवार रोपनी–डोभनी में लागल। गरिबवा करिहें त का करिहें, कलहूँ जीये के त बा नू। ककिया पहिराव के दिन सब लोग लेखा कढ़ी–बरी बनवलक आ बँटवो कइलक। कतिना लोग ककिया प अंगुरी उठवलक कि मेहरारू होके खेत–बधारी जातिया आ खेती करत बिया। खेती में रात–बिरात ना होखे, कब खेत बोलाई केहू जाने ना। एह में कहियो छुटी ना होखे जे खेती कइलेबा, ऊ जानत बा कि खेती के का स्वाद होला। लोग कहते रह गइल, ककिया ननलस ना, एक बेरा खेती ठान लेलस त ठान लेलस, धान से गेहूँ तकले उपराज लेलस। खेसारी–मसरी तनीमनी रहइक तवन अपने से काट लेलस। फगुआ में तीनो बीर अइले, आ रकम पताई आधा से बेसी बेच–खोंच के चेटीयवले आ फिर अपना–अपना मेहरारू बाल–बच्चा लेके बहरा चल गइले। ककिया फेनु अगसरुआ भ गइल। बाकिर एगो बात भइल, जतने ककिया के लड़िका लोग से दूरी होत गइल। गाँव–घर से ओतने जुड़ाव होत गइल। केकरो घरे जाय आ कुछ काम अहाये त कर देवे, कवनो बेमरिया भा अलचाल मेहरारू के तेल मालिस कर देवे,

अतिना रसे–रसे मालिस करे कि रोगी के पूरा आराम मिल जाए आ फिर ऊ अगिला दिन बोलावे। धीरे–धीरे लोग ककिया के कुछ खिया देवे ना कुछ अन्न–पानी दे देवे। ककिया नकारे ना; ले लेवे। लरकोरी के ककिया जाके सेवा करे आ असीसे। कबो कवनो लड़िका हाेखे वाला हाेखे त ककिया असीसे कि बेटा होई आ बेटा हो जाए त बिना मंगले साड़ी–कपड़ा मिल जाये। जब कबो ककिया के माथा फेल हो जाए त ऊ सिहुआ जाए बाकी कहे कि राम इयान अबकी बेर तोंय जरूर पास हो जाई।

ककिया साले भर में कहियो कवनो पूजा पाठ ना करे, ना गंगा–अस्नान जाए, बाकी हर साल कातिकी छठ जरूर करे, गाँव–घर में भीख मांगे आ छठ भुख जाए। कहे कि बाबा के परब ह, माँग करे में कवनो सिकायत नइखे।

ककिया के जीवन अतना तरह के घटना से भरल रहे कि फिलिम नीयन सुरता परत रहेला। एक बेरा ककिया के रामवरना के मरखाही भईंस मार देले रहे। गोड़ में चोट रहइक। मचल हतिकाल, सऊँसे गाँव में। भर गाँव जुट गइल। सूअर साथ करची से कमाची बन्हले। बाकी नीके तरे सेट ना भइल आ ओतने पर गिरहा गइल। ककिया बाँवाँ गोड़ से हुचुक के चले लागल। जबले कमाची रहे तले रहे फिर लँगड़ी गोड़ लेले गाँवा–गाँवी फेनु चक्कर काटे लागल। बाबा कहस कि एकरा गोड़ में सनीचरा लागल बा। केनहूँ ठहरे ना, चलते रहेले। साँचो ककिया गाँव–जवार पैदरत चलत रहे। ककिया के जेने तेने घुमला से गाँव–जवार के सभ समाचार मिलत रहे, ककिया चलता–फिरता रेडियो रहे। केकर पतोह ससुरे प डंटा चलवले विया, एहू सभ समाचार के रिपोर्टर रहे ककिया।

एह दुनिया के गजबे दस्तूर बा। ककिया प बदचलनी के इल्जाम लागल रहे। ई इल्जाम उहे लगवले रहे, जे अपने ओही नवसा के रहे। एहनें एक जाना रहले जवन गाँव–जवार के चोरन से इयारी राखत रहन, आ जेहि–सेठी के गाय–बैल खोलवावे आ घर में चोरी–नकवारी करावे खातिर सेंकिया के काम करत रहन। अपने चोरी के इल्जाम में जेल खटले रहन आ बाद में स्वाधीनता सेनानी के पेंशन पावे लगलन। एह इल्जाम से ककिया के कवनो अंतर ना परल, अपने अछरंग लगावे वाला लोग ब मरन हो गइल।

हम इहो सुनले बानी कि ककिया 1963 के अकाल में सरकारी दरिया बनाके गाँव के सगरी गरीबनन के खियावत रहे। ककिया जरियेसे जनता–जनार्दन खातिर जियत–मरत रहे।

एक बेर का भइल कि ककिया अपना छोटका लइका भीरी पटना चल गइल। ओहिजा पानी के भारी कमी रहे। दोसरे डेरा में जगहो के कमी रहे। दू गो कोठरी के डेरा में ककिया के दम फूले लागल। पानिया होवे के परे जबकि हमनीके गाँव में पानी के कमी पिछला सब बरीस में नइखे आइल। ककिया के जेने मन तेने घुमे के ना मिले। सहर में सभे केहू दोसरा घरे ना जाला। ककिया रहल घूमल, रहले ना जाय, एने पतोह के जार! लहाय? ककिया छव गो मुंह भर देले रहे। कुटौनी–पिसौनी क के बाकी ककिया आपन पतोह प भार बन गइल। ओकरा से बरदास्त होखो? मोका पावते लपटल आ आपन राम–मड़इया में आइए के दम लेलक। फेनु कवनो बेटा भीरी कबो जाए के नाम ना लेलक। गाँव से ककिया के बड़ा प्रेम रहे। एह हवा–पानी में ना जाने कवन जादू रहे कि ककिया आवते चंगा भ गइल। ओहिजा बेमार परल रहे।

एक बेरा अइसन भइल रहे कि ककिया के तुलसी–गंगाजल पर आ गइल रहे बुझाइल कि ककिया अब बाँची ना। गाँव के लड़िका–सेयान ओकरा घरे जुटल रहन। ओकर आपन बेटा–परिवार केहू ना रहे। ककिया खातिर भर गाँव परिवार रहे। ककिया ताह दिन जी गइल, आ पूरा चेतन भइल त कहलस, कि गाँव के दुगो बड़का मलिकार लोग के भगवान भीरी तोसक–तकिया पर आराम फुरमावत देखलक। इ दुनो मलिकार पहिलहीं मर गइल रहे लोग, आ गाँव के तीन गो गरिबहा के भात–दाल बनावत देखलक। केहू पतियाइल केहू ना पतियाइल। जवन होखे राम के माया त रामे जानस। साइत ककिया के मन में बइठल कवनो पुरान भाव होखे। आठ दिन ककिया बाँच गइल रहे। बुझाइल रहे कि अबकियो बाँच जाई। भउयत के हरा दीही। बाकी ककिया अबकी हार गइल। उठल ना, परले रह गइल। अबो बुझाता जे ककिया केनहूँ से आवत खोरी में भेंटा जाई बाकी ई त एगो सपने बा। ककिया जीवन में केहू के कबो अनरुच ना मनलक। माई जब तब पुरान–धुरान साड़ी–कपड़ा दे दीही आ कबहीं डाँटियो दीही। तबो ककिया बिहाने चल आई रूसी ना। बाकी अबकी ककिया हमनी से रूस गइल। सभे के छोड़ के परा गइल। दू ठोप लोर हमरा पतल के पूड़ी पर चू गइल। ककिया के नमन। ●●

■ आनंदनगर, मोतीझील, बिपरहिया रोड,
तिवारी जी के हाता, आरा, भोजपुर

रिपोर्ताज

हमार गाँव : भँवर में नाव

भगवती प्रसाद द्विवेदी

साँझ के सहमल-सहमल गझबेर के बेरा। एने-ओने के पलानी से निकसत-पसरत धुआँ के गुबार हवा में छितरा रहल बा। चिरई आपन पाँख फड़फड़ावत रैन-बसेरा का ओर उड़ि रहल बाड़ी स। रेलगाड़ी से उतरि के हम चारू ओर आँख फाड़ि-फाड़ि के देखि रहल बानी। ना जाने काहे? हालाँकि कुछउ त नयापन नइखे इहवाँ। उहे करकट से छावल-छूपल पुरान हाल्ट स्टेशन, टूटल-फूटल दू-तीन गो बिरेंच, बरिसन से अपना दीन-दशा पर लोर टपकावत चापाकल। ठीक कुछऊ त नइखे बदलल। सभे कुछ जानल-पहिचानल, चिर-परिचित। अलबत्ता चाह-पान आ जलखावा के कुछ अउर दोकान जरूर खुलि गइल बाड़ी स। दोकानन में ढिबरी टिमटिमाए लागल बाड़ी स। लाख हाथ-पाँव मरला पर गाँव के कवनो साथी-संघतिया नइखे लउकत आ हम अब हारिके मूड़ी झटकत आपन अटैची सम्हारि के अकेलही गाँव का ओर जाए वाली रेल लाइन के बगल से निकले वाली पगडंडी पकड़ि लेत बानी।

हरेक महीना हम गाँवे जाली। गाँव के माटी के सोन्ह-सोन्ह गमक, अपना अँकवारी में बान्हे खातिर बेताब खेतन के हरियरी आ सउँसे गाँव के लोगन का संगे बाबा, काका, दादा, भइया, बबुआ-बुचिया के मीठ नेह-नाता के सनटल अटूट गठबन्हन के हम ना जाने कहे आजुओ भुला ना पाईं। तबे नू गाँव चले के तइयारी करत अछयवट बाबा के फुलवारी, ब्रह्म बाबा के स्थान, ठाकुरजी के मठिया, दल तिवारी बाबा के मन्दिर, ताल-नाला, छपर-सब कुछ अपने आप आँखिन के पलकन में समा जाला। जहवाँ के माटी में खेललीं-कूदलीं, फरलीं-फुलइलीं, शुरुआती जिनिगी के बीस बरिस गुजरलीं, ओकरा के हम कइसहीं भुला दीं? ना-ना, अइसन कबो ना हो सकेला। तबे नू लोगन के लाख कानाफूसी कइला पर, कि पता ना कवन नोकरी करेलन कि हरेक महीना आइले रहेलन, हमरा कान में जूँओ ना रेंगे।

बलिया (उत्तर प्रदेश) के पूरबी छोर पर बसल एह गाँव के नाँव जानल चाहबि रउआँ? ई गाँव ह दलछपरा, जहवाँ तीन हजार के करीब वोटर बाड़न। सात हजार आबादी वाला एह गाँव में छुटपुट पोस्टग्रेजुएट मिलिहन, दू-चार गो बहरवाँसू इंजीनियर, एगो आई.पी.एस., एगो वकील आ ढेर ग्रेजुएट... अनपढ़न आ पढ़ुआ जाहिलन के त लम्बहर फेहरिस्त बा। अब ले इहवाँ के डॉक्टर एकहू नइखन। हँ, इहवाँ के झोरा छाप डाक्टर अपना तजुर्बा का आधार पर दवाई देके मनमाना रुपया अईठेलन। बेमारी ठीक होखे ना मत होखो, ओकरा बलाइ से! दलछपरा आ रेवती नाँव के दूगो रेल टीसन का बीचे बसल एह गाँव से उहाँ के दूरी एक मील आ एक कोस बा। गाँव से शहर के मिलावे वाली ऊबड़-खाबड़ काम चलाऊ सड़क जरूर बिया, बाकिर आवे-जाए खातिर सवारी के कवनो इंतजाम ना। पइसा वाला लोग भलहीं भाड़ा पर गाड़ी मँगा लेसु, बाकिर आजुओ इहवाँ के गरीब रोगी के चार जाना के कान्ह के बोझा बनिके खटिया पर सुताके ना असवारी में बइठाके अपना लाचारी पर टिसुना चुआवत शहर के ओर दवा-बीरो करावे खातिर ले जात देखि सकीले। कई जाना त रहते में दम तूरि देलन। का रउवाँ आजाद भारत के एह तस्वीर के तरफ गौर फरमवले बानी?

ई गाँव श्रीनगर गाँव-सभा में आवेला। आजादी का बाद से लेके अब ले खाली एक बेर (पिछिला हाली), जब गाँव के सभ केहू मिलिके जोर लगवले रहे, एगो महिला परधान चुनाइल रहली, बाकिर नए काम करसु परधान-पुत्तर। गाँव के तमाम लोफरन-वाल्याजन के चेला-चपाटी राखिके आँगन दान बटोरलन आ गाँव के लोगन के ठेंगा देखवलन। नतीजा ई भइल कि अबकी बेर के परधानी के चुनाव में सउँसे गाँव ठेंगा देखा दिहल। केहू त चारू खाने चित हो गइलन। चारू जवानिए में जिनिगी-नैया डुबा दिहलस।

गाँव के प्राइमरी स्कूल के पुरान भवन छोड़िके ओही हाता में नया आलीशान भवन बनल बा, बाकिर पढ़वइया नदारद! नए लरिका-लरिकी जालन स, पब्लिक स्कूल में पढ़े खातिर, जहवाँ देखाऊ ठाट के ढाल (पंप एंड शो) लेखा पढ़ाई का अलावा सभ कुछ होला। माई-बाप ई सोचिके छाती चाकर करेलन कि बबुआ अँगरेजी स्कूल में पढ़िके नाँव चमका रहल बा।

रहते में मिलोहन भाई भेंटा जात बाड़न। हम गाँव के नवहिन के पढ़ाई-लिखाई के चरचा चला देत बानी। ऊ ओही पर हाथ फेरत कहत बाड़न, 'पढ़ाई-लिखाई से भला का होखे-जाए के बा, चूबे जी। सेना के देना त भरि जात बा। दमोदरे माई के देखीं। गहना बेंचिके, खेत बन्हकी धऽ के बेचारू बेटा के पढ़वले-लिखवले, बाकिर जब कमाए लागल त मेहरारू-लरिका के लेके शहरे में जाके बसि गइल। बाप-महतारी से अब कवनो मतलबे ना रहि गइल। बुढ़ारी में दर-दर के ठोकर त खात बाड़न। आखिर का पवलन ऊ? भूख, लाचारी, अभाव आ बेबसी-बस इहे नू! एह से नीमन बा कि बेटा के अनपढ़ राखऽ! गाँवे रहिके माई-बाप के सेवा त करी नू।'

हमार मुँह अचरज से खुलि जात बा। कइसन नजरिया बा इनकर। चलते–चलत अब गाँव के चरचा हो रहल बा। सब जवर झगड़ा–झंझट, मारपीट, छतिया, बन्हिकार से जुड़ल बाड़ी स। फलाना कमासुत भाई, खेती में भिड़ल बड़ भाई के अलगा कऽ दिहलस, त फलाना चाचा–भतीजा में कपरफोरउवल हो गइल। फलाना के बेटी के फलाना के बेटा भगाके ना जाने कहवाँ ले गइल, त फलाना फलाना के कतल कऽ के खेतवारी हदपि लिहलन। भाई–भाई के झगड़ा, सास–पतोह के झगड़ा, चाचा–भतीजा के लफड़ा, मरद–मेहरारू के मारपीट आ मोकदिमा। इहवाँ जे जतने ढेर मोकदिमा लड़ेला, ऊ ओतने बड़ आदमी ह। वाह रे बड़प्पन के नाप–जोख! दलितन के हालत बद से बत्तर होत जा रहल बा। बाभन भलहीं भूखे मु जइहें, बाकिर हर के मूठ ना धरिहन। भलहीं खेत–बारी, घर–दुआर बेचि दीहन, बाकिर अतना बड़ बेइज्जती वाला काम करिहन भला?

मिलाटन भाई बतावत बाड़न कि कइसे बहुरी गाँव के नवहिन के आदत लगावे खातिर पाउच वाला दारू के दोकान खोललन आ घरे–घरे दारू पियनिहारन के जमात ठाढ़ कऽ दिहलन। अपने त दारू पियत काल के गाल में समाइए गइलन, आगा–पाछा कतने लोगन के लेले गइलन। आजुओ उनकर मेहरारू–लरिका ओह परिपाटी के आगा बढ़ावत बाड़न स। दारू आ गुटका के पाउच जिन्दाबाद!

मिलाटन भाई बतावत बाड़न कि पिछिला महीना में दल तिवारी बाबा किहाँ कतना बढ़िया जगि भइल रहे आ ओह में दूर–दूर के ढेर संत–महातमा पहुँचल रहलन। जगि के नाँव पर हमरा दिमाग में नाचे लागत बा जवार के गोन्हिया छपरा में लागे वाला धनुखजगि मेला, जहवाँ सुनामी संत सुदिष्ट बाबा धनुस के जगि (यज्ञ) करावत रहलीं आ उहवाँ नामी–गिरामी संतन के समागम–परवचन चलत रहे। उहवाँ उमड़ल भीड़ के जिलेबी–तरकारी खात देखिके मन अघा जात रहे। सुदिष्ट बाबा के नाँव इयाद आवते ओह इलाका के कुकुरिया बाबा, तियागी बाबा, पगला बाबा, सेनराम बाबा वगैरह कई गो बाबा लोग दिमाग में नाचे लागत बा।

अब हमनी के गाँव के छवर से होके गुजरत बानी जा। चाकर छवर आ सड़क पगडंडी बनि चुकल बा। नए बगइचा खेत में बदलि गइलन स। एगो परिवार दस हिस्सा में बँटा चुकल बा। खेत, जवन पहिले बिगहा में बखरा में परत रहे, अब कट्ठा में लटकल बा। लोगो ओइसने बँटाइल–बँटाइल मिलिहन। बाबा–काका, भइया–भउजी का जगहा तिवारीजी, पाँडेजी, यादवजी के रूप में एक–दोसरा से भेंट करत, बतिआवत। इहवाँ ई सहरी मानसिकता आ औपचारिकता कहवाँ से आ गइल? कहवाँ चरा गइल मिल्लत आ भाईचारा? सभ–के–सभ एक–दोसरा के गिला–सिकाइत आ मुँहदेखल बतिआवे वाला! हँ, किसिम–किसिम के मोबाइल से बतकुचन करेवाला, सहरियावार बाइकवालन के त बाते कुछ आउर बा!

गली से होके जइसहीं आगा बढ़त बानी, एगो लरिकी अपना पापा से कहत बिया– 'पापा, एगो झंडा बना दऽ ना!', 'झंडा का करबे बुचिया?' 'काल्ह पनरह अगस्त हऽ नू!' 'हूँ! हम एगो गहिर साँस खींचिके छोड़त बानी।'

हँ, त काल्ह पनरह अगस्त ह। एहू गाँव में प्रभातफेरी होई, महातमा गान्धी के जै–जैकार आ 'पनरह अगस्त–जिन्दाबाद' के नारा से गाँव गुंजायमान हो उठी। कुछ नवही रेलगाड़ियो में घुमिहन स, काहेंकि उन्हनी के नजर में आजादी का दिने गाड़ी के किराया महसूल माफ रहेला। स्कूलन में झंडा फहरावल जाई। मिठाई बँटाई, छुट्टी होई आ आजादी के एगो आउर साल बीति जाई। एने गाँव में फेरु बरखा होई, बाढ़ आई, फसल बहिहन स। लेखपाल से लेके परधान, तहसीलदार, जिलाधीस ले राहत काम के नाँव पर बहत गंगा में हाथ धोवत आपन–आपन हाथ साफ करिहन। खेती करे वाला आपन सब कुछ लुटाके दाना–दाना खातिर तरसिहन। ओने पाउच के पियनिहार बढ़ी, नवही जमिके सराबोर होइहन स, झगड़ा–झंझट, मारपीट होई, खून–कतल आ मर–मोकदिमा होई। सउँसे गाँव अभाव के अन्हार में डूबि जाई। रोगी डॉक्टर किहाँ पहुँचे का पहिलहीं दम तूरि दिहन स। ओने, उद्घाटन होई, धुआँधार भासन होई। बापू के रामराज के सपना के साकार करे खातिर फेरु गाँव के खुसहाली बदे नयकी योजना बनिहन स, अरबो के वारा–न्यारा होई आ आजाद देस के एगो आउर नया आजादी के साल के सुरुआत होई। पंचाइतीराज के गुन–महातम के बखान होत रही, आ परधान–मए मेम्बर मिलिके गँवई विकास के जोजनन के रकम, जनता के आँखिन में धूरि झोंकि के हजम करत चमक–दमक लेआवल जाई। नया–नया लोकलुभावन सपनन के सिरिजना आ परचार बेशुमार होत रही। गाँव के बदहाली में अउर इजाफा होत जाई– 'मर्ज बढ़ता ही गया, ज्यों–ज्यों दवा की'!

बाकिर पहिले अइसन बदहाली कबो ना रहे। हालाँकि आर्थिक लहजा से लोग मालदार बनल बा, चकिया डिजाइनदार मकानन में मनरंजन के संसाधन के कमी नइखे, बाकिर तबो केहू के चेहरा पर संतोष आ खुसहाली नजर नइखे आवत। वजह ई बा कि सामाजिक सरोकार आ सामूहिकता से जिए के सूर–सहूर खतम हो गइल बा। गाँव समाज के गैर

नजरूआ जमीन पर उनकन के कब्जा बा। आजुओ इहवाँ 'जेकर लाठी, ओकर भैंस' के कहावत सोझे चरितारथ होला। नतीजतन, लरिकन के खेले–कूदे खातिर ना त कवनो मएदान रहि गइल बा, ना कवनो सार्वजनिक जगह अब सार्वजनिक बाँचल बा। तनी–तनी सवारथ खातिर मार–कटउवारी आ मर–मोकदिमन के अनगिनत जाल में अझुरा के लोग एक–दोसरा के जानी दुस्मन बनि गइल बा। निजी लाभ–लोभ के बेगर ना केहू का केहू से मिल्लत, ना कवनो भाईचारा।

कबो जनकल्यानकारी आ चमत्कारी ब्रह्म दलतिपारी बाबा के नाँव पर बसल दलछपरा सामाजिक समरसता आ एकता के मिसाल रहे। इहवाँ स्थापित नवयुवक मंगल दल के नवही कार्यकर्ता पुस्तकालय चलावसु, रात भर खेत–बधार में पहरा देसु आ गीत–गवनई के माफत सबका के जोड़ले राखसु। हरेक जाति–बिरादरी से चुनाइल पंच लोग बड़हन से बड़हन ममिला के गाँव के बइठकी में सझुरा–सुलझा देत रहे आ नाहक थाना–कचहरी में चक्कर लगावे के दरकारे ना परत रहे। ओह घरी सही माने में कृषि संस्कृति रहे आ सबका दुआर पर चरन–नाँद का लगे ठाढ़ बैल–गाय–भईंस के देखिके मुरझाइलो मन हरियरा जात रहे, काहे कि माले–मवेशियन से खेत–बधार गहगहात रहे, आ गाँव में दूध–दही के पवनार लागल रहे। रोज भोर के बेरा ढिबरी–लमटेन जरा के एने लरिका आपन पाठ रटसु, ओने सानी–पानी गोताइल नाँद में नाक–मुँह डुबवले मवेशियन के गरदन के बान्हल घंटी टुनटुनाए लागे। इनार–कुइयाँ में बाल्टी डुबाके पानी भरे के आवाज से एगो अलगे किसिम के संगीत गूँजे लागत रहे। हरेक साल इनारन के जब उड़ाह होखे लागे, त मेला नियर नजमा लागि जात रहे। अतना शीतल आ मीठ पानी होत रहे ओह इनारन के कि मुँह में गुर डालि के लोटा से पानी पियत हमनी के मन गुनगुना उठत रहे– 'अहा! ग्राम्य जीवन भी क्या है, क्यों न इसे सबका मन चाहे!'

गंगा आ सरजू नदी का बीच के दोआब में बसल हमरा गाँव में पहिले साले–साल बाढ़ि आवत रहे। तब ले नदियन पर बान्ह बान्हिके सहज बहाव के बान्हे के गुस्ताखी ना कइल गइल रहे। बाढ़ि आवे त सउँसे खेत–बधार, गाँव–जवार डूबि जात रहे। बाकिर फेरु बेगर कृत्रिम खाद–पानी के अइसन बरियार पैदावार होखे कि घर–दुआर के मए बखार सोना–चानी मतिन अनाज से भरि जाइ। अखि–धान छोड़िके कुल्हि अनाज होत रहे– गोहूँ–बूँट, तीसी–तेलहन, रहर–मसुरी–मटर से लेके जनेरा–जोन्हरी, साँवा–टाँगुन, कोदो, मूँग–उरिद, खेसारी ले। सबका खरिहान में बोझा सजात रहे, फेरु बैलन से दाँह दवाँत रहे आ अनाज–भूसा के छल्ली लागि जात रहे। दँवरी–ओसावन बनिहारन के भरोसे ना, अपना खानदान के पर–पट्टीदारन के आपुसी सहजोग से होखे। दुपहरिया–साँझ खा भोज होखे आ रात में गवनई। सबके साझा अभियान में आनन्द के रसधार बहत रहे। इहे हाल कवनो काज–परोजन, बियाह–मरन के बेरि देखे के मिलत रहे। गोहूँ के पिसला से लेके आटा, बेसन, सातू, उरिद पिसला ले, बजार–हाट से लेके मेहमानन के स्वागत–सत्कार आ बिदाई ले गाँव के लोग एक गोड़ पर ठाढ़ रहत रहे। बरतन–बासन, खटिया–खटोली, बिछवना–ओढ़ना भाड़ा पर ना, हरेक घर से दरियादिली से आ जात रहे। सुख–दुख में कान्ह से कान्ह मिलाके सभ केहुए ठाढ़ मिलत रहे। पढ़ल–लिखल लोग भलहीं कम रहे, बाकिर ओह लोगन के तजुर्बा, परदुखकातरता आ निश्छल सामाजिक सरोकार अभिभूत कइला बेगर ना रहत रहे। आजु ई सवाल बेरि–बेरि कपार पटकत बा कि ई तथाकथित पढ़ाई हमनी के अतना सवारथी आ संस्कारहीन कइसे बना दिहलस?

गाँव का बीचे एगो सीताकुंड रहे, जवन गाँव के पूरबी आ पछिमी टोला में बाँटत रहे। अब उहवाँ सड़क बनि गइल बा। सीताकुंड के दखिनवारी, नहाए–धोए वालन से गोरूनाल धोवेवालन के ताँता लागल रहत रहे। बड़का कुंड, जवन अब गाँव के रहि गइल बा, से पच्छिम मशहूर कोलनाला बा, जवना के पानी कबो ना सूखे। ओह पर बनल रेलपटरी जब सन् बेयालिस के बाढ़ि में बहि गइल रहे, तब रेल महकमा फेरु से रेल पटरी बिछावे खातिर सिक्कड़ गिरा के थाह लिहल चहलस, बाकिर थाह ना भेंटाइल आ तब उहाँ से तनिखुन हटिके पुल पर रेललाइन बिछावल गइल रहे।

गाँव के उत्तर झरकटहीं में फगुनी सिरात का दिने मेला लागत रहे। सतुआनी आ रामनवमी में घरभरन बाबा अउर मचरूआ देवी किहाँ लागे वाला मेलन में खूब जुटान होत रहे, जहवाँ लोक संस्कृति के जियतार झाँकी देखते बनत रहे। एही सिलसिला में खियाल परत बा कि लरिकाई में हमनी के प्राइमरी स्कूल पर दुर्गा पूजा में दुर्गा जी के मूरती राखल शुरू कइले रहली जा, जवना में हफ्ता भर रोज खुद के लिखल नाटक मंचित करीं जा, सांस्कृतिक कार्यक्रम होखे आ दूर–दूर से लोग देखे–सुने आवत रहे। अब त कई जगहा दुर्गाजी रखाली, बाकिर उहवाँ सांस्कृतिक कार्यक्रम, नाटक ना, रात–रात भर फिलिम देखावल जाला आ दिन में किसिम–किसिम के अश्लील गीत बजावल जाला।

पहिले, गाँव में पिकार पर बाजार हावी ना भइल रहे। नीमन लोग के तारीफ होखे, त जबून लोग के

निठो खुलिके होत रहे। जब हमनी के लइका रहली जा, त गाँव के चार–पाँच जाना गाँजा–भाँग के सेवन करसु। ओह लोग पर एगो गाना बनावल गइल आ जगह–जगह ओकरा के गावल जाए लागल। गाना में पाँचो जाना के नाँव सामिल कइल गइल रहे–

मदन तिवारी, बीसा दूब अउर बितन, मस्तनवा
चारो जाना एक साथ लट साहेब के मकनवा
कइलन गाँजा के जुटनवा, ओरे दिनवा से!

एही तरे जब ताड़ी के खुमारी चढ़ल त मदन पीए लगलें ताड़ी, कइसे संपरी के सुर तेज होखे लागल। ओह बखत समाज में बुराई प्रतिष्ठित ना भइल रहे। एह से गलत करम करे वाला सीना तान के ना चलि पावत रहे आ सही आदमी के समाज में इज्जत–मान मिलत रहे। ओकर मिसाल रहनी बड़का मंटी जी, पं. राम प्रसाद पाण्डेय जी। ऊहाँ के लाजिमिगी गाँव के प्राइमरी स्कूल के हेडमास्टर रहनी आ हरेक घर के कई–कई पीढ़ियन के पढ़वले रहनी। खुद हमरो उहाँ के आदर्श शिक्षक रहनी आ हमरा बाबुओ जी के। पढ़ाई अइसे जइसे रसगर कथा कहत होई। जब ले उहाँ के रहनी, गाँव के कवनो–ना–कवनो होनहार लरिका वजीफा जरूर पावत रहे। उहाँ के गरमी के छुट्टी में एक कोस पएदल आके तय्यारी करवाईं आ पाँचवाँ किलास के लरिका के एह किसिम से पढ़ाईं कि आठवाँ दरजा तक के सवाल ऊ हल करे लागे। बहुत बूढ़ हो गइला पर रेवती से जब एक कोस चले में दिक्कत होखे लागल, त बाबूजी उहाँ के तबादला रेवतिए के एगो स्कूल में करा दिहलन। बाकिर खबर पावते उहाँ के खिसिया के एह ढंग से आग–बबूला हो गइनी कि बाबूजी के माफी माँगत ट्रांसफर रोकवावे के परि गइल।

अइसहीं, गाँव के मठिया के एगो संत रहनी– रामनगीना दास। उहाँ के ना सिरिफ ढहल–ढिमिलाइल मठिया के अपने हाथे जीर्णोद्धार कइनी, बलुक राजस्थान से एक से बढ़िके एक मिस्त्री ले आके मठिया के कायापलट क दिहनी। हरेक साल सावन में झूलन होखे, किसन जन्माष्टमी पर राधा–किसुन के सउँसे गाँव घुमावल जाउ, कबो हरिकीर्तन होखे, त कबो गीत–गवनई। महराज जी बड़ा चमत्कारी पुरुष रहनी। बेमारी–हेमारी आ ऊपरवार में धियान कऽके भभूत दे दीं आ मरीज भला–चंगा हो जाउ। जबले उहाँ के जियनी, मठिया में साधु–महातमा आ मरद–मेहरारू के जमघट लागते रहि गइल। मठिया तब हरदम गह–गह करत रहे। लोगन के उहाँ में आस्था–विस्वास जे अटूट रहे।

गाँव में गीत–गवनई के बड़ा निठाह मंडली रहे, जवना में मंगल मिसिर, घनस्याम मिसिर, परसुराम तिवारी, मथुरा प्रसाद तिवारी, शिवनारायण तिवारी आ बलिराम शर्मा के नाँव आदर का संगे लियात रहे। कबो रमायन होखे त कबो नेहिनी (सुगम संगीत)। चइत में चइता आ फागुन में फगुआ के त बाते दीगर रहे। बसंत पंचमिए के ताल ठोका जात रहे आ फेरु डेढ़ महीना होरी के बहार। फगुआ का दिन त का ठाट, का बढ़, मठिया से फगुआ गवाइल शुरू होत रहे आ सभकरा घरे–दुआरे फगुआ गावत सदा आनन्द रहे एहि द्वारे के शुभकामना जरूर दियात रहे। अब त मन के पिचुकारी में रंगे नइखे, हिरदय रसहीन हो गइल बा। फेरु का फगुआ, का होरी! रीत गइल मन के पिचुकार, रस–रंग कहवाँ बाटे?

आजु साहित्य–संस्कृति से जुड़ल किछु शख्सियत सुरता पर चढ़त बाड़ी स। पहिलका नाँव बा पुनरलोक परसुराम तिवारी के। उहाँ के नाता में हमार बाबा लागत रहनी। अध्यात्मिक, जीवन दरसन आ सांस्कृतिक सरोकार उहाँ के गीतन में साफ झलकत रहे। हर महीना जब हम गाँवे पहुँची, उहाँ के खबर पावते अपना दुआर पर एगो कवि–गोष्ठी राखि देत रहनी। पहिलकी बेर त कई गो सुननिहारन के अचरज भइल रहे कि ई कइसन गवनई, जवना में ना झाल–ढोलक, ना तबले–हरमुनिया। बाकिर आस्ते–आस्ते लोगन के रस मिले लागल रहे। बाबा बच्चन जी के बहुते कवितन के कंठस्थ कऽ लेले रहनी आ बच्चनजी के प्रेरना से उहाँ के कविताई शुरू कइले रहनी। उहाँ के दिली ख्वाहिश रहे कि उहाँ के गीत–संग्रह छपि जाउ, बाकिर लरिका लोग सहजोगी रुख ना अपनावल। उहाँ के अतना नेह–छोह दी कि उहाँ के निधन हमरा खातिर व्यक्तिगत छति रहे।

गुप्तेश्वर नाथ द्विवेदी के व्यक्तित्वो किछु ओइसने रहे। उहाँ के हमार चाचा लागीं। अपना जबाना के उहाँ के गणित टॉपर रहनी। खड़गपुर इंजीनियरिंग कालेज में प्राध्यापकी कइनी, बाकिर आपातकाल में नोकरी छोड़िके अपना ससुरारी नैनीताल से एगो हिंदी पत्र अर्गला के प्रकाशन शुरू कइनी, हमरो से खूब लिखवयनी, बाकिर आगा चलिके पत्र बंद भइला पर गाँवे आके लगातार संघर्ष करत एह मायावी दुनिया से कूच कऽ गइनी। उहाँ के पांडुलिपि धइल के धइल रहि गइल।

वामपंथी सोच के भइया काशीनाथ तिवारी बड़ा जीवट के क्रांतिकारी कवि रहलन। कवियर हरिहर ओझा तरुण से उनुकर मिताई रहे। गाँव के कमजोर तबका के एगो औरत के जब ओकरा हक से बेदखल कइल गइल, त ऊ ओकरा खातिर जीवन–जान से मोकदिमा लड़लन आ जायज हक दियवाइए के

दन लिहलन। उनुकर कविता जनचेतना जगावे के उतजोग से लिखात रहली स। ऊ अकसरहा कहसु– '/जिन्दगी–मौत में बस फरक है यही/एक सुबह की किरण, एक किरण शाम की/।' असमय गुजरि गइला का बाद उन्हुको लिखल रचना रद्दी में बिका गइली स। गाँव के पं. शिवकुमार पाण्डेय जी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से पढ़ाई पूरा कऽ के मध्य प्रदेश के शासकीय सेवा में जनजातीय जिनिगी के शोध से जुड़ि गइनी आ आदिम जाति के जीवन संघर्ष, रूढ़ि, प्रथा, बदलत तेवर पर कहानी, उपन्यास का रूप में उहाँ के आधा दर्जन किताब चरचा में बाड़ी स। उहाँ के भोपाले में बसि गइनी आ गाँव के मकान भाई लोग के बेवहार से खंडहर में बदलि गइल। बाकिर आजुओ गाँव के इयाद उहाँ के बेचैन कइले रहेला आ गाँव के सुमिरत एगो आत्म कथात्मक उपन्यासो उहाँ के सिरिजि रहल बानी।

एह विभूतियन के ना रहला से गाँव हमरा के काटे धावेला। पहिले जब जाईं त मथुरा बाबा का सँगे साँझि खा टहरत बजारे जरूर जात रहनीं, बाकिर उहाँ के अब चले–फिरे में दिक्कत महसूस होला, एह से कष्ट दिहल ना चाहीं। बाकिर उहाँ के उलाहना भरल सुर में कहेनीं कि हम काहें गाँव से उदासीन होत जात बानी। अब हम रउआँ से का बताईं बाबा! रउआँ त गीत–संगीत के जियतार शख्सियत हईं। महेन्दर मिसिर के भक्ति–अध्यात्म, निरगुन के गवइया हईं रउआँ! बाकिर बताईं, छल–परपंच, सियासी दाँव पेच आ जहर–कडुवाहट से भरल हमरा गाँव के विखियर लोगन में का इचिकियो मनुजता बाँचल बा? का ई चलत–फिरत लोथ ना हईं स? अइसन लागत बा जइसे गाँ मरि चुकल बा, लोग–बाग मरि गइल बा। जहवाँ लोक संस्कृति आ संस्कार ना, उहवाँ जिनिगी के का मोल? नाप भँवर में जाके फँसि गइल बिया। हम घवाहिल मन आ बेचैन तन से अपना हेराइल गाँव के तलाशत अपने गीत दोहरावे लागत बानी–

'आँखिन में सूखि गइल सपन के समुंदर
सावन के भइल फीलपाँव,
गली–गली, डगर–डगर जोहत बा मिरिगा–मन
कहाँ हेराइल आपन गाँव?
ले भागल के चोराइ नयना के पानी
झपटि लिहल के नए हुलास?
चेहरा पर जानि गइल झुर्रियन के झुरमुट
हम काहें तूरत हर साँस?
अनगिनत बेवाइ ओठ पर कइसे फाटल
झुलसावे गाँछियन के छाँव।
कहाँ गइल कान्हा आ गोपियन के मीठ रास
कहाँ गइल बंसी के तान
माटी के सउँसे पहिचान लीलि घललस
बेजान पका के मकान।
आपन बा सभे, मगर बाँचल ना अपनापन
रिसे नए रिश्तन के घाव।
सुनुगत बा हाड़–माँस, सुनुगेले जिनिगी
सुनुगे–धनके, जरेला लोग,
खेतन में हरियरी आ ओठ फेंफरियाइल
बिधना, ई कइसन संजोग!
उगिलेले माटी से सोना–रूपा धरती
लाँगट नाचे तबो अभाव।
कहाँ गइल फागुनी फुहार ऊ रंगीला
गइल कहाँ चइता के टेर?
के बना दिहल पनघट के मरघट जइसन
मउराइल नेह के कनेर।
परिपाटिन के पुरान पाल उड़ि गइल कब
डगमगा रहल भँवर में नाव।
गली–गली, डगर–डकर जोहत बा मिरिगा–मन
कहाँ हेराइल आपन गाँव?' ••

▪ शकुंतला भवन, सीताशरण लेन, मीठापुर, पटना

हमार गाँव : लहुरी दिल्ली

✍ कृष्ण कुमार

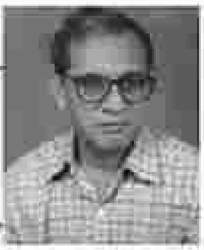

कहानी, उपन्यास, कविता, संस्मरण, लेख, समीक्षा प ढेर कलम दउरवला के बादो करेजा में एगो हूक हमेशा उठत रहे कि अबहीं तक अपना गांव के बारे में मन से कुछुओ ना लिख पवनी। अपना गांव में जनम लेनी,खेलनी–धुपनी, खेलनी–कूदनी, पढ़नी–लिखनी, ऊ गाँव हमरा कलम से कइसे छूटि गइल..! पीछे पाती अंक 79–80, मार्च 2016 कुरियर से मिलल। ओह सुघर पत्रिका के पृष्ठ 60 पर एगो विज्ञप्ति लउकल। अगिला अंक : 'हमार गाँव' प विशेषांक। फूला ना समइनी। गदगद हो गइनी। लिखाई के मारे सिकाइत टूटल। मन–मिजाज कुलाचे मारे लागल। गांव के भुअला–जीअला सब लोगन के चलती सिनेमा के रील लेखा हमरा नजरी के सोझा दउरे लागल।

आखिर का कहीं करम के बात, गदहा उलटि के मरलस लात। अबहीं गांव के लोगन के मनसउदा मन में चलते रहे कि 12 अप्रैल 2016 के सांझि के बेरा तीन बज के पांच मिनट पर जुलुमी बेयार बहि गइल। घरनी गुजरि गइली। 'ओह दिन बहि गइले जुलुमि बेयरिया हो, डार–पात गइले उजराई हो रामजिया।' अबके में अइसन हउवा। जिनिगी से मोह भंग हो गइल। मिल–मिल जनता नियति बने लागल। सीधा मझधार में हमरा के छोड़ि के चल गइली। कसहूँ अपना के बटोरनी तब ई लेख लिखे के हिम्मत कइनी।

नाक करीं। थोरे थहकि गइनी। परिस्थिति पड़का देखलसि। बिहार के भोजपुर जिला आ सहपुर थाना के दखिनी छोर के बियाबान में बसल, आखिरी गाँव बराढ़ी। बोलचाल में हमरा गाँव के नाव लोग भदवर–बराढ़ी कहेला। रघुनाथपुर रेलवे स्टेशन से चार कोस दखिन आ बाबू कुँवर सिंह के जगदीशपुर से, तीन कोस सोझ पच्छिम। राजपूत आ जादव बहुल, बाकिर सभ जाति के गाँव। सब जाति के आपन–आपन टोली बा– सिंघ टोली, मुसटोली, चमरटोली, दुसधटोली, ललटोली, अहिरटोली, पठुआन टोली, बाभन टोली। पूरा गांव में अइसन कवनो लोग ना, जेकरा सर–सम्हुल करे के टोकरा परइवे, ना त छोट–बड़ हर ओकात–बात के लोग बाड़े। हर जाति के बोल–चाल एक बरोबर। एह से हमरा गाँव में बड़कवा–छोटकवा वाली सोच नइखे। आजु से अंदाजन पचास पचपन बरिस पहिले हमार पड़ोसिया स्व० रामअवतार साहु हमरा के हमरा गाँव पर एगो कविता लिखवले रहीं–

'चाल में चलुली, कर्ते चोहरा, तब जनमले नखुन लोहरा।
नखुन लोहरा गढ़ले पत्थर-पोरी, तब जनमले चरित्तर तेली।
चरित्तर तेली पुनवले जाँढ़, उनकर लड़का तीन सौ साठ।
उहे लड़कवा भसल काउआ, तब जनमले नारायन नउआ।
नारायन नउआ चढ़ल ओसारा, तब जनमले हनुमान दास।
हनुमान दास ओढ़ले कमरिआ, तब जनमले सिआली कहँरिआ।
सिआली कहँरिआ कोअले पनिआ, तब जनमले हो फातू बनिआ।
फातू बनिआ पोसले मुनिआ, तब
जनमले हो मोहरम धुनिआ।
मोहरम धुनिआ चढ़वले तांत,
फुना मोदर के दू बेकत में एके आँख।'

आपन हाथ से कुल काने वाला कवनो जाति ना। हमरा गाँव के इतिहास इहे पढ़ल बा। आजु जाति के लड़ाई आसमान छूवले बा। एहवास्ते आ हाईटेक भइला के बादो, लोग बेटा–बेटी के बिआह का चुनाव के बेरा आपन जाति पहिले खोजेला। एह खाज–खेवाई के दवाई बने में अबहीं देरी बा। एह से हमरा आपन जाति बिना बतवले आगे बढ़े में दिक्कत बुझाता। एकइस गो मिलि के एगो चुरई काढ़े वाला जाति...। ओह...। ना बुझनी! तऽ हम खोलि के बतावतानी। हमरा गाँव के लोग हमरा जाति के लालाजी, श्रीवास्तव जी, कायथ जी, मुंशी जी, देवान जी, पटवारी जी कहेला। कलम चलावे वाला जाति। बहुत चतुर आ विश्वासघात। हमरा जाति प ढेर कहाउत लोग कहेला। 'कायथ बुझाला त अनकर खाला', 'कायथ के आधा ओदर खाय...। कहो ना...।', 'कायथ के गोदगाव, राजपूत के हल्ला। भुमिहार के चुप–चाप, बाढ़ में बुझाला', 'कायथ के पढ़ावल, गदुआ के लदावल, सरदार के पिआवल मरद के पीठी केहु धूर ना लगा पावे'। हमरा इयाद बा। हमार बाबूजी गांव में पटवारी के काम करत रहीं। जवार–पथार के गांवन के लोग उहाँ लगे हमेशा जुटल रहत रहन। जानजानी, बेटी के बिआह आ जगह–जमीन के खरीद–बिक्री बुभा–चारी कइल जाला। जवनो मलिका पढ़ाके हमरा बाबूजी से अगर मामा ई कहि देसु, 'लाली जी ई मलिका केहु से कहवे मति।' तऽ समझीं कि पातर कल्यान हो गइल। ओह होखला पऽ बाबूजी बिना दाम बोलवले ना मानत रहीं। ओकर नतीजा ई होत रहे कि हमरा दुआर पर ओके बाबूजी के तील–मीट सुनावे लागसु। हमरा से जतना पार लागे लोगन से मीठ–मीठबानी करत रहीं आ तब इहो कहत रहीं हनका से आपन रेहन–बई के कागज मति लिखवाईं सभे। बाकिर, हमरा गाँवो के लोग कम धंधर ना रहलें। अढ़ि–बढ़ि के हमरा बाबूजी से कागज लिखवावत रहे लोग। कारन ई रहे कि बाबूजी के कलम में दम रहे। बड़ा चोखगर कागज लिखत रहीं।

समय करवट बदललसि। नोकरी के चलते गाँव छोड़वलसि। ओइसे गाँव छोड़े के ढेर कारन रहे। मसलन, दूरी, समय, छुट्टी, खरच आ विपरित परिस्थितियन से बचल रहे के सुविधा। हालांकि जब बाबूजी के चिट्ठी पतरी गाँव से आवत रहे त ओह दिन मन अधिका बोझिल हो जात रहे। ओह में गाँव के सगरो दुखल रहत रहे। घर के बतकहि में माई के दुखलका हाथ के दरद, दवा–दारू के खरच, ढबोरी के बीआ, खाद, पटवन, फसल के मोबारी होखल,

पेल के तरल, गाई के डिसुखल, भतीजी के बात लेखा पड़ल आ अंत में सनातन एक बात से कि कुछ दिनन खातिर माई के अपने पास शहर में राखि के इलाज करावऽ। हमार हाथ बड़ा तंग बा के अलावा कवनो नया बात ना होत रहे। आखिर ऊ सब बात हमरा खातिर रस्ताल–वैराग्य जइसन होत रहे, थोरकी देर बाद तीन–तेरह के बजार में जाने कहाँ काफूर हो जात रहे। आखिर बाबूजी–माई के सुनले घर–दुआर 'गैल बटे सन्नाटा' हो गइल। हालानि में रात खा साँढ़, भइंसा, गदहा बरधर लेले सऽ आ दिन में तास–खेलाड़ी लोग के जमघट लागे लागल। एगो गनेश भगवान के बड़का मंदिर हमरा घर के सटले बा। गांव के मरद–मेहरारू पूजा–पाठ करे खातिर रोजे–रोज जुटेले। तास–खेलाड़ी लोग के चलते ओह लोग के मंदिर में ढुके के बहुत सकेताह बुझाला। मेहरारू गारी–शाप करत बुदबुदा ली सन। बाकिर तास–खेलाड़ी लोग प एकर कवनो प्रभाव ना पड़ेला। एकदमे बजर बेहाया। हमार सँघतिया आ खेत–बारी घर–दुआर के मैनेजर मदन साहु कई एक बेर हमरा से कहले, "चली गाँवे आ तास के खेल अपना दुआर पऽ से हटवा दीं। रउरा अरनी के तबियत एही से खराब रहऽता। जेकरा दुआर पर तास होला, ओकर नाश होखे लागेला। रउआ बात समझीं...!"

हम एक लाइन में उनका के जवाब देत रहीं, "कतनो तेल लोटवऽ बाकिर कुकुर के पोंछि कबो सोझ ना होई। हमरा एक दिन के डाँटला–डपटला से दुआर पऽ के तासबाजी ना रूकी। ओकरा खातिर गेंदुर मारि के गाँवे बइठे के परी। एह से ई काम हमरा से कबो पार ना लागी।"

हमार धरनी गुजरि गइली। हम एकरा के विधि के विधान मानत बानीं। होनी बड़ा प्रबल होला। जब उनका बेमारी में तास के खेल ना रोक पवनी त अब का...?

हमार घर बीच गाँव में बा। चौमुहान पऽ। हम गिन के चारि घर लालाजी एके जगह बसल बानी जा। अबरूआ जाति। गांव के शराबी लोग के मड़ाल हमनिन के चौमुहाने पऽ निकलेला। शराब पीके लोग भट्ठी से निकलिहें त ढलुके बोला–चाला में। बाकिर हमनिन के चौमुहान प आवते खुल जाले। पहिले त ललकारे जेकरा से मुंहा–ठोंठी भइल रहेला, ओकर उघटा–पुरान बेटी–रोटी करेले। आ आखिर में सँउसे गाँव के नरिआवत, लाठी पटकत घरे जाले। हमरा गाँव के सबसे बड़ खूबी ई बा कि चाहे बाबू साहेब होखसु चाहे मुलहर जी होखसु, जे पी लेला ऊ महाराज हो जाला। एकदमे छुट्टा साँढ़। ओकरा पीठि प केहु के हाथ धरे के हिम्मत ना पड़े। दुई चोकटा मांस रहऽ, एक गिलास रवसी लागे मांस के दू गो टुकड़ा, आ एक गिलास शराब, जइसे नेपाली भाई लोग के मिल जाला तऽ उनका दोसर कवनो चीज के जरूरी ना बुझाला, ओइ हाल हमरा गांव के रहे। लोग मांस आ शराब के आपन जन्मसिद्ध अधिकार बुझत रहन। तब एगो कहाव जवार–पथार में कहात रहे– "सूरज अस्त, बराढ़ी मस्त...।" एहजा हम अपना प्रदेश के मुख्यमंत्री के औचित्य बधाई आ धन्यवाद देत बानीं जे हमरा गाँव के लोगन के शराब के गड़हा में लोघाह मारे से बचा लिहनी। बाकिर हे आदि–ताडि त हम चाले–चाल। शराब छोड़ि के लोग भांग, गांजा, छिपकिली जरा के पीअत बाड़े। अगर ईहो सब बन्द हो जाइत त हमार गाँव बिलकुल सदसत हो जाइत।

अंग्रेज हमार गांव 'बराढ़ी' के नाम अंग्रेजी में 'BARARHI' लिखले सऽ। जवना के लोग भोजपुरी में 'बड़ारही' कहेले। हमरा गाँव के लोग भेड़, बछुला, फगुआ, ढ़ू–गोला रामायन, आन गाँव से जीत के अइला प एह बात के दोहरावेले, बड़ा रही। बाकिर हालता के बसकही मत पूछीं, "अजाइल लइका होड़ी होवे। जवार–पथार के गाँवन के अनेकों जान मरउवल के कहानी हम जानऽतानी। खून के बदला खून। ई सिलसिला आजुओ जारी बा। बाकिर बराढ़ी एह सब से अछूता बा। हमरा होश में हमरा गाँव के सात आदमी के मारा–मारी जान मराइल। बाकिर प्रतिशोध वाली बलकही हम कबो ना देखनी। जे मरइले से तोड़इले। बात आगा ना बढ़ल। खून के बदला खून से केहु ना लिहल। आपुस में कतना लोग के दिवानी–फौजदारी के कई गो मोकदमा चलऽता। बाकिर नोंका–चूर प नेवता–हँकारी, खान–पीआन नइखे बंद भइल। काज–परोजन के बेरा बड़–जेठ, गोतिया–देयाद के गोड़ पऽ गमछा धऽ के समाधन करे वाली परम्परा आजुओ हमरा गाँवे चलऽता। हुक्का–पानी बन्द नइखे भइल। आपुसी मेल–मिलाप देखि के बरबस हमरो मुँह से निकल जाला– 'बराढ़ी ना, बड़ा रही...।'

बराढ़ी, बाजा–बाला के राज से नाच–गाना के सौकीन रहल बा। बीस बिगहा नम टोनरा वेदी के, नथुनी पालवान रंगदारी कइलें। उनका दुआर पऽ एगो–दूगो तवायफ आजुओ बाटी सऽ। नाच मंडली चलावेले। शाहाबाद जिला के ओइसन कवनो सुन्दर–सुभेख नर्तकी बाँचल होइहें, जे उनका नाच मंडली में ना नचले होइहें। जिला–जवार में विवाह गुमइला पऽ बंगाल से जाके नर्तकी नचवले बाड़ी। बराढ़ी के गाँधीजी मिश बंगाल चम्पियन ठेकड़या रहनी। बाकिर घर साल ऊहाँ के गुजरि जाये से, हमार गाँव दुजर हो गइल। ओइसे सीताराम सिंह, त्रिलोकी सिंह, हरदेव सिंह, सिंगासन भारद्वाजो ढोलिया ढोलक बजावत रहनी। बाकिर गाँधी जी के जोड़ देवे वाला सउँसे कलकत्ता में केहु ना रहे। ऊहाँ के अपना एह कला के बल प गाव–जवार के अनेक लोगन के रोजी–रोटी दिअवले बानी। पाठक जी लालके परिवार में एगो 'भाई जी' रहनीं। गोर–नार, बहुत सुन्दर, नाटा कद–काठी के आदमी रहीं। दूनों कान प झलेली के फूल धइले गांव में निकलत रहीं। आगा के दूनो दांत में सोना मढ़वले रहीं। जवानिये में ऊहाँ के धरनी गुजरि गइली। कवनो बाल–बच्चा ऊहाँ के देहीं से ना रहे। अकेला देहिं पऽ दस बिगहा टोमरा। ना सनलें। गांवहीं के

एगो गुलदार रहन। ऊ बढ़िया नाचत रहन। उनका ऊ जेंचि गइलें। उनके साथे भाई जी जिनिगी गुजार देनी। सभ खालि गइले, गोतिआ ना जइलें। सभ टोनत ओकरा नांवे लिख के मुअलें। ऊ साँचो के नाच रहे। एक बेर के बात हऽ। नाच में भाई जी के तानानी में ओकर नाच होत रहे। हमहूँ पहुँचल रहनी। ओकरा प्रसिद्ध गीत के बोल रहे, 'लोहवा में मनिया डहुए, मउनी में अठनिआ, मनिया नीली भाई जी। राउर चरन दबाइबि, पनिया पी ली भाई जी।' इहे गीत गावत चाल तनले जब ऊ नाचत भाई जी ओरे लपकल त बुझाइल कि महफिल में हलफा कहरि जाई। भाई जी कहनी, 'सरला लालटेन तेज कल...!' भाई जी के जिम्मेदारी में हमरा गाँव के सरल साहु हमेशा उहाँ के साथे रहत रहन। नाच में कबो नाच होखे, लालटेन के लाफ कम ऊ के सरल साहु, भाई जी बगले में धइले रहत रहन। जब नाच चाल तानि के भाईजी के ओहाये, सरल साहु लालटेन के लाफ तेज कऽ के चाल के बढ़न्ती से अँजोर करत रहन। इहे उनकर डिउटी रहे। ओहू दिन सरल साहु लालटेन के लाफ तेज क के चाल के नियरा ले गइले, तले केहू मजाक में कहि देल, 'भाई जी लालटेन के सीसा फूटल।' भाई जी ओकरा के जवाब देनी, 'फूटे दऽ, तोहरा बाप के ना हऽ...' तले दोसर कवनो कुरकुक दोसर बोलबाजी कऽ देलस, 'जा हो बाबा, खलिहा बोरा से जेंवा के मुअऽ...।' रंग में भंग हो गइल। भाई जी बाँस पीसत पैजामा से बहरी हो गइनी, आ सभ नचदेखुआ लोग के अँगुठा देखावत कहनी, 'का लोग, देखऽ कदहर। सरल, साज-बाज बटोरि के ले चलऽ उपर के कोठरी में...।' नाच बन्द हो गइल। हमनिन के जस्सआइल मीठा लेखा मुँह लटकवले घरे अइनी जा।

जइसे चोली बिना दामन, घोटाला बिना नेता, कमीशन बिना मुआवजा, गारी बिना पुलिस के कल्पना नइखे कइल जा सकत, ओसहीं चाचवाला दीदी के बिना बनाही के अख्यान अधूरा रही जाई। चाचवाला दीदी हमरा गाँव के एकलौती बेटी हई। आपन पाँच गो बेटा आ दू गो बेटिन के पलन से पढ़वली-लिखवली। सभ लोग के आपके बना के बढ़िया-बढ़िया जगहा धरवली। दुर्भाग्यवस तीसरी पतोह भरल जवानी में गुलनार हो गइल। अबहीं दू गो छोट बेटा कुँआर रहन सऽ। दूनो सेटल। एगो स्कूल में प्राचार्य आ दोसर बैंक में पी०ओ०। दुआर पऽ अगुअन के अरसथका। जेकर बेटा आजु सरकारी नोकरी में आ गइल, ओकर बात पूछे के का? ओकर दर खुल डांकआ। बेटन के बिआह खातिर अगुअन से भरल लोग के बलकही दुआर प रोजे-रोजे जारी रहे। जब अगुआ आवे सऽ चाचवाला दीदी के देहि में आग लागि जात रहे। उनकर बी०पी०, सुगर दूनो बढ़ि जात रहे। गेंथे-गेंथे बेटन से बलकहीं शुरू कइली। बड़ा रगर कइला के बाद अंत दाव में एगो बेटा ओह गुलनार पतोह से बिआह करे के राजी भइल। तब पूरा पाँचि के अपना सयान के सोझा एक दिन गहुँमन सांप लेखा उतर कहली चाचवाला दीदी, 'ई कबो ना होई कि एगो विधवा पतोह घर में बइठली आ एगो नया पतोह अंगना में आके चमकाई। हम आपन जान दे देबि, बाकिर ई काम कबो ना होखे देबि...।' आखिर में उंट पहाड़ से उतरल। चाचवाला दीदी के सोझा उनका सयान के झुकिआवे के परल।

हमरा खुशी एह बात के बा कि हमरा गाँव के मिडिल स्कूल, हाईस्कूल में प्रोमोट हो जाये से, बेटी-पतोह मैट्रिक तक के शिक्षा गाँवहीं में ले ले तारी। ना त पहिले पैंचवें पास कऽ के ससुरइतिन हो जात रही। दोसरा गाँव में बेटिन के मैट्रिक उच्च शिक्षा दिआवे के पक्ष में हमरा गाँव के लोग ना रहन।

हमरा दुख एह बात के बा कि बिआह भइला के दस साल के बादो हमरा गाँव के सभ नियोजित शिक्षिका बेटी अपना ससुरारी के ना हो सकली सऽ। दरअसल 2006 में आरक्षण के चलते हमरा गाँव के दर्जनो बेटी अपना पंचायत आ प्रखण्ड में नियोजित शिक्षिका भइली सऽ। ओह घरी ऊ कुँवारी रही सऽ। बाद में ओहनिन के बिआह अपने जिला भा दोसरा जिला में भइल। बाकिर तबादला के नियम ना होखे के चलते ढेर समस्यन के सामना करत ऊ नइहरे में रहि के अपना स्कूल में पढ़ावतारी सऽ। अब त बिना मुख्यमंत्री के दखल के तबादला नीति ना बन पाई। नीति बनला के बादे हमरा गाँव के बेटी ससुरइतिन बनिहें सऽ...।

गाँव हऽ से गढ़ हऽ। एगो छोटी-मुटी लेख में संउँसे गाँव के समेटल पत्थर पऽ दूब जमावला लेखा बुझाला। एने घरनी के बिछुड़ला के घाव मन के घेरवले बा। एह से उनका पऽ कुछ कहि के पटाइल चाहत बानी।

ई, तऽ मरे से चारि दिन पहिले घरनी अन्न-दवाई खाइल एकदम छोड़ि देली। गाँव-घर, हीत-नाता, संघतिया सबका के खबर कइनी, 'आईं सभे, घरनी के मुँहवा देख लिआ गइल बा। गाँव से लेके शहर तक के लोग आवे शुरू कइलें। भरी लाग गइल। हम देखनी, जे आवे से चम्मच से तुलसी-गंगाजल पिआवे आ पाँचि-दस रोपेया उनका खोइछा में डालत जा। उनकर तकलीफ देख होखे से हमहूँ भगवान से अरज करत रहीं, 'हे भगवान, इनका के अब मुक्ति दीं। अब इनका से बरदास्त नइखे होत। अब माटी उठा लीं...।'

आखिर दाव में हमरा गाँव से आइल मदन साहुजी के हाथे तुलसी-गंगाजल पिअते, ऊ हमरा के छोड़ि के अकेला उड़ि गइली। हमरो मुँह से अरबसे निकल गइल, 'आह रे, हमरा गाँव के साहु जी...।' ••

महावीर स्थान के निकट, करमन टोला,
आरा, बिहार, मो. ०९४३१०६८००५

उपलब्धि

'भोजपुरी' का संवर्द्धन में 'विश्व भोजपुरी सम्मेलन' के ऐतिहासिक योगदान

जगदीश नारायण उपाध्याय

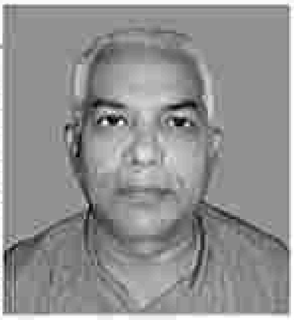

'विश्व भोजपुरी सम्मेलन' भोजपुरी भाषा, साहित्य, कला, संस्कृति के प्रचार प्रसार, संरक्षण आ बढ़ावा देवे खातिर गठित भइल। एकरा जरिये 1995 में देवरिया (भारत), 2000 में मोका (मारीशस) 2003 में कोलकाता (भारत) 2009 में पोर्ट लुई (मारीशस) में विश्व स्तरीय सम्मेलन आयोजित भइल। राष्ट्रीय अधिवेशन 1996 में पटना, 1997 में नई दिल्ली, 1998 में भोपाल, 2000 में अंधेरी मुम्बई, 2001 में भिलाई, 2004 में नागपुर, 2006 में थाणे (महाराष्ट्र) 2007 में वाराणसी, 2010 में आगरा आ 2011 ऋषिकेश (उत्तराखंड) में आयोजित भइल। अन्तरराष्ट्रीय अध्यक्ष सतीश त्रिपाठी, राष्ट्रीय अध्यक्ष (स्व0) परमहंस त्रिपाठी, महासचिव डा0 अरुणेश नीरन आ साथे सचिव डा0 अशोक द्विवेदी (आयोजन) जगदीश नारायण उपाध्याय (कार्या0) अनिरुद्ध त्रिपाठी 'अशेष' (संगठन) कुलदीप श्रीवास्तव (सूचना–प्रसार) सहयोगी रहे लोग। सात गो उपाध्यक्ष प्रादेशिक स्तर पर चुनाइल गइल रहे लोग। राष्ट्रीय इकाई के कार्यालय 4/26, न्यू कालोनी देवरिया उ0प्र0 में खुलल रहे। वर्ष 2010 में सतीश त्रिपाठी जी राष्ट्रीय अध्यक्ष के कार्यभार सँभलनी।

सम्मेलन के मुखपत्र 'समकालीन भोजपुरी साहित्य' (तिमाही) के अब तक बत्तीस गो स्तरीय अंक प्रकाशित कइला का अलावे विश्व भोजपुरी सम्मेलन, 'भोजपुरी–हिन्दी शब्दकोश', डा0 रामदेव शुक्ल के उपन्यास 'ग्रामदेवता' आ 'हमार गाँव' नाँव के संस्मरण प्रकाशित कइलस। भोजपुरी लोकगीतन के चार खण्ड आडियो–कैसेट (जीवन–चक्र, ऋतुचक्र, श्रमचक्र आ भक्ति–चक्र तइयार कइल गइल)।

विश्व भोजपुरी सम्मेलन के प्रस्ताव आ सहजोग से भोजपुरी भाषा के अध्ययन–शोध आ संरक्षन जइसन अउर महत्वपूर्ण काम भइल बा। क्रमशः (1) काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में 'भोजपुरी अध्ययन एवं शोध–केन्द्र' के स्थापना (2) साहित्य अकादमी में भोजपुरी साहित्यकारन पचास हजार रुपया के 'भाषा सम्मान' के प्रस्ताव जयना के चलते अब तक परीक्षण मिश्र, मोती बी0ए0, आ हरिराम द्विवेदी के सम्मान मिलल (3) महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय में 'भारतीय प्रवासी केन्द्र' के स्थापना (4) पोर्ट लुई मारीशस में 'इण्डियन डायसपोरा सेन्टर' के स्थापना (5) उ0प्र0 के पूर्वी क्षेत्र का विश्वविद्यालय में बी0ए0, एम0ए0 के पाठ्यक्रम में भोजपुरी अध्ययन–अध्यापन के शुरूआत। (6) विभिन्न भारतीय विश्वविद्यालयन में लोक साहित्य आ भोजपुरी–साहित्य पर शोध कार्य में 100 छात्रन के सहयोग। विश्व भोजपुरी सम्मेलन के अन्तरराष्ट्रीय आ राष्ट्रीय सम्मेलन में, मुख्य अतिथि, सभाध्यक्ष अउरी विशिष्ट अतिथि का रूप में भारत के महामहिम राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, राज्यपाल आ मुख्यमंत्री लोग भागीदारी से भोजपुरी भाषा–समाज के सम्मान आ गरिमा बढ़ल। साहित्य, कला, संगीत, पत्रकारिता, समाज आ फिल्मजगत सेवा से जुड़ल कई नामचीन हस्तियन के सहयोग मिलल। अधिवेशन आ सम्मेलन के अन्य आयोजनन में भागीदारी करे वाला मुख्य अतिथि आ विशिष्ट अतिथियन के ब्योरा गौर करे जोग बा।–

मुख्यअतिथि आ सभाध्यक्ष

डा0 शंकर दयाल शर्मा (माननीय राष्ट्रपति (तत्कालीन) भारत सरकार)
डा0 कासिम उत्तिम (राष्ट्रपति, मारीशस)
श्री चन्द्रशेखर (पूर्व प्रधानमंत्री, भारत सरकार)
श्री वी0पी0 सिंह (पूर्व प्रधानमंत्री, भारत सरकार)
श्री पाल बरांजे (उप प्रधानमंत्री, मारीशस)
श्री एस0 आर0 किदवई (राज्यपाल, बिहार)
श्री रोमेश भण्डारी (राज्यपाल, उत्तरप्रदेश)
न्यायमूर्ति प्रभाशंकर मिश्र (मा0 मुख्य न्यायाधीश, उच्चतम न्यायलय, तमिलनाडु)
न्यायमूर्ति के0 एन0 सिंह (मुख्य न्यायाधीश उच्चतम न्यायालय भारत)
श्री मोतीलाल वोरा (मा0 राज्यपाल, उ0प्र0)
श्री महावीर प्रसाद (मा0 राज्यपाल, मध्यप्रदेश)
श्री मुहम्मद शफी कुरैशी (मा0 राज्यपाल, मध्यप्रदेश)
श्री दिनेश नन्दन सहाय (मा0 राज्यपाल, छत्तीसगढ़)
श्री वीरेन जे0 शाह (मा0 राज्यपाल, प0 बंगाल)
श्री अजीत जोगी (मा0 मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़)
श्री नारायण दत्त तिवारी (पूर्व मुख्यमंत्री, उ0प्र0)

विशिष्ट अतिथि

सर्वश्री नौशाद, ए0के0 हंगल, शत्रुघ्न सिन्हा, सुजीत कुमार, राकेश पाण्डेय, डा0 कपिला वात्स्यायन, संगीतकार श्रवण, अभिनेता कुणाल, अनूप घोषाल, सौमित्र चटर्जी, डा0 विद्या निवास मिश्र, डा0 पंजाब सिंह (कुलपति बी0एच0यू0), डा0 मैनेजर पाण्डेय, डा0 केदारनाथ सिंह, मंगेश पडगावकर आदि।

सम्मेलन के विभिन्न अधिवेशनन में 1995 से 2011 तक बारह गो सुप्रसिद्ध साहित्यकारन आ बारह गो लोकप्रिय गायक कलाकारन के 'सेतु सम्मान' आ 'भिखारी ठाकुर सम्मान' से सम्मानित कइल गइल।

29/09/2026, 16:56 Paati-81 (September 2016)

(भोजपुरी भुइं रतनगर्भा हवे। सन्त, महात्मा, विचारक, भाषाविज्ञानी, गणितज्ञ, संगीतज्ञ, साहित्यकार, पत्रकार, वीर सैनिकन आ राजनेतन के जनम-करम के भूमि आ भोजपुरी क्षेत्र का गौरव आ गरिमा के देस-बिदेस जनले-पहिचनले बा। छपरा, आरा, सीवान, बक्सर, गाजीपुर, मऊ, देवरिया, गोरखपुर के दिल का रूप में धुकधुकाए वाला जिला बलिया त, महर्षि भृगु बाबा, गर्ग, गौतम आ दर्दर जइसन मुनियन के तपोपूत धरती हवे। मंगल पांडे का जरिये आजादी के बिगुल बजावे आ चित्तू पांडेय आदि का जरिये, आजादी के – घोषणा आ पहिल झंडा फहरावे के सौभाग वाला ई जनपद कला, संस्कृति, साहित्य, विज्ञान, कृषि आ राजनीतिक अगुवाई का दिसाई अपना सतत् कर्म आ निष्ठा से कीर्ति-अरजन कइले बा।

राष्ट्र का निर्माण में अपना प्रतिभा, ज्ञान, कौशल आ निष्ठा से योगदान देवे वाला एह जनपद के, प्रतिभाशाली, विद्वान, संस्कृतिकर्मी, वैज्ञानिक, अर्थशास्त्री, प्रशासनिक अधिकारी आ अकादमिक लोगन का बारे में, भोजपुरियन के जाने के चाहीं-खास कर ओह लोगन का बारे में, जेकरा अपना भूमि, भाषा आ समाज से जुड़ाव आ आत्मीयता बनल बा। हम अपना एह विचार के ध्यान में राखत, एह नया स्तम्भ में एही माटी के महक का रूप में भोजपुरिया गाँव-जवार से अपना प्रतिभा आ मेहनत से आगा बढ़ल कुछ खास लोगन के परिचय दे रहल बानी – संपादक)

व्यक्ति विशेष/सतीश त्रिपाठी

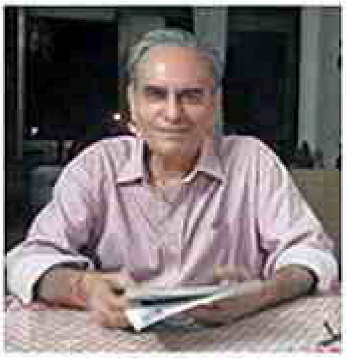

सतीश त्रिपाठी

संक्षिप्त परिचय :-

जन्म : 01 अप्रैल 1949
मोहलिया धमैर (भागलपुर), जनपद-देवरिया (उ०प्र०)

शिक्षा : कलकत्ता विश्वविद्यालय से, एम० एस-सी० (भौतिकी)

सेवा : 1972 बैच के आई०ए०एस० अधिकारी, महाराष्ट्रा सरकार के प्रमुख प्रशासनिक पदन पर दक्षता से काम करत, अति० मुख्य सचिव पद से दिसं० 2008 में सेवानिवृति।

अन्य समाजिक दायित्व आ कार्य :-

- अध्यक्ष-संस्थापक, 'सिकंदर अली वज्द' मेमोरियल ट्रस्ट, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
- अध्यक्ष, सेतु चैरिटेबुल ट्रस्ट, मुम्बई
- अध्यक्ष, अंतरराष्ट्रीय/राष्ट्रीय 'विश्व भोजपुरी सम्मेलन'
- अध्यक्ष, डा0 राममनोहर लोहिया सेवा एवं अध्ययन केन्द्र (भागलपुर, देवरिया)
- महामहिम राष्ट्रपति महोदय द्वारा "National Harmony Award" -2006

(1) महिला सशक्तीकरण आ बाल विकास खातिर कम्यूनिटी डेवलपमेन्ट, प्रशिक्षण, स्वयं–सहायता समूहन के गठन
(2) ग्रामीण क्षेत्र (भागलपुर, देवरिया) में निःशुल्क शिक्षा खातिर बालिका–विद्यालय (तकनीकी) गर्ल्स कालेज के स्थापना
(3) महिला उत्थान आ स्व–उद्यम खातिर सिलाई–कढ़ाई प्रशिक्षण केन्द्र के स्थापना
(4) युवा उत्थान खातिर तकनीकी प्रशिक्षण
(5) ग्रामीण स्वास्थ्य–सहायता का रूप में 'डा0 राममनोहर लोहिया सेवा संस्थान द्वारा 5000 से अधिक लोगन के निःशुल्क मोतियाबिन्द के आपरेशन
(6) क्षेत्रीय भाषा के उन्नयन खातिर प्रयास आ योगदान

file:///media/om/Rathod/pdffiles/Paati-PDF/paati-com/Paati81-images/Paati81-01.htm 53/109

अपना माटी आ मातृभाषा से अटूट आत्मिक लगाव राखे वाला श्री सतीश त्रिपाठी जी के भोजपुरी भाषा-समाज, साहित्य, कला आ संस्कृति के संरक्षन-संवर्द्धन में अप्रतिम योगदान बा। भोजपुरी के राष्ट्रीय/अन्तरराष्ट्रीय पद-प्रतिष्ठा दियवावे खातिर उहाँ के निष्ठा भरल उतजोग आ योगदान के भुलावल ना जा सके। "विश्व भोजपुरी सम्मेलन" के १९९५ से लेके आज तक के भइल चउदह गो अंतरराष्ट्रीय/राष्ट्रीय अधिवेशन एह बात के प्रमान बा।

श्री सतीश त्रिपाठी जी फरवरी २००० में सम्मेलन के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष के पदभार सँभरलीं। इहाँ का प्रेरना आ सहयोग से 'भोजपुरी भाषा' के राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय पहिचान आ सम्मान दियावे के राह आसान भइल। भोजपुरी साहित्य, कला आ संस्कृतिकर्मियन के मान प्रतिष्ठा बढ़ल। भोजपुरी से जुड़ल "सेतु सम्मान" आ "भिखारी ठाकुर सम्मान योजना का जरिये अब तक १२ भोजपुरी साहित्यकारन आ १२ भोजपुरी कलाकारन के ई प्रतिष्ठित सम्मान दिहल गइल। त्रिपाठी जी सेवानिवृत भइलो के बाद अपना समाजिक कार्यक्रमन से भोजपुरियन के नाँव उजियार कर रहल बाड़न।

विश्व भोजपुरी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष से वार्ता करत संपादक 'पाती' डा० अशोक द्विवेदी

व्यक्ति विशेष/श्रीमती अर्चना रामासुन्दरम्

संक्षिप्त परिचय :-

जन्म : 01 अक्टूबर 1957
कोट मझरिया, बलिया (उ०प्र०)

शिक्षा : राजस्थान विश्वविद्यालय से एम०ए० (अर्थशास्त्र)

सेवा : 1982 बैच के आई०पी०एस० (तमिलनाडु कैडर), वर्तमान महानिदेशक, सशस्त्र सीमा बल (केन्द्रीय)

पूर्वांचल उत्तर–प्रदेश के सबसे अंतिम जिला – बलिया का कोट मझरिया गाँव के बेटी श्रीमती अर्चना रामासुन्दरम् एघरी सशस्त्र (अर्द्धसैनिक) सीमाबल के महानिदेशक बाड़ी। उनके भारत–नेपाल–भूटान सीमा के रक्षा करे वाला सशस्त्र सीमाबल के जिम्मेदारी सउँपल गइल बा। एगो महिला का रूप में एह बड़हन दायित्व के निर्वाह कठिन बा, बाकि अपना प्रतिभा, लगन आ असाधारण मेहनत से ई मुकाम हासिल करे वाली एह बेटी पर जिला–जवार का साथ–साथ भोजपुरिया समाज के गर्व जरूर होई। एह दिसाई अर्चना मिश्र से श्रीमती अर्चना रामासुन्दरम् के परिचय, प्रेरणापरक एह मायने में बा, काहे कि एह धरती के जनमल, कतने बेटी चमकत सितारा बने खातिर प्रयत्नशील बाड़ी।

अर्चना जी के जनम 1957 में, उनका नानाजी स्व० बलराम पाण्डेय किहाँ (दिल्ली) भइल। इनकर पिताजी श्री कामता प्रसाद मिश्र, राजस्थान का न्यायिक सेवा में, जज रहले। अब ऊ रिटायर हो चुकल बाड़े। इनकर माता जी श्रीमती भानो मिश्रा, जिनकर गाँव बलिया के लछुमनछपरा में रहे, पढ़ल–लिखल रहली। संस्कृत से एम०ए० श्रीमती भानो मिश्रा के संरक्षन आ संस्कार अर्चना जी के प्रतिभा के ऊपर निखरलस। पिताजी का राजस्थान में रहला का कारन अर्चना जी के शिक्षा–दीक्षा राजस्थाने में भइल। अर्चना जी आ उनकर माता–पिता सब दिल्ली में रहेला बाकि ओह लोगन के अपना माटी आ भाषा समाज से आत्मीय भाव अबहियों बनल बा। अर्चना जी के बड़का काका श्री हनुमान मिश्र गाँवे रहेले आ अर्चना जी के बहुत मानेले।

अर्चना जी बचपने से पढ़े में तेज आ प्रतिभा संपन्न रहली। 'होनहार बीरवान के होत चीकने पात...' समय अइला पर चरितार्थ भइल। अर्थशास्त्र में, सर्वोच्च अंक से परास्नातक भइला का बाद अर्चना जी, विश्वविद्यालय में प्रवक्ता रहली। भारतीय पुलिस सेवा का तमिलनाडु कैडर में, 1980 बैच में अधिकारी भइली आ 1982 में राष्ट्रीय पुलिस एकेडमी, हैदराबाद से प्रशिक्षण लिहला का बाद ऊ कोयम्बटूर, मदुराइ आ सलेम जिलन में सहायक पुलिस अधीक्षक पद पर काम कइली। पदोन्नति का बाद पुलिस अधीक्षक का रूप में नीलगिरी में आ ए०आई०जी० हेडक्वार्टर में तकनीकी सेवा में रहली। 1989 में ऊ बरिस के अवकाश लेके साउथ कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय लास एन्जेल्स (अमेरिका) से 'अपराध विज्ञान' में पी०जी० डिग्री पवली। परीक्षा में सर्वोच्च औसत ग्रेड हासिल कइला का कारन इनके अंतर्राष्ट्रीय छात्रा का रूप में चुनल गइल।

स्वदेश लौटला का बाद, श्रीमती अर्चना रामासुन्दरम् के वेल्लूर प्रक्षेत्र के निषेध–प्रवर्त्तन दस्ता के पुलिस अधीक्षक बनावल गइल। मारावियन आ मद्य निषेध ना माने वालन का खिलाफ कठोर कार्यवाही में दक्षता के देख के, चेन्नई में इनके सतर्कता आ भ्रष्टाचार निरोध के पुलिस अधीक्षक बनावल गइल। सन् 1995 में ई पुलिस उप महानिरीक्षक पर प्रोन्नति पाइ के वेल्लूर महानिरीक्षक मुख्यालय में काम कइली। 1999 में केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो, नई दिल्ली में, प्रतिनियुक्ति पर उप महानिरीक्षक के कार्यभार पवली। अपना कुशल कार्यप्रणाली का कारन अर्चना रामासुन्दरम् के, 2002 में 'ज्वाइन्ट डायरेक्टर' (संयुक्त निदेशक) बनावल गइल आ विशिष्ट सेवा खातिर, 2005 में राष्ट्रपति महोदय का मार्फत पुलिस–पदक पवली

अर्चना रामासुंदरम अपने पिता श्री कामता प्रसाद मिश्र, माता श्रीमती रान्नो मिश्रा और छोटे भाई श्री आशुतोष मिश्रा के साथ

के सम्मान मिलल। प्रतिनियुक्ति से वापस तमिलनाडु लौटला पर 2008 में, ऊ अपर पुलिस महानिदेशक पद पर प्रोन्नति पवली आ आर्थिक अपराध शाखा में नियुक्ति मिलल फेरु–आगा ऊ 'प्रशासन' आ 'अपराध गुप्तचर शाखा' के पुलिस महानिदेशक आ 'प्रशिक्षण' शाखा में काम कइली। एकरा अलावा तमिलनाडु पुलिस हाउसिंग कारपोरेशनो के अलहदा दायित्व सँभरली। 2012 में, महानिदेशक पद पर प्रोमोट होके ऊ महानिदेशक 'तमिलनाडु यूनिफार्म्ड सेवा बोर्ड' के अध्यक्ष के रूप में नियुक्त कइल गइली।

श्रीमती अर्चना रामासुन्दरम् के दक्षता आ कार्यकुशलता का कारन, मई 2014 में, उनके सी0बी0आई0 (केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो), नई दिल्ली में अपर महानिदेशक का रूप में योगदान देवे खातिर बोलावल गइल। फेरु एन0सी0आर0बी0 (राष्ट्रीय अपराध अभिलेख ब्यूरो) के महानिदेशक बनावल गइल। 03 फरवरी 2016 के भारत सरकार इनके सशस्त्र सीमा बल के महानिदेशक बना दिहलस। उनका के भारत–नेपाल सीमा 1751 कि0मी0 आ भारत–भूटान सीमा (699 कि0मी0 लम्बी) के रक्षा–भार सँभारे वाला सशस्त्र सीमाबल के जिम्मेवारी दिहल गइल एह सीमा बल के लीड इन्टेलिजेन्स एजेन्सी बा, साथे साथ सीमा क्षेत्र के रहे वाला नागरिक बाशिन्दन का भीतर सुरक्षा आ निर्भय भाव भरल बा। सीमा के आर–पार होखे वाला अपराधन पर लगाम लगवला का अलावा आमजन कल्याणकारी कार्यक्रमन के सफल बनावे के गुरुतर दायित्व के सफल निर्वाह करत श्रीमती अर्चना रामासुन्दरम् सीमाक्षेत्र के समाजिक–सांस्कृतिक आ जनकल्याणकारी गतिविधियन के संरक्षण आ गति देवे में निरंतर सक्रिय बाड़ी। स्वभाविक तौर पर ऊ वर्तमान सरकार के 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ!' कार्यक्रम में रुचि लेत बाड़ी भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी श्री एस0 रामासुन्दरम् से अर्चना जी के वियाह 1984 में भइल रहे। ऊ अतिसम्मान वाला अधिकारी रहल बाड़न। उनकर दू गो बेटा बाड़न। ऊहो अपना माता–पिता लेखा तेज आ होनहार।

श्रीमती अर्चना रामासुन्दरम् के अपना माटी, माँ आ मातृभाषा से गहिर लगाव बा। उनके भोजपुरी क्षेत्र के व्यंजनो रुचिकर लागेला। बे–बनावट के, सहज–सरल बात–व्यवहार आ निष्ठा से कर्म कइला के ऊ महत्व देली। अपना भाषा–समाज के लड़कियन आ औरतन के आज का युग का अनुसार आगे बढ़त देखे के इच्छा राखे वाली अर्चना जी के कहनाम बा कि समाजिक जड़ता दूर के परी। चेतना जगावे खातिर आ प्रगति खातिर शिक्षा बहुत जरूरी बा। खास कर लड़कियन के। ••

बदलाव में कुछ छूट रहल बा

✍ आनन्द संधिदूत

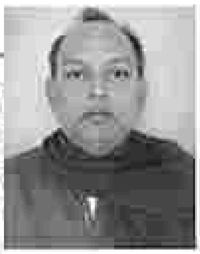

एक बेर शहर में रहे वाली एगो मेहरारू गाँव में आइलि आ गाँव का पंडित जी किहें जाके पूछलसि कि 'आ ए पंडित जी, षष्ठी कहिया पड़ी?' पंडित जी एक मिनट तक सोचलन आ बड़ा रोआइन मुँह बना के कहलन कि, 'आ ए जजमान, जब रउरा षष्ठी कहब त हम का छठ कहीं? ईहे लेहीं पलरवा रउरे लुंडिया के रख लेतीं।'

लेकिन ई घटना आज से पचास साल पहिले के ह। तब नारी शिक्षा आ नारी का पुरुष लेखा विकास पर ना सोचल जात रहे। नारी के शिक्षा चिट्ठी–चपाती लिखे भर हो जाये त बहुत मान लिहल जात रहे। तब कवनो–कवनो गाँव में बेसिक प्राइमरी कन्या पाठशाला रहे। एह से ऊपर पढ़े के साधन गाँव में ना रहे। ओह जमाना में दस–बारह साल के होत–होत लइकिन के सलवार–फिराक का जगहा साड़ी–लुग्गा पहिरे के दे दिहल जात रहे। आज एकर उल्टा बा। अब त गाँव–गाँव में लड़की आसानी से बी०ए०–एम०ए० पास हो जात बाड़ी स आ एह से ऊपर के पढ़ाई भा जीविका का कम्पटीशन में शामिल होखे के दरवाजा उहनी खातिर खुलल बा। अब ना तऽ मरद धोती पहिनत बाड़न सऽ, ना मेहरारू साड़ी। आज के फैशन देखके लागत बा कि धोती–साड़ी के कारखाने बन्द हो जइहन स। ले–देके साड़ी शादी–बिआह में पहिरे के चीज हो गइल बा। अब जमाना अइसन आ गइल बा कि तू लड़का के माइयो टाप आ जिन्स पहिन के सड़क पर घूमति बा। अब गाँव के पंडित जी जे मेहरारून का एगो तत्सम शब्द बोल दिहला पर खोराह बोलत रहले ऊ अब हक्का–बक्का आ निस्तेज हो चुकल बाड़न। कारन कि अब खुद उनका घर के लइकी टीशर्ट आ जिंस पहिनके छाती पर बिना ओढ़नी के चारो अस घूमत बाड़ी सऽ।

एह बदलाव के देखके बुरा मानल समय का दरिआव के लाठी पीट के रोकला का समान बा। ई परिवर्तन रुके वाला नइखे। आज 'ग्लोबल विलेज' के बात होता। संसार विज्ञान का बढ़न्ती से सिकुर के एगो गाँव नियर हो गइल बा। पत्र नास्ता दिल्ली में करत बाड़न आ लंच न्यूयार्क में लेत बाड़न। जवन लड़की अभी हाल तक अकेले टोला–मोहल्ला में ना जात रहली स ऊ अब निडर होके अमेरिका–इंग्लैण्ड में हास्टल में रहिके पढ़त बाड़ी स, भा नोकरी करत बाड़ी स। एह नारी स्वतंत्रता का जमाना में परिवार व्यवस्था मकरी का जाला अस टूटल जात बा। अब परिवार में माता–पिता के दू गो यूनिट बेकार हो गइल बा। लड़का का परिचय में बाप का नाँव के जरूरत खतम हो गइल बा। अब परिचय में माता के नाँव पर्याप्त बा। ए जमाना में अइसन बहुत सन्तान बाड़ी सऽ जकरा बाप के पता नइखे। अब अविवाहित माता लोग बहुत बा। सेवन बर्कर भा सन्तान पैदा करत बाड़ी। जवरी दुचबावो से लड़का पैदा होत बाड़न सऽ। किराया का कोखी से बच्चा पैदा होत बाड़न। एकरा अलावे आइ०वी०एफ० तकनीको बा। एह वातावरण में पिता अप्रासंगिक हो चुकल बा। आज नारी अकेले लड़का मर आ गइल बा आ ओकरा कवनो तरह से गर्भवती हो जाये के सम्भावना बढ़ गइल बा। अइसना में पुरान पारिवारिक व्यवस्था य त अन्तिम साँस ले रहल बा, भा कुछ दबल–कुचलल पिछड़ल परिवारन के सोच आ चर्चा में जीवित बा। जवन पहिले पच्छिम में होत रहे ऊ अब भारतो में होता। अब पुरुष आ नारी दर्जनन बिआह करे के आ तलाक लेवे के स्वतंत्र बाड़न। जइसे पहिले नाग जाति में सौतेला बाप, हाफ–ब्रदर्स वगैरह होत रहे। ओइसने रिवाज अब ज्यादा कारपोरेट स्त्री–पुरुष में देखे के मिलत बा। अब एक नारी कई पिता का वीर्य के माता बनति बा। आ पिता के वल्दियत देखावे के स्थान पर आपन पहिचान नोट करावति बा। अब स्कूल प्रवेश पत्र, पासपोर्ट, नोकरी के आवेदन पत्र आदि खास ओर बाप का जगहा पर माता के नाँव लिखल प्रथाचार बा, फैसन में बा। आ एके कानूनी मान्यता बा।

लेकिन पारिवारिक व्यवस्था के नया रूप ले लिहला से परिवार के दूगो महत्वपूर्ण कार्य उपेक्षित गइल बा। एह में पहिला काम बा छाती के दूध पिआवल आ दूसर काम प्रेमपूर्वक भोजन बनावल। आज का जमाना में चूँची पिआवल (छाती से दूध पियावल) अश्लील शब्द हो गइल बा लेकिन 'ब्रेस्ट फीडिंग' सुसंस्कृत बा। पुराना जमाना के माता लोग लइकन के दूध पिआवे खातिर का–का–ना उतजोग करत रहली। ऊ लोग चाल जावा खावे अउरी जवना चीज से दूध बढ़ावे के सम्भावना हो, ओके सेवन में लेसु। लेकिन आज त सीधा–सादा जवाब बा कि दूध होत नइखे। दूध के ना पियावल आज एगो राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय समस्या हो गइल बा। सरकारी मशीनरी स्तनपान का प्रचार में लागल बा, लेकिन निजी सुघराई वाली कठकरेजी महतारी का कान पर जूँ नइखे रेंगत। आज के नौनिहाल कम से कम छव महीना दूध पीये के, के कहो अगर छवो दिन दूध पीयत होखे त बहुत बा। हम अपना माई के दूध चार–पाँच साल तक पियले हईं आ आज ओही क परिणाम बा कि हजार आफत–विपत अइलो पर हम डेर

स्वस्थ्य बानीं। लेकिन अफसोस हमरा लइकन के आठे ना तो पालन के ई अमृत–भोजन ना मिलल। वैज्ञानिक लोग बतावेला कि महतारी का दूध पियवले अउरो फायदा बा– जल्दी गर्भधारण करे का संभावना पर रोक लागेला। लेकिन आज महतारी के एह प्राकृतिक अमृत कलश का, सुडौल आ सुन्दर रहे पर जादा ध्यान बा।

आज जेही के देखऽ ओही के हाड टूट जात बा। तनिकी सा गोड बिछिलाइल कि फ्रैक्चर भइल। कारन कि हमनी का भोजन में तीसी के उपयोग नइखे। तीसी हाड के मजबूत करेले। पुराना जमाना में सोंठउरा बने त ओके तीसी का तेल में डुबाके अलपाँत के खियावल जाय। तीसी–महुआ के भुँजा के ओके लकड़ी का ओखर में कूट के लड्डू बने। ऊ लट्ठा कहाय। आज बहुत अदिमी लट्ठा के नाँवों ना सुनले होइहें। एकरा अलावे बहुत भोजन रहे जवन गाँव–देहात में बने आ स्वास्थ्य खातिर उपयोगी मानल जाय। पूरी–बखीर, जाउर–सोहारी, जूरी–दोहथी, ठल्ला–चोथा महुअरि अइसन कई दर्जन भोजन के प्रकार रहे, जवना के खइलो दिल–दिमाग पर अनुकूल असर पड़े आ आदमी स्वस्थ रहे। आज ई कुल भोजन लुप्त होखे का कगार पर बाड़न। आज फास्ट फूड–जंक फूड के जमाना में अक्सर भोजन बनते नइखे। भोजन असेम्बुल होता। जइसे रेडियो, कम्प्यूटर भा टी०वी० असेम्बुल होले ओइसहीं अब बनल–बनावल भोजन बाजार से ले आके घरे असेम्बुल होता। आज बाजार में गुलाब जामुन बनावे के, इडली बनावे के मसाला बनल बनावल बिकत बा। घरे ले आके पानी में सान के तल देहीं भा उसिन देहीं। अब सील–लोढ़ा, जाँत–ओखर के जमाना लद गइल। विकल्प में मिक्सर जइसन बहुत साधन बा, बाकिर भोजन में ऊ स्वाद नइखे आ पावत, जवना 'सवाद' खातिर गाँव देहात के रसोई मशहूर रहे।

आज नारी जाति के बहुत बड़ संख्या नौकरी पेशा में बा। ऊ मजबूरी में भा जल्दी में घर के काम निपटा के डिउटी पर जाये पाड़ऽतिया। एह भागदौड़ का जिन्दगी में भोजन खातिर ऊ प्रेमपूर्ण समय नइखे दे पावत जवन जरूरी होला। एहिजा हम नौकरी पेशा में हाल में आइल नारी समाज का सामने परम्परागत श्रमिक वर्ग का महरारून के उदाहरण देवे चाहब, जवन समय का अभाव में भोजन में एके आइटम – मोटा अनाज के लिट्टी बना के लेके जात रहली सऽ, लेकिन ऊ एतना सोन्ह आ स्वास्थ्यकर रहे कि ओके नूनो–मरिचा से खाके ओह नारी के पूरा परिवार स्वस्थ आ मस्त रहत रहे। भोजन के डिउटी समझ के ना, प्रेमपूर्ण ढंग से बनावे के चाहीं। अगर अइसन ना होई त ऊहे हाल होई जवन लन्दन में बिअहल एक जानी के भइल।

एक जानी के बिआह भइल त उनकर ननसंधू लन्दन में नोकरी करत रहलन। एह से बिआह का बाद ऊहो लन्दन चल गइली। एक दिन उनकर ननसंधू आफिस जाये से पहिले मछरी किनलन आ उनके पकावे के देके नोकरी पर चल गइलन। ऊ कबो खाना त बनवले ना रहली एह से जब मछरी बनाइल त ओके डिटरजेन्ट पाउडर डाल के धो दिहली आ जइसे तइसे छँवक के झुरुआ डाल दिहली। साँझ के उनकर ननसंधू अपना कुछ दोस्त के लेके डिनर पर अइलन आ पहिले कँवर में सब थू–थू करे लागल। उनकर ननसंधू एतना नाराज भइलन कि अगिला दिने हवाई जहाज से उनके भारत वापस भेज दिहलन।

पुराना जमाना में गाँव में कुलदेव के पूजा होखे आ ओमे अनोना साग आ अनोना बरी अइसन केतने बिजन बने ओह में बड़ा स्वाद रहल करे। लोग कहे कि देवता के परसाद भइला का कारन एह में सवाद बा। असल में ओह में स्वाद श्रद्धा आ प्रेम से बनवला का कारन होत रहे। हमार माई खोज के ललका गेहूँ ले आवे फिर ओके ओखल–आदल जाँत में पीस तब गूर–घीव में पुआ बने आ देवता बाबा के चढ़ावल जाय। माई का मुअला का बाद हमरा घरे देवता बाबा के पूजा बन्द बा। केकरा फुर्सत बा कि श्रद्धा आ प्रेम के एतना तूल–तमार बरदास करी?

आधुनिकता के धाह से परिवार व्यवस्था टूटत बा त टूटो, लेकिन एतना जिन टूटो कि लइका महतारी का दूध खातिर छछन जाय आ घर के बड़–बूढ़ से भरल–पूरल घर में रहे का जगहा वृद्धाश्रम में रहे लागसु। पहिले आज एतना साधन ना रहे, बाकिर बहुत काम सेवा आ प्रेम से हो जाय। जवना बेमारी में अब हजारन रुपिया खर्च हो जाता, ऊ रोग पहिले कपार पर तेल जाँत के आ हाथ–पैर आ पेट पर नाना प्रकार के घरेलू लेप लगा के ठीक हो जात रहे। हो सकेला, एमें बदलत समय आ वातावरन के दोस होखे।

माटी का जगहा, अब मकान शीशा मियार बनत आ जमकत बाड़न सऽ। सेवा–टहल के बहुत काम त अब एह से नइखे हो पावत कि ओकरा अइसे मकाने का गन्दा होखे आ टाइल्स के फर्श टूटे के डर बा। महँगा ओढ़ना–बिछौना में केतना अदिमी का कपार पर तेल लागत बा?

आज जरूरत एह बात के बा कि शिक्षा का साथ–साथ अपना संस्कृति के जवन नीमन बात रहली सऽ, उहनो पर सोचल जाय आ काम भर अपनावल जाय। ••

■ पन्नालाल के गली, बासलीगंज, मिर्जापुर

हमार गाँव – कुंड वाला 'दलछपरा'

शिव कुमार पाण्डेय

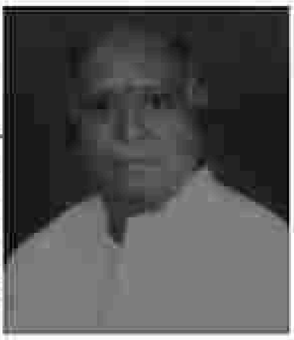

हँ कुंड वाला दलछपरा। अउरी कवना दलछपरा के बारे में जानेलऽ? दुआबा में करन छपरा, लछुमन छपरा के लगे सुनले बानी। इहो दलछपरा दोआबे में बा। एह दलछपरा से दुआबा शुरू होला। आ करन छपरा, लछुमन छपरा के लगे दलन छपरा गाँव बा। ऊ बड़ गाँव ह। बलिया स्टेशन से ट्रेन जब पुरुब ओरी छपरा के तरफ चलेला, त बाँसडीह, सहतवार के बाद रेवती स्टेशन आवेला। उहाँ से गाड़ी चलला पर एक दू मील उत्तर दिशा में दू गो कुण्ड दिखाई दी। दूनों कुंड के बीचों बीच रेते–रेत। ऊहे गाँव दलछपरा हऽ। पहिले त गाँव के पहचान एगो ऊँचा मंदिर के शिखर केर दूरे से नजर आवे। ओह पर बिजली गिरि गइल आ ऊँचा शिखर ध्वस्त हो गइल। रेवती से ट्रेन खिसकते ऊ नजर आवे! ओसे दलछपरा गाँव के निशानी पता चलि जात रहे।

बूढ़ पुरनिया बतावस लोग कि गंगा जी के बाढ़ि से रेल लाइन टूटि गइल आ दलछपरा गाँव में जोर के धक्का से पानी घुसल। आ गाँव के दू फाँक में बाँटि दिहलस। एगो पूरब टोला आ दोसर पश्चिम टोला। हम पूरब टोला वाला ओकरा के ओह टोला कहीं। आ पच्छिम टोला वाला हमनी के पूरुब टोला वाला कहसु। दूनों कुंड में सोत उभरल–बारहो महीना पानी लबालब। बाकिर बरसात के चार महीना नरक हो जात रहे। टट्टी–पेशाब सब सरजू जी के बाढ़ि में। पता सबके रहे पानी के टट्टी–पेशाब मना हऽ। बाकिर मजबूरी, कवनो अउर चारा रहबे ना करे। रेल लाइन के दक्खिन में गंगा जी के बाढ़ि नया माटी ले आवे, आ रबी के उपज बिना खाद पानी के खूब उपजे।

कुंड में आसपास के गाँव आदमी, मवेशी के नहइला आ धोवला के सुख रहे। पूरुब के गाँव के धोबी रेह लेके पच्छिम से आवसु आ कुंड पर सफेद गमछा में, चाहे धोती में सतुआ राखसु। दु आदमी भीतर पानी में जाके गमछा के सतुआ भिजावसु आ धार के रेती में गोड़ से सतुआ सानसु। चारो पाँचो धोती बइठ के पियाजु संग सतुआ खासु– हमन लइकन के मुँह में पानी आ जाय। दौड़–धूप के घरे जाके सतुआ मँगला पर माई–बड़की माई हँससु। दिहला पर बबुआ सतुआ छूअबो ना करेले–केहू के खात देखि के आवत बाड़े। धोबी के नाम बतवला पर खूब हँसी ठाढ़े आ कहसु लो– ओकनी से माँगि के काहे ना खा लिहलऽहा। आजुवो ओह सातु के नाव से मुँह में पानी आ जाला।

गाँव के बसगीत के बारे पुरनिया लोगन से सुनी– ए गाँव में सत्तर घर बाम्हन, सत्तर घर कोइरी, सत्तर घर अहीर, सत्तर घर मलाह आके बसले। बाद में गोंड, लोहार, दुसाध, कुर्मी, मोची, राजपूत, हजाम, धोबी, तेली एक–एक, दू–दू घर बसल। बचपन में चाहे आजु तक सत्तर घर के गिनती के बसाहट आजु तक समझ में ना आवेला बाकिर बूढ़ पुरनिया लोग के इहे कहनाम रहे। माने के सिवा कवनो दूसर चारा ना रहे। गाँव के मलाह आसाम, बंगाल में माल वाला नाव चलावे खातिर चलि जासु सुने के मिले कि ऊ लोग कलकत्ता, पटना, बलिया, छपरा, गाजीपुर, बनारस तक आने से सामान भरि के ले आवे। व्यापारिन के माल। मलाहिन गाँव में मजदूरी करे लोग। अहीर लोग कलकत्ता में चटकल (जूट मिल) में नोकरी करे या ठेला चलावे या खटाल में काम करे आ घर घर भईंस, गाय, बैल, पालल जासु। दूध, दही, मट्ठा दूर–दूर के गाँव तक बेचे जात रहे। अब त गाँव में चाहो खातिर दूध मिलल मुश्किल बा। राति बिराति कतनो हीत–नाता आवसु, ओकरा खातिर सजाव दही के कईतरी आसानी से हाजिर हो जात रहे। ब्राह्मण लोग घर–घर से कलकतिहा रहे– मारवाड़ी के इहाँ या बैंक में या दरवानी चाहे विदेशी कम्पनियों में नोकरी करे। ठाट–बाट से रहे– हर महीना मनीआर्डर आवे, आ घर पर खेती खुद करे चाहे बँटाई पर करावे। कोइरी लोग कम्मे जगह जमीन में कोइार बना के भाजी तरकारी उपजावसु आ बाजार में बेचसु। एक्के दुक्का लोग बाहर नोकरी में जात लउके। अउरी कई जात के लोग पवनी बनिके आपन–आपन काम करे। खेती से बोझा मिले चाहे अनाज। त्योहार आदि खास मोका पर कोहार, लोहार, धोबी, नाऊ अनाज पावसु– शादी बिआहो में अनाज, पइसा, कपड़ा आ बकसीस पवनी लोग के बँधल रहे। नेग के रूप में अधिक रिरिया गइला पर देवेही के परे। आपुस में थोड़ा बहुत तकरार, झगड़ा झंझट के बादो बारात आ मंगल में पूरा गाँव जुटत देरी ना लागी। मोका–बे–मोका सभे हाजिर–दुखो में, सुखो में। अइसन दुश्मनी ना रहे कि खान–खियान छूटि जाय।

गाँव में प्राइमरी तक पढ़ाई रहे। पीपर के पेड़ के नीचे स्कूल लागे। पंडिजी आ मुंशीजी दुगो मास्टर रहले। दो लोग के अइला के पहिलहीं बनकट नोचि के झार बुहार के सफाई लइका सब करसु आ नदिया पर राखल चट लेके बिछावल जाय। पहले त चट भी ना रहे घर घर से बोरा लेके बइठ के लं जाइल जाय।

पढ़ाई अइसन मानो अपना जानल लइकन के मास्टर जी पढ़ावत होखसु। डांट, फटकार आ बाँस के कइन के छड़ी फिर भी घर से केहू का चूँ चाँ नाहीं। मिडिल स्कूल पढ़े के रहुली मिडिल स्कूल जाये के परे। जहाँ आठवीं के मास्टर रामाधार सिंह (बाबूसाहब) त केहू के जिन्दगी भर भुलाइलो से ना भुलइहें। रोबदार चेहरा, सफेद बाल, मूँछ, कपारे मुरेठा। भुरुकहीं उठिके रहे घर के हनुमान जी कीहाँ जासु आ एक सौ आठ बार परिक्रमा करसु। सबेरे वाला गाड़ी से बलिया जासु, मुकदमा के तारीख पर – एके पहले एक–दू लइका साथ में रहावल स्टेशन तक ले जासु। उहे साथिन के पढ़ावे के परे। सांझ का क्लास में दिन भर के पढ़ाई के बारे में पूछताछ। डर के बीच पढ़ाई बाकिर आठवीं के कवनो लइका फेल ना होखसु। अधिकतर प्रथम श्रेणी नाहीं त द्वितीय श्रेणी में पास होखसु। आठवीं के बाद दूबेछपरा चार कोस पैदल जाये के परे, बीच में नदी–नाला। बरसात में जाये–आये में दिक्कत होखे। पूरा रास्ता पैदल, साथ में लक्ष्मीपुर, नूनछपरा, अचलगढ़, नवका गाँव के लड़िकन के साथ हाथ पकड़ के नाला पार करावल जाय। दूबेछपरा में जब सात बजे सुबह स्कूल लागे त हमार बड़की माई भोरिये बजे उठिके भात, दाल, तरकारी बना देसु। बना के उठावसु–सांझ खा लयटले में देहि होखे त लालटेन लेके डाला पर (रिलक्सासिंग) पर खड़ा रहसु। कतनो कहल जाऊ मनवे ना करसु। कइनान रहे कालिह से ना आइबि। अइसन स्नेह आजुकाल कहाँ सम्भव बा?

त्योहार खूब धूमधाम से मने। फगुआ, दीवाली अब बहुते इयाद आवेला। फगुआ में पुआ, बोजा, बजका बने। घरे घरे देवर–भाभी तथा हमउमिर रंग खेलसु। पांको–पानी डालल जाय। दुपहरिया बाद सफेद, कुर्ता–पाजामा भा कुर्ता–धोती पहिन के घर घर से लोग गाँव के मठिया पर जुटसु दु–चार ताल फगुआ गवला के बाद घर घर गवनई खातिर टोली जाय। गिढ़ावन पर दू तीन फगुआ जाके आगे बढ़ि जात रहे टोली। जेकरा दुवार पर केहू ना रहे, ताला रहे ओहू जगह पर सदा आनन्द रहे एहि द्वारे मोहन खेलत होरी'। गरी, छुहारा, किसमिस हर दुवार पर बँटाय। थगली भर जाय।

दीवाली पर घर के कोना कोना लीपल जाए। कोहार दियरी के साथ बच्चन खातिर तरह तरह के खिलौना, जाँत, लड्डू लोला ले जासु। तुलसी जी कीहाँ दियरी जला के घर के कोना–कोना खूटा चरनि तर दियरी से जगमगा जासु। पिसनकत टोला के अहीर लोग गाय ढार लागावे जवना में सूअर बाँधि के झलीटल जाऊ। गाई, भैंस लखेदि लखेदि के सूअर के लहुलुहान कई देसु। गाँव भर जुटे देखे खातिर, बाकिर हमरा इ देखिके खराब लागे।

चैत अष्टमी का दिने घर के कोना–कोना लीपल पोतल जाय। सांझ के डोम सबका घरे घरे घूमिके सिंगा बजा जासु। कोंहार कलश, घड़ा, दीया दे जासु। माली आके फूल दे जासु। राति में औरत लोग शीतला मइया के पूजा करे। सबेरे सरयू जी नहा के लालपुरी खाये के मिले। पवनी लोगन के दाल–पूरी बाँटल जाइ। घर घर आके ले जात रहे लोग। धोबी लोग एके पूरन झारि के सुखावसु। गुर में पागि के ढेर दिन तक खात रहे लोग।

जन्माष्टमी खूब धूमधाम से मनावल जाय। सबेरेही से रंगीन बाँस काटि काटि के लेईं से साटिके सजावट होखे। रात बारह बजे पंजीरी, हलुवा के परसाद मिले। अउरी कई त्योहार मनावल जाऊ लेकिन ढेर गावल संस्मरण लम्बा हो जाई।

एगो बात विशेष– प्राइमरी, मिडिल में पढ़े के दौरान सांझि खा रेलवे लाइन पर सैर करे खातिर लइकन के समूह जाय थोड़ी समय एगो नेटुवा रेवती बाजार से ताड़ी पीके गाना–गावत आवे। सउँसे लउरि हाथ में राखे। आवाज सुनत सुनत सम लइका घर के ओर भागि जासु। अब त सुने में आवेला– घर घर में लइका पाउच के शराब सेवन करत बाड़े। अब फगुवा के गवनई घरे घरे नइखे होत। पहिले समूह में बैठल लोग फेरू अपना अपना टोला में बिहुर के गवनई। अब त पुरनका फगुवा बन्दे हो गइल।

बचपन के स्कूल के पढ़ाई, तीज त्योहार के आनन्द, बाढ़ि के कठिनाई भुलवला से ना भुलाई। गेहूँ, बूँट (चना) के फसल कटला पर खरिहान से अँगऊ निकले। लइकन में आपस में मठिया पर पहुँचावे खातिर होड़ लगे। जहाँ के महाराज जी पंजीरी आ एगो गुदगर किरमल जे देसु। गाँव सचहूँ गाँव रहे– दूध, दही, मट्ठा, घीव खाये के स्वाद बढ़ाके दे देय लोग। अब त घर घर चाह–चाह बिना दूध के करिया मिलत बा। गाय गोरू कमे बा। अब सत्कार में मिश्री–बतासा का बदला बिस्कुट मिलेला। कहाँ से कहाँ चलि गइल गाँव, गाँव के लोग, खान–पान, तीज–त्योहार आ ऊ आत्मीयता? गवनई, बिरहा, जोगीरा, नेटुनी, रामायन, थोड़ा बहुत होत बा लेकिन पहिले वाला आनन्द – सचमुच हम आज ले ना भुलइलीं। ओघरी, सँचहूँ गाँवे रहे। ••

१८८, कल्पना नगर, रायसेन रोड, भोपाल

गाँव : तब आ अब

✍ शिवजी पाण्डेय 'रसराज'

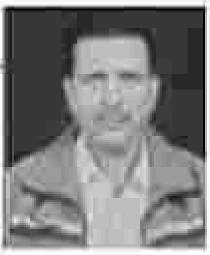

गाँव के बारे में जब सोचीलें तऽ हमरा ई बुझाला कि गाँव पहिले कल्पवृक्ष रहल। ओसे जवन–जवन माँगल जाउ, तवन–तवन सब मिले। एही से ऊ आत्म निर्भर रहे। बाग–बगइचा बाहरी शरीर रहे आ खेतीबारी एकर आत्मा। वृक्षन से छाँह, लकड़ी, फल आ जीवन के सहज बनावे वाला शान्ति–सुख मिले। गाँव में रहे वाला सज्जन कहासु, काहेंकि उनका भीरी छलरहित मधुर वाणी, एक मुट्ठी भुजुना एक लोटा पानी आ गुड़ रहत रहे, जवन बेमँगले मिल जाय। गाँव के पहिचान पगडंडियन से होखे। ओकरा संगे–संगे कच्चा मकान, मड़ई, बसवारि, कुँआ, पोखरा, गड़ही जवना में कमल फुलाइल रहे, आ ओकरा आरी–आरी बेहाया लहराय। गाँव के पूरब दिशा में बरगद के पेड़ आ बुढ़वा इनार गाँव में आवे वाला अतिथियन के स्वागत–सत्कार खातिर हमेशा तइयार रहे। इहाँ ले कि राह में बइठल कुकुरन कऽ टोली आवे वाला अपरिचितन कऽ बारे में अवगत करावे कि ऊ अपरिचित अदिमी हऽ ना कवनो जीव–जन्तु। हालाँकि कुकुर अजुओं बाड़न सन।

दुअरा–दुअरा नीम कऽ गाँछ आ जहाँ–तहाँ पकड़ी, पीपर, बरगद आदि के पेड़ लउकत रहे। हरेक दुआर पर नाद, चरन, गाय, भइंसि, आ दोसर पालतू पशु–पंछियो लउकत रहे। सभे के दुआर पर बइठे–सुते खातिर जरूर एगो बँसहटि, चौकी या खाँचर जरूर रहत रहे। जाड़ा के दिन में दुआरे–दुआरे कउड़ा फुँकाउ आ ओकरा चारो ओर लोग बइठि के हाथ सेंकि सकसु। कथा–कहानी, दुःख–सुख, निम्मन–बाउर, आ खेती–गृहस्थी के बातो बतियावसु आ सरो–सलाह लेसु–देसु। गाँव में जदि केहू के पाहुन रिश्तेदार आवसु तऽ टोल–महाल के लोग उनकर सर–समाचार पूछे खातिर उहाँ पहुँच जासु। उनकर मान–सम्मान अपना हित–नात नियर करसु। जदि गाँव के राह से कवनो राही गुजरे तऽ लोग ओकर नाँव, गाँव आ ऊ कहवाँ जाई एकरो जानकारी कऽ लेसु। उनके बइठा के गुड़–दाना भा संगे एक लोटा ठंढा पानी जरूर पियावसु। आपसी तालमेल तऽ अइसन रहे कि कवनो काम–धाम, चाहे ऊ खेती–बारी के होखे भा समाज के होखे सब मिलि–जुलि के कऽ लेइ। जदि कवनो मवेशी इनार आ गड़हा में गिरि जाउ भा केहू के घर आ पलानी में आगि लागि जाउ त एकही हँकार में सैकड़ो लोग जुटि के ऊ मवेशी के निकालि लेसु आ अगियो बुता देसु।

गाँव के लड़की कनियाँ बहुरिया कहासु। बहुरिया घूँघट में रहि के सासु–ननद आ गोतिनि के सेवा–सुश्रुषा, टहल आदि करसु। व्रत–तिहुआर के पालन नियम आ निष्ठा से करसु। पति तऽ उनकर भगवान रहले। एसे उनका दीर्घ जीवन खातिर कठोर से कठोर व्रत करसु। इहाँ ले कि आपन सउँसे जिनिगी अपना परिवार खातिर समरपित कऽ देसु। ओह समय रसोई चूल्ही पर होखे। चिपरी–गोइँठा आ लकड़ी–जावन के सहारे चुल्हि जरे आ भोजन बने। गृहस्थी के संसाधन के रूप में ओखर–मूसर, जाँत–चकरी, सिलवट–लोढ़ा, सूप–चालन, आखा–आखी आदि रहे। चउका में चोकी–बेलन, तावा–कराही, चिमटा–फूँकनी, तसला–तसली, पटुला–पटुली, लोटा–गिलास, थरिया–कटोरा आ जम्मच के सितुही, दूध से दही बनावे खातिर कहतरी आ दही से घी भा मक्खन निकाले खातिर रही आदि होखे।

पुरुष वर्ग अधिकतकर खेती–बारी पर निर्भर रहले। ओकरा संगे–संगे पशुपालनो करसु। खेती के साधन के रूप में हर–बैल, खुरपी–कुदारी, हँसिया–हँसुली, टाँगी–गँड़ासी, हेंगा–हेंगी आदि रहे। खेत के पटवनि खातिर खेत में कुँइया खोनाउ जवना प ढेकुलि चले आ बड़का इनारन पर रहट आ मोटि चले। खेती में धान, गेहूँ, जौ, चना, मटर, खेसारी, रहरि, सावाँ, कोदा, मडुवा, टाँगुन, बीन, जोन्हरी, जनेरा आदि अनाज उपजावल जाउ। गाँव में लोहार, बढ़ई, जुलाहा, धुनिया आदि श्रमिक वर्ग स्वतंत्र इकाई के रूप में काम करसु। अपने हाथ से उपार्जित वस्तुअन से आपन आ गाँव, समाज के काम चलावसु। ऊ आत्म निर्भर रहले आ आत्मनिर्भरता उनकर बल रहे। जवन आजु शहर पर आधारित हो गइल बा। एह तरे ऊ स्वतंत्र ना रहि के गुलामी की ओर ढकेलि दिहल गइले।

हरेक परिवार में घर से बाहर एगो बुजुर्ग अदिमी मलिकार कहासु, उनका कपारे पगरी बन्हाइल रहे। उनके आदेश कऽ पालन घर के सभे सदा करसु। ठीक ओही लेखा घर के भीतरो के व्यवस्था रहे। एगो बुजुर्ग महिला के आदेश चले। ओसे पूछे बिना घर में एगो भतई ले ना उसके आ चूल्हा तक ले ना जरे। ओकर मान–सम्मान घर के बाहर–भीतर सगरे समान रहे।

गाँव में खेल के कवनो संसाधन ना रहे। पेड़ के पातर डाढ़ि काटि के लइका, गुल्ली–डंडा बनावऽ सऽ आ ओही से खेलऽ सऽ। कुछ लइका आपुस में मिलि–जुलि के कबड्डी, चिक्का, ओल्हा–पाती, लुका–छिपी छुआ–छुआई, सिलवट–लोढ़ा आदि खेल उपार्जित कऽ के खेलऽ सऽ। विशेष मनोरंजन खातिर साल में एक

आ दू बार मेला कऽ आयोजन होखे। जवना में लोग एक–दूसरा से मिलसु आ घर गृहस्थी के जरूरतमंद सर–सामानो खरीदसु। कुछ विशेष तीज–त्योहारन पर घर–दुआर माटी आ गोबर से लिपा जाउ। जवना से ऊ गह–गह करे लागे आ ओकरा सोन्हाइल गमक से लोगन के मन–मस्तिष्क दूनो ताजा हो जाउ। लोग भोरही खरहर उठावसु दुआर, गली आ राहि बहारि के साफ सुथरा कऽ देसु। आ हर्ष–उल्लास कऽ संगे त्योहार मनावल जाउ। गाँव के लोगन कऽ पहिरावा कुर्ता–धोती, मरछा आ माथ पर पगरी जरूर रहे। औरत लो साड़ी पहिनसु लइका–कुर्ता–पैजामा पहिनसु। उनका अंग–अंग से सादगी झलके, आ भाषा कऽ संगे बोली तऽ रिस्ता धइ के चले। चाहे ऊ कवनो जाति–बिरादर को होखे।

हरेक गाँव में ग्राम देवता आ एगो ग्राम देवी होखसु जेकर पूजा–पाठ गाँव के छोट से बड़ ले बिना भेद–भाव के मिलि–जुलि के करसु। कुछ पेड़–पौधा अइसन रहलन सऽ जवना के पूजा–पाठ बड़ा सरधा कऽ साथे होखे आ मांगलिक कार्य में ओकर भूमिका आवश्यक रहे जइसे– बरगद, पीपर, आँवला, तुलसी, आम आ बाँस आ ओकर लकड़ि। रामायन के पाठ आ कथा अधिकतर लोगन के दरवाजा पर साँझि कऽ बेरा दीया जरा के होखे आ ओजा सुनहूँ खातिर लोग जुटि जासु। साधु–महात्मा के प्रति सरधा आ बिस्वास अटूट रहे। उनकर दरसन आ प्रवचन सुने खातिर लोग कोसन चलि जासु। आ गाँव में आके ओपर महीनन चरचा होखे।

पहिले गाँव में पढ़ाई–लिखाई के अभाव रहे। इसकूलो कहीं रहे तऽ केहू के मड़ई भा ओसारा में, कहीं–कहीं तऽ बाग–बगइचा में जवन गाँव से दूर भइला के नाते ओ जगहा लइका पहुँचियो ना पावसऽ। अधिकतर अपना भाई–बाबू के संगे खेती–बारी के काम–काज में हाथ बँटावऽ सऽ। लइकी तऽ ना के बराबरे पढ़ऽ सऽ। शिक्षा के स्तर इहे रहे कि चिट्ठी–पत्री पढ़ावे लिखावे खातिर केहू एह टोल से ओह टोल ले जोहाउ आ जे केहू मिल जाउ ओकर सम्मान भा बड़ा आदर होखे। कथा–कहनी, नाटक, नौटंकी, चौपाल आदि देखि–सुनि के ज्ञानवर्द्धन आ मनोरंजन होखे। गाँव के एगो समझदार संभ्रांत व्यक्ति गाँव के मुखिया कहासु। उहे गाँव के देखभाल करसु आ दिशा–निर्देश देसु। उनकरे राह देखवला पर गाँव आगे बढ़े। ऊहे गलत–सही काम के समीक्षा करसु। अभद्र व्यवहार आ काम, जइसे– चोरी–चमारी, दुश्चरित्र आदि पर दण्ड कऽ प्रावधानो करसु आ झगड़ा–झंझट के ममलो के निपटरो करसु।

सादी–बियाह के रसम एक से दोसरा गाँव कऽ बीचे अपना बिरादरिये में रचावल जाउ। ओह समय डोली–कँहार रहे। दहेज में लड़की पक्ष वाला लइका पक्ष के गाय, भैंस, बकरी आदि दे के खुश कऽ देउ। खान–पान, कच्ची–पक्की दूनो रहे। कलेवा में गुड़–दाना, रस–कचरस, घुघुनी भरपेटा दियाउ। बारात पैदले जाउ, चाहे कोस भर होखे भा दस कोस। राह में खातिर कलेवा बैलगाड़ी आ काँवर पर जाउ। लड़की वाला सकेता ना परो एह खातिर समान रसद ले के के लोग जाउ। बारात आ जनवासा के देखभाल आ सुरक्षा खातिर लमहर लमहर तेल लगावल लाल–लाठी–लठारि, भाला, बरछी, गँड़ास, कटार आदि लोग ले जासु। सबके लठर में लाल–लाल पताका जरूर रहे। बारात दूनो ओर से कतार में खड़ा हो जाऊ आ ओकर बीच में घोड़ा, हाथी, ऊँट के घोड़नउल होखे। अपना–अपना रीति–रिवाज के अनुसार सादी–बियाह होखे। जब कनिया घरे आवे तऽ अपना–अपना रीति रिवाज के अनुसार स्वागत होखे आ भाई–पटिदार, रिस्ते–नातेदार, संगी–साथी, टोल–महाल के भोज–भात दियाउ। जदि केहू मरि जाउ तऽ लोग ओ शव के गंगाजी भा ओह जगहा पहुँचा देसु जहँवा ओकर अंतिम संस्कार हो जाउ। भाई–पट्टिदार, संगी–साथी, रिस्ते–नातेदार ओकरा शोक में सहभागी होखसु आ संस्कार में सहयोग करसु। केहू अपना के अकेला महसूस ना करे।

गाँव जब आगे बढ़ल तऽ ओकरा मूल में शिक्षा कऽ प्रसार, शहर से जुड़ाव, प्रकृति के संगे–संगे मानव प्रदत्त वस्तुअन के ओर खिंचाव, खेतीबारी के अलावा रोजगार के प्रति जागरूकता, देश–बिदेश के जाने समुझे के ललक, आधुनिक वस्तुअन आ संसाधन कऽ उपयोग, खेल में परिवर्तन, रहन–सहन, खान–पान, भेष–भूषा, भाव–भाषा आदि में परिवर्तन आइल। जवना से गाँव में एगो नया संस्कार कऽ उदय भइल। जवन ग्राम के रूप ले लिहलसि। इहवाँ ले कि परम्परागत विधि–विधान में अभूत मूल परिवर्तन भइल आ रीति–रिवाजन में बदलाव आइल। लोगन कऽ सोच ज्यादा विकसित भइल आ लोग संस्कारित होखल गइलन।

गाँव जहवाँ तेल भरल दीया से टिमटिमात रहे, उहँवे आजु बिजुली के बल्बन से जगमगात बा। जहाँ स्कूलन के अभाव रहे, उहँवे ओकर भरमार लउकत बा। हरेक आधुनिक साज–सज्जा से गाँव सुसज्जित हो गइल बा। फिरो आजु गाँव आत्मनिर्भर नइखे लउकत। एकर हालत अइसन हो गइल बा, ना ई गाँव–गाँव रहि गइल बा, ना शहर बन पावल बा। ई दूनो के बीच के रहि गइल बा।

भले आजु ग्रामीण जीवन, शहरी जीवन जइसन अपना के महसूस कइ रहल बा, काहे कि गाँव के स्कूल के, अस्पताल के, ग्राम पंचाइत में इण्टरनेट के, समाचार पत्रन आ पत्रिकन के, टेलीविजन, टेलीफोन, मोबाइल आदि के सुविधा पहुँच गइल बा। गाँव अब मुख्य मार्गन से जोड़ दिहल गइल बाड़न सऽ। गाँव में शौचालय, पानी पीये खातिर पानी टंकी, हैंड पाइप, खेतन के सिंचाई खातिर नलकूप, ट्यूबवेल, खेत जोते खातिर ट्रैक्टर आदि के सुविधा हो गइल बा। गाँव में फास्टफूड से लेकर दवाई के दुकान तक ले उपलब्ध बा। कच्चा के जगहा पक्का मकान बनि गइल बाड़न सऽ। पगडंडी के जगहा चौड़ा–चौड़ा पक्का राह निकल आइल बाड़न सऽ। जनजागरण एतना भइल बा कि लोग अपना मत के भली–भाँति समुझे–बूझे लागल बाड़न, जवन लोकतंत्र के वरदान बा।

आजु अभाव खाली एकही चीज के बा कि गाँव बाग–बगइचा में छिपल नइखे रहि गइल। ऊ उघार नियर हो गइल आ कंकरीट के जंगल नियर लउकत बा। केहू ठीके कहले बा– "अब ऊ गाँव, गाँव नइखे/ पेड़ तऽ बा बाकि ऊ छाँव नइखे/"। गाँव में पानी पीये खातिर भा अन्य काम करे खातिर जवन कुँआ खोदल गइल रहलन सऽ। आजु ऊ भठावल जा रहल बाड़न सऽ। उन्हन कऽ अस्तित्व मिटावल जा रहल बा। गाँव में चौपाल नइखे आ ना कवनो बाति के जानकारी खातिर डुग्गी बजा के मुनादी फिरावल जात बा। आपसी संबंध तऽ रसरी कऽ चेट नियर हो गइल बा। गुटबाजी आ गन्दा राजनीति डेगे–डेग लउकत बा। जहाँ सादी–बियाह में सबकर आपुसी योगदान लउकत रहे, उहँवे मोहल्ला के लोग बारात के अगवानियो करे नइखे जात। अब अजीब रूखापन लउकत बा। आजु संयुक्त परिवार में कमी आइल बा। एकल परिवार क प्रयास होखे लागत बा। मुखिया कऽ जगहा ग्राम–प्रधान पद सृजित भइल बा बाकिर ओकर कवनो सम्मान नइखे लउकत। लोग एक दोसरा के दुख से दुखी आ सुख से सुखी नइखन लउकत। आजु अजीबोगरीब माहौल बनल जा रहल बा। जवना में ईर्ष्या के, कटुता के, बड़–बुजुर्गन के प्रति उपेक्षा के, महिलन के प्रति दुर्भावना के आ अपनो प्रति उपेक्षा, अनादर के जड़ मजबूत हो रहल बा। तीज–तिहवारन पर हरख–उलास नइखे लउकत। लागता जइसे गाँव दबाव महसूस कइ रहल बा।

ई देखला–सुनला से तऽ इहे बुझात बा कि मनुष्य से मनुष्यता खतम हो रहल बा। आ ऊ एगो सूखल पेड़ अइसन उदास खाड़ बा। का एकर रस चूस लेवे में शिक्षा के बौद्धिकता के परावर्तित विकृत रूप जीवन्त हो रहल बा, जे व्यक्ति के व्यक्तिगत आ स्वारथी करत जा रहल बा? आ कवनो अइसन एजेण्डा बा जे विशेष बौद्धिक लोगन का जरिये संचरण कइके समाज के कइ स्तर पर बाँटे खातिर प्रेरित कइ रहल बा। गाँव, भावना–प्रधान ना होइके बुद्धि–प्रधान हो गइल बा।

हमनी का सभ्य होखत जा रहल बानी जा, आ गाँव शहर के दूरियो घटा रहल बानी जा, बाकिर गाँव जवना खातिर जानल जाला ओकरा मूल्यन में तेजी से गिरावट आ रहल बा। आजु जलाशय के दिव्यता तऽ नष्ट भइले बा, बाग–बगइचा नष्ट भइल बाड़न सऽ। जलाशय के दिव्यता लौटावे खातिर फेरू से जनजागरण फइलावे के परी आ बाग–बगइचा लगावे के परी तबे ई धरती, आ धरती पर रहे वाला मनई भा जीव–जन्तु बचिहन। पर्यावरण के शुद्धता के ताल ठोंके वाला ई गाँव के फेरू से जागे के परी आ एकर अस्तित्व बचावे खातिर आगे आवे के परी, ना तऽ गाँव कल्प–वृक्ष ना रहिके, विष–वृक्ष बनि जाई आ शहरी प्रभाव में आके मरि जाई। फेरू इतिहासे में लउकी आ भेंटाई हमनी के गाँव। ●●

■ मैरीटार, बलिया, उ०प्र०

गाँव में केतना गाँव?

✍ रामदेव शुक्ल

विदेस जतरा के चरखा एइसन चलल कि एह बेर गाँव पहुँचले में जुग बितल एइसन लागल। कलेंडर के हिसाबे त एके बरिस बीतल, बाकि हमरे मन में उठत कचोट के हिसाब जोरल जाए, त जुगे बनाई। सहर से जेकरे साथे हमके जाए के रहे, ऊ कहलें, दिन में जेठ के सुरुज आगि बरिसत बाने, साँझि के चलल जाई। राति गउँवे में भउरी चोखा चीखल जाई, छते पर सूतल जाई आ सबेरे, जवन करे के होखी तवन कइल जाई। अपने हाथ के मोबाइल घनघना के हमार साथी गाँवे में परोगराम बता दिहले। कहि दिहलें कि सब कुछ चउचक रहे के चाहीं।

सहर के डराइवर लगन लमहले के लालच में कुछ तेरी कइले। एसे गाँवे पहुँचत दस बजि गइल। सड़कि से गाँव के राहि धइल गइल त अचरज भइल कि जहाँ भईंसी के पीठि एइसन करिया चमकत रहलि हा। पता चलल कि ऊ परधानमंत्री जोजना में चिक्कन हो गइल बा। सिवाने पर बुढ़िया बारी की जगह पर सपाट मैदान रहल। ओमें जनरेटर धकधकात रहले स, आ किरिकिट के मैदान खेलाड़ी लोगन से भरल रहल। माइक पर एक जने गरजत रहलें कि फलाने जी के टुग्गी लागि गइल...। हम पूछनी– ई टुग्गी का हऽ भाई? तबले हमन के गाड़ी आगे बढ़ि गइल। साथी समुझवलें कि सहरी किरकिट में छक्का–चउका मारल जाला। एइजा छोट मैदान बा ओमें जे बाल लाइन पार पहुँचा देला ओके दू रन मिलेला। बाकि बाल धरती पर डगरत जाए के चाहीं, जो हवा में उड़ि के पार हो जाई त आउट हो जइहें। गाड़ी दुआरे पर पहुँचल। बिजली रहल नाहीं बाकिर उजियार भरपूर रहल। बड़े बड़े चीन के बनल लेड वाली चोरबत्ती जगमग कइले रहली। साथी पूछि परले–टार्च के चोरबत्ती काहें कहल जाला? हम कहनी– अब नाहीं कहल जाला। हमरी लरिकाईं के जमाना में गाँव के माटी के दीया बरत रहल। जेकरा माटी के तेल किनले के औकात रहे उनकी घरे ढेबरी जरे। राति के कब्बो कब्बो कवनो गाँव में सेन्हि कटि जाय, आ बिहाने हल्ला होखे त लोग कहि परे– चोरबत्ती चमकत रहुवे। तबे हम बूझि गइनी कि कहीं सेन्हि खोलाई। ओह जमाना में चोरन के हाथे में रहले से एकर नाँव चोरबत्ती धरा गइल। अब त हाथे हाथे लउकत बा।

लिट्टी चोखा की साथे दालियो बनल रहल। दही, घिउ त रहबे कइल। बोतल के पानियो धइल रहल। हम पूछनी– ई काहे खातिर मँगवलऽ हऽ त कहले– गाँव के इनार पाटि दिहल गइल। सरकारी चाँपाकल पानी छोड़ि दिहले बा। रउवा के पीये लायक सुद्ध पानी कहाँ मिलत, त दू बोतल कसबा से मँगा लिहल गइल। खा–पीके छत्ते पर सूते गइलीं जा। एइसन पुरुवा लहरति रहे कि का पूछे के? लोहा के सिरईं पाटी वाली प्लास्टिक से बीनल खटिया पर मसहरी लागल रहे। पुरुवा ओके बहारि के फेंकले के कोसिस करति रहे। पुछनीं, एइसन पुरुवा में मसहरी के कवन जरूरत रहल। जवाब मिलल– जब अचक्के बेबरिया बन्द हो जाई त मच्छर टाँगि ले जइहें सऽ। एही से लगावल बा। कहले– रउवाँ सूति रहीं त हम चारू ओर से दबा देबे। तब नाहीं उड़ी। हम पुछनीं– ई लोहा के सिरईंपाटी वाली खटिया काहें बनल बा? बतवले– "काठ के सिरईं पाटी हजार से कम में ना मिली। मिलियो जाय गाँव में रसरी बरे वाला केहू नइखे। बजारे से सुतरी कीनिके ले आइल जाय तऽ केहू खटिया बीने वाला नइखे। एसे नीक बा बनल बनावल मिलि जात बा। हल्लुक बा, उठवलहू में दिक्कत नइखे।" मसहरी से उप्पर असमान जोन्ही से भरल जगमगात रहल। बहुत दिन बाद एइसन सुतार मिलत रहे। एतना नीक लागत रहल कि मन कइलस कि राति भरि असमनवें निहारत रहीं। बारह बजि गइल, एकर खबर टुग्गी किरिकट की मैदान के माइक से मिलल। ओपर एक जने फेंकरत रहलें– नेताजी बस पधारने ही वाले हैं। उन्होंने बारह बजे का समय दिया था– बारह बज रहे हैं। उनकी गाड़ियों के काफिले से किसी को चोट लग गयी थी। मामला सुलट गया है। खबर मिली है कि पन्द्रह बीस मिनट में आ जायेंगे।

एक बजे कि बाद पुरस्कार वितरण आ नेता जी के भाषण भइल। तबले ऊँघी लगले के कवनो सवाले नाहीं रहल। पुरुवा ललकारति रहे। का जने कब आँखि लगल। जड़ये लागल त आँखि खुलल। गोड़वारी दोहरि धइल रहे। ओढ़िके सूतनी। एइसन सुतनी कि कुछ पते नाहीं चलल कब बिहान हो गइल। जोर से गाड़ी के भोंपू के आवाज सुनिके, आँखि खोलनी त छत्ते पर घाम लहकल। घड़ी देखनी छव बजल रहे। हमरी उठते जग में पानी लिहले एक जने अइलें। पुछलें– चाह कब पीयल जाई? हम कहनी अबे नाहीं। पहिले नीचे चलल जाए। नीचे दुआर पर छोटकी ट्रक खाड़ रहे। ओपर एगो टंकी पर लिखल रहे गंगाजल। लोग गैलन आ बल्टी लेके पानी भरवावत रहे। टंकी में लागल पाइप से गैलन में पानी भरिके ओपर खाड़ आदिमी

हाथ पसारे। सब केहू कुछ देत रहे। पता चलल कि दस लीटर के गैलन दस रुपया में भराला। बल्टियो दस रुपया में। केहू केहू पाँचो रुपया के पानी किनत रहल। गुनानि भइल कि गाँव में एइसन बहुत लोग बा जे पानी खातिर एक्को रुपया खरच कइले की हालत में नइखे, ओह लोगन के का हालि होई। पुछनी त लोग बतावल कि कुछ लोग की दुआर पर नल गड़ाइल बा ओही से लेके सब लोग पीयेले, जे कीनि नाहीं पावेले। दक्खिन टोला में मोटका मूठी वाला सरकारी नल बा। पहिले बहुत मीठ पानी देत रहल, अब ओमें से पीयर कनई एइसन पानी निकलि रहल बा।

चाह पियले कि बाद गांव में दु–चारि जने से मिले खातिर चलल गइल। एगो नवकी बात लउकल। कुछ कोठा पर हरियर पताका फहरत रहले। पुछले पर पता चलल कि अब हर मुसलमान के घर पर एइसन पताका लगावल जरूरी हो गइल बा। आगे बढ़ले पर कई गो कोठा पर केसरिया रंग के अउर लमहर पताका फहरात रहले। पता चलल कि हिंदू वाहिनी के कहावत बा कि हर हिंदू के घर पर एइसन निसानी होखे के चाहीं। दू कोठा पर सिवसेना के झंडा लउकल, कुछ पर बज्जर दल के, कुछ पर हाथी के आ कुछ घर पर सइकिल के। कई घर झंडा पताका से खाली रहल जहाँ एकरे खातिर कवनो जगहिए नाहीं रहल। चचऊ किहाँ गइनी। खलरी झुलि गइल रहे बाकि बिना चसमा के मुलुकावत आँखि से पहिचानि गइलें। खुसी के मारे रोवे लगलें। हालचालि पुछलें। बतवनी। कहलें– एह लेखा घर–दुआर नाहीं छोड़े के चाहीं। उनकर हालि पुछनी त कहलें लइकिया अपनी अपनी घरे करत खात बाड़ी सन। बेटा लोग आपन आपन मेहरी लइका लेके फरके रहत बा। हमन के दूनू परानी दू रोटी कबो एक जने की घर से पा जाईले जा, तऽ कबो दुसरका जने कि घर से। नतिया कुलि हमन के असरा बनल बाने स। जेठका जने सऊदी जाए खातिर अपने हिस्सा के खेत बैनामा कइके गइले। दू साल हो गइल कवनो खबर नइखे। उनके मेहर लइकन के लेके नइहर रहेले। चाची अइली। देखि के बहुत मोहइली। हमरे लइकन के हाल चाल पुछली। कहली– एक बेर दुलहिन के लइकवन की साथे ले अइहऽ। ओही जा रहली सभे, तले मेटकी चाची लउकि गइली। हम त चिहा गइनी– सलवार कुर्ता में उनके पहिले बेर देखत रहनी। हमार चिहाइल देखिके चाची हँसि परली। कहली– का करीं ए बेटा। मौलवी साहब के हुकुम बा कि धोती पहिरले पर निच्चे लाज नाहीं हँपाई। सलवार पहिरल जरूरी बा।'

आगे बढ़ते एतना जोर से मोटर बाइक गुजरल कि बुझाइल कि भुईंचाल आ गइल। कुछ बुझाय ओकरे पहिलहीं धाँय धाँय पाँच छव गो अउर गुजरि गइली सं। पता चलल एह समय गाँव में दू सौ से ऊपर बाइक बाड़ी स। चलावे वाला जवान बारह से अट्ठारह बरिस के निच्चे के। गोड़ में चपटल जीन्स, करिया कुर्ती (टी–शर्ट) कान में गाना सुने वाली ठेपी खोंसले, आँखि पर करिया चसमा। कुछ की पीठी पर लउकत करिया झोरा। एक गोल पैदल मिलल। सबकी एक हाथ में मोबाइल, एक हाथ में एक लिटरवाला मोबिल के डब्बा। पता चलल ई लोग गाँव पछवइया लइका हवे। रात दिन एके साथे रहेलें। एह समें मैदान करे जा रहल बा लोग। सबकी हाथ में मोबाइल कान में ठेपी। सब गाना सुनिके मगन।

अबो नाहीं बजल रहे कि घाम करूआए लागल। लौटे लगनी जा। एगो ठेला गाड़ी पर लाल–पीयर डिब्बा कसल रहे। हिमालय आइसक्रीम मोट मोट अक्षर में लिखाइल रहे। गउँवे के एगो लइका कसबा से ले आके आइसक्रीम बेचत रहल। लइका हाथे में नोट भा डलिया में अनाज लेके दउरे लगले सं। एगो छोटकी ट्रक गरजति आके रुकलि– पाछे सोगाठग दोकानि। ड्राइवर माइक पर बोले लगले– लहसुन साठ रुपए किलो, तीस का आधा किलो। गरी का गोला– पूरा गोला पचास रुपए में। छोहाड़ा पचास रुपया किलो, किसमिस दू सौ रुपया। पिसी हल्दी पैंतीस रुपया पाव। आसाम से आई चायपत्ती– पैंतीस रुपया की अढ़ाई सौ ग्राम। पाल्ला मकरोनी बीस रुपया पाव। आइए आइए एकदम पुरनका जमाना के नौटंकी के परचार। एगो ठेला पर बेल आ खीरा बेचे वाला। एगो पर चना, भूँजा, चना, मूँगफली के दाना। अच्छा ई लागल कि ई कुलि लइका गाँव के रहले। आपन रोजगार, छोट लागत में मजिगर कमाई।

सबसे जियादा खुसी गाँव के लइकिन के देखि के भइल। दस बारे साल के लइकी सइकिल पर फर फर उड़ति रहली। पुछनी– स्कूल त बन्द बा, ई कहाँ जात बाड़ी सं। पता चलल कवनो टियूशन पढ़े, कवनो कढ़ाई–बुनाई सीखे, कवनो सिलाई सीखे। पता चलल कि दूगो लइकी कसबा के बूटी पोलर में सिंगार कइले के टरेनिंग ले रहलि बाड़ी। कई गो लइकी इंटर पास कइले कि बाद साइकिल पवले बाड़ी। कुछ के आसरा लागल बा कि गोदी में ध के चलावे वाला कंपूटर (लैपटाप) सरकार से ओहू लोग के मिलि जाई। एगो लइकी साइंस से इंटर पास कइले कि बाद अपने मामा किहाँ सहर में रहिके डाक्टरी के पढ़ाई खातिर तइयारी कऽ रहलि बा। एक घर के समाचार ई मिलल कि मुसमात अपने दूनू बेटिन के लेके सहर में रहति बाड़ी। कहाँ रहेली, कौन कामकाज करेली, केहू से बतवले

नइखीं। एक बेर केहू कि साथे मोटरकार में बइठि के आइल रहली गाँवे, त उनके छोटकी लड़किया अपनी सखी से बतवलसि कि माई जाव करेले आ हमन सब पाँच दास सीखल जाला। गाँव के बतकुच्चन में मसल्ला गरमाइल बा कि 'जाव' कइले के का मतलब होला।

दुपहरिया के तयाई कइसे कटी? पटिदारी के भउजाई बोलवा के हमसे कहली– आजु के दुपहरिया हमरी लग्गे बिताईं न? कहली– राउर अवाई सुनि के जियरा फुला गइल बा। बरी–फुलौरी आ कढ़ी बनवले बानी। एही जा खाये के परी आ दुपहरिया बिताये के परी। खाए बइठनी त भउजी बेना डोलाये लगली। खुशी से उनके झुकाइल चेहरा चमकत रहे। जइसे जइसे बेना डोलावें, उनके बिना दाँत के मुँह चले। कुछ देर बाद हम समुझि पवनीं कि भउजी गुनगुना रहल बाड़ी। जवानी में जवन गीत गा के सबके मन महुआ बना डारे, ऊहे गीति–

'नई झुलनी की छइयाँ बलम दुपहरिया बिता लऽ हो ऽऽ।'

धेयान गइल त सुनि पवनीं, भउजी गावत रहली–
मोर झुलनी की छइयाँ देवर दुपहरिया बिता लऽ हो ऽऽ।
देवर तनि बेनिया डोला दऽ हो ऽऽ।

भउजी के ऊ रूप मन में उजागर हो गइल जब ऊ गवने आइल रहली आ हम लँगटे उनकी आगे–पीछे लोटात रहनीं।

भउजी गावत गावत मुरझा गइली। हम पुछनीं– का भइल भउजी? काहें उदासि गइनीं? भउजी कहली– रउवा भइया मन परि गइले। बेर बेर कहें कि जनम जनम के साथ बा हमन के! अब देखीं न, हमरा के मँझधार में छोड़िके अपने भौसागर पार उतरि गइले। हम संतोख धरावल चहनीं। कहनीं– जाए दीं भउजी, जे आइल बा, सबका एक दिन जाए के बा। अब देखीं न, रउआँ आगे हम नगटे घूमत रहीं, अब बुढ़ा गइनीं। कुछ दिन में चला–चली। भउजी कहली– 'रउरे दुसमन के होखे चला चली। अबहिन बहुत दिन जीए के बा। मन थोर जनि करीं। बताईं हमार देवरानी कइसे बाड़ी? लइका कइसे कहाँ बाड़े? बतवनीं आ पुछनीं– राउर बाबू कहाँ बाड़े आजुकाल? भउजी हरियरा गइली। कहली– 'डिल्ली में बाड़े'। उनके लड़किया एह साल अमेरिका चलि गइल। हमरा पतोहा एक बेर हमके हवाई जहाज से रामेसवर धाम ले जाइल चाहत बाड़ी। हम कहनीं, अब एह झुलझुल देहि के का जहाजी पर चढ़इबू?'

मतवा जी!' बहरा से एगो आवाज आइल। भउजी धरती पर हाथ टेकि के धीरे धीरे उठली। हमहूँ सथवे निकइनीं। दुआरा पर एगो टेक्टर में धान कूटे वाली मशीन लागल रहे। भउजी कहली– इनहीं के बोलवले रहनीं हँ। धान कूटे के रहल हऽ। भउजी के दुअरहा बोरा बोरा धान उठाके देवे लगले। आधा घंटा में कई बोरा धान कुटा गइल। चमकत चाउर फरके, भूसी फरके आ बरान फरके। भउजी कहली– 'बरान हमके देवऽ। टेक्टर वाला कहले– तेरे रुपया किलो बिकाला, रउवा एक रूपया कम दे दीं। भउजी बीस किलो बरान तउलवा कहली– 'एही में जौ के दर्रा मिलाके गाई के खियावल जाला।' भउजी मुसकइली। कहली– बाबू रउवा मन परत बा? गाँव के कुटनिहारी पिसनहारी लोग कुटौनी–पिसौनी कइ के जीयत खात रहलिन। आजु काल्ह मसिनिहा लोग दुआरे दुआरे मसीन लेके घूमि रहल बा। कुटौनी–पिसौनी नइखे लोग माँगत। धान कूटि के बरान आ भूसी ले लेता लोग आ गोहूँ पीसि के चोकर। चालि दरिके ओकर खुद्दी लेके चलि जात बा लोग। अब केहू कुटनीहरी पिसनहरी नाहीं रहि गइल बा गाँव में।

हम कहनीं– भउजी, सहर में बड़का लोग के मलिकाइन लोग के खून में जब चिनी ढेर बढ़ि जात बा त डाक्टर लोग दवाई बतावत बा कि अपने हाथे जाँता से गोहूँ पीसि के चोकर वाला आटा के रोटी खाईं, एही से चीनी आ मोटापा कंट्रोल में रही। भउजी पुछली, हमरी देवरनिया के चीनी नइखे न बढ़ल? हम कहनीं– नाहीं, ऊ ठीक बाड़ी।'

तबले आठ–दस गो लइका चिल्लाए लगले सऽ– हर हर महादेव, हर हर महादेव, दुसरका ओर से एगो गिरोह आइल–अल्ला हो अकबर, या अली। एक गोल तिसरका ओर से आइल– जय भीम, जय भीम बुझाइल कि तीनू गोल अझुरा जाई– एतना गरमा गरमी भइल कि नारा बदले लागल– तोरी माई के..., हर हर महादेव, तोरी माई के या अली..., तोरी माई के जय भीम...। एतना छोट छोट लइका आ चुनाव के एइसन बोखार। राजनीत आ धरम के अइसन लिल्हा।

भउजी कहली, जब से परधानी के चुनाव नचाइल रहे, तब्बे से ईहे हालि बा। चुनाव बितले कि बाद रगरा बढ़ले जात बा। एह गाँव में हिन्दू–मुसलमान सब एके लेखा धूरा माटी पसेना में सनाइल रहत रहले। सबे भिनसहरा से दुपहर ले खेते में हर कुदारी से खटत रहे। दुपहरह में आके दतुअन कुल्ला क के खा–पीके कढ़ियाव साँझ करत रहे, बोलत बतियावत रहे। अब सब अलग अलग गोल में चिन्हाए लागल बा।

हम समुझिए नाहीं पवनी, कवनी ओर से एगो बंवडेरा एइसन भीरि आके हमके घेरि लिहलसि। दू जने आगे बढ़िके हमके एह लेखा झकझोरे लगले कि बुझाइल हम गिरि परबि। तबले कुछ जने बढ़ि के ओह

दूनू जने के फरके हटावल लोग। दूनू जने बोलत बोलत मूँहे से फेचकुर फेंकत रहले। हमरा कुछ बुझइबे नाहीं करे। एतना बुझाइल कि हमही से कुछ कहि रहल बा लोग। हम कहनी– धीरे धीरे बोलिके बतावऽ, का कहल चाहत बाड़ऽ? एक जने कहले– बी०डी०सी० के चुनाव में राउर आ चाची के वोट ई अपने में डरवा लिहले। हम रोकनी त कहले– ए बेरी हमके डरवावे द, परधानी वाला चुनाव में चाचा चाची के वोट तूँ डरवा लीहऽ। ई बेइमान परधानियो में आप लोगन के वोटवा डरवावे लागल। ईहे झगरा के जरि बा।

हम खिसा गइनीं। हम त सुनले रहनीं कि अब चुनाव में दूसर अदिमी दुसरे की जगहि पर वोट डारिए नाहीं पावेला। आ दुसरका बात ई कि हम आ हमार परिवार सहर में वोट डारेला। गाँव के वोटर लिस्ट से आपन नाँव हम कई बरिस पहिले हटवा दिहले रहनी। पूछनी– तइसन भैया, ई बतावऽ कि हम गाँव में वोटर हइए नइखीं आ न हमार चाचिए बाड़ी। तब हमन के वोट कइसे परि जाई? दूनू एके साथे एके बात बोले लगले– चाचाजी, गाँव के चुनाव में ई सुलि करही के परेला। हम पूछनी– कइसे हो जाला? बतावल लोग– वोटर लिस्ट गउँवे तसील में न बनेला।

एही बिच्चे महरिन लुग्गा सम्हारत धावल अइली। एगो बाइक वाला हमन के देखि के विलमि गइल रहल, ओही के पाछे धावत रहली। जब रोकि दिहलसि त कहलीं– अरे ए बाबू! गैसवा नाहीं मिली त आजु हमार घर भरि उपास करी। कवनो जोगाड़ करीं कि सिलेंडरवा मिलि जाय। बाइक वाला कहलसि– बिहने मिली, आजु कवनो तरे काम चलावऽ। महरिन कहली, लइकन के उपास मति करवाईं। तबले एगो मनई पूछि परल– ए काकी! साल भरि पहिले जब गैस के चूल्हा तहरे किहाँ नाहीं आइल रहल तब लइका सेयान कइसे खात रहले? दुसरका जवाब दिहलसि, खेते खेते खूंटी, आ लकड़ी चलई बीनिके खेंका बनावत रहली। अब एह टैम गैस नाहीं मिली त उपास हो जाई– एजा रे जवाना। ककिया उनकी ओर बढ़लि बुझाइल कि मुँहवे नोचि लेई। भागि के दूनू जने जान बचवले।

साँझि होखे लागल। लवटले के फिकिर भइल। डराइवर सबेरवें बसे से सहर लवटि गइल रहे। कहत गइल कि जब लौटे के होई त दू घंटा पहिले फोन कऽ के बता देबि, त हम आवे के चलब। डराइवर के फोन कइल चहनीं त मन में एगो लालच चढ़रि गइल– आजुओ राति के जोन्ही के उजियार देखि लेहल जाय।

अजहज में परल रहनी तले धरमू आके गोड़ धइले। असिरबाद देवे खातिर उनके मूँहे ताकर लकनी त लाल भभुका। दारू के भभका नाके में भरि गइल। धरमू– कहले, आज एह बेर बहुत दिन बाद गाँवे अइनीं। हमहूँ के अपने साथे... उनके बाँहि पकड़ि के उनके साथी खिंचलसि त ओकरे उप्पर गिरि के डँटले– काहे हटावत बाड़ऽ? हम कवनो सराब पियले बानी। कहत कहत ओकरे उपरे ढहि गइले। हमार जान बाँचल।

पुरनका जमाना के मोटरगाड़ी के भोंपा जोर से बाजल। एक अदिमी सइकिल पर एगो बड़का गैलन कसले लउकल। बोलत रहे– नील ले लो नील। कुछ आगे जा के सइकिल रोकलस। कई जने बोतल लेके गैलन से घोरल नील किनल लोग। तब समुझि पवनी कि सबेरे कई जने के मरदानी काहें उज्जर की जगहि बेगनी लउकत रहल। पुरनका जमाना में कसबा से चुरिहारिन आ ननिहारिन कपारे पर गोल दउरी धइले सेनुर टिकुली बेचत गाँव गाँव घूमत रहे, अब बाइक पर पेटा लदले चुरिहारिन चाची के बेटा घूमेले। हमन की लइकई में जवन जवन समान सहर बजार में जाके कीने बेसाहे के परत रहे, अब सब गउँवे में दुआरे दुआर बिकाता।

सड़क दुआर पर होखे त बड़ा सुतार हो जाला। पहिले कोस भर मोटरी–गठरी कपारे पर लादि के बस पकड़ने जाए के परे। अब दुआरे पर गाड़ी वाला के बइठि जाई आ जहाँ चाही चलि जाई। बाकि एगो खतरा ई हो गइल बा कि सम्हरि के नाहीं रहले पर कब्बो कौनो बाइक भा कार कचरि के चलि जाई। एगो सनहर गाड़ी में लदाइल जीन्स टी शर्ट वाला बैट–बल्ला भाँजत जवान लोग देखा निकडि गइले। आगे लागल भोंपा बतावत रहल कि चौका–छक्का वाला किरकिट होखे जात बा। ओकरे पाछे बीसन गो फटफटिया सनसनात निकडि गइली सें। जे जहाँ रहे, उहे आपन देहि बचावल। पुछनीं त लोग बतावल कि दस दिन दुग्गी किरकिट टूर्नामेंट चलल, अब दस पनरे दिन ई चौका–छक्का के खेला चली।

बाल्मीक पट्टी के जवान आमलेट ब्रेड के ठेला ले आइल। ओकरे पाछे एगो चाउमिन आ मैगी वाला आइल। लइका रुपया आ गोहूँ लेके धावे लगले। एगो मेहरारू अपनी बेटी के हटावे लागलि। मारत जाय आ कहत जाय, गोहू दे के मैगी खइबे, त राति के उपास करे के परी। थोरके दूर पर एगो चबुतरा पर चारि–पाँच रेखिया उठान जीन्स टीशर्ट वाला लोग मोबाइल में कुछ देखि–सुनि के देस दुनिया भुलाइल रहले। पता लागल घर से एह लोग का एतने मतलब रहेला कि खा–पी के निकडि जाले। तबो घर जाले जब फिर भूखि लागेला।

एगो जवान खाली रेक्सा लहरावत झूलत चलि जात रहल। बुझाइल कि नसा में मातल बा। पुछनीं त

एक जने बतवलें कि मुन्नू के बेटा सराब नाहीं पीएला। रेक्सा चलावेला आ गीत गवनई में चोला मगन राखेला। सातवों बेटी तर–उपरिए बाड़ी सं, आठवां कुछ होखे के बा। लोग कहला कि मुन्नू परानी परन कइले बान सन कि जब ले एक गो छोकरा नाहीं हो जाई, तबले ओकरे आस में बेटी पर बेटी होखत रही। मुन्नू कहेले सन कि जे मुँह चिरले बा ऊ खेवा देवे करी।

उज्जर दाढ़ी लहरावत एक जने आके सलाम कइलें। चिन्हले में तनि देरी लागल बाकिर गलती नाहीं भइल। नसरू रहलें। एक तरह से हमार लरकउरिया। लड़कइये में कोइलरी चलि गइले। तीस बरिस खटले के बाद कई लाख रुपया लेके घरे अइलें। कई गो बेटा बेटी। बेटिन के बियाह कइलें। बेटन खातिर दू बिगहा खेत बैनामा करा के टैक्टर कीनि दिहलें। उनका बखरा में टुकड़ा खेत मिलल रहे। लड़कइए से सपना देखत रहलें कि कमाइबि त खेत कीनबि। ऊ इच्छा पूरन भइल। लड़िका टैक्टर से आपन कम, आन के खेत जियादे जोतत। बाप तेल भरवा दें। राति के टैक्टर लेके दूने ओहर से टुग हाके औं। बाप बुझत रहलें, टैक्टर के कमाई जमा करत होइहें सं। एक दिन पुछलें त बड़का कहलस– जवन कमाई होला तवन कुछ त उधार रहि जाला, कुछ हमन के खरचा पानी चाहीं कि नाहीं। एगो कहलसि हमके सउदिया भेजि द। वीजा बनवा के एक लाख के खरचा बानी पर ऊ सउदिया गइल। साल भर बाद फोन कइलस कि कमाया भेज देबऽ, त लवटि अइबि। बीस हजार भेजलें पर अइल। बड़का दूसरे साल टैक्टर बेचि दिहलस। अब दिन भर तास खेलेला। सउदिया वाला घर में से बाहर निकलबे नाहीं करेला। मुन्नू के मिला के आठ गो बेटा बेटी बाड़न सं। उन्हनी के बियाह के फिकिर महरू के बा। पुछनीं– पढ़ले स कि नाहीं? कपारे हाथ लगाके कहलें– बाप दिन भर तास जुआ खेली, त लड़का पढ़ी कइसे?

पिता पुत्र के जोड़ी हर हर महादेव चिल्लात सड़क से गुजरल। पता चलल पंडी जी हवे लव। कचहरी में मुंसीगिरी करेलें। पहिले गांव के जवन लोग सराब पीये, ऊ अउर लोगन के सनमें निगाह झुका के रहे। अब पियले कि बाद सीना उतान कइले गरजत चलि रहल बा लोग। भीम टोली में घर घर कच्ची के पाउच मिलि रहल बा। बाप–भाई की साथे तेरह–चउदे बरिस के दुलरुआ जाके पीखि आवत बाने। एक हाथ पाउच दुसरका में चिप्स के पैकेट रहे, अब हैसियत मानल जा रहल बा।

एगो बड़हन गाड़ी हमरे सम्हनवें आ के रुकलि। ओमे से एक बड़का अफसर निकलि के अइलें। हाथ जोरि के परनाम कइलें। अंसिलला की बाद पुछनीं– बाबू, आपन परिचय बताईं। हम चीन्हि नइखीं पावत। ऊ अपने पिता जी के नाव बतवलें। इनकम टैक्स के कमिस्नर रहलें। अब हटा दिहल गइल बाने। कहलें– हम उनके बेटा हईं। बगल वाला गाँव में फार्म हाउस बनववले बानीं। पचीस एकड़ में। ओही जा आइल रहनी हँ त पता लागल कि आप गायें आइल बानी। हमार फारम देखि लेतीं त बाबूजी के बड़ा अच्छा लागित। बाबुओ जी आइल बानीं। उहां का चाहत बानी कि आज रात के भोजन आप हमरे फारमहाउस पर करीं। सहर लौटे के होखे त हमन के साथे चलि चलब। हम कहनीं– बाबू, आज हम एईजा खाइबि। बिहने लौटके बा। कहबऽ त तहन पापा की साथे चलि चलब। ऊ फारम हाउस वाला चलि गइलें त जीव हल्लुक हो गइल।

कलयारू आके खिखियाए लगलें। पुछनीं– का भइल? कहलें, हमरे लइका के जीव खराब बा। गांव के डाक्टर चारि हजार ले लिहलें, कसबा के डाक्टर खेत बेचवा दिहलें। अब कहत बाने– हमरे मान के नइखे लखनऊ दिल्ली ले जा। हम कहनीं– कहीं मति ले जा। बिहने हमरे साथे चलऽ। हम डाक्टर के देखा लेबि। जइसन उनके राय होई, ओइसन कइल जाई।

लड़किन के एगो झुंड खेते जात रहल। हम त सुनले रहनी कि घर घर में सौचालय बनि गइल बा। लोग बतावल कि सरकारी कागज में घर घर बनि गइल बा। असल में दस–बारह घर में बा। कई जने के कहाब हऽ कि कोठरी में बइठि के मैदान होइए नाहीं सकेला, मैदान त मैदाने में न होखी। कुछ लइकी प्रियंका सिंह के नाव पिया बालम के घर से सुनि के अपने घरवालन से कहली सन कि सौचालय बनवा द जा। ओकनी के माई–बाप हँसि के कहि दीहल– लइकनियो के जब ससुरा जइहऽ सों त ओहीजा बनवा लीहऽ सों। जवन पइसा सरकार से मिलल कुछ अपना कुछ बलाक परधान के बिच्चे गप्प हो गइल।

राति खाँ जल्दी खा–पीके सुतनीं। कुछु देर जोन्ही के मजा लीहल चहलीं, बाकि नींद आ गइल। सबेरे जल्दी उठिके दुआर पर आ गइनीं। एक–दो साइकिल वाला जवान आके खाड़ भइल तऽ पैलग्गी कऽ के पुछलस– आपके कवन अखबार चाहीं? तब देखनीं ओकरी साइकिल पर अखबार। बतवलस कि पढ़ीले आ सबेरे अखबार बाँटीलें। गांव में आठ गो चाय के दोकान बा, ओइजा देईंले। बारह जने अपने घरे लेलें। हम सुननी हँ कि आप आइल बानीं त सोचनी हँ अखबार पढ़वे करबि। कवन देईं? ओकर मन राखे खातिर ओकरे तीन अखबार में से एकहकगो कीनि लिहलीं आ कहि दिहनीं के आजुए सहर लवटि जाएके बा। बातचीत

में पढ़इयो के जानकारी लिहल चहनीं। बतवलसि कि बीए पहिला साल में पढ़ेला। कुछ लइका माई–बाप के बोझा हल्लुक कइले के उतजोग कऽ रहल बाड़ें, जानि के संतोख भइल। सबसे निम्मन खबरि ई मिलल कि गांव के पन्दरह–सोरह जवान बंबई में बड़का ट्रक चला के पनरे हजार महिना कमा रहल बाड़े आ मतारीबाप के भेजि रहल बाने। एइसन घर के सब दुख दलिदर भागि गइल बा। जवन लइका माईबाप की साथे खेत में जुटल बाड़ें, ऊहो घर दुआर सम्हारि लिहले बाड़ें। बाकि बड़हन फिकिर ओहू लइकन आ जवानन के देखिसुनि के हो रहल बा, जिनके जिनगी मोबाइल, किरकिट, बाइक आ पान–मसाला के नसा में नसा रहलि बा। ओह लोगन के माई–बाप अपने अभागि पर रो रहल बा। एतने नाहीं एइसन जवानन के बियहि के एगो अउरी लइकनी के जनम बिगाड़ि रहल बा।

कतवारू के बेटा के सोचि के जीउ घबड़ाए लागल। सघतिया से कहनी– कसबा से एगो टेक्सी ले आवऽ। बगल में खाड़ एक जने कहले– गउँवे में मिलि जाई। कहनीं– बोलावऽ। आल्टो ले के जे आइल ऊ ड्राइवर नाहीं फिलिम के हीरो बुझात रहले। पैलग्गी कइले। बाप के नाव बतवले तब चीन्हि पवनी। कतवारू आ उनके अधमुअल बेटा के बइठा के चलली। गाड़ी मालिके ड्राइवर रहले। अगवें हमहूं बइठनी। उनसे पुछनी– बाबू गाड़िए चलावे लऽ कि कवनो अउरी काम–काज करेलऽ? मुसुकी मारि के जवाब दिहलें– 'बाबा जी, हम प्राइमरी स्कूल के मास्टर हईं। गाड़ी सवख खातिर किनले बानीं, बाकि कमाइयो हो जाले।' पुछनीं– 'कहाँ पढ़ावेलऽ?' कहले– 'पढ़ाईले कहीं नाहीं। एहजा से सौ किलोमीटर सम्हरे के स्कूल मिलल बा। हेडमास्टर अपने बिरादर हउवें। सब सम्हारि लेलें। महिना में एक बेर जाईले। वेतन निकाड़े खातिर आ महिना भरि के हाजिरी रजिस्टर भरे खातिर। हेडमास्टरे के दस हजार देईले। ओहने ऊ अपने से लेकर अधिकारी आ गांव के परधान सबके हिस्सा बखरा करियावत रहेलें।' पुछनी– 'केहू जांच करे नाहीं आवेला?' कहलें– 'बिना तारीख डरले छुट्टी के हमार दरखास्त हेडमास्टर की लगवे रहेला। जहिया केहू बेकहल अधिकारी आ जइहें, ओहि दिन के तारीख डारि के हमके छुट्टी पर देखा दीहें। हेडमास्टर रोज आवेलें?' हमरे एह सवाल के जवाब मिलल– 'उनका कहां आवे जाएके बा? उनहीके ओसारा में स्कूल के आफिस बा। लइका जाड़ा के दिन में उनके दुआर पर बइठेलें आ गरमी में बकड़ी की छाँहें।' हम पुछनी– 'दुपहरिया के भोजन कइसे बँटाला?' कहले– 'ओह मामला के जानकारी परधान आ हेडमास्टर के मामला बा।'

मेडिकल कालेज के प्रिंसिपल कतवारू के बेटा के अपनही जांच कइलें हमसे कहले– 'एह लइका के भरती क लेत बानी। हमरी देखले एकरा कवनो बेमारी नइखे। एइसन हाल खइले बिना भइल बा। एहजा एके अस्पताल के खाना, पानी, दूध, अंडा मिली। सुधरि जाई। खून–पेसाब सबके जांच कराके देखल जाई।' कहि दिहनी कि लइका के खाना–खोराक सब एही जा मिली। तू हमरे घरे आ के दूनू जून खा लिहल करिहऽ। आ कवनो बात होई त सोझे प्रिंसपले साहब से कहिहऽ। ऊ हमार मीत हवें। कतवारू के आपन घर देखा दिहनी।

गांव के हालत सोचि सोचि नींको लागे, बाउरो लागे। गांव में केहू भूख से मरि जाई, एकर गुंजाइश खतम हो गइल बा बाकि जवन खाइल पीयल जा रहल बा, ओसे केतना लोग कतवारू के लइका की लेखा होखत जाई? जवन लइकनी मेहनत से कुछ लायक बनि रहल बाड़ी ओकनी के देखि के मन हरखित होत बा। जवने के मतारी–बाप स्कूल के राहिए नइखे धरे देत ओकनी के का होई? एगो मोछि केहू के दुआर पर नइखे लउकत। चाह पियले के चसका बहुत लोग के लागि गइल बा। ऊ लोग करिया चाह पियले के मजा लेत बा। गाइ भंइसले में गोबर काछे के परी। अब केहू हाथे से गोबर छुए के तइयार नइखे। डाई–यूरिया से खेत उसराह भइल जात बाटें बाकिर गाइ बैल रखले के नॉव केहू नइखे लेत। कुछ लोग सहर में रहि के गांव के खेती करा रहल बा। ओह लोग के कमाई बढ़त जात बा। केला, पपीता आर तरकारी के खेती कऽ के कम जोत वाला मेहनती खेतिहर कमाई में सबसे आगे बाड़े। अब केहू दुआर नइखे बहारत।

स्वच्छताकर्मी सोरह हजार रुपया महिना पावेलें। कसबा में रहेलें। गांव के एगो बाल्मीकि के तीन हजार रुपया महिना देले। ऊ एगो टाली में सबके दुआर बहारि के उठा ले जाला। जोंगरचोरन के जमात बढ़ि रहल बा। तब्बो सहर में न एइसन हवा मिलत बा, न चाम सुरुज, न जोन्ही भकजोन्ही। गांव के दू घर के हाल सबसे अलगे बा। कहल जाला, बारे बरिस में घूरो के दिन लवटि आवेला। एक कलकतिया के धन धरम लेके जवन बाबू साहब ओकरा के कहीं के नाहीं रखलें, आजु काल ओही के मेहरारू उनके बनावत खियावति बा। बेटा लोग बखरा बांट कऽ के अपने हिस्सा के खेत बेचि के सहर में बसि गइलें। बाप के अपने साथे राखे के केहू तइयार नइखे। बाबू साहब का करें? हारिमाछि के गांवे में परल रहेलें। जवने मकान कापर ताकत में लोग डेरात रहल, ओहमें घुरना के नाक चुआवत लइका खेलत खात बाने। घुरनाओ, अपनी फुहरकन खातिर

गाँव भरि में चिन्हात रहलि। अबो कवनो फरक नाहीं परल बा। निम्मन खइले पियले से देहिया चिकनात जात बा बाकि चाल चलन कइसे बदलो। बाबू साहब मिनिको नाहीं करेलें। कुछ बोले त काहे देईं, हम घरे जात बानीं, सम्हारीं आपन चौकाबासन। सफाई खोजे त भूखे मरें। उपास से पतोह के जूठ नीक।

दुसरका घर पंडी जी के। बुढ़ौती में कीनि के मेहरारू ले अइलें। साथे बेटा रहल। ओके पहिले आपन भतीजा बतवलस। बाद में भेद खुलल। पनरे–सोरे बरिस के भइल त ओके एगो दलिद्दर बभने के भरना के ओकरी सुघर बेटी से बियाह कऽ लिहलें। गांव के लोग एक दिन हल्ला सुनल कि पंडी जी के पतोह कि लग्गे सहर से केहू आइल रहल। अवाई–जवाई बढ़त गइल। साल भर बाद बेटा–पतोह कहलन– 'एइजा के खेत बेचि के सहर में मकान बनवा लीहल जाय।' पंडी जी मानि गइलें। सहर में बेटा पतोह के मकान बनि गइल। पंडी जी मलकाइन कि साथे ग्रहभोज में गइलें। गांव के लोग बूझल कि अब इहो लोग सहरी हो गइलें। एको पखवारा नाहीं बीतल कि दूनू परानी के बुलुका के गांवे खदेरि दिहलें छुलि। एहर एगो नयका गवगा फइलल बा– पतोह के सहरी संघतिया के साथे अब ओकर दुलहवा नइखे लउकत। केहू जनते नइखे ओकर का भइल? जेतना मुँह, ओतना बात। के जाने जियत बा कि नाहीं?

घर घर के अलगे अलगे कथा–कहानी बा। गांव में केतना गांव रहि गइल बा, आ केतना सहर घुसरि आइल बा, बतावल कठिन बा। 'ग्राम देवता' में ओनइस सौ बहत्तर तिहत्तर में हमरा लिखे के परल रहे कि, 'गांव कसबा हो गइल बा, कसबा सहर हो गइल बा, सहर दिल्ली हो गइल बा आ दिल्ली बिलाइत हो गइल बा।' ए घरी कहल जा सकेला कि गंउवे बिलाइत हो रहल बा। ओह समे दू आना चारि आना के कवनो मजूरी नाहीं मिलत रहल। एह समे गारा–माटी ढोवे वाला एक दिन में तीन चार सौ रुपया कमा लेत बाड़ें। जे तनी चलविद्धर बा ऊ पांच सौ से हजार तक ले कमा रहल बा। बढ़ई आ घवई के एक दिन के मजूरी छव सौ सात सौ हो गइल बा। जे तनिको हाथ गोड़ चला रहल बा, ऊ निम्मन खा पहिरि रहल बा। जवने जाति के लोग से बड़का कहावे वाला लोग छेंहि नाहीं, छुवावत रहल, ओही जाति के लड़की सहर में ओही लोगन किहां रसोई सम्हारि के सात आठ हजार महिना कमा रहल बाड़ी।

कैलाश गौतम पनरे–बीस बरिस पहिले लिखलें– 'गांव गया था, गांव से भागा।' गांव से घिनाए वाला लोग के बड़ा नीक लागल। अब ऊहे लोग साफ हवा आ सोगहग उंचाई खातिर गंउवे की ओर भागि रहल बा। एक बेर हमरे गांवे आके देखीं। ••

शीतल सुमन, रानी चौक, आरोग्य मंदिर, गोरखपुर, उ०प्र०

लघुकथा

मियाँ क जूती, मियाँ के सर

विनोद द्विवेदी

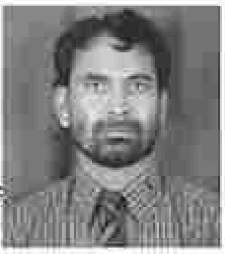

एगो गड़ेरिया अपना भेड़न के झुंड बड़हन बनावे खातिर, महाजन से सूद पर रुपया लिहलस। भेड़ त बढ़ि गइली सऽ? बाकि सुदियो ओही तरे बढ़ल। महीना से बरिस पर बरिस बीतल। कर्जा के दोबरी–तेबरी सूद बढ़ल। महाजन सूद के कहो, मूलो खातिर गइल। भेंड़िहारा एक त भेंटाय ना, आ भेंटइबो करे त अल्लम जाउर बतियावे। झख मार के महाजन कचहरी में रुपया खातिर नालिस ठोक दिहलस।

गड़ेरिया एगो चलविधर वकील लगे गइल। ऊ सिखवलस "जान बचावे क बस एकही उपाय बा, ऊ ई कि तोहसे केहू कतनो पूछे भा जिरह करे, तूं भेड़ लेखा में–में करिहऽ! बोलऽ, बोल सकेलऽ?"

–'बें...ऐं...ऐं...' गड़ेरिया बोलल।

वकील खुश कि हमार मोवक्किल बहुत तेज बा। दोसरा दिने तारीख पर, जज साहब का सोझा, महाजन के वकील जिरह शुरू कइलस... 'तूं महाजन से तीन बरिस पहिले कर्जा लेले रहलऽ नूं?'– 'बें...ऐं...ऐं...' गड़ेरिया बोलल

वकील के माथा घूम गइल। ऊ घोहरउवा, तेहरउवा घुमाइ–फिराइ के जब कुछ पूछे गेंड़ेरिया का मुंह से ऊहे निकले 'बें...ऐं...ऐं...'। जजो साहब पूछ के थाक गइले। अंत में फैसला सुनवले... 'जब ई खाली भेंड़े के भाखा बोलत समझत बा त ई कर्जा के एतना रकम कइसे मांग सकेला? एहसे ई मोकदिमा खारिज कइल जाता।'

इजलास से हँसी–खुसी वकील साहब अपना मोवक्किल गेंड़ेरिया का संगे बहरा निकल के फीस मंगले, 'बें...ऐं...ऐं...।' गेंड़ेर का मुंह से फेर ऊहे निकलल। फेर त वकील जेतने समझावसु, मुंहे क जवाब ऊहे– 'बें...ऐं...ऐं...'। ऊ आपन कपार पीटसु तले गेंड़ेर 'बें...ऐं...ऐं...' करत कचहरी से बहरा! ••

आर. के.पुरम, न्यू कालोनी, कलरसता, वाराणसी

पुरनका छूट रहल बा

सत्य प्रकाश पाण्डेय 'धनजी'

अंग्रेजन से आजादी के लगभग 70–75 बरिस बाद बहुत हद तक आज जब भारत जइसन अभावग्रस्त देश विकसित होखे के मुहाना पर खड़ा बा, ओकरा गाँवन के तुलना में बहुत कुछ पुरनकी परम्परा, रीति–रिवाज, लोकगीत आ लोक–व्यवहार पर कुछ अधिके कुठाराघात भइला लउकता, जवना से समाज के प्रबुद्ध वर्ग बहुत मर्माहत बा, जबकि ई कुल्हि परम्परा, रीति–रिवाज, लोक–भावना, लोकगीत, हमनी के गाँवन के मजबूत रीढ़ रहल बा। संयुक्त परिवार के व्यवस्था भइला से केहू अपना के अकेल ना महसूसत रहे। ओह व्यवस्था में माई आ काकी में फरक ना बुझात रहे। केहू केहूके घरे नहाइ–खाइ लेत रहे। जवन रिश्ता अब टूटत, छहत–छिनिलात लउकत बा। अइसन बुझाता जे गाँवन से आपुसी रिश्ता–नाता मर चुकल बा। छुआछूत जइसन अंधविश्वास टूट गइल बा। पहिले हमनी के गाँवन में जातीय समीकरण अथवा स्वार्थ के भावना से परे होके हमनिके समाज परहित के बात सोचत आ कइल जात रहे। गाँव मनुष्य के संस्कार आ सभ्यता के पहचान हऽ। मानव–जीवन, जनम से मृत्यु ले, संस्कार आ सभ्यता पर आधारित रहल बा। हमनीके ओह संस्कार के जीवित रखेके चाहीं। गाँव जे हऽ ऊ गढ़ हऽ मनुष्य के जान आ जीवन हऽ। एह विषय पर 'पाती' में 'संस्मरण विशेषांक' छापे खातिर आदरणीय सम्पादक जी के बहुत–बहुत बधाई आ ढेर साधुवाद बा। उहाँ के सभकर बचपन के दिन इयादि परा दीहनी। ऊ कुल्हि परम्परा, त्योहार आ गँवई जातीय संवेदना एगो बहुत पकल–पकावल आपुसी रिश्ता के बीचे निभावल जात रहलन सऽ जवना के आज छहत–छिनिलात आभा इ कहल जाऊ कि मनुष्य के अंदर के 'मानव' अथवा 'मानवीयता' के क्षरण के साक्षात्कार करे के बा।

आज 'अर्थ' के प्रधानता बा। समाज के हर आदमी इहे चाहत बा कि अधिका से अधिका धन कमा लिहल जाउ। कुछ लोगन में धन संचय के भावना बा, तऽ कुछ लोग अधिका से अधिका खरचा करेके क्षमता बढ़ा लेले बा। एह 'अर्थ' के युग में आधुनिकता फैसन लेखा सबे के दिमाग में घर कइले जा तिया आ ओकरे के चक्कड़ में पुरनका छूटल जाता। अपना कमाई के धन में से गाँवों के मद में भी कुछ न कुछ खरचा–बरचा होखे के चाहीं। आज राजनीति का वजह से जातिगत भावना समाज में सबके ऊपर चढ़ि के बोलऽ तिया। एकरा वजह से पुरनका रिश्ता जवन समाज के कुल्हि जाति के लोग जइसे– हरवाह, नाई, धोबी, दर्जी, तेलिन, पनिहारिन, घर में काम करे वाली दाई–करिन्दा आभा जतना पवनी रहली, उन्हन लोगन के काकी, दादी, बाबा, काका, भइया आ भौजिया के मजबूत रिश्ता में बाँधि के, उन्हन लोगन से आपन संबंध जोरि के, खाइल–खियावल आ इज्जत कइल जात रहे। हमरा इयाद परऽता हम अपना बचपन में देखन जवन जाति के हरिजन रहलन, हमनी के घर के हरवाह रहलन, आ दुपहरिया में खेत में उनुका खातिर चना के सातू, प्याज, चटनी आ पीये के पानी गइल रहे। हमहूँ कोनिया दा से खेलत पहुँचनी आ देखनी कि ऊ फुलहा थरिया में बहुत पलत्र से सानि रहल बाड़न, हमरो बचपन के मन लपकि गइल, लेकिन ऊ आपन धरम बचावत रहलन, हमहूँ ना सननीं। हमार गाँव बलिया जनपद के 'दुबहड़' ब्लाक में दुबहड़ के एगो बाम्हनन के छोट टोला 'सनाथ पाण्डेय के छपरा' जवन सहर से 10 कि.मी. के दूरी पर बसल बा। जवना गाँव में कुल्हि 30 परिवार बाम्हनन के, आ एक घर गोंड़ रामदयाल भइया के आ एके घर यादव बिरादरी के थाना काका के रहल हा। जहाँ इ सोचि के बसावल गइलन जे इ लोग हमनी के भंसारी अथवा गाय दुहला के काम करिहें। हमरा गाँव में गीत–गवनई, धार्मिक–विश्वास, अंध विश्वास, सादी–बिआह आ प्रचलित पुरनकी परम्परा जरूरे रहली हा सऽ। गाँव–सभा में लगभग 35 बरिस तक ग्राम – प्रधान रहे वाला गाँव के प्रतिष्ठित व्यक्ति परधानजी नामधारी पं. गयादत्त पाण्डेयजी आ उप परधान पं. कृष्ण माधव पाण्डेयजी पूरा गाँव–सभा खातिर कुल्हि रहलन, पर–पंचाइत से लेके गाई–भईंस मुलइला आ बकरी के खेत चरला ले कुल्हि थाना–कचहरी के स्तर तक के निपटारा अपना दुआरे पर नाहीं तऽ डीह के इमली तर अउरू पीपर के चौरे पर हल कई देत रहलन, मर–मोकदिमा ले मामिला ना पहुँच पावत रहल हा। आजु हरेक पुलिस थाना में मर–मोकदिमा के संख्या कई गुना बढ़ि गइल बा, जवना पर सालों–साल तक न्याय करे के नम्बर नइखे आ पावत। हमरा इयाद परत बा कि हमार गाँव दस गाँवन के बीच ब्राह्मणन के गाँव भइला से एगो सम्मानित आ सबसे शिक्षित गाँवन के श्रेणी में रहल हा। जवना गाँव में लोग आई.ए.एस. से लेके कुल्हि श्रेणी के नोकरिहा कर्मचारी रहलन। जवना में अध्यापकी करे वाला लोगन के संख्या अधिका रहे। आजुओ ओह नोकरिहा परम्परा के हमारा गाँव के नयकी पीढ़ी के लड़का–लड़की ओकरा महत्व के निभावऽता। आ आजुओ गाँव में अच्छा–अच्छा पद पर काम करे वाला लइकन के संख्या अधिका बा। ओह शिक्षा के महत्व के असर ई बा कि जवन रामदयाल साहु के

परिवार बा, उहाँ शिक्षा आ तकनीकी शिक्षा के महत्व के समझल, आ संगत में रहला के वजह से उनुकरो नाती आज बिजली विभाग में इंजीनियर बनि गइल बा। शुरू से बेरोजगारी तऽ हमनी के समाज के बहुत बड़ समस्या रहल बिया जवना वजह से कई गो गँवई समस्या पनपत रहल हा।

हमनी के पुरनिया पं. रामरेखा पाण्डेय जी, पं. परशुराम पाण्डेय जी, पं. केदारनाथ पाण्डेय जी, पं. मुनिनाथ पाण्डेय जी, पं. शिवनारायण पाण्डेय जी, पं. बेणीमाधव पाण्डेय जी, ललितमोहन पाण्डेय, मदनमोहन पाण्डेय आ रामाधार पाण्डेय जइसन कुछ लोग ए.जी. आफिस, इलाहाबाद में आ शिक्षा विभाग, बलिया में उच्च पदन पर नोकरी आ व्यवसाय कइला के बाद गाँवे आके रहत रहे लोग। गाँव में पानी भरे खातिर कई गो कुइयाँ खोदवावल रहलन, जवना कुइयाँ से गाँव भरि के पनिहारिन पानी भरत रहली सऽ। ओह इनारन के साफ–सफाई आ ओकर पानी हरमेसा शुद्ध आ ठंढा बनल रहो, ओकरो जिम्मेवारी निभावत रहे, आ ओह इनारन में अनिरुद्ध मिसिर के भेजिके महीना में एक बेर साफो–सफाई करावत रहे लोग। खेत के फसल पटावे आ स्कूल–इस्कूल चलावे खातिर अलगा से कुआँ रहलन सऽ। लगहीं गंगा जी के रहला से बाढ़ि के दिनन में तऽ ऊ कुआँ अपनहीं से पानी उपरियाके लागत रहलन सऽ। हफ्ता के दू–तीन दिन गाँव में, घर के जरूरी सामानन के बाजार लागे, जवना में हमार पुरनिया लोग नेह से गरीब तबका के लोगन का जरूरी सामान आ रोज के खरचा खरीदवा देसु। घर से पिसान आ पइसा त देत रहलन। बेमारी–हेमारी में भी ऊ मददगार साबित होत रहलन। हरमेसा गरीबन पर नेह–छोह राखत रहस। जतना पवनी रहलन उनकरा खातिर खेती–बारी से अँटिया आ अनाज अगऊ निकालि के दे देत रहलन। गाँव में केहू के घरे बियाह–मरन पड़े तऽ लोग ओकरे आपन समझ के मददो खातिर हरमेसा खड़ा रहत रहसु। गाँव में दक्खिन दिशा अवस्थित मठिया के साधु–महात्मा आ संग गरीब–भिखमंगन खातिर भी आदर आ सम्मान रहल हा, सबके घर में ओकरो खातिर भोजन पाकत रहल हा। एह लोगन के समाज के भलाई–मदद में जवन आनन्द आ सुख मिलत रहे, ओकरे वजह से ई कुल्हि करत आपन धन खरचा करत रहलन। हमनी के गाँवे एगो कटहल के फेंड़ रहल जवना के अवशेष आज ले रहल हा, ढेर बरखा से ऊ अपनहीं गिर परल, ओकर खासियत इ रहल हा कि ओकर लगभग 600–700 फल; पूरा गाँव के घरे–घरे आ काज–परोजनन में बँटात रहल हा, आ हर साले जतने बँटाई ऊ ओतने अधिका फरे, ओकरा सोरियो में फल लागत हम आँखी देखले रहनी हा। बचपने में हमरा बुझा गइल कि केहो–तरह में इंसाने लेखा प्राण–तत्व बा, जवना के वजह से ई अधिका फल देता। एह से कबो हमनीके अपना जिनिगी में एकर फल बेचल ना जाई। प्रकृति हमनी के कतना प्यार दे तिया? गाँव में हमनियो के पुरनका घर पक्का दिवाल पर खपरैल के रहल हा, जवना के नेव में 14 रद्दा आ साढ़े चारि ईंटा के दिवाल रहली हा सऽ। जवन ओह घरी बहुत ऊँचा रहत रहे, जवन अब ढह–ढिमिला गइल बा, आ ओकरा जगहा पर नया घर बनिके उभर गइल बा, लगभग गाँवन में सभे के घर ओइसहीं रहलन सऽ। अब लगभग 40–50 बरिस के बीच में नया–नया डिजाइन के घर बन गइल बाड़न सऽ। जवना में कुल्हि भौतिक सुख–सुविधा–बल्ब, ट्यूबलाइट, टी.वी., कम्प्यूटर, पंखा, कूलर, वासिंग मशीन, मिक्सी, ए.सी., इनवर्टर, जनरेटर, पानी भरे खातिर समरसेबुल पम्प आ सुघर–सुघर बाथरूम बनि गइल बा। शायद एही वजह से लोग ई कुल्हि व्यवस्था कइले बा लोग कि नोकरिहन के बहुरिया आ बच्चा लोग जब गाँवे आवे त उन्हनी लोग के आराम मिल पावे। गाँव गली–गली आ राह–घाट में रात में जरे वाली बत्ती, पानी के बहाव खातिर सुव्यवस्थित नाली; सभे कुल्हि से सम्पन्न बा, लेकिन आज अगल–बगल के गाँवन लेखा पुरनका लोगन के गइला के बाद से ऊ रिस्तो–नाता मरत लउकता जवना का बल पर पुरनका व्यवस्था टिकल रहे। आज ओकरा कऽ जियावे खातिर केहू कऽ पासे अतना फुरसत नइखे कि ऊ गाँव में रहिके गाँवन के आबो–हवा आ यादवजी के सजाव दही आ दूध के मजा ले पावे। गाँव से बहरी रहिके आज के गाँव के स्थिति आ दर्द के गहिरे ना समझल जा सकेला, ओकरा खातिर गाँवे आके, घूम–फिरके, देख–सुनिके समझे के पड़ी, ओकर समाधान निकालि के ओकरा पऽ आपन नेह–छोह निछावर करे के पड़ी, तब ऊ साँचो के विकसित गाँव लेखा लउके लागी।

पुरनका जमाना में नोकरी अधिका रहल, जबकि पढ़ल–लिखल लोग कम रहलन, शिक्षा आ शिक्षा के महत्व के समझे वाला लोग कम रहलन, स्कूल कम आ ढेर दूरी पर रहलन सऽ; केहू नोकरी कइल केहू दूसरा के गुलामी कइल समझत रहलन, उनुका शायद इ बुझात रहल होई कि नोकरी से अच्छा खेती–बारी में काम कइल बा। घाघ कहलहूँ बाड़े– "/उत्तम खेती, मध्यम बान/निषिध चाकरी भीख निदान/"। खेती से साल भर के खाये–पीये के अनाज–पानी मिल जाई आ अधिका होई त कुछ रुपयो मिल जाई। अशिक्षा आ बेरोजगारी दूर करे खातिर खेती–बारी कइके दू–बेरा के भोजन जुटावल आ गृहस्थी कइला से आज अभाव जरूरे कुछ कम भइल बा। हमरो गाँव में कुछ लोग आपन खेत बट हरि पास–पड़ोस में रहे वाला यादव बिरादरी आ राजभर

बिरादरी आदि लोगन के बटाईं, नाहीं त लगान पर देहं के जोतवावे-बोववावेला लोग। कुछ शिक्षक वर्ग अपनहूं से खेती-बारी के काम निपटा लेत रहल हा लोग। आजुओ ओही तरे के शिक्षा के महत्व के समझे वाली नवकी पीढ़ी बिया जवन शिक्षा आ रोजगार खातिर भा रोजगारपरक पढ़ाई जइसे- बी.बी.ए., एम.बी.ए., एम.सी.ए., एम.ए., एल.एल.बी., बी.टेक., एम.टेक, मेडिकल आ सिविल नोकरी खातिर गाँव छोड़िके बहरा सहर में जा तारन आ बहरे बसि जात बाड़न सऽ। गाँवन में कुछुए लोग पुरनका पीढ़ी के बाँचि गइल बाड़न। जेकर आदर भाव से सभ केहूं मान-सम्मान करेला, आ ओकरा इच्छा आ निर्णय के इन्तजार करत रहेला। आज समाज में इहो देखेके मिलत बा कि नवकी पीढ़ी के लइका-लइकी अपना पुरनियन किहों एको सेकेण्ड बइठल नइखे चाहत, जब हमनी के बइठबे ना करब जा तऽ कुछऊ सिखब जा कइसे? गाँवन में रहे वाला आज के लोग गाँव के सुन्दर बनावे के कुल्हि कोसिस कऽ रहल बा। आजादी के लगभग 70 बरिस बादो शासन-सत्ता से जवन भी गाँवन खातिर योजनन आ सहायतन के बौछार हो रहल बाड़ी सऽ, ओकर कतनो बन्दरबाट होखे लेकिन गाँवन के विकास में ओकर कुछ ना कुछ हिस्सा तऽ विकास में जरूरे लउकता, आज के गाँव जरूरे पहिले से कुछ विकसित भइल बा, रहन-सहन, खान-पान, पहिरावा-ओढ़ावा बदलल बा। घरे-घरे शौचालय, दुआरे-दुआरे हाथी के सूंड वाला नल, विकलांग के सोलर साइकिल, चहुँओर के रास्ता पक्का, कोने-कोने सोलर बत्ती, आ ढेर ओजीफा आ पिन्सिन, स्कूलन में पढ़निहारन के हफ्ता भर पकल-पकावल खाना वगैरह ढेरे विकास लउक रहल बा। बइसे, परिवर्तन त समाज के नियम हऽ परिवर्तन, विकास आ विनास के द्योतको हऽ। शिक्षा आ तकनीकी शिक्षा खातिर उच्चकोटि के नया-नया हिंदी आ अंग्रेजी माध्यम के स्कूलो खुलत जा तारन सऽ, जवना में लइका-लइकिन के संख्या कम नइखे लउकत। एकरा वजह से आजुओ इंजीनियर के घरे इंजीनियर, आ मास्टर के घरे मास्टर लउकताड़न सऽ। गाँव में संगे-संगे रहला से मजदूरो वर्ग पढ़ाई के महत्व के समझ रहल बा, आ ऊहो अपना बचवन के पढ़ा रहल बा। पर्यावरण आ जीव-जन्तुअन के रक्षा-सुरक्षा का दिसाईं सजगता देखे के मिलऽता। गर्मी के दिन में उन्हनीं के खाये के भोजन आ पीये के पानी के व्यवस्था से लेके, जाड़ा के दिन में ओन के चट्टी ओढ़ावला तकले इन्तजाम कइला में बड़हन खर्चा करत लउकऽता। चिरई-चुरुंग, कौआ, कोयल अपना खातिर अपने बाग-बगइचा ना नू लगाई ओकरा खातिर हमनिए के सोचे के परी आ नया-नया पौधा रोपे के परी। आम, अमरूद, लीची, केला, पपीता आ जामुन के कई गो अइसन प्रजाती आ गइल बाड़ी सन, जवना जल्दिए फरत-फुलात लउके लागत बा। कुछ नवकी बहुरिया जवन कुछ खास वजह से संयुक्त परिवार के व्यवस्था तूरि के अलगा रहले में आपन ढेर फायदा समझऽ तारी, ओकर बहुत बड़ा दुष्परिणाम ई बा कि कुछ दिन बाद ऊहो लोगन के आपनों परिवार जल्दिये एकल हो जात बा, आ कतनो प्रयास के बादो जुटि नइखे पावत आ देखे में इहो आवऽता की तिलाक तक ले बात पहुँच जात बा। ऊ लोगन प कवनो छोटो समस्या भी संकट आ जाता तऽ तुरंते ऊपर के आसमान आ पैर के नीचे कऽ धरतिए खिसक जाता।

हम तऽ अपना कुछ भाई-भतीजा संगे हफ्ता में एक दिन जरूरे अपना गाँवे जानी, आ गाँव के जरूरत आ व्यवस्था पर सब केहूए मिलिके चर्चा करेनी जा। गाँव में जवन शंकरजी आ दुर्गाजी (काली माई) के मंदिर बा, ओह मंदिरन के साफ-सफाई, रात खातिर सोलर बत्ती, धार्मिक अनुष्ठान करा चला आ मंदिरन के आरी-कगरी लगावल फूल-पौधन पर पानी छिड़का के व्यवस्था से लेके रक्षा-सुरक्षा खातिर कुल उतजोग करीले जा। हमरा तऽ अइसन जनाला जे जदि मनुष्य प्रकृति के संगे रहल चाहता तऽ प्रकृतियो संग ही रहल चाहऽतिया, आ रही, लेकिन ओकरा खातिर हमनी के कुछ ना कुछ समर्पण आ त्याग करे के परी, अपना कमाई के कुछ हिस्सा आ समय अपना गाँव खातिर जरूर निकाले के परी। अपना गउवाँ के चहुँओर चक-चकाईं जा, अपना गाँवे जरूर जाईं जा, कुछ खरच-बरच करीं जा, भले गाँवे दाल-बाटी भा भउरी-चोखा, सलाद आ दहिए खाये खातिर जाईं जा; हफ्ता भा महीना में एक बार तऽ जरूरे जाईं जा। अपना गाँव के जियतार बनाईं जा; लेकिन, कुल्हि के बाद आज देखेके ई मिलत बा कि समाज के हर गाँवन में कुल्हि व्यवस्था के बादो गाँव से आपुसी समुझ, आ मनुजता जल्दी से जल्दी पराये के सोचि रहल बा। कम से कम एक बेर अपना गाँव में तीज-त्योहार मनाये, कुछ खाये-पीये, घरवे के रंगाई-पोताई कराये खातिर हमनी के अपना गाँवे जाये के चाहीं। हमनी के गाँव के पलायन से आ एह उजाड़ स्थिति से मानवीयता मरत लउकऽता। मानवीयता के जियावे खातिर मेल जोल के नया उपाय सोचे के पड़ी, तब हमनीं के गाँव, इक्कीसवीं सदी में विकसित गाँवन लेखा लउकी आ बार-बार हमनीं के बुलाई, ना, तऽ गउँवा हमनिए के भुलवाइ दीही आ हमनी के वजूदे मिटाइ दीही। ••

अशोक नगर, सतनी सराय, बलिया, मो. ०९६६८८३३५०६०

बचपन जवना गाँव में बीतल

डॉ. शत्रुघ्न पाण्डेय

बचपन जवना गाँव में बीतल-
ना चिन्हात ऊ गउँवा बा!

होत रिटायर जहिया हम, अपना गउँवा में अइनी
देखि बधार खुशी के मारे फूले नाहिं समइनी
जवना गाँव में बचपन बीतल, हम खोजीं ऊ गऊँवाँ
केहू चीन्हि ना पावे हमके, पूछे सभ का नउँवाँ
जँहवा खेलनी कुदनी हम, अब ना लउकत ऊ ठउँवा बा।।

टाटी मड़ई खपड़ा के घर, कतहीं नाहीं लउकत बा
ताल, तलैया पोखरा भीटा, ना गड़ही गड़हा लउकत बा
बैल केहू के दुअरा नइखे, खेत जोताता टेक्टर बइके
कान्ह पे लाठी हाथ कुदारी केहू खेते जात न लउके
कोयल के ना कूक सुनाता, ना मुड़ेर पर कउवा बा।।

पाकड़ बरगद पेड़ के नीचे, कोल्हू गाड़ि के ऊखि पेराई
कोल्हुआड़ा सभ महिया चाटी, तातल तातल गूर मेटाई
सभ कुछ सपना होई गइल बा, कहाँ होत बा ऊखि पेराई?
बचपन जब-जब यादि परत बा, आवत बाटे बहुत रोआई
जहाँ गाँव भर बटुराए, ओ पीपर के ना छउँवा बा।।

झुलुहा ओल्हा पाती, चोंचा, नइखे होत ई खेलि लुकउवल
चीका, जाबर, अउर कबड्डी, अब ना होता कहीं बुझउवल
गुल्ली-डंडा, आँखि मुदउवल, उल्हापानल कहाँ होत बा?
जेनिए देखीं गाँव-गाँव में क्रिकेट के बस खेलि होत बा
गाँव के असली खेल मरि गइल, चिन्ह निशान ना नउँवा बा।।

कजरी, सोहर, फाग आ चैता, कतहीं कँहवा आजु गवाता?
अब ना कतहीं लउकत बाटे, कहाँ गवनई ताल ठोकाता?
डफरा, हुरका आ मृदंग के, कतहीं ना झंकार सुनाता
गोंडऊ नाच, पखाउज के ना, नाच होत ना देखल जाता
बाल डान्स के चलन हो गइल, खो-खो ना घुमर परउँवा बा।।

ना ढेकुल ना रहट चलत बा, ट्यूबेल से खेत सिंचाता
हरवाहा अब हर ना जोंते, टेक्टर से अब खेत जोताता
सून सरेहिया लागत बाटे,ना सोहनी के ना गीत सुनाता
अब गउँवाँ ना कटनी खातिर, घूमि-घूमि बनिहार खोजाता
ना खरिहान सजावल जाता, दँवरी ना बैल घुमउवा बा।।

शहर के हवा गाँव के लागल, पिछड़ापन अब गाँव से भागल
गाँव के तेज विकास के खातिर, अब तऽ बा, सभ केहुए जागल
बिजली सड़क के सुविधा बाटे, सगरे खड़ंजा लागल बाटे
लइकन के शिक्षा का खातिर विद्यालय खुलि साजल बाटे
पहिले वाला गाँव ऊ नइखे, पाँक न लागत पउँवा बा।। ••

तीखमपुर, बलिया, उ०प्र०

काव्य–कथा

गाँव होई नापाता

अशोक कुमार तिवारी

शहर गरसलस अजब गाँव के
गँउवें आज बिलाता
कुछुए दिन में अइसन होई
गाँव होई नापाता।

पूत जनमता पर एइजा
अब कहवाँ होता मंगल
जीयल मोस्किल कइले बाटे
अब जीवन के दंगल
बात पुरनकी छूटल जाता
एक- एगो परपरिया
लइका भइला पर कतहूँ
कँहवा बाजत बा थरिया
अस्पताल में सउर कहाँ बा-
पसँघी कहाँ जोराता?
कुछुए दिन में अइसन होई
गाँव होई नापाता।

पसँघी के हाड़ा-बिरिन्ही से
अमर ना होइहें पूता
सउरी के दुआरि पर अब
के टाँगी सेहुड़ जूता
ढोंढ़ी पर के हींग सटावल
पीपरि छापल चानी
अब समाज में मानल जाता
ई फूल्ली नादानी
मलत रहो के करूआ अब
जान्सन बेबी पोंसाता
कुछुए दिन में अइसन होई
गाँव होई नापाता।

ओका-बोका छूट गइल
छूटि गइले चिरैंटा मामा
पुपुआ मामा खाटी पर
नरिया के घोड़ा पाना।
छुतुढ़ी, गुल्ली-डण्टा भा
अठला-मठेल ना होई।
लंगड़ी-बिछिया, ओल्हा-पाती
नाँव ना जानी कोई।
खपड़ा के गोटी से अब
कित-कितवा कहाँ खेलाता?
कुछुए दिन में अइसन होई
गाँव होई नापाता।

किसिम-किसिम के तेल चलि गइल
किसिन-किसिम के क्रीम।
चिक्का-कबड्डी पीछे छूटल
अब क्रिकेट के टीम।
आइस-पाइस कुँ-कुआ-कूँ
बान्ही ना खेलल जाई।
कुरसी-टेबुल राज करता बा,
चौकी गइल लुकाई।
माटी के जगहा साबुन बा,
अबटन कहाँ मलाता?
कुछुए दिन में अइसन होई
गाँव होई नापाता।

कूटल पीसल भारी बाटे
काम करऽ कुछ दूसर
कँहवा बाटे सूप-सिपुलिया
कँहवा ओखर-मूसर
कहँवा हो पाई चक्की अस
घर में नीक पिसाई
धन्टन झँखऽ जाँत जुआ में
के अब समय गँवाई?
कहवाँ जाँत चलत बा अब
जँतसारी कहाँ सुनाता?
कुछुए दिन में अइसन होई
गाँव होई नापाता।

कहँवा बाटे पतुकी-हँड़िया
कँहवा रही-मथानी?
नया बहुरिया से पूछ तऽ
कही कि हम का जानी?
दूध के अँवटे खातिर के
सिखले बा पीढ़ा खोने।
इहो पुछला पर नवकी
बतियाई एने-ओने।
अब सजाव जमतो बा कहवाँ-
माठा कहाँ महाता?
कुछुए दिन में अइसन होई
गाँव होई नापाता।

कलयुग कल के युग आइल
अब लगल मशीनिए घर-घर
सिल-लोढा का जगहा मिक्सी
पिसे मसाला चलफर
घर-घर गैस कनेक्सन लागल
गोइँठा भइल बेकाम।
वीमवार से बरतन चमके
राखी वा नाकाम।
नेनुआ के झीखुर कहवाँ बा
लूँडा कहाँ बन्हाता?
कुछुए दिन में अइसन होई
गाँव होई नापाता।

हार्वेस्टर-थ्रेसर से खेती
का होई मजदूरा-
लर सेकराहे काम सधाके
बइठऽ अब चुटुकुरा।
कोल्हू बैल के काम खतम बा
तेल बदे इस्पेलर।
तुलसी के काढा का होई
तूँपऽ मिक्स इस्लेलर।
दूध पीब मधु के बदले अब
चाहे पीयल जाता।
कुछुए दिन में अइसन होई
गाँव होई नापाता।

हर-बैलो जुआठ का होई
का होई पैना नाधा?
एकही टेक्टर आइ गइल कि-
दूर भइल सब बाधा।
पुइंया, ढेंकुल के झंझट
नइखे आज जरूरी।
पम्पिंग सेट चलावे पानी
दूर भइल मजबूरी।
कहाँ पकौड़ा लागे, इहवाँ
होरहा कहाँ झोलाता?
कुछुए दिन में अइसन होई
गाँव होई नापाता।

बाटे कहाँ चमउधा पनही
कँहवा काठ चटाकी।
काका पहिनस एक्सन जूता,
स्लीपर पेन्हस काकी।
दादाजी के रहल निमनका
पीतर मढल खराऊँ।

बडका बाकस में राखल बा
बाटे चीज धराऊँ।
केतना चीज त, छूटल जाता
सब कुछ कहाँ धराता।
कुछुए दिन में अइसन होई
गाँव होई नापाता।

के पहिरऽता आज अँगरखा
के पहिरत बा खादी।
के राखत बा कान्ह प' गमछा
आँख खोलि के ताकी।
नर-नारी के कपड़ा में अब
नइखे बहुते फरक।
कुछ कहला सुनला पर होता
किसिम-किसिम के तरक।
के पहिरत बा धोती-भगई
कहाँ लँगोट कसाता।
कुछुए दिन में अइसन होई
गाँव होई नापाता।

के चाहऽता सीखल बीने
छँटटी-खाँच-खँचोली।
कँहवाँ लउकतऽ बा अब सोझा
बँसखट अउर खटोली।
चरखबिया, छव बखिया सीखऽ
बहुत कठिन बा टाटल।
इन्द्र, चन्द्र, जनूराज के गीनल
समय फालतू काटल।
के लउकत बा खटिया छानत-
कँहवाँ सोरू गिनाता।
कुछुए दिन में अइसन होई
गाँव होई नापाता।

लकठो-कुटकी अउर पटउरा
हो जाई सब सपना।
सातु-बारू-भुजुना-भरी
के बा आज कलपना।
अगहनिया के चिउरी माला
कइसन होला भाई?
बीतल जुग ए सब चीजन के
ना होई भरपाई।
अब कहवाँ पर लुका लागे,
भन्सारो कहाँ झोंकाता?
कुछुए दिन में अइसन होई
गाँव होई नापाता।

कहाँ नीम के ठन्ढी छाया
कहवाँ लागे झूला?
कहाँ खेत के मेंढ़ी पर-
बइठता बा कागा बकुला?
कहवाँ बा खपड़इला पर
वा कहाँ दियरखा ताखा?
पहिले लेखा सुघर मीठ
बोलत बा के अब भाखा?
मिसिरी में डूबल भोजपुरी
कहवाँ आज बोलाता?
कुछुए दिन में अइसन होई
गाँव होई नापाता।
दतुअन के जगहा सबका पर
बरश-पेस्ट बा आइल।
छूटल दतुअन बबुर नीम के
मुठहीं रोज चबाइल।
दउरी-डलिया आँखी देखे के
अब कहाँ मिलत बा?
नया जमाना में प्लास्टिक
झिल्ली से काम चलत बा।
कहवाँ बाँटे बिठई-बीठा
बोझ कहाँ ढोआता?
कुछुए दिन में अइसन होई
गाँव होई नापाता।

छोट-मोट चउकठ ना लागी
लागी बड़ दरवाजा।
लगरे लागी खिड़की जँगला
हवादार के माजा।
अइसन तइसन ना चाहीं
अब घरो बनावऽ सूपर।
लगरो फर्श पलस्तर होई
का नीचे का ऊपर?
अब खरहरी चलत बा कहवाँ
चउका कहाँ लिपाता?
कुछुए दिन में अइसन होई
गाँव होई नापाता।

पहिले ले बेसी सबका के
काम करत बा मती।
दीया ढीबरी के बारो अब
बाटे बिजुली बत्ती।
बिजुली इनवरटर सोलर से
बहुत भइल आसानी।
ईजी लाइफ होइ गइल।

केहू मानी ना मानी।
बिजुली बत्ती के आगा,
ललटेनो कहाँ बराता?
कुछुए दिन में अइसन होई
गाँव होई नापाता।
अब कहाँ मड़ई बा जे पर
पेंवड़ा-कोंहड़ फरी।
कँहवा बा दुआर जेह पर
अब नीब निबउरी झरी?
कहाँ बनावल जा ठाटे
सरपत बाता के टाटी?
कहाँ बोआता बिरवाई
हाँडी में भर के माटी?
अब दुआरि प लउका सेमि के
ठहरि कहाँ बन्हाता?
कुछुए दिन में अइसन होई
गाँव होई नापाता।

गाइ-भँइस का राखे के बा
कसहूँ जीव जियावऽ
लइकन के बोरन मीटा
अबरू कम्पलान पियावऽ
एहू से ना पेट भरे त
द अंगरेजी गोली।
जेतना सपरे ओतना तू
जीवन से करऽ ठिठोली।
दूर के कउड़ी जन सोचऽ
देख टटके फुसलाता।
कुछुए दिन में अइसन होई
गाँव होई नापाता।

पाकल आम कहाँ अब चूवे
कहाँ बा कोइना महुआ?
रोज बगइचा काटल जाता
सबके लागल जहुआ।
बाग बगइचा के जगहा
होता ईंटा के जंगल।
एही में आबाद रहऽ
गावऽ एही में मंगल।
कहाँ बनत बा गुर के शरबत
लाटा कहाँ कुटाता?
कुछुए दिन में अइसन होई
गाँव होई नापाता।
लेन-देन का करही के बा
का बेवहार बनइबऽ

केकरा से पइचा लेवऽ
केकरा के देवे जइवऽ।
अपने कीन बेसहि के भलहीं
काटऽ मिसिरी मेवा।
अब खिचड़ी तिलवा ना आई
छुटी तीज कलेवा।
का होला ककड़ऽवर बुकवा
बायेन कहाँ बँटाता?
कुछुए दिन में अइसन होई
गाँव होई नापाता।

कहीं बतकही का करवऽ
बा फुल्ही झूठ झमेला।
सबसे नीमन ईहे बा
आराम से रहऽ अकेला।
बेमारे-हेमारे अब, केहू के
के पुछवइया।
जीयऽ चाहे मुवऽ नइखे
केहूँ अब देखवइया।
साँझ पराती कँहँवा होता
सोहर कहाँ गवाता?
कुछुए दिन में अइसन होई
गाँव होई नापाता।

कहाँ सुनाता अब केनियो
तिरलोकी नाथ के कथा।
अन्ड-बन्ड-महमन्ड रहत बा
के करो ई ताथा?
दू-पन्टा लोगन के झेलऽ
तब बाँटऽ परसादी।
बाटे बहुत कठिन काम
सहलो दूनों बरबादी।

कहवाँ लागे हँसी-ठहाका
कँहवा शंख फुँकाता?
कुछुए दिन में अइसन होई
गाँव होई नापाता।
गोड़ छुवल बा कठिन काम
नइखे लउक्त निहुरन्ता।
टाटा-बॉय-हाय से होता
सबकर काम चलन्ता।
बाबू-माई-भाई होखस,
चाहे दादा-दादी।
ओतना मेहनत के बदला में
केहू भाला का दी।
कहवाँ बाटे संस्कार?
कहवाँ बा रिश्ता नाता?
कुछुए दिन में अइसन होई
गाँव होई नापाता।

तिलक विआहो के अब तऽ
मतलब ले बदलल जाता।
के दुनिया के भीड़ बटोरो
के लगवाओ ताँता?
जानि के का होई लइका
लइकी के अब ननिआउर।
हाड़-काठ का देखे के बा
केहू नइखे बाउर।
अब कहवाँ घोड़दउर होता
कहाँ बारात सजाता?
कुछुए दिन में अइसन होई
गाँव होई नापाता। ●●

■ सूर्यभानपुर, बलिया, ०९८३८११२९९६

कुण्डलिया

हमार गाँव

कन्हैया पाण्डेय

नवका बलिया बनि गइल, अब हमार ई गाँव
सुरहा-तट पर बा बसल, जस अंगद के पाँव
जस अंगद के पांव, हिली ना लाख हिलाईं
छोड़ी द्वेष-दुराव, चलीं अब हाथ मिलाईं
चकचक बा चहुओर, जहाँ चौबारा-गलिया
सुरहा-तट के गांव, बनल बा नवका बलिया।

पूरब में हनुमान जी, सिया-राम के साथ
दक्खिन-पूरब कोन पर, सोहें अवनीनाथ
सोहें अवनीनाथ, बीच में ठाकुरबाड़ी
पछिम मधेसर नाथ, भूत-भावन अवतारी
दक्खिन सुरहा ताल, उतर की छटा अपूरब
निकसल-पइसल राह मुख्य बा सबकर पूरब।

रतिया-दिनवा हरघरी, गूँजेला चहुँओर
जै-जै सीताराम धुनि, होखे होते भोर
होखे होते भोर, गाँव के आलस भागे
लरिका-वृद्ध-सेयान, काम में अपना लागे
आपस में बा प्रेम, न बिगरे कवनो बतिया
खुशी-खुशी सब लोग, गुजारे दिनवा-रतिया।

सम्पत्ति से भरपूर ई, गउवाँ बा खुशहाल
सुन्दर-सुन्दर बाग-बन, गड़ही-पोखर-ताल
गड़ही-पोखर-ताल, खेत सब बा उपजाऊ
बसल बा सरबे जाति, साथ में धोबी नाऊ
हरियर-हरियर खेत, निरखि गद्गद् हर दम्पत्ति
जाँगर-जोर किसान, जुटावे अन-धन सम्पत्ति।

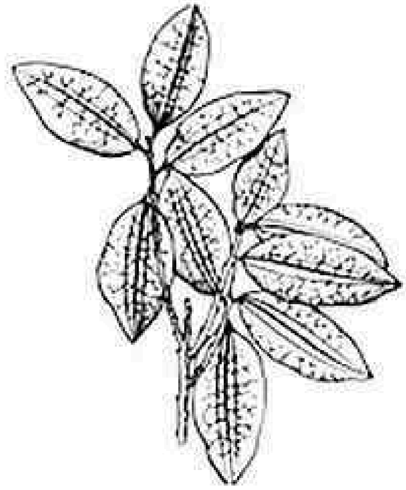

घर-घर बाटे गाँव में, दही-दूध भरपूर
बाटे सबमें प्रेम से, रहे-सहे के लूर
रहे-सहे के लूर, केहु ना दाल गलाई
कतनो करी उपाइ, लगी ना हाथ मलाई
बइठल-बइठल यार, करऽ तुँ मलहीं कर-कर
बनल रही अनुराग, रही खुशहाली घर-घर।

बोवें अनजा-साग-फल, जाँगर-तोर किसान
उपजे गेंहू-जौ-चना, मसुरी-मक्का-धान
मसुरी-मक्का-धान, लोग सम्पन्न सुखी बा
बहे प्रेमरस धार, न कवनो जाति दुखी बा
हहरे दुस्मन देखि, द्वेष से डबडब रोवे
हँसी-खुशी मजदूर-किसनवा अनजा बोवें।

हीरा-मोती से भरल, सबकर छोड़ि बखारि
भोरे मंगन आइ के, झाँकल करे दुवारि
झाँकल करे दुवारि, दान में अनजा पावे
'जय हो दीनदयाल', पुकारे-गुनवा गावे
सुनि-सुनि भरे हुलास, भागि जा मन के पीरा
धइलें घर के राह, भिखारी पाके हीरा।

सुन्दर बाटे स्वर्ग से, सचमुच गाँव हमार
बचपन से हमके मिलल, जहवाँ प्यार-दुलार
जहवां प्यार-दुलार, भूलि हम जाईं कइसे
रउरे करी विचार, सभी कुछ नइखे पइसे
माने ना एहसान, ऊ मनई होत छछुन्दर
सुख के खान इ गाँव, मोर बा केतना सुन्दर। ••

आवास विकास कालोनी, हरपुर,बलिया

कविता

गाँव-कथा

उमेश कुमार पाठक 'रवि'

कुच्छे साल पहिले
जम छवले रहे एह गाँव के...
अठारहे के उमिर रहे
सुतल रहले खरिहाना
मसुरी का पैरा पर
कनपटिये गोली दागि, भागि
गइलन सऽ हत्यारा
अधरतिये।
फेरू अगिला जाड़ा में
साठि के उमिर वाला बुढ़ऊ
सुतल रहले खरिहाना
धान का पैरा पर
कि केहू गर्दन दबाइ के
बर्छी घोंप गइल
उत्खलल क गाँव के।
परो साल जाड़ा में
साँझे-झुटपुटाहे
डँकइत पहुँचले सऽ
रिटायर फउजी घरे
उमर बाइस के फउजी के बेटा
आइल रहे ओपरी घरे
देखि डँकइतन के अकुताइल कि
जब बाँची ना घर हमरा लोझा
त कइसे बचाइब हम देश?
गाल तमतमाइल
आ देंहि फरफराइल
वाजि गइल सेना के नौजवान
निहत्थे, अपना शान से
एगो के हाथ तूरि चढ़ि बइठल
दुगो के ठेलत दरवाजा पहुँचवलस
तले एगो पीछे से
कनपटिये प दागि देलस गोली
देश के बीर गाँव में मर गइल
कायरन का गोली से
पछिला साल चढ़ते जनवरी
आ असों ओनइसे के गिरल गाज
दुहरल ऊहे इतिहास फेरू
हत्यारन-आतंकियन के-
अट्ठाइस के नौजवान
सूतल रहे छत पर खटउर में
कतने छत सटल,
ना जाने केने से
के, के चढ़ल छत पर चुपचाप

केकर जुड़ाइल छाती
कि कनपटिये गोली दागि गइले सऽ!
केहू से लागि-बादि कवनो ना
रोवे बाप माई बहिनी
फेंकरे लइका आ लइकी नादान
बेवा मेहरि के चीत्कार
झरे आँखिन से सावन आ भादो के धार
डूबि गइल दुख के सागर में
फेरू गाँव हमार!

बकुला आ चिरइयो ले
अइसे ना मरइलें सऽ
कबो, हमरा गाँवें, एगो पहिले बोले त
पीछे से निकलऽसन लाठी हजार
थर-थर-थर काँपे गाँव भा जवार
केहू केतनो होखे जब्बर लुचुटाह
चाहे केतनो निठाह
हँ, ओपरी सब ना चालाँक रहे
एगो का पाछा सब दउरि जाव
ना केहू कवनो जाति रहे,
भइया रहे, काका रहे
भाभी, काकी, बाचा रहे
ऊ कइसन प्रेम साँचा रहे
तब सोझिया आ अनपढ़-
रहे गाँव हमार!

पढ़ल-लिखल भरले अब
भइल सभई चालाँक, पढ़-लिख, घूमि के
केहू ना निकले घर छोड़ि के अब
केहू लुटाउ चाहे केहू मराउ, ईजत जाउ
चाहे कतनो चिचिआउ
जरला आ मरला का बाद सहि आई
बतिआई, अझुराई आ लाई लगाई
आपन दुशुमनी सधाई।
राजनीति के लिचढ़ई
तूर दिहलस पुरुखन क बनावल लीखि
नया जुग के नीति रुचल
नया रजनीति रुचल

आपन रोटी कइसहूँ सेंकाइ जाव
मूढ़ी जुझवलस
जाति से जाति लड़वलस,
इरिखा-डाह में
जमराज के डेरा बनि गइल
गाँव हमार।

दण्ड ना दे पवलस
थाना, कचहरी आ कानून
कवनो हत्यारा के
लुचुटाह आ आवारा के
आहि का कुहासा में पेराइल
छछनत काँपत आ बिलबिलात
सिहरेला भय-आतंक का पाला से
दलकेला हर घड़ी
गाँव हमार।

देखि लिहनी हम
गुंडातंत्र का नेंइ पर खाड़
लोकतंत्र के राजनीतिक लथेरई
ए सुराज आ संविधान के मूल भावना
सालो साल आगि बढ़े
एह पर से ओह पर? बाकिर
अइसन जरतुआ त ना रहे
गाँव हमार। ••

कमल बिहारी पांडे के मकान, विश्वामित्र
कालोनी, चरित्रवन, बक्सर, बिहार

लोकराग

गायत्री सहाय

हमार गउँआ, बाटे सबसे निराला!

पच्छिम में बहेली बढ़की नहरिया
चारो ओर लहसेला खेतवा बधरिया
पूरुब में बा ठकुरबारी सीवाला।
हमार गउँआ, बाटे सबसे निराला!

चाहे हो सूखा या चाहे दहासिल
कबों ना कम होखे खेतवा के फसिल
देखि के, किसानन के मन हरखाला!
हमार गउँआ, बाटे सबसे निराला!

चढ़ते दशहरा के मन अगराला
दुर्गा जी कऽ मूरति गँउवे रखाला
चाँद बिजुली, तारा से धूम मचि जाला!
हमार गउँआ, बाटे सबसे निराला!

गँवहीं मस्त्रुतियो बा गउँवें में मार्शल
गाँवहीं के ट्रैक्टर बा गाँवहीं कऽ ड्राइवर
गाँवहीं क पालकी के साटा लिखाला!
हमार गउँआ, बाटे सबसे निराला!

आपस में सबकोई हिलमिल रहेला
कलमों किताब इहाँ हथवा सोभेला
झूमेली धरती, आकाश गुनगुनाला!
हमार गउँआ, बाटे सबसे निराला!

गउँआँ मसोना हऽ थाना संझौली
जिला रोहतास विक्रमगंज क कचहरी
नोखा बाजार जहाँ सबकुछ बिकाला!
हमार गउँआ, बाटे सबसे निराला! ••

संकटमोचन नगर, आरा, बिहार

दोहा

पाण्डेय कपिल

जब तक सूरज चाँद बा, जब ले बा ई सृष्टि
मानव जीवन में सदा, होखे सुख के वृष्टि।

कर गुजरब जब मन करी, मत सोचीं ई बात
नइखीं जानत कब कहाँ मिली मात पर मात।

हिम्मत मत हारीं कबो, रखीं सकारे सोच
अपना निर्णय में मगर हरदम राखीं लोच।

सुख कबहूँ ना हो सके, ना जो हो संतोष
संतोषे ह परम सुख, इहे हवे परितोष।

अपनइती तबले रही, जब होई बिस्वास
नाहीं त शंका करी, अपने ही के नास।

रउरा हाथे काम बा, फल ना रउरा हाथ
पर कामे के कारने फलवो देला साथ।

दोसरा ला मन में सदा, रखीं उदारी भाव
दोसरो के मन में रही हमरा खातिर चाव।

अधिका के ना अंत बा, जेतने बढ़ते जाय।
संतोषी मन खुश रहे, चाहे जे मिल जाय।

तन से त करबे करीं, मनवो से लीं काम
फल ओकर जेही मिले, उहे हवे इनाम।

मिलला के ना अंत ह, अंत हवे संतोष
संतोषे ह परम धन, ह असली परितोष।

फल के मत सोचल करी, करते जाईं काम
कामे के फल बूझलीं, उहे सही ईनाम।

साँस चलत जबले रहे, जबले जिनिगी शेष
हे प्रभु! रउआ याद में बनल रहीं हरमेस।

कविता ह संवेदना चूवे वाला लोर
मन के अँधरा कूप में, कविता करे अंजोर।

कविता ह संजीवनी, हऽ जीये के चाव
कविता मन के टीस ह, हऽ हिरदय के भाव।

हे प्रभु! जब तक साँस हो, होत रहे सब काम
एको छन अइसन न हो, बिसरे राउर नाम।

कब का होई, सोच ई, सोचल बा बेकार
कवनो हालत के लिए सदा रहीं तइयार।

अधिका से अधिका बढ़े करते रहीं उमेद
जे ना बाटे मिल सकल, कइल करीं मत खेद।

तन-मन-धन से लाग के करत रहीं निज काम
फल अपने मिल के रही, चाव न जाई बाम।

प्रथम राष्ट्रपति हो गइल भोजपुरी संतान
जिनका पर हरदम रही भारत के अभिमान। ●●

३/९ इन्द्रपुरी, पटना ८०००२४

कविता

गाँव ऊ लउकत नइखे

कमल प्रसाद सिंह

नेह-छोह,सुख चैन के खातिर जवन रहे मशहूर
सुख-दुख में सबही, सबका के, मदद करे भरपूर
गाँव ऊ लउकत नइखे।
भिनसहरे मेहरारून निकलँसऽ, नदी-नहर बेरोक
बात-बतकही, गीत-गवनई पर ना कवनो रोक
गाँव ऊ लउकत नइखे।
कोट-कचहरी जाय न नमिला, सुलटावे मिलि गाँव
पर के परकच, पर फरियावे ओकरे होखे नाँव
गाँव ऊ लउकत नइखे।

उपटल कवन बिमारी, फइलल जात-पाँत के रंग
बाधा-बिपिन अनेकन लउके, टोल-टोल बदरंग
गाँव ऊ लउकत नइखे।
बैर, कि साँझे हो जा ताटे गली-दुअरओ सून
उपटल भूखि जनावर वाली, खून क बदला खून
गाँव ऊ लउकत नइखे। ●●

संकटमोचन नगर, आरा, बिहार

रिपोर्ताज

गउवाँ हेराइल हमार

राजगुप्त

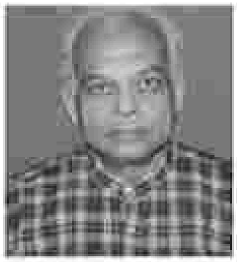

पाती के संपादक डॉ. अशोक द्विवेदी के हम एतना आशीर्वाद दिहल चाहत बानी कि हमार करेजा जुड़ा जाऊ। पचासन बरिस के नोर पड़ल बाति उहाँ का अचक्के में इयाद परा दिहलीं। एतना बरिस बाद गाँव के इयाद पड़ते मन तर हो गइल। जिला देवरिया में पथरदेवा एगो गांव रहे। जहाँ हमार जनम करम भइल रहे। जहवां हम 1958 तक पढ़लीं। मीडिल पास कइला के बाद बाबूजी शहर बलिया में हमार नाव नाँव में लिखवा दिहले। बलिया में तीन तल्ला पक्का मकान रहे। 1982 तकले गांवे अइलीं–गइलीं बाकिर इया के सरग सिधरला के बाद गाँव के आया–जाही छूटि गइल।

भटवन के मोका पर महर में पानी के सुतार। बड़ भागि हमार। 28 अप्रैल 2016 के सोना में सोहागा भइल। एगो बराति में पथरदेवा जाये के नेवता मिलल। पहिले त सुकड़ देखिके हाड़ कांपि गइल। अगवड़े लूह में दौड़ि जइसे झंवरा गइल होखें। बाढ़ के बन्न ना बानी में छेरा। बाकिर का कहीं खुशी के चलते बुढ़ौती में लड़िकाई अस जोश आ गइल। आगि में तपे के तैयार हो गइलीं। आहलियें न भट्ठी में झुलसि के बरतन बनावेलें।

बेटहा के दुआर पर ओह दिन बराती जुटले। नवछुटिहन के बस में आ बुढ़वन के कार में बइठावल गइल। लाइने से दसगो गाड़ी खुलली स।

देवरिया आ कुशीनगर के बीच में एगो नामी चट्टी पड़ेला जवना के नांव कंचनपुर हवे। कंचनपुर से बघौच घाट जाये वाला रास्ता में पथरदेवा पड़ेला। पथरदेवा गांव के नांव एहसे नामी भइल कि ओइजा हमरी बाप–दादा के तीन–तीन गो देशी चीनी मिल के कारखाना चलत रहे। जहवां बीस पचीस आदमी हमेशा खटत रहे। बाकिर जबन भटनी, देवरिया आ गोरखपुर, सरदारनगर में चीनी मील धड़ाधड़ खुलि गइली स कि देशी चीनी के कारखाना भहरान से बन्द हो गइली स।

कंचनपुर से कई कोस पथरदेवा रहे। देवरिया से जब कार आगा बढ़ली स त करेजा के धुकधुकी बढ़ि गइल। पेड़–रूख, मकान, बस्ती गांव सबकुछ बदलल–बदलल लउकत रहे। हम आंख फारि बहरी ताकत रहलीं। आजु 58 बरिस बाद जाके कहीं जनमभूमि के दर्शन करावे नाटी नाथे लगाइब।

कंचनपुर से गाड़ी जब आगा बढ़ल त मन बीसन उछर लागल। बाकिर इ का? अब अधा मील गाड़ी आगा ना बढ़ल होखी कि सड़क के गढ़्ढा में गच से गाड़ी खन्ता में बइठि गइल। गाड़ी बन्द हो गइल। सब जाना गाड़ी से उतरली जा। ड्राइवर गाड़ी के धक्का मारे के कहलसि। कबो गाड़ी नाव पर, कबहीं नाव गाड़ी पर। एक आदमी के बाति सुनि मने–मन मुस्किअइलीं।

58 बरिस पहिले इ डगरि पक्की रहे। आजु पीच सड़को में खन्ता–खुन्ती। सुराज आ विकास के बाद में कहां तकले चकाचक रहे के चाहीं कि अउरी खराब? हे भगवान! पिंडेसियन के देखावे खातिर देवरिया से कुशीनगर के सड़क शीशा अस चमकत रहेला आ देसवासियन खातिर करिहाई टूटे वाला सड़क! हम गांव प्रधान, ब्लाक प्रमुख, एमएलसी, एमेले आ एम्पी के दोसिहा ना मानि गांव के लोगन के दोसिहा मनलीं, जे एह लोगन के जाति–पाति पर वोट देके जितावे आ एतना दिन में केतना एमेले, एम्पी मेंबर आवत होइहें। सब घाव त के मुकरि गइल होखी।

पथरदेवा जोहँवे में जहाँ पहिले आधा घन्टा गाड़ी से, आ एक घन्टा एक्का से लागत रहे आजु दू घन्टा लागि गइल। बुलेट ट्रेन के जमाना में अइसन डगरि? कार के सवारी, में बैलगाड़ी के मजा। कत्तो–कत्तो बड़का–बड़का गिट्टी बिछा के छोड़ल रहे। जानमारू सड़क?

ओ घड़ी बैलगाड़ी, एक्का के अलावा कुछ ना सड़क पर लउकत रहे। आजु टेम्पो आ जीप के मारे जे हवा–हेल भइल बा। पेट्रोल डीजल के धुआं धूरि से नाक जाम हो गइल। दुर्दशा जोहि मन खट्ट हो गइल रहे। बाकिर गांवे में चारू ओरि चकाचक अंजोर देखि मन खुश हो गइल। हमरी जमाना में सांझिये खां बतीलालटेन के बेरा कुकुर–सियार बोले लागेंहें स. आजु भक् भक् उज्जर उजियार?

ओह जमाना में जहवां गेंहू, धान के गोएंड़े खेत में फसल लहलहात रहे आजु ओइजा सुन्दर लान देखि मन चकरिया गइल। आबादी बढ़ला के करिश्मा कहल जाइ कि धनखर खेत में तीन तल्ला मकान चमकत–दमकत रहे। जनाइल अनाज से जेयादा जरूरी घर बा। कार, बस के बराती डगकत–मचकत पहुँचि गइल रहले। हमरा बरात ना बलुक गांव देखे के तेजी फाटत रहे। दाबुर–दाबुर हाथ–मुंह धो के नास्ता के मेज पर लागे चहँपली। किसिम–किसिम के नास्ता देखि देहात गांव के अमीरी शहरो से ऊपर जनाइल। एगो जमाना रहे जब गांव में कवनो बराति आवे त आधा गांव के खटिया–मचिया, तोसक–तकिया, चद्दर, धराती के घरे जउरिया जाय। जइसे एकठिलिया के माई बोलावे, सब्जी ठिलिया ढरकल आवे। बाकिर आजु? जय हो टेन्ट वाला की। किसिम–किसिम के जेतना नास्ता पर धेयान ना रहे ओह से बेर तेजी रहे कि जल्दी से गांव के बजारि भर के लीकन भरि आँखि तजवीज ली। बजारि में निकलि गइलीं। अपना संघतियन के बारे में सरेखलीं। केहू कहल बाबा लागिहें, केहू कहल बड़का बाबूजी। जनाइल सब्जी बुआ साइत पूछि के उज्जैन के महाकुम्भ नहाये चलि गइल होखें स।

1958 से आजु के तारीख में इार दोकान के नवरी बदलि गइल रहे। अतने सोचत भर लाइन अचकले में नक्श से कटि गइल। बिजुली जाते मारे जे एक सुर से जेनरेटर चले लागल। कान फाटे लागल। चारू ओरि धुआँ धुआँ भरि गइल। शहर के धुआँ–गाँव के धुआँ, लीपि पोति बराबर। जस तोर, तस मोर। कवनो पुरान चीजु अपना जगह पर ना लउकल। इनारो फेंड अपना दुआरे पर से बिला गइल रहले स। आगरा जाउ आदमी आ ताजमहल ना लउके। अइसन में ओकरा कइसन बुझाई?

बजारि में जहवाँ बिसुनी पसारी के बारी के चुअल कपुरी आम पइला दू पइला में बेचत रहले ओइजा एतना बड़ फल के दोकान उहो किसिम–किसिम के फल; जहवाँ शहरो फेल रहे। बिजुली के मशीन से सेव, सन्तरा, मौसमी, अनानास, चुकन्दर, अनार के गारि–गारि ऊपर से बरफ मेराके मारे जे फटाफट गिलास के गिलास रस बिकात रहे।

सामीनाथ जहवाँ बसखटिया, चउकी लगा के लड्डू लकठो, गट्टा, बतासा मुर्ही बेचत रहले ओइजा एतना बड़का मिष्ठान भंडार देखि के हमार आँखि चोन्हरिया गइल। सामीनाथ मइल चीकट, जोडदार गंजी, धोती पहिरत रहले। उनकर लड़िका नाती आजु के तारीख में जीन्स पाइन्ट शर्ट के गर में बरहा अइसन मोट–मोट सिकड़ी पहिर के ताबड़तोड़ तरे–तरे के मिठाई छाबुर–छाबुर तउलत रहले। आ जहवाँ रामलीला होत रहे ओइजा सनीमा हाल बन्द लउकल। अब बड़ पर्दा के देखनिहार कम हो गइले।

बजारि में कूड़ा–करकट बेतरह छिटाइल रहे। लागल गाँव प्रधान के सफाई कर्मचारी लोग कई दिन से हड़ताल कइले होखे। छोट–बड़ दोकानन के सामने मारे जे लाइन से अधरी खा ठेला। बूझि गइली। गन्दगी फइलावे में ठेला के जयादा दोस बा। जहवाँ बीड़ी आ भाँग के सिवा पिअक्कड़ कुछ पीयत खात ना रहले आजु शराब आ सरकारी बीयर के दोकानन पर मारे जे अधरी खा भीड़ि रहे। पगले में रहि रगड़ात–छिलात रहे। लगन के दिन में टीवी, फ्रीज, सिलाई मशीन के दोकान में ओह राति खा गहँकी कचकचाइ रहले। कालु के देहात आजु के शहरो के कान काटले बा। से बाति एह से कहे–लिखे के पड़ता कि जहवा बुढ़िया घर में एक हाथ के घूँघ कढ़ले रहत रहली ओइजा सुनर घर, मारे जे मेहरारू मुँह के बार नोचवावत रहली। कान पर चोटंपि गइला के बाद आचार–विचार बदलि गइल। गाँव इंग्लैंड हो गइल।

फजिरही तैयार होके गाँव में निकलि गइली। गाँव सुरसा अस बढ़ल लउकल। खोजत खोजत रामदेव, हंसराज, नगीना, रामलखन भेटइले। सभकर हमरे तरे बार पाकल, सत्तर पार, केहू आपन बार ना रँगले रहे। रामसुभग टोकत कहि दिहले। एह उमिर में जन्मभूमि इयाद परल हऽ! बहुत बाति भइल। बाति बाति में एतना बाति भइल कि बातिये ना ओराए। बाति बझावत हम कहली। भाई चलऽ जा हमरा के ऊ पोखरा देखा दऽ जा, जहँवा बेंग आ सेवार हटा हटा के कानो पानी में पँवरत रहली हँ जा। ऊ बगइचा देखा दऽ जा जहँवा काँट–कूस लाँघि–आँघि के बन–बन चोकाटी–सुकाठी बइर बीन–बीन चटकारा लेके खात रहली ह जा। एगो कोइलासी आम खातिर सउँसी बगइचा ठेला आ ढटहा ले के धागि देत रहली ह जा। इयाद परता बुढ़िया आन्ही। खाँची लेके बगइचा में हहासि धान्हि के दउड़ि पड़त रहली ह जा। केतना मजा आवत रहल ह जब चूअल झोरल जामुन में से माटी, धूरि, बालू फूँकि फूँकि खात रहली ह जा। कवन कवन मन के बात बताईं। लड़िकाई के खेला मन से बिसरत नइखे। अबे आगा कुछ कुछ अउरी मन पारि–पारि कहल चाहत रहली कि हंसराज हमारी बात के काटत बीचहीं में बोलले। अरे मीता! अब गाँव शहर हो गइल बा। लड़िकाई के मजा अब कहाँ? तब घरे गोबर से लिपात रहे, अब ना। इयाद पारि पारि सिहरे के पड़ी, ना त ओल्हा पाती गुल्ली डण्टा में केतना मजा रहल हा। नगीना कहले, हमनी के आँखि के सोझा जेतना फेंड़ लगावल स ना ओह से जयादा कटा गइले। परती पर अस्पताल बनि गइल जहवाँ आजु के तारीख में डाक्टरन के तैनाती नइखे। बेमार पड़ला पर शहर जाये के पड़ता। स्कूल खुबे खुलल स। जहाँ थोर भा ढेर पढ़ाई होके ढाक होला। फीस सैकड़ा गुना महँगा।

अतने में बेचू भाई कहले कि भादो में जहँवा चिलचन लगा के सिधरी मारत रहली हँ जा। कोंडी के खेत भा रहरी के खेत में जहवाँ फटकुन लगा के चिरई बझावत रहली हँ जा, अब ऊ मजा कहवाँ भइयो। धूरि माटी में चिक्का कबड्डी, सोचा से धुनरी पउड़वाँ गेना भड़भड़ अब सपनों में ना सूझेला। उ जमाना रहे जब सभका तन पर कपड़ा ना लउके। अबके केकर गोड़ उघार बा। अब देहात में गिरहस्थी करे खातिर आदमी नइखे मिलत। सभे दिल्ली कलकत्ता कमाये भागि जाता। मनरेगा में बैंक लउकता। एक से एक सरकारी योजना के लाभ लोग लेता। ना त एगो उ जमाना रहे जब दवरी के बैल के गोबर में से गेहूँ निकालल जात रहे। गरीबी भुखमरी एतना ना रहे कि लोग मूस के माँनि में से गेहूँ के सोगहगो बाली निकालि ले। अबके छानी पलानी में रहे वाला लोगवो कहीं ना कहीं हाथ–गोड़ चला के कमा–खा लेता। जमाना एतना आगा बढ़ गइल कि कइसहू आदमी गुजर–बसर कऽ लेता, जेइसे गुल्ली–डण्टा खेले में मारा–मारी सभकर बारी आवेला। ओइसहीं सभकर दिन लवटेला। लवटही के चाहीं। ••

□ राम नाहै पा, बीत कटवा, बलिया, फोन : ०९४५६८-२२०६५४

आत्मकथा अंश

जीवन-समर में हमार गाँव

डॉ० अशोक द्विवेदी

अपना गाँव के अपनत्व केकरा भितरी ना होला? सबके आपन गाँव-घर अनोखा लागेला। असल में ऊ हमनी का मूल (ओरिजिन) से जुड़ल होला। बाप-महतारी, दादा-दादी के इयाद आ लड़िकाई से जुड़ल घर गाँव, केकरा बिसरी? अपना देश में पुरुब ओर बहत गंगाजी का उत्तर, गाजीपुर-भरौली का राह में, मुहम्मदाबाद तहसील का लगहीं, रेलवे लाइन आ मेन रोड का बीचोंबीच, आयत आकार में, लमछरे बसल, छोट-मोट गाँव सुल्तानपुर, जेकरा पच्छिम ओर ताल आ ताल का ओह किनारा पर धान के बधार। साँच कहीं त हमार निराला गँवई हमरा के हर विषम-विपरीत परिस्थिति में जीये-जूझे सिखवलस।

कुछ पुरनका खोजी-बुझक्कड़ लोग बतावे कि ए गाँव के असल नाँव 'सुर तान पुर' रहे। सुर आ ताल के साधक, संगीत के प्रेमी, एगो सम्पन्न लालाजी का दुअरा-दलान में गवइयन-बजवइयन के महफिल सजे। दूर-दूर से गवैया आ ढोल-मिरदंग बजावे वाला आवल करें सऽ। लाला सम्पन्न आदमी रहलन। उनकर बनावल पक्का चबूतरा, पक्का कुआँ का दूनों ओरी बनल शिवाला, बचपन में हमरा खातिर जिज्ञासा आ कौतूहल से भरल लागे। कुआँ का दक्खिन ओर, उत्तर मुँहे बनल उनकर खण्डिया-ओसारा आ खपड़ैल के मकान रहे आ सामने खूब बड़का सहन। पच्छिमी-उत्तरी कोन पर दू-बिगहा के एगो घन बगइचा, हमनी के खेले खातिर सबसे प्रिय जगह रहे, गरमी का दिन में त का बूढ़-पुरनिया, बैल, गाय लड़िकन आ तास खेले वालन के गोलिये ओइजा, साँझ ले जुटल रहे।

अपना गाँव सुल्तानपुर का बारे में सुनल किंवदन्ती के सूत पकड़ि के, हमहूँ ओघरी कम कल्पना क उड़ान ना भरीं! बाकि जस-जस सयान-समझदार होत गइनी, कल्पना के ठीक उलट, जथारथ के साँच, हमके भावलोक से नीचे उतारत गइल। बहरा क दुनियाँ में, बचपन के जवन सिवान रहे, ओमें एकोर गंगाजी रहली आ दुसरा ओर रेलवे लाइन, जवना पर सबेरे-साँझ सीटी बजावत, धड़धड़ात रेलगाड़ी गुजरत रहली सऽ। बचपन आ किशोर उमिर में हम जवना गाँव के देखलीं-जनलीं, हमरा खातिर बहुत कष्टकर, संघर्ष भरल, विषम आ असाध्य रहे। तब्बो ओकर एगो अलगे मजा आ सवाद रहे। अपना सुधियन के बहुतेरा चित्र हम अपना कविता-कहानियन में उरेहे के कोसिस कइनी, बाकिर बहुत कुछ अइसन रहे, जवन अबले अभिव्यक्त ना हो सकल। ओह अनकहा के कहला के गुंजाइशो कम भेंटाइल। खेल-खरिहान, ताल, पोखर, बाग-बगइचन का बीच आवारा बादर लेखा उड़त दिन, हमरा लेखे, खलिसा जिज्ञासा कौतूहले भरल ना रहे, बलुक भरन-पोसन आ जीवन-निबाह के जोड़-जुगत वाला मुस्किलो दिन रहे। ओघरी जोर, जाँगर आ बे मेहनत के जल्दी कुछ ना भेंटाय।

हमार बाबा पढ़ल-लिखल बड़-अदिमिन में गिनासु। हरिद्वार गुरुकुल के पढ़ल विद्वान-वेदपाठी रहलन, सुभाव से अध्ययनशील। सम्पन्न लोगन के सहायता आ प्रभाव से अपना समय में, जिला-जवार के कहत बहुत नाम-जस आ धन कमइले रहलन। उनकर आरामतलब रहन-सहन बुढ़ापा ले रहे। हम लड़िकाईं में उनके साइते कबो बाहर, जात देखले होखब। लोग बतावे कि कबो, उनका दुअरा हरवाह-चरवाह के अलावा चार गो करिन्दा रहे सऽ। दू-तीन हर के खेती रहे। कोसन से लोग उधारी बीया-बेंग आ पइसा ले जाव। बाकि हम ई सब ना देखनी, चाचा बतावसु पाँच-छव कोस उत्तर कासिमाबाद का लगे बलेसड़ी में हमनी के पाही के खेत बटाईदारन का हवाले रहे। चाचा सुरुवे से, पक्किया गिरहस्त रहलन- खेत-बारी आ अपना घर-दुआर, खेत-बधार से जुड़ल-नधाइल। बाबूजी सरकारी नोकरी में रहलन, बाकि ऊहो हर मोका प छुट्टी लेके घरे आवसु आ खेती आ दोसरा काम में मदद करसु।

चाचा मिडिल तक पढ़ले-रहलन बाकि बाबूजी उनका से कुछ बेसी पढ़ाई कइले रहलन। चाचा बतावसु कि अंग्रेजन के जमाना में, जब सब लोग आंदोलन कइले रहल त बाबुओजी हवाई अड्डा फूंकला का आरोप में पकड़ा गइल रहलन। गाँव भर के लोग, लाल पगरी वाला सिपाही-चउकीदारन का डरे रहरी आ ऊखी का खेतन में लुकाइल रहे। ऊ त बाबा क प्रभाव आ चलती रहे त, बाबूजी छूटि गइलन। बाबा दउड़-धूप के उनकर नोकरी लगवा देले रहलन। हमरा गाँव के कोस भर पच्छिम सरैया शाहबाजकुली हवाई पट्टी रहे, जहाँ जाए खातिर हमरा गाँव के पुरुब ओर से घोरियावत एगो कंगड़-छर्री के पातर सड़क गइल रहे, हमनी का दक्खिन ओर ओही सड़क से कलकत्ता-गोरखपुर जाइ जा। चाचा का साइकिल पर, छोट मोट बजार करे। बड़ बाजार करे खातिर चाचा के डंसीपुर (युसुफपुर) मुहम्मदाबाद जाये के पड़े। उहवाँ तहसील आ ब्लाको रहे। लेखपाल-पटवारी वाला काम उहवें होखे।

बाबूजी का संगे छुट्टी का दिनन में हम गाँवही आ

जाईं, प्राइमरी के पढ़ाई में ढेर दूलो ना रहे ओघरी। टाट–पट्टी प बइठ के पढ़ाई होखे, जादातर लइका आपन–आपन झोरा, बोरा, पटरी, कलम–दवात लेके इस्कूल आवें सऽ। हिसाब लगावे खातिर इस्लेट–पिन्सिन, झोरा में रखाव। इस्कूल के झारल–बहारल, लीपल, पानी के इन्तजाम कुल्हि लइका मिल के करें सऽ। गुरुजी के मदद एगो मोलवी साहब करसु। गुरुजी इसकूलिये में रहसु आ अपने बनावसु–खासु। गाँव के लोग उनके सीधा–चाउर, दाल, तरकारी दे अँगले देव। उनकर बड़ा मान–जान रहे। हफ्ता में एक दिन पारा–पारी कवनो न कवनो लइका का घरे उनके भोजन पर बोलावल जाव। हम अपना गाँव का इस्कूल में ढेर त ना पढ़नी, बाकिर उहवाँ कुछे हाल रहे। उहवाँ इस्कुलिये में मास्टर साहब रहसु। हमनी के कुछ खेत इस्कूल का लगहीं रहे। छोटपन में, हम हेंगा का पाछा बइठि माजा काटे के चक्कर में चाचा का सँगे हरवाही जाईं। ऊ हरवाह के खेमटाव (कलेवा) लेके जासु भा कुदारी लेके आरि–कोन कोड़े। हमरा लसरियइला पर ऊ ले जासु आ हमके खेत का कोना फेंड़ का नीचे बइठा देसु आ हम हरवाह का टुटुकारी से भागत बैलन आ पाछा खेत में बनत हर के हराई देखीं। चाचा अक्सरे, दहिनवार नाधल बाछा के पोंछ अईंठला भा पैना से खोदला पर, हरवाह के डाँटसु, कहसु कि चलफार के ढेर अईंजइबऽ त बिजुकि के हरवो खिसिका ले जाई, आ हर के फार लागी, तबन अलागा। हमहूँ एही से डेरात–डेरात हेंगा पर बइठीं।

ओघरी गाँव में, जगहे–जगह, इनार रहे। नहाए, पानी–पिए खातिर। घरन में माटी के घइली, छिल्ला, गगरा, छाड़ वगैरह में इनार से पानी भराव। हमनी का घर में कमकर आ कलकस्नि लोग दूनों बेरा पानी भरे। ओह लोगन के दूनों बेरा रोटी–दाल, भात आ तरकारी थरिया भर के दिहल जाव। दुआर घर से थोड़ी दूर पर रहे। उहीं गाय–गोरु, बैलन के नाद में, चरवाह का सँगे, चाचा पानी भरसु। हमरा के अपना सँगहीं, गगरा से पानी ढालके नहवावसु आ अपनहूँ नहासु। बाबूजी आ चाचा में अजब प्रेम रहे। छुट्टी अइला पर, चाचा का कहला पर गिरहस्थी के अदल–बदल सर–समान किनला का अलावा बाबा खातिर ढोली के पान, कत्था–सुपारी आ जर्दा के डिब्बा कीन के ले आवसु। खुरपी, फरुहा–कुदार, चारा मशीन के गँड़ास, खाँची, डोर हेर समान आवे। बाबूजी फरुहा चलावे में धीर रहलन त चाचा, खाँची उठावे होवे में। एक बेर चाचा के खाली अतने कहला पर कि अपना हाता का भीतर एगो कुइयाँ रहित त बहुत सुविधा होइत; बाबूजी हाता में दूनों आम का फेंड़न का बीचे कुँइयाँ खोने में भिड़ गइलन। ऊ फरुहा से माटी काटसु आ चाचा ओके खाँची से बहरा फेंकसु। घोरला भर नीचे तक खोन लिहला का बाद, कुँइयाँ पर तीन बाँस वाला बड़का हेंगा धराइल आ बाल्टी डोर से माटी खिंचाये लागल। काम के सुर अइसन चढ़ल कि तिसरा दिन आवत–आवत कुँइयाँ तइयार हो गइल। ओघरी बीसे–पचीस फुट पर पानी आ जात रहे। बाद में तनी बढ़ भइला पर, बहरा पक्का कुआँ आ ओकरा चारू ओर गोल जगत बनल आ कुआँ का दूनो ओर ईंटा का खम्भा पर, साखू के कड़ी धराइल, ओही में लोहा के गड़ारी ठोंकल रहे। ओघरी पानी तीस पैंतीस फुट नीचे भाग गइल रहे। कुआँ के बियाह आ पूजा भइल। ओमें महुआ का लकड़ी के चाकर पहिया बना के इनार का भीतरी डालल गइल, ऊपर गोलाई में ईंटा जोराइल, आ पलस्तर भइल। कई दिन ले बाल्टा में रस घोराइल। घुघुनी आ गुड़ के रस सबके मिले। ढेर मिस्री–मजूर लागल रहे लोग। लोहार–बढ़ई लोग के काम लागल रहे। ओघरी हाता का बहरा दुआर पर, एगो नीमि आ महुआ के फेंड़ रहे। गर्मी में ओकरे छाँहीं हमनी के बैसखट परे आ गाय, बैल सुस्तों सऽ।

अइसे हमरा गाँव के आकृति–प्रकृति आ बात–व्यौहार में तनी–मनी फरक लउकबे करेला। हमरा गाँव के भूगोल आ प्रकृति कुछ हट के रहे। हर दिशा में अलग–अलग किसिम के माटी– दोमट, बाँगर, ताल, भीटा आ ऊसराह माटी वाला खेत रहले सऽ। हमनी के खेत कुल्हि नउआ, (कुल्हि क्षेत्र) में रहे, भलहीं जोत कम रहे। दक्खिन में मुख्य सड़क का ओह पार गंगाजी के कछारी दियारा भूमि ओकरा बाद बलुअर भूमि, पच्छिमी ताल का ओर मटियार, गाँव के गोएड़ दोमट आ दोमट–बलुअर, उत्तर रेलवे लाइन के ओह पार कियार क्षेत्र भा ऊसराह भूमि। हमनी का ताल तलैया आ कियार–क्षेत्र आ ऊसराह जमीन में धान छींटी आ रोपी जा, पूरुब आ उत्तर में रबी के फसल का सँगे आलू, मटर, गहूँ बोवाव। खरीफ में जोन्हरी, बजड़ा (ज्वार–बाजरा), अरहर, सनई, मूँग–उड़िद आ कहीं–कहीं कुकुड़ी (मकई) बोआव। गाँव के गोएड़ में हरियर तरकारी लेहना आ बाद में आलू–पियाज आ साग–सब्जी होखे।

लड़िकाईं में जवन खेती हम देखनी, ओमें सिंचाई एकदमे बरखा प निर्भर रहे। देसी संसाधन से तरेह में कुआँ से सिंचाई होखे। कुआँ से पानी खींचे खातिर चमड़ा के बड़े–बड़े मोट रहे, जवना में बीस से पचीस बाल्टी तक पानी आ जात रहे। बड़का घइला लेखा बनल ओह भारी मोट के मुँह पर धन आकार में दू गो मजबूत–मोट लकड़ी मजबूती से नाधल–बान्हल रहत रहे जवना का बीच बरहा (मोट रस्सी) घुमाइ के सन के बनल पातर मजबूत रसरियन से कस के बन्हाव। कुआँ का दूनो बगल बनल ईंट–गारा भा माटी के चाकर खम्भा का ऊपर धइल मोट बल्ली का बीच ठोंकल लकड़ी के

बड़–गड़ारी में बरहा बान्हल मोट इनार में लटकावल जाय आ दुसरका छोर के बरहा दू बैलन का कान्ही पड़ल जुआठ का ठीक बीचोबीच लपेटि के कस के बान्हल जाय। बैलन के, भारी मोट खींच के नीचे बनल आयताकार लमहर ढाल में जाए के परे। मोट के पानी कुँआँ का बहरी बनल पानी के छोट हउदा में गिर गइला का बाद, जब मोट कुआँ में लटका दियाय, त बैल घूमि के वापस ऊपरी ओर आवें सऽ। हम हउदा में गिरत पानी के बहाव का साथ नारी का किनारा दउरत खेत में पानी बरावत चाचा का लगे पहुँच जाईं आ लकड़ी के छिछिल परई से जौ–केराइ में पानी छिरकत चाचा के देखि के अपनहूँ– अँजुरी से पानी छिरिके लागीं। "कुल्हि कपड़ा भीज जाई, ठंढा लागि जाई।" चाचा डाँटसु चिरावसु बाकि हम ना मानीं। ओघरी कुछ लोग, सिंचाई खातिर ढेकुल चलावे भा गड़हा–गड़ही, पोखर के ऊँचास जमीन में खंभा गाड़ि के, ऊँच से ढलान का ओर नारी बना के, करकट के बनल दौन चलावे भा पनिहा हउरा का दूनो ओर रसरी बान्हि के ओही से पानी उबिछ के नारी में फेंके आ खेत के सिंचाई हो जाय। बरसात का मौसम में, धान के सुरुआती आ आखिरी सिंचाई एही जोगाड़ से होखे। गेहूँ के देसी बीज होखे। धान में नगीनाबाइस, साठी आ भदई का सँग ललका भात वाला करहनी धान छिटाव।

हम बचपने में खेती के बहुत कुछ कामचलाऊ गुर सीख लेले रहनी। बैल हमन के सहजोगी रहलें सऽ आ हर मौसम, हर काम में सच्चा सँघतिया। हल खींचल, मोट भा रहट से सिंचाई करावल, निराई आ पेराई का अलावा दँवरी से अनाज निकालल एही बैलन का भरोसे होखे। बैलगाड़ी में हमन के सर सामान ढोवला का अलावा अकाजे सुकाजे यात्रा करावें सऽ। खिचड़ी (मकर संक्रान्ति) आवत–आवत ऊखि के पेराई शुरू हो जाय। ऊखिपेर वाली मशीन के गोड़ा जमीन में गाड़ दिहल जाय आ ओकरा ऊपर का कुंडी में खूब लमहर लकड़ी के बल्ली फँसा के कसा जाय। बल्ली का दुसरा छोर पर बनल छोट कुंडी में एगो लमहर बाँस आ रसरी फँसाइ के, बैलन का कान्ही पड़ल जुआठ के बीच में बान्हल जाय। हमरा अस लइका उन्हन के गोलाई में हाँके शुरू क देव आ, ऊखि पेराए शुरू हो जाय। दुआर का उत्तरी किनार प' कुँआँ का जगत का लगहीं एगो छोट बँसवारि रहे, कुँआँ का दुसरो ओर ओइसने बँसवारि। एगो बँसवारि का नीचे गुड़ पकावे खातिर, दू गो बड़ बड़ माटी के चूल्हा बने, जवना पर बड़का–बड़का, छिछिल कराहा रखाव। पनरह बीस बाल्टी रस एकहीं कराहा में औंट जात रहे। ठंढा आ शीत का चलते, लोग भोरहीं, ऊखि काटे आ छीले खेत में चल जाय आ दुपहरिया ले बोझन बोझा ऊखि ढोइ के मशीन का आसपास रखा जाय। कबो–कबो त दू दिन बोझे हो के मशीनी के पास गँजाय।

हमरा दू गो चीज बहुत नीक लागे। चर्खा फारम के नरमकी ऊखि, सँघतियन सँग चूसल आ कउड़ा में खेत का जोरा से कोड़ के लियाइल आलू पकाइ के खाइल। ओइसे ओह समय मटर के छीमी आ जात रहे। हरियर मटरा के घुघुनी आ कचरस से खरमेटाव आ दुपहरिया में गुदिला के दाल आ भात। कम संसाधन आ अभाव में, विकल्पो के कमी रहे ओ समय। चाचा खउलत ऊखि का रस के बरअनहिया छनौटा से निकलला का बाद ओही में पातर तार में दस–बारह गो धोवल आलू गाँथ के डाल देसु। कन्द डालल जाय। बाद में ऊ निकाल के लइकन में बेंटा जाय। बूझि ली कि मेला के मिठाइयो झूठ रहे, ओह देहाती रसगुल्ला का आगा। गुड़ बन गइला का बाद कराह के खुरचुन के लड्डू मिले– गर्म–गर्म, हम कुछ खाईं, कुछ कागज में लपेट के ताखा–दियरखा प' लुकवा दीं। हम लड़िकन के भलहीं मउज–मस्ती रहे, बाकिर चाचा का काम के कबनो अन्त ना रहे। कभी, गाय–बैल के लेहना–पताई, कबो गोबर–गोंथार, रात गइला ले, अगिला दिन के काम के मन–सउदा बनावल। ई सब उनहीं के ना, टोल के हरेक छोट–बड़ गिरहस्त का साथे रहे। पढ़ाई के छुट्टियन में गाँवे अइला प' चाचा ललटेन बार के कबो–कबो हमके आ बड़की बहिन के पढ़इबो करसु।

दुइये–तीन बरिस बीतत–बीतत परिस्थितियन क अइसन फेरा परल कि बुझाइल कि हमार पढ़ाई–लिखाई छूट जाई। हमारा महतारी के बलिया के सरकारी अस्पताल में भर्ती भइला चारो–पाँच दिन ना बीतल रहे कि गाँवे चाचा गंभीर रूप से बेमार परि गइलन। हम अपना भाई–बहिन में बड़ भइला का कारन अस्पताले में रहे लगनी। बाबूजी महतारी का लगे हमके छोड़ के, गाँवे चाचा के देखभाल करे चल जासु। भाग–दउड़ में ऊ अउरी परेशान रहलें। नियति बुझला बहुते विपरीत रहे। चाचा के टाइफाइड ठीको भइल त चरक लापरवाही से दोहरउवा परि गइलन। बाबूजी गाँव से लवटलन त माई से बतवलन कि तीन–चार गो डाक्टरन से देखावल गइल हा मुहम्मदाबाद में। चाचा बस हड्डियन के ढाँचा रह गइल बाड़न। दुबर–पातर त ऊ पहिलहीं से रहलन। हमके चाचा के बहुत मोह लागे। पाँखि रहित त उड़ि के देखि अइतीं, बाकिर महतारी का सँगे अस्पताले में छोड़िके, कुछ दिन बाद बाबूजी, फेर गाँवे चल गइले, जेरू कुछ सुधार भइले पर वापस अइले, बतवले कि उनके उबलल पानी पिये के दियाता। ग्लूकोज आ मोसमी, अनार चाटे के बा। परहेज आ देखभाल चाचियो के न देखे के बा।

महतारी जहिया अस्पताल से डिस्चार्ज होके घरे अइली, ओकरा दोसरे दिन गाँव से बहुत खराब खबर आइल। बाबूजी भागल गाँवे पहुँचलें आ दू दिन बाद लवटलें त रोवला से उनकर आँखि सूज गइल रहे। हम के अपना बहिन–भाई संग फेरू गाँवे जाए के पड़ल। बाबा अब घर में ना लउकसु, एगो घन चुप्पी आ सन्नाटा चारू ओरी पसरल रहे। उनका क्रिया–कर्म का बाद, हमेशा चहल पहल से गुलजार रहे वाला दुआर सून आ उदास लागत रहे। खन्हियों जहाँ बैल बन्हाय सऽ, एकदम भकसावन। हम चरवाह का लइका संगे, ओही चारू ओर पसरल सन्नाटा में, भूसा–पानी करत, उनका दिनन के इयाद में भुलाइल रहीं। बाबूजी ओघरी बहुत कोसिस कइलन कि चाचा के लड़िकी लड़िका हमरे संग पढ़े खातिर बलिया चल चलें सऽ, बाकि चाची उन्हन के ननिअउरा भेज दिहली।

इम्तहान बाद हम गरमी का दिन में फेरू गाँवे आ गइल रहनी। दुआर का अहाता में आम के फेंड लद–बद फरल रहे। उत्तर ओर ननसब के बारियो में फेंड हाल रहे, आ पूरब कबिरहा बारी के पाँचो फेंड आम से लदाइल रहलन सऽ। तनिकी भर आन्ही आवे त ऊ भथार परे कि बिनले ना बिनाय। हमनी कुलिह बहिन–भाई के पाँच गो झोरा भर जाय। ओघरी, आ काँच आमन के रगरल सितुही से छीलि के काट–पीट के घाना खटाई सुखावे खातिर डलाय। मरिचा–नून डाल के कुँचिला कुँचाय, तेल डाल के परमानेन्ट चटनी–अचार के काम चले। लूह में पना बने, ना त कबो–कबो दालियो में परे। जब पाके के सूये के समय आइल त मत पूछीं। गैर लोगन का बिनला का बाद अतना आम बटुराय कि खइला से बाँचल आम, अमावट खातिर रखाइ जाय। एह सब का संगही, गाय–बैल खिआवल, पानी पियावल आ, अन्हार भइला उन्हन के नाद से हटाइ के, हाता का भितरी बान्हल, हमार रोज के काम रहे आ ओघरी एतना थाकल रहीं कि नींद से भोजनो ना करीं। निखहर खटिया पर सूति जाईं। अचके बेमार पड़ गइला का कारन, बाबूजी हमके लेके भलहीं बलिया चल गइलन बाकि महीने भर बाद वापस हम फेर गाँवे आ गइनीं। ई सोचि के कि बाबा के कवनो परेशानी ना होई, हमार नाँव कोस भर लम्मा, मुहम्मदाबाद इन्टर कालेज में कक्षा–छव में लिखवाइ दिहल गइल। अपना क्लास में, हम ओघरी साइज सबसे छोट रहनी। उमिरियो कम रहे। दूर के खेत बटइया दिया गइल। बैल बेचाइ गइलन सऽ। निगिचा के खेत बोवे जोते खातिर एगो बैल रहि गइल, जवन चउधरी का संग साँझिया में चले। कुछ दिन बाद गाँवा जमीं बेच दिहलन। कबो–कबो दुआर पर भितरी दलान में जाईं त रोवाई बरे। देवाल प ओठँघावल लकड़ी के गड़ासी, नोट, बरहा, हल, हरीस आ जुआठ दियँका खात रहलन सऽ। कुटि पेरे वाली मशीन के लकड़ी वाला गोड़ा दियँकाई के सरत रहे। बड़का–बड़का करहा, छनौटा आ अउर कतने लोहा के समान मुर्चात रहे। कोना ओंसरी तीन चार गो कुदारी, फरुहा, खुरपी आ आधा दर्जन हँसुवा परल रहलन सऽ। बाबा, खेत–बारी के हर साज–सामान बहुत सहेज–सरिया के राखसु। आज ई कुलिह के अइसन हालत। दू–तीन महीना बाद चाची बाबा से कहि के, कुटिया पेरे वाली मशीन आ करहा वगैरह कुलिह बेचवा दिहली। दुआर पर गाय, बछिया का अलावे बाँचल रहे त साँय–साँय सन्नाटा में हाता के आम, नीबू आ कोना में दू गो अँगाठ कटहर के फेंड। बइल–इनार का नविखन, चरन में जवले बैल गाय खात तवले रहे, ना त पानी पिया के हाता का भितरी बन्हाइ जाय।

हमार स्कूल बहुत बड़हन क्षेत्रफल आ बड़का खेल का मैदान वाला रहे। चारू ओर बाग–बगइचा, बस पिछवाड़ा बहुत बड़का जलाशय वाला गड़हा भा पोखरा रहे। सवेरहीं गाँव के लड़िकन संगे, कान्ही बस्ता लटले हम पैदले कोस–डेढ़ कोस पढ़े जाईं आ साँझि खा लवटीं। सबेरे पूरा खाना बनल ना रहत रहे। गुरही (जौ–गेहूँ) के रोटी, दाल मिले ना त सुखले रोटी में कड़ू तेल–नून आ पीय घँसि के खा लीं। दिन में जोर से भूखि लागे। चाची बहुत गैंयें गैंयें आराम से खाना बनावसु आ हमरा इस्कूल जाये के जल्दी रहत रहे। हमनी का क्लास का साझहीं खेल वाला बड़का मैदान रहे, जेमे बड़े–बड़े लइका फुटबाल, वालीबाल आ कबड्डी खेलत लउकें सऽ। हमनी का लम्मा से ई कुलिह देखी–सुनी जा। बड़का लड़िकन में अक्सर लड़ाई–झगड़ा आ लथेरउपल होखे त डरो लागे। ओमे शेरपुर, कुण्डेसर, सोनाड़ी अउर ना जाने कौना–कौना गाँव के लड़िका पढ़े आवें सऽ। गोल बनाइ के जइबो करें सऽ। छुट्टी के घंटी बाजत–बाजत हमनियों के छोटकी गोल जुमि जाय। भूखि में, हमनी का लौटत खा रस्ता में बाँच–पाकल अमरूद, बइर वगैरह तूरि के खात आईं जा।

किरिन डूबे से पहिलहीं जब गाँवे पहुँचीं त खाए के ठंडा रोटी–दाल, तरकारी, ना त लइया–चना के भूजा मिले ओही के कुटुरावत हम अपना चचेरी बहिन संगे दुआर पर जाईं। हमरा दुआर से सटल टोला चौधरी आ–कुन्नू चौधरी के घर रहे। ऊ लोग हमन से सहानुभूति देखावे, बाकिर दयाद पटीदारन में ऊ लगाव, भा नेह–छोह ना लउके। पता ना ऊ एतना संकीर्ण काहें रहलन सऽ? मदद करे का बजाय हर काम में कवनो–न कवनो रोड़ा अटकावे का बेमारी रहे बुझला

ओ लोग से। हम त छोट लड़िका रहनी बाकिर हमके एहसेस ई अनटेखाई महसूस होय।

साल बीत गइल। गर्मी का छुट्टियन में, बाबूजी हमरा महतारी आ छोट भाई–बहिनिन के गाँवे पहुँचा गइलन, बाकिर घर के हालत, हमार खराब स्वास्थ्य आदि देखि के जुलाई में अपना पोस्टिंग वाली जगह पर बलिया लेले गइलन। ओ समय ऊ सिकन्दरपुर रहलन। उहवें मिडिल स्कूल में हमार नाँव लिखाइल। इस्कूल का पीछा, पानी वाली नहर रहे आ ओकरा ओह पार थाना। स्कूल का चारु ओर खेतन में गुलाब, चमेली का फूलन के खेती होखे। ओघरी सिकन्दरपुर गुलरोगन तेल आ गुलाब वाकरी लड्डू खातिर प्रसिद्ध रहे। सड़की पर आम, इमिली के पेड़ा रहले सऽ। स्कूल के गुरुजी लोग, लइकन के बहुते धेयान राखे। चढ़ लड़िकन के गुलाब का छड़ी से पिटाइयो होखे। हमके आज ले अंग्रेजी, मैथ आ इतिहास पढ़ावे वाला गुरुजी लोग नइखे भुलाइल। बहुत कड़ाई कर लोग पढ़ाई खातिर। दर्जा आठ आवत आवत त ई पढ़ाई अउर स्तर के होखे लागल। हमनी का गाँव में बिजुली के ओघरी खम्हा लागत रहे। गाँव से बहरवार हमरे दुआर पड़े हरिजन बस्ती तक खम्हा गड़ा गइल रहे। हर बेर लेखा हमहूँ गर्मी के छुट्टी ओइसहीं अपना गाँवे बितवले रहलीं बाकि आठवाँ क्लास में जब अपना एह नया इस्कूल में पहुँचनी त लागल कि गुरुजी लोग, रिजल्ट बढ़िया बनावे खातिर लड़िकन पर विशेष ध्यान देवे लागल लोग। कबो–कबो इस्कूल में एक्स्ट्रा–क्लास चले। जाड़ा के दिन आइल त, हमनी के कुछ क्लास बहरा का मैदान में घास पर बइठियो के चले। परीक्षा से एक महीना पहिले हमनी के इस्कूले में रातियो के रहे आ पढ़े के आदेश हेडमास्टर साहेब दे दिहले। आपन किताब–कापी, ओढ़ना–बिछवना लेके आठवाँ क्लास के लड़िका इस्कूल में रहे लागलन सऽ। नीचे बिछावे खातिर स्कूल के टाट रहे। साँझि खा लइकन में टाट बटोरे के होड़ लागे। रात खा नीचे टाट ऊपर बिछवना। सुतला, खइला आ पढ़ला के समय तय रहे। ओकरा खातिर घंटी बाजे। भोर में चार बजे सबके मुँह हाथ धोइ के, ललटेन बारि के, किताब–कॉपी खोलहीं के रहे। जे सूते, बहाना मारे भा पढ़े के बेरा झपकी मारे, ओकरा खातिर गुरुजी लोग के छड़ी तइयार रहे। एक बेर त हमहीं रजाई ओढ़ले, ललटेन के आगा झपकी मरले रहीं कि सटाक् सटाक् बाजे लागल आ बाकी लइका हँसे लगले सऽ। ई बात दोसर रहे कि देह पर रजाई का कारन हमरा तनिको घाव ना लागल। एकरा बाद रजाई से बहरा निकाल के ठंढा पानी से छपाकी मारि के हमार मुँह धोववले गुरुजी, आ कहले कि, मैदान के दू चक्कर दउर के आवऽ। उहाँ गोड़ जाड़ा–पाला में, सीति में भीजल मैदान। एकही चक्कर मरनी त नींद काफूर। फेर लवटलीं त नींद कहाँ के आवो। एह खातिर आ बाकी गुरुजी लोग हमनी के अपना लइका लेखा, खाये पिये आ रहे के ध्यान राखे लोग। हमके गुरु के ऊ नेह–छोह अनुशासन फेर–फेर कबो नसीब ना भइल। महीना भर का जबर्दस्त तइयारी का बाद, जब मिडिल स्कूल के परीक्षा सेन्टर, बगल हाईस्कूल में परल त बाप–महतारी लेखा गुरुजी लोग, उहाँ छोड़े गइल। हमके इयाद बा, हमरे ना, हमरा पूरा स्कूल के रिजल्ट जिला में सेकंड लिस्ट में आइल रहे। हमके स्कूल छोड़े का समय गुरुजी लोग के भीजल आँखि आ हमनी के पीठ ठोकल आजो नइखे भुलाइल।

ओघरी चीन से लड़ाई छिड़ल रहे। का अपढ़, का पढ़ल–लिखल, का शहर आ का गाँव; लोगन के जोश आ बढ़–चढ़ के दान देवे के होड़ भला कइसे भुला सकेला? मेहरारू, ओघरी लड़ाई में मदद खातिर आपन गहना ले दान देले रहली स। हमरा गाँव में बिजुली के तार खिंचाइल रहे। हमरा दुअरा आ बगल में खेत में गड़ाइल खंभा का बाद, छोटको हरिजन बस्ती के खम्हा पर बिजुली के बलब ओही समय जगमगाइल। बाद में साल बीतत–बीतत हमरो दुआर ले लाइन आ गइल। बाबूजी पइसा जमा कऽ के, मीटर लगवा दिहले। छुट्टी में, घरे बइठल कथा–कहानियन के पोथी पढ़े के हमार जवन चस्का धराइल कि का कहीं। एकरा खातिर बाबा डेटबो करसु। हालांकि ऊ खुद हमनी के चुटकुला आ कहानी सुनावस। उनका कमरा में धइल, कल्याण आ महाभारत आदि पढ़ला का चक्कर में हम साँझ खा खेलहूँ ना जाईं। ओघरी बाग–बगइचा में चिक्का, कबड्डी आ ऊंचा फनउवल उर होखे। असुरक्षा के भाव आ गार्जियन के कमी हमनी के अपना घर–दुआर ले बान्हल रहे। ओह घरी गाँव के बहरवार, सड़क पर तिरमुहानी आ अनुपजागी के मेला लागे। कुटी आ ओकरा पड़का बगइचा में नाटक आ रामलीला खेलल जाय। बाबूजी भा बाबा के दिहल एकन्नी, दुअन्नी में, प्रेमचन्द का हामिद लेखा हमनियो का अपना छोट भाई बहिनन का साथ, जलेबी खाईं जा, आ माटी के खेलवना आ कागद के चरखी कीनि के ले आईं जा। खेल वाला गेंदा कीने भर पइसा कोंच जाय। छुट्टी बीतत–बीतत बाबूजी के पोस्टिंग, बलिया का पूरब, हल्दी हो गइल। उहवें गंगाजी का तटवर्ती बादिलपुर कालेज में कक्षा नौ में हमार नाँव लिखा गइल। ओइजो गाँवे लेखा माहौल रहे। बरखा–बाढ़ के दिनन में, इस्कूल एकदम बन्द हो जाय कि लड़िका खेतन में करिहाँव ले भरल पानी में ना पहुँच पइहें सऽ। क्लास रूम में ठेहुना भर पानी में पढ़ाइयो कइसे होइत? जाड़ का दिन में लइका रास्ता में मटर के छीमी तूरत खात

इस्कूले जी सऽ। तब हमके आपन गाँव सुल्तानपुर केर इयाद आवे। बाग आ ताल का खेतन से, कचरी उखारत जनी, डोरहा मूँजि के खाड़ आ गमछी में बान्हि के घरे लियाइल मन परे। आखिर बाबूजी, इहवों गाँव–देहात से एह खुल क इन्तजाम दू–तीन बेर क दिहलन। परीक्षा खतम भइला पर गर्मी के छुट्टी में हर बेर लेखा गाँव जाहीं के रहे। पढ़इयो हमार इहाँ–उहाँ भागते परात होत आइल रहे। नौ बाबिलपुर से भइल त दसवीं के बेर बाबूजी बेरिया चल गइलन, उहँवा दोआबा के कालेज बेरिया में नाँव लिखाइल। बेरिया मठिया का लगे हमनी का रहीं जा। हम आ हमार छोट भाई–बहिन। उहवाँ एगो गाय किनाइल रहे हमनी खातिर। अपनहीं लेहना काटे–खियावे के रहे। ओही समय हम दूधो दूहे सिखनी। गाय के भूसा एगो कच्चा माटी वाला ओसारा में धराय। नीमि के पेड़ जवन लोजा का बड़का अँगना में परे, ओहजा एकोर हरियर लेहना काटे वाली मशीन रहे। दोसरा ओर गाय–बाछा के खाये वाला नाद रहे। बाबूजी ज्यादातर देहात में ड्यूटी खातिर चल जासु। एक–डेढ़ किलोमीटर पैदल रोड़ ध के इस्कूल जाये के पड़े। हमरा संग संघतिया का रूप में संगे पढ़े जाए वाला लड़िकन में, चन्द्रवदन मिसिर आ वाजिद अली नाँव के दू गो अउरु साथी लइका रहें सऽ। बहुत बरिस बाद उनहन से हमार दुहरउवा भेंट भइल त मिसिर सेन्ट्रल बैंक क मैनेजर आ वाजिद जीवन बीमा के विकास अधिकारी हो गइल रहे लोग।

हाईस्कूल के परीक्षा खतम होते बाबूजी के ट्रान्सफर बनारस हो गइल। हमनी का गाँवे आके रहे लगनी जा। घर अब ऊ घर ना रहि गइल रहे। गाँव का भितरी बनल कोठी का बजाय, बहरवार के दुआरे हमहन क ठहर ठेकान बनल। कोठी पर चाची एकाधिकार जमा चुकल रहली। बाबा ओही जा रहसु। उनहीं का कहला पर दुआर के छावा ऊँच कराइ के बाबूजी टेस्ट पंप गड़वयलन आ हमनी के रहे, खाये–पिये क व्यवस्था कइ के नोकरी पर चल गइलन। हाता का भितरी के आम ओह साल खूब लदरल रहे। बाग–बगइचा रहबे कइल त गरमी के एकसुगी कार्यक्रम कोइना आ आम बीनल हो गइल। कुछ दिन बाद एगो गाय किनाइल कि हमनी के दूध–माठा भेंटाई आ चाह बनी। चाय, गाँव खातिर ओ समय में हँसी–मजाक क चीजु रहे, लोग चाय बगान वाला घर कहि के हँसी उड़ावे। लेहना पताई खातिर दुआर के पिछवारा वाला खेत में लेहना आ रहर छिटवावे के प्लान बनल त चाची रोकवा दिहली। बाबा कहले, कुल्हि पहिलहीं से बटइया दिया गइल बा। चाची का कारन तकरीबन एक बरिस ले हमनी के हाल साँप–छछूनर के रहे। अनाज–पानी, भूसा वगैरह

कीन के काम चले। इन्टर में पढ़े खातिर हमार नाँव, बाबूजी बनारस यू0पी0 कालेज में लिखववले। गाँव में छोट भाइयन–बहिनिन के बहुत परेशानी आ असुरक्षा क स्थिति रहे। गाँवे आईं त पता चले कि, बे सरोग, बे संरक्षक के लड़िकन के गाँव के मूक अनेरिहा बूझेले सऽ। उहाँ जोर–जबरदस्ती आ अनेत के जवाब कमजोरी के देबे के परेला। बरदास करे आ चुप रह जाये वाला हरमेस दबावल, उपेक्षित होला। आखिरकार अगिले साल हम गाँवे, मुहम्मदाबाद का इन्टर कालेज में नाँव लिखा लिहनी। बारहवाँ क्लास में। एगारहवाँ क्लास के साइन्स आ मैथ छोड़ के आर्ट्स पढ़े के रहे। हिन्दी, अंग्रेजी, इतिहास आ नागरिक शास्त्र। विषय आ स्कूल बदलला के चलते हमार पढ़इयो विचित्र ढंग से भइल। दू साल के कोर्स का हिसाब से नया इम्तहान के तइयारी। पढ़ला से ढेर हमार ध्यान अपना घर क हालत

सुधार में ढेर रहे। बाबा से उरेब बोले के हमार संस्कार ना रहे, बाकि हम अड़ गइलीं एह साल कुछ खेतन में हम खेती कइ के मानब आ चाची के विरोध बरदास ना करब। उहे भइल, हम शुरू–शुरू में कीनल हर से, एगो खेत में जोन्हरी, रहर आ मूँग–उरिद छिटववनी आ पिछुवारा वाला दू मंडा (चार बिस्सा) वाला कोला में लेहना बोववनी। बाबूजी कहीं से उधार–पँइचा लेके, बाद में बैल कीनले। तब आसपास के अउर खेत में खेती खातिर बाबा के देबे के परल। हमरा जिद, जुनून आ उछाह के नतीजा इहे भइल। हरवाह के खेत दिहला का बाद बाँचल अढ़ाइ बिगहा में, हम कुवार आवते–जौ–केराइ, गेहूँ आ सरसो मटर बोअवनी; पढ़ाई का नाँव पर बस इस्कूल के क्लास रहे। घरे हमेशा कवनो न कवनो काम। छोट भाई–बहिन चौथा, पाँचवाँ में पढ़त रहल सऽ, बाकि लेहना कटवावल, गाय–गोरू बान्हल, खेत में पानी चलावे वाला काम में हमरा संग अझुराइल रहें सऽ। बाद में बाबा कबो–कभार दुखी मन से दुआर पर आवसु, चाह–पानी करसु आ हमके खेती बारी आ घरकच छोड़के पढ़े के कहसु। उनका भीतर, हमनी खातिर लगाव त रहे, बाकि चाची आ उनका नइहर के भाई–भउजाई के दबाव ढेर रहे। ओघरी चाची किहाँ के केहु न केहु कोठी में डटल रहे आ बाबा पर चाची के लड़िका–लड़िकिन के पढ़े–पढ़ावे खातिर दबाव बनावे। ऊ त कुल्हि ननियउरे पढ़त रहलें सऽ बाकि छुट्टी में हमार एगो–दूगो चचेरी बहिन आवें सऽ। उन्हन का मन में, हमन का विरोध आ दयादी के भाव कूट–कूट के भरा चुकल रहे। बाबा के, घइल पइसा–रुपया खरच करवला का बादो, उन्हन के दबाव डलले बाबा से, दूर के कुछ खेत बेचवा दिहले सऽ। बाबूजी त बाबा का लोका– सोंसो केवार ना लेसु, हमार महतारी जरूर एह

पक्षपात पर बोलसु। चाची गाँव के चारु–बिगहा नीमन खेत बटइयाँ देले रही। जवन चाचा हमरा खातिर, बापो ले बढ़के रहलें, उनहीं के लइका–लइकी, मजदूर के संस्कार में, हमसे बिलग हमार बयान हो गइलें सऽ। बाबा कबो–कबो खिज होके चाची का संदर्भ में, बोलसु, 'तहसीलदार आ दरोगा क बेटी अइसने होली सऽ!' चाची के दिमाग आ मुँह ढेर चले। ऊ पालिटिसियन लेखा व्यवहार करसु, भासन देवे लागसु। आगा चल के ऊ सँचहू उहे कइली। राजनीति आ नेतागिरी।

समय बदल चुकल रहे। सरकारी ट्यूबवेल का संग संग कुछ लोगन के पम्पिंग–सेट गड़ चुकल रहे। धान, गेहूँ, आलू के नया उन्नत बीज आ किसिम किसिम के रासायनिक खाद, डाई, यूरिया, जिंक, फास्फेट वगैरह का आ गइला से खेतन में पैदावारो बढ़ गइल रहे। तब्बो छोट छोट खेतिहरन के श्रम आ संघर्ष ओइसहीं जारी रहे। चकबन्दी के कवनो फायदा हमन के ना भइल। आठ मौजा में खेत, खाली एक ठईं से, ओह ठईं हो गइल रहे। कुछ बलबियर–दबंग लोगन के जरूर पौ–बारह हो गइल रहे। दु–तीन मौजा का सिवान पर सटले चक कटवा लिहल लोग। मिडिल में पढ़त रहीं, तब्बो भइल रहे चकबन्दी। ओघरी रसरी से नाप के खूँटी गड़ाय आ खेत के चौहद्दी क चीन्हा हो जाय। समरथ लोग बिहान होत–होत डाँड़–मेड़ बना लेय। हमरा घर में, बाबा कहीं जइबे ना करसु, बाबूजी नोकरिये प रहलें आ हम लरिके रहनी, बाकि हमके तब्बो अपना खेतन का चौहद्दी से चीन्हा–परची हो चुकल रहे। अब जब ओह खेतन में से दु–तीन मउजा का खेतन ले हमार अधिकार–पइसार भइबो कइल, त ईहे साँची कि चकबन्दी आ चकआउट खेतन के टुकड़ा नाहियों त बारह–चौदह गो हो गइल रहे, ओम्मे से बटाई से छोड़ावल खाली चार–पाँच गो में हम बोईं–जोतीं। ओतने में हम तबाह रहीं, सरकारी टीवुल से बारी पर पानी मिले। जाड़–पाला में हमार अक्सरे रात खा दस–एगारह बजे पाला पारी भेंटाय। ठिठुरत–काँपत, ललटेन आ टार्च लेले छोट भाई संग फरुहा आ लाठी लेले पानी बरायल बहुते खराब लागे। चोरकट, जरतुहा लोगन के कमी ना रहे ओह घरी। लम्बा से आवत नाली, बिचहीं में केहू काट लेय, ना त अपना डाँड़ के बगल से जात कच्ची नारी में, लठरी का हूरा से छेद क के सरका जाय। खेत से टीवुल तक, तीन–चार फेरा मारत, नारी थाम्हत–छानत कइसहूँ खेत क पटवन करत भोर हो जाय।

जोर के खाद छिरिकला का बाद फेरु जब जोरा चहल त आलू बगदगा गइल। दुसरका पानी का बेर राय साहेब के टिवुलवे बिगड़ि गइल। फेर बनल, त एक घंटा खातिर ऊ पानी दिहलें। एही फजिहत में हमके अपना कोर्स के तइयारियो करे के रहे। हम भरसक इस्कूल जाए में नागा ना करीं। ओघरी जाए आवे के साइकिल मिल गइल रहे, बाबूजी वाली। इस्कूल आ घर–बजार ओही से होखे। बाबूजी आवसु त, ओही सइकिल से उनके दुरुन्धपुर स्टेशन छोड़हूँ जाईं। ऊहो रहला पर ओही से अस्पताल, तहसील भा ब्लाक पर मुहम्मदाबाद जासु। आज, जब ओह समय के पढ़ाई प सोचीले त बुझाला कि हमके इन्टर में पढ़े–लिखे आ परीक्षा का तइयारी के सहूलत आ सुतार ना भेंटाइल। पढ़े का बजाय हम घर–गाँव आ परिवारे सम्हारे में अझुरा जाईं, परिस्थितिये ओइसन रहे। बुझला, ऊहे ओह समय के माँग रहे। हमहीं ना हमार छुटकि छोट भाई बड़िन हमार पूरक बन के हमरा संगे लागल रहे। कुछ संग–संघतियन से पता चलल कि करीमुद्दीनपुर इन्टर कालेज में परीक्षा के सेन्टर पड़ी, त हमरा लागल कि हमरा भागे में, भागत–परात चलते–ठेका पढ़ाई लिखल बा।

हमार महतारी, सीवान जिला (बिहार) के रहली त सुभाविक रूप से उनका मन में, ओने के भाषा–समाज आ संस्कृति का दिसाईं लगाव रहे, ओने के खान–पान, बोजा–बजका के ऊ ढेर सौखीन रहली। छाता में देवाल का अरियाँ–अरियाँ जामल सूरन के गाँफा, मूल–कोंढी पाला कोंहड़ा, अरुई के पत्ता लउकला भर क देरी रहे, ऊ ओके नोंच–तूरि लेसु पकौड़ी आ बोजा बनाए खातिर। सीजन में सनई के फूल, मँगावसु अउर न जाने कवन कवन साग, नोनी–गोना, करमी, पोई जाने भेंटाय आ मकई भा बजड़ा के आटा में बेसन मिला के टिकी लिट्टी बनावसु। कबो–कबो, कढ़ी–बरी आ फुलौरा बने त कबो सतुई भरल मकुनी। मकुनी के त ऊ मास्टर रहली। गुदिला आ भूनल तीसी पीसि के मकुनी बनावसु। पेट हरदम खराब रहे उनकर, बाकि खाहें के मानसु, उनहीं के ई सब चटक मटक अरकस–पथुआ खाये के हमरो रपटा परल। रहर–मूँग का दाल में खुदी मिलल त ओह के ऊ मेड़–पीस के नून–मरिचा मिलाइ के छोट–छोट लिट्टी बना देसु। सोन्ह आ चटक। बस हम दलपूरी–बखीर ना पसन करीं ओघरी। ऊहो हमरा रुचि के खेयाल करसु आ नेनुआ, लौकी, कोंहड़ा, सतपुतिया, तरोई के तरकारी बनला पर, हमरा के कवनो न कवनो चटक भुजिया भा चोखा बनावसु। भंटा, घरहीं फरे, फुलगोभी, भिंडी, परोरा–कुन्दुरुन मिलिये जाय, कुछ ना रहे त, अदौरी, कोंहड़वरी भा आलू के भुजिया। एह सब का बाद भूजा–भुजना। गोसार दू–दू गो रहे गाँव में, चिउरा–फरही, चना, जोन्हरी, मकई भुजाय, सतुआ खातिर– भेंड़के कूटल–जौ आ चना भुँजाय। तब घरहीं जाँत में सतुआ, सतुई ज्यादा पिसात रहे। आटा पिसाये खातिर, मशीन अभी गाँव में ना रहे, त बोरिया में भर

के लम्मा जाये के परे। तेलो पेराये खातिर गोलपुर, युसुफपुर या मुहम्मदाबाद जाए के परे। इनके त साँझ खा भूजा चबाये के ना मिले त बखरी ले लेव। तब हम चना के डभका खाईं, बाकि अइसन नउबत बरसाते का सीजन में आवे। कूटे–पीसे में हमरा घरे केर दिक्कतारी ना रहे। महतारी के हुकुम क देरी रहे। आसपास जोह भेजते, कुटनिहारिन हाजिर हो जी स। बड़का ओसारा में– एकोर ओखर–मूसर आ धान कुटाई के ढेंकी रहे आ दुसरा ओर उत्तरी छोर पर जाँता। ओनही कोना में, एगो गाड़ल चकरी रहे, आ एगो छोट चकरी जवना में, दाल दरत खा लकड़ी के खूँटी ठोंके के परे।

एक बेर, जब हमार महतारी बेमार परली आ नउबत ई आ गइल कि जिला अस्पताल, गाजीपुर में उनके भर्ती होखे के परल। ऊ त भर्ती भइली, बाकि हमार तोबड़–तिल्ला हो गइल। भर्ती कराइ के अन्हार होखे से पहिले भाग के गाँवे अपना छोट बहिनिन आ भाइयन के सम्हारे–देखे आवे के परे। मुश्किल तब आइल जब ई संकट पनरहियन दिन ले दिन खींच ले गइल। हम छोट बहिन–भाई लेग संकराहे बनाइ–खाइ के, महतारी के खाना लेके गाजीपुर अस्पताले जाईं आ रात होखे का पहिले गाँवे चलि आईं। ऊ समय एसे डयाद अउरी परेला कि ओघरी, अचके आटा ओराइ गइला पर, एक बेर हमरे के जाँत चलावे के परल रहे। तब, खाली आटा ना, बेसनो पिसले रहनी। मदद में हमसे छोट बहिन रहली सड़। तब जल्दी जल्दी रोटी–तरकारी आ पियाज के पकउड़ी लेके महतारी किहाँ अस्पताले गइनी। ऊ पुछवो कइली कि, बेसन कहाँ से? हम मर्हटियाइ गइनी। साँझ खा अस्पताल से लवट के गाइ के दूध दुहला के बाद, जवन बने, तवन भोजन आ बिजुली ना रहला, लालटेन जराइ के रात एगारह बजे ले पढ़ल–लिखल। ई कष्ट दस बीस दिन ले रहे। माई अस्पताल से नीक होके घरे आ गइल रहली। हमहूँ इम्तहान के तइयारी में भिड़ गइनी।

प्रवेश पत्र मिल गइल रहे आ परीक्षा सेन्टर पर जाये के तइयारी होत रहे। 'अनजान जगहा, कहाँ रहब, का खाइब' के फिकिर लागल रहे, एही में एगो मित्र कैलाश जी हमार मदद कइले, ऊ अपना हीत किहाँ रहे के बेवस्था कराये हमरा संगही, साइकिल से ओढ़ना–बिछवना, भूजा–भुजुना आ किताब–कापी लदले गोंडउर गाँव पहुँचा अइलन। उहाँ से, एगो सूखल नाला पार कइके करीमुद्दीनपुर इन्टर कालेज जाए के रहे। इम्तहान खतम भइल, त ओह दिन से छूटल घर–गाँव के चिन्ता, उदास बान्हि के धरि गइल। गाँवे गइला पता चलल कि, हमरा छोट भाई के खाली एगो ऊखि तुरला खातिर एगो परधान जी थपरा चला देले रहले। ऊ घटना, हमरा भीतर अजुओ आग लेखा सुनगेले। जरूरी नइखे कि हर गाँव में, सब लोग दयालु आ भलमानुस होखे। चोर–चाई, ममबढ़ आ दुर्जनो रहेले। इनहन के शिकार सहनशील, भलमनई लड़िका आ कमजोर लोग बेर होला। बाकि कहीं कहीं अबर पर क्रूरता करे वाला, आपन पापकर्म अपना अगिली पीढ़ी के भोगे खातिर छोड़ जाला।

पहिले हमरो गाँव खूबहि भरनी रहले। कलवार, गोंड, धोबी, नाऊ, लोहार, सोनार, कोंहार, बढ़ई, हरिजन, दुसाध कुल। माली, पनहेरी आ कोइरियो लोग ना रहले। नियरा का गाँव से आवे लोग। गंगाजी घाट का ओर डोम आ बगइचन में बसल मुसहरो लोग मिले। हमन क किसानी संस्कृतियो अइसन रहे कि खेती में सबकर गुजर–बसर हो जाव। कटिया, बिनिया, दँवरी होत–होत, सबकर हक–हिस्सा कमबेस मिल जाव। सोहनी–रोपनी का समय ईहे हाल रहे। गड़हा, गड़ही, ताल–पोखरो जियका चलावे में मदद करे। बाग–बगइचा रहबे करे। हमरा किहाँ कबो खून–कतल भा क्रूर टकराव के नउबत ना आइल रहे। अधिक संख्या में भूमिहार लोग रहे गाँव में, जे अपना नाँव का आगा प्रधान लिखे, दू चार घर के लोग राय साहब कहाव। छव–सात घर ब्राह्मन रहे लोग, जेमे से अधिकांश लोग ओघरी खेती का साथे–साथे जजमनिका करे। हमार बाबा, जिनकर मूल नाँव वासुदेव दुबे रहे, गाँव–जवार आ दूर दूर ले ब्रह्मचारी जी का नाँवे से जानल जासु। ऊ पढ़ल–लिखल, विद्वान रहले बाकिर जजमनिका ना करसु, ना ओह पेशा के नीक मानसु। कर्मकाण्ड आ पूजा खातिर बोलावल पंडीजी लोगन के ऊ जरूर बहुत सम्मान देसु। ऊ अपना नाँव–जस आ प्रभाव से धन–संपति आ संपन्नता अरजले रहले। दोसरा प्रांत के राजा आ बड़का संपन्न लोगन किहाँ उनकर इज्जत रहे, उनका समय में, अइसन हम सुनले रहीं। रीवा नरेश आ एगो–दूगो अउर बड़का लोगन संग उनकर फोटो लरिकाई में देखले रहीं। घर में, भोजपत्र पर हाथ से लिखल, सप्तशती आ अउर कई गो ग्रंथ लाल एकरंगा में बान्हि के धइल देखले रहीं। चानी के आ लकड़ी के बनल, 'रेहल' देखले रहनी, जवना प मोट ग्रंथ धइ के पढ़ल जाव। गाँव में उनकरे बनावल दुतल्ला कोठी, दुआर आ पाही क बिगहन खेत उनकरे अर्जन रहे। बाकि अपना होश में, हमके उनकर वैभव–सुख देखे के ना मिलल। अलबत उनसे जरे वाला लोग जरूर मिलले। गाँवन में ओघरी, दबदबा खातिर शरीरे बल काम करे आ ऊहे घर–परिवार के ताकत रहे, जहाँ सदस्यन के संख्या ज्यादा रहे। कम से कम ओह समय, अपना गाँव में हमके ईहे महसूस भइल। बरियारा से केहू ना जवान लड़ावे, ना अझुराव। ओहू में ओह टाइप के शरीरबल

वाला, जे तनी मनबढुओ रहे। हमरा गाँवे ऊखिये तुरला खातिर मार खाइके एगो पचनी के लडिका बेमार भइल आ ओकरा मुवते ऊ परिवार गाँव छोड दिहलस। आगा का सालन में तऽ मार–थोबी रहिये ना गइल। निगिचे के गोसपुर से आवे, मौका पर आवे भा बोलावल जाव।

पंडिज्जी लोगन का अलावे कुछ घर अहीर (यादव), कुछ घर राजभर लोगन के रहे। हमरा दुआर का बाद त ओही लोगन के घर–दुआर रहे आ सांच कहीं तऽ हमरा समय में ऊहे लोग हमन के असली भाई–दयाद भा जेवन कहाव, तवन रहे। मौका–कुमौका ऊहे लोग संग साथ देव। जब पहिले पहिल हमरा गाँव में हमार माई छठ उठवली त बस एक घर पंडिज्जी के रहे उनका संगे। गावे आ घाटे जाये में हमरा चउधुर टोला के मेहरारू रहली सऽ। गाजा–बाजा आ सांझ–सबेर के गंगा–यात्रा में गवाए वाला गीत त लोगन के अपना ओर खिंचबे कइलस। बिहने परसादी बँटइला का बाद त जइसे छठ पूजा के महातमे बढ़ गइल। अगिला साल अउर कई घर परिवार हमरा महतारी के संग–साथ में छठ पूजा कइलस। ऊँच अरार का सीढ़ीनुमा ढलान से उतर के गंगा जी का किनारा डूबत आ उगत लाल सुरुज भगवान के अरघा दिहल, हमके ओही घरी अभिभूत करे। अब त पूरा गँउवे, हर जात–बिरादरी के लोग छठ–पूजा करे लागल। बेलुक एगारो प्रदर्शन हेर बढ़ गइल।

एह सब अंखड आ झमेलान का बादो हमरा भीतर एगो भावुक कवि मन कुलबुलाइल करे ओह समय। संवेदना आ गहिर अनुभूति के प्रतीति त होते रहे। हम ओही घरी कविता गीत वगैरह, एगो कापी में लिखल करीं। कबो–कभार 'आज' अखबार के साहित्यिक पेज में छपवो करे। कुछ कवि, शायरन के गीतो अकेले में गाईं। गाँव के दू–तीन गो साहित्य–संगीत प्रेमी लडिको रहलन सऽ, जेसे हमार भेंट–मुलाकात आ चर्चा–परिचर्चा हो जाव, अपना समय संदर्भ पर समचरचा आ बतकही होखे। एगो हमार क्लासफेलो मोती प्रधान रहले, उनके छोट भाई अवधेश प्रधान ओघरी सादत हाईस्कूल के परीक्षा देले रहले। हमसे छोट रहले, बाकि प्रतिभावान आ अध्ययनप्रिय भइला का नाते हमार प्रिय रहले। उनका संस्कृत के कइ गो श्लोक कंठस्थ रहे। लघु सिद्धान्त कौमुदी के कुछ सूत्रो सुनावेंस। एगो अउर बात कि उच्चारन ऊ बहुत सावधानी आ सतर्कता से करसु। अउर कुछ सक्रिय रचनात्मक सुभाव के लोग रहे जइसे, मास्टर अम्बिका राय, मुक्तेश्वर प्रधान। मुक्तेश्वर जी त रामलीला आ रंगमंच में बहुत रुचि लेसु। उनहीं का कहला, हम नाटक में दू बेर अभिनय कइले रहनी। कुटी का बड़का बगइचा में, नाटक के मंचन होखे आ गाँव के दर्शक समूह में मरद–मेहरारू–बूढ़–जवान लडिका

ढेर लोग जुटे। हमरा संग के पढ़ल एगो अनिरुद्ध प्रधान रहले, ऊहो बाद में कयनी डिग्री कालेज में प्रवक्ता बनले। बी०एच०यू० में जब हम एम०ए० कइलीं, तबे जाइजा से अवधेशो प्रधान बी०ए० कइले रहसु।

इन्टर परीक्षा बीतल त हम, कटिया आ देवरी–ओसावन में लाग गइनी। अपना घर का निगिचे सटले उत्तर का खेत के लीप–पोत के खरिहान बनल, ताकि अपना छतो पर सूति के, देखभाल हो जाय। दुआर पर इनार का लगे बेसवारि भा कोना नीम के छोट पेड़ रहे छँहाये खातिर। हमार देवरी शुरू भइल त हरवाहो संगे रहे। हमके, हमार छोट भाइयन के भरपूर सहजोग मिले, विशेषकर सलिला भाई के। दुपहर बारह बजे से सांझ 3 बजे ले देवरी बन्द रहे। सांझ के एक घंटा बेलन के हँकला के बाद, पाँचा से पैरा उलाटल जाव। झटल डाँठ आ अनाज नीचे हो जाव आ, खड़ा, बिना कटाइल डाँठ–उपरा जाव। दू–तीन दिन में अनाज भूसा के राशि बटोरि के, गाड़ के गोबर के पहायन रखा जाव। पनरह दिन में ओसावन का बाद, अनाज भूसा कुरिह ढोवा गइल। हरवाह आ ओकरा परिवार संग मिल के सगरी काम ओरियाइल त फेर बाग–बगइचा, महुआ, आम, कोइना वाला टहल। गरमी के छुट्टी ओरावे से पहिले खाँची से सबेरे–शाम, खाद के ढोवाई शुरू भइल, पास–परोस के खेतन में गँजाइल। तबो आगा अउर पढ़े के हमार भितरी इच्छा जोर–जोर मारे लागल।

बाबूजी का मना कइला के बादो हम ना मनलीं त महतारी साथ दिहली। अपना लग जोगावल सऊ–डेढ़ सौ रुपया दिहली आ कहली कि तूं बनारस जा आ आपन पढ़ाई करऽ। हम गइनी आ मैदागिन पर हरिश्चन्द्र डिग्री कालेज में नाँव लिखवनी। बाबूजी नोकरी से छुट्टी लेके बार–बार गाँवे जासु, हमहूँ जाईं। साल बीतत–बीतत बाबा बेमार परले, उनका शूगर रहे आ गोड़ में कुछ नोख चीज से एक हाली लहाइल त घाव ठीके ना होखे। बाबूजी खेत का मुकदमा आ बाबा के दवा–बीरो में एतना बझले कि हमार फीसो दिहल भुला जासु। बी०एच०यू० में बाबा के इलाज भइल आ घरे लवटले त कोठी छोड़के, हमनी संग दुआरे आके रहे लगले। हमार महतारी आ भाई–बहिन उनकर देखभाल करें सऽ। बी०ए० दुसरा साल जात–जात घर में एक बेर फेर उथल पुथल मचल। बाबा अचके मरि गइले, हमके लेके जब बाबूजी गाँव पहुँचले त हमार छोट भाई बाबा के दाग दे चुकल रहे। बाबा का श्राद्ध में चाचो आ उनका लायका का लोगन के हाथ खिंचल ओघरी हमके बहुत अखरल बाकि उनकर काम–क्रिया आ सम्मानजनक महाभोज बहुत शान–सम्मान से भइल। आस पड़ोस का पाँच–छव गाँवन के आमन्त्रन जइले सन आ गाँव का संग–संग हमरा

टोला के ढेर सहजोग मिलल। विशेष कर दू–तीन घर का यादवजी लोगन का परिवार के। बाकि कहाउति झूठ नइखे बनल... 'घर के भेदी लंका ढाहे!' चाची एकपट के रहे का बजाय अउर दुराव बढ़ाइ दिहली। बाबा का जीयत समय चाचा का लइका–लइकिन के त हमन से दूर रखके, उन्हन में विपरीत भाव भरबे कइली, उनका मुवला का बाद अपना इच्छानुसार बँटवारा का बातो, चैन से ना रहे दिहली। बाबूजी के बड़की काकी मरे से पहिले हमरे किर्ती गाँठि के गुजरली। मरे से पहिले जिरिआइ के आपन हिस्सा क खेत–बारी बाबूजी का नाँवे लिखि के मुवली। ओह समय उनका काम–क्रिया आ भोज, दान का समय चाची के पता ना रहे बाकि उनका मुवते, हमनी पर दू–तीन किता मुकदमा ठोकली, दुआर में जवन हिस्सा उनके दिहल रहे, उहाँ– एगो राजभर के खाली एही बदे लिखि के बसवली कि ऊ हमन के तंग करी। उनकर गवाही मदद करी। इहे ना ऊ अपना भाइयन क मदद लेके हमन के डेरवावे आ भरमावे का साथ–साथ, बेमतलब अझुरावे शुरू कइली। बाबूजी विचलित ना भइलन। शान्त भाव से उनका मुकदमा के जवाबदेही दीवानी में दाखिल कइ के पैरवी करे लगलन। एह उलझाव से उनकर ध्यान हमरा से अउरी हट गइल। हमार मदद कबो कबो भाइये करे ओही लोकाइ के।

हरिश्चन्द्र डिग्री कालेज, बड़हन कालेज रहे। ओमें, साँझ खा बी0एड0 आ लॉ के अलगा पढ़ाई होखे। ओम्मे हमरा से ढेर उमिर के लोग पढ़े। पार्ट वन में त यूनियन के मान्यता का बाद हमरा सहजोग आ प्रभाव के लाभ उठाइ के हमार दू गो मित्र, छात्रसंघ के अध्यक्ष आ मंत्री बनल लोग। महामंत्री अमरनाथ चौबे, हमार बनारसी मित्र रहले, बाकि उनका व्यवहार आ चलाकी से हमार दूसर कई गो, छात्र–संघतिया, जवन गाँव–देहात के रहले, क्षुब्ध हो गइले आ उनहन लोगन का दबाव आ दुरपेंटला का कारन, दुसरा साल छात्रसंघ का चुनाव में हमार नाँव उछल गइल। हमार शहरी मित्र चौबे जी घबड़इले, हमके समझवले त अध्यक्ष पद पर हम मित्रतावश उनकर विरोध ना कइके महामंत्री पद खातिर अपना साथियन के इच्छा पालन के हामी भर दिहले रहनी। गाँव से लवटनी त साइन्स आ आर्ट्स दूनों फैकल्टी से हमार नाँव अध्यक्ष आ महामंत्री खातिर अलग अलग प्रस्तावित हो चुकल रहे। अपना पुराना मित्र चौबे का खिलाफ आपन नाँव वापस त ले लिहनी बाकिर महामंत्री पद खातिर हमरा खिलाफ चौबे जी अपना एगो समर्थ शहरी उम्मीदवार के उतार दिहले। हमके कुछ करे के ना परल। उहाँ के तीन–चार गो लाज में रहे वाला गाँव–देहात के लइकिन क गोल आपुस का चंदा से कार्ड–पोस्टर, प्रचार अपना कूता प करे लगले सऽ। आखिरकार चुनाव भइल। सबेर के पाली में आर्ट्स आ साइन्स फैकल्टी आ साँझि का पाली में बी0एड0 आ लॉ कालेज के वोट परल। गिनती दुसरा दिने भइल। हमरा खिलाफ खड़ा लोगन के जमानत जब्त हो गइल। चौबे जी मुश्किल से चुनाव जितले। हमार स्थिति अजीब रहे, 'आए थे हरि भजन को, ओटन लगे कपास।' कहाँ त मन लगाइ के पढ़ती त छात्रसंघ के लीडर बन गइली। कालेज में कवनो बवाल होखे त सम्हारे खातिर कूदे के परे। ओघरी शाह जी प्रिंसिपल रहले आ हास्य व्यंग्य के प्रसिद्ध कवि कामतानाथ उर्फ 'चोंच' जी वाइस–प्रिंसपल। ऊ हमनी के हिंदी पढ़ावसु। छात्र राजनीति निभवही के पड़ल।

आदमी के भाग्य आ नियति खींच के ले जाले। साल बीतत बीतत हमार मन नेतागिरी आ छात्र राजनीति से अइसन उचटल कि साल का अंत होत–होत हम बैरागी भाव में आ गइली। जतना सँपरल पढ़ाई कइनी आ चुपचाप इम्तहान दिहली। ओघरी हम नारानगर के लाज वाली कोठरी छोड़ि के घासी टोला (विसेसरगंज) रहत रहनी अकेले। लकड़ी–कोइला आ स्टोव जराइ के आपन रोटी–दाल, तरकारियो बनावे के परे। खाना पकावे क गिहिथान त हम अपना घरही सीखि चुकल रहनी। कवनो दिक्कत ना बुझाइल।

बी0ए0 पास कइला का बाद, रहे वाली जगह बदल गइल। हम कचउड़ी गली का आगा एगो मठ नियर बनल पुरान मकान में बीस रुपया किराया प कोठरी लेके रहे लगनी। ओघरी ले हमार कविता आ लेख अखबारन का साहित्यिक पन्ना पर छपे लागल रहे। गोदौलिया पर रामभरोसा (एगो पान के पुरान दुकान) में रोज साँझ खा जरूर जाईं। उहाँ जुटे वाला कवियन–लेखकन में चन्द्रशेखर मिसिर, उनकर भाई जगदीश चन्द्र जी, हरिराम जी, पाणिफणि ओझा, परमानन्द आ एगो नया–नवेल कवि बुद्धिनाथ मिसिर का अलावा बहुत लोग भेंटाव। हमार आर्थिक दशा अपना पिता का तत्पर मदद का अभाव में बहुत खराब रहे। हमार लिखल कविता, कहानी भा लेख से थोर बहुत मदद मिल जाय। बाबूजी का जिद पर, कुछ नोकरी के इम्तहान दिहनी। रेलवे का असि0 स्टेशन मास्टरी खातिर। पास भइनी बाकिर अउर पढ़े के ललसा, नोकरी ना करे दिहलस। एह क्षुद्र परेशानी के हलुक करे क उपाय रहे गाँव आ उहाँ क खेती। कबो कभार हमार महतारियो धीरज आ बल बढ़ावसु। एक बेर हमरा उदासी के देखि के ऊ सइ–डेढ़ सौ रुपया फेंट देत कहली कि हम एम0ए0 में नाँव लिखा लीं, आ हम फेरु बनारस पहुँचि के बी0एच0यू0 में हिन्दी विषय से फार्म भर दिहनी। जब दाखिला मिल गइल

29/09/2026, 16:56 Paati-81 (September 2016)

त कोई तरे पहिले किस्त फीस जमा कइ के, रहे–पढ़े के नया वेवस्था बान्हे लगनी। ओघरी हमार साहित्यिक दायरा तनी अउर बढ़ चुकल रहे। कवि डॉ0 श्याम तिवारी हमके अपना नेह–छोह आ अपनाइत से अउर साहित्यिक लोगन से मिलवले। संस्कृत विश्वविद्यालय में डॉ0 विद्यानिवास मिश्र जी से ओही समय हमके दु–तीन बेर मिले के मोका मिलल रहे। डॉ0 शम्भुनाथ सिंह के नवगीत आंदोलन से जुड़ल श्रीकृष्ण तिवारी, उमाशंकर तिवारी आदि से परिचै हो चुकल रहे। नागरी प्रचारिणी सभा का पुस्तकालय में पहिलहीं से आवत–जात रहनी। बाँसफाटक के कारमाइकल लाइब्रेरी से बहुत कुछ पढ़ चुकल रहनी। हमरा बात–व्यवहार आ व्यक्तित्व में अपना जीवन–संघर्ष आ अनुभव का कारन 'मेच्योरिटी' आ गइल रहे। कभी–कभार हम, दोसरा जिलन में कवि सम्मेलनों में भाग लिहनी। रूपनारायण तिवारी, चन्द्रशेखर मिश्र, श्रीपाल सिंह 'क्षेम', विकल साकेती, दान बहादुर 'ढूँढ' आदि लोगन संग, मंच पर काव्यपाठो कइलीं। ऊ लोग हमके बहुत उत्साहित कइल लोग बाकि हमार रुचि भिन्न रहे। आगा चल के हमके मंच से अरुचि हो गइल।

गाँव में सोहनी, रोपनी आ समय खेती में मदद करे गाँवे पहुँचीं, त चले का बेर महतारी आटा, चाउर, दाल मोटिया के दे देसु। बी0एच0यू0 में पढ़ाई शुरू भइला का पहिले हम रामापुरा में, मशहूर तबला वादक पं. अनोखेलाल मिश्र का मकान में कुछ लइकन का साथे कोठरी लेके रहनी। उनकर लइका पं0 रामजी मिश्र भोरहीं तबला के रियाज करसु। ऊहो बहुत नामी तबलावादक रहले। हमरा साथे पढ़े वाला लइका चन्दौली साइड के रहले सऽ। उहाँ खाये–बना के झंझट एसे खतम हो गइल कि उन्हन का हमरो खातिर भात–दाल भा भात तरकारी बना दें सऽ। साँझ खा हम रोटी जरूर बनाईं। बेल के ना, हथपोटिया। लकड़ी का कोइला पर मद्धिम आँच में सेंक के बनाईं– एकदम फूलल फूलल, गुदगर सवदगर रोटी। महतारी जवन घीव, अँचार आ सतुई देल रहसु, ओहू के उपयोग होखे। चन्दौली के लइका ओके खतम क घालें सऽ।

गाँव के उत्तरी निकास पर पहिले राजभर लोगन के दू चारे गो छिटफुट घर रहे, ऊ अब कइगो हो गइल रहे। टोला के बहे वाला पानी, हमरा दुआर से होत ओनिये बहे। सिवान के खेतन में बोए–जोते जाए वाला, हर–बैल हरवाह लोग ओनिये से निकले; दोसरा गाँव क लोग ओनिये से गंगा–नहान भा परवाहि करे जुटे। राह जरूर खड़ंजा हो गइल रहे, बाकि सकेत होत चल गइल रहे। चउधुरियो लोग, अलगा–बिलगी आ राजभरो लोग। बीस–पचीस गो छोटी छोटी नया घर बन चुकल रहलन सऽ। नाद–चरन, रोड़ी, सीढ़ी कूल्हि से गली छेकात जात रहे। ओघरी हमके बुझइबे ना करे कि गाँव आगा बढ़त बा कि पाछा? बहरवार निकलते, बायीं ओरी हमार एगो खेत परे। आवे जाए वाला गाइ–गोरू से आ बरसात का समय पानी का बहाव से डहर का नाते नोकसानो बहुत होखे। ओही में दखिनवारी ओर दू गो कटहर के फेंड़, बकरी पोसे वालन खातिर खास आ सुविधाजनक रहले सऽ। लेंहा लागे त, हमनी का लाख काँटा छोपलो पर ऊपर का डाढ़ि में आठ–दस गो बाँचे। चाची चल्हाँक रहबे कइली, ऊ हवार–नोकसान होखे का डरे, ओह खेत में हमरन क हिस्सा बदली का ओर छोड़ के ओह बगल एकोरा बटाईदार से जोत–कोड़ लिहली आ नोकसान होखे आ अझुराये वाला हिस्सा हमरन खातिर। एही तरे पुरुब ओर हरिजन–बस्ती आ बगइचा जाये वाला राह पर कबीरहा वाला खेत में कइले रहली। उनकर बटइया जोते वाला मनटोठ रहले सऽ। हमरा घरे त छोट–छोट कइसहूँ काम निकाले वाला हमार भाई छोट छोट लइका। तबो हमहन खेती बढ़ियो से करीं जा। अब हम बी0एच0यू0 क पढ़ाई छोड़के, चार–पाँच दिन खातिर छुट्टी में आईं। हमार ज्यादातर समय पढ़ले–लिखला में बीते। सामूहिकता आ पारस्परिकता के भाव, धीरे–धीरे जइसे गाँव से उड़िसल रहे। ऊ पचड़ियां भा फगुवे का समय में लउके, ना त कबो–कबो कीर्तन आ अखंड रमायन का पाठ में। कुटी के मंदिर आ कुआँ अब मनसायन ना लागे, ना बाग–बगइचा। ई फजीर का बेरा गंगाजी जरूर मनसायन लागसु। छठी के समय त अवरू।

हमके त पढ़ाई के अइसन नशा चढ़ल कि हमार कुल दिनचर्या गड़बड़ा गइल। सबेरे उठे में देर हो जाय। हाली–हाली नहुअन करीं, स्टोव पर चाय बनाईं आ सुरुकला का बाद कपड़ा पहिनीं आ साइकिल पर अनुआइल भागीं, क्लास करे। कबो कबो त पहिलकी घंटी छुटियो जाय। ओघरी हिन्दी विभाग, आर्ट्स कालेज में रहे। पढ़ाई खतम होखे त भूखि लाग जाय। गायकवाड़ ग्रंथालय याने लाइब्रेरी बढ़े बाहर जाईं त रास्ता में सस्ता गल्ला के दोकान लेखा कैन्टीन मिले, ओने रुकि के दू गो इडली आ चाय। लाइब्रेरी से बहरा निकलत–अढ़ाई–तीन बज जाय। भूखी सहियाइल, तेजी से पैडिल मारत अस्सी, अपना कमरा पर लवटीं त हाली–हाली स्टोव जरा के तरकारी छौंकीं आ लकड़ी कोइला वाला चूल्हा जराके चार गो हथपोटिया सेंकीं। दू गो खाईं आ दू गो रात दस बजे खाये खातिर तोप दीं। अपना हाथ जगन्नाथ! सुबहित भोजन या त अतवार के मिले ना त, अपना दोस्त मंडली का जरिये, बिरला हास्टल का मेस में। बिरला ओघरी सबसे बड़का हास्टल रहे।

हमार कोठरी जोड़ी कहाये वाला ओह पुरान

file:///media/om/Rathod/pdffiles/Paati-PDF/paati-com/Paati81-images/Paati81-01.htm 95/109

दुमंजिला घर में, नीचे अंधाकूप लेखा रहे। अँगना का दुनों साइड में दूइए गो कोठरी रहे। सीलन–अन्हार भरल बाकि बरामदा में दिन क अँजोर रहे। अतवार के ओही बरामदा में हम आराम से भात–दाल, रोटी–तरकारी बनाईं आ सामने का कोठरी में रहे वाला लड़कनों के कबो कबो खियाईं। अस्सी घाट से पहिले, सड़क का दुनो बगल अइसन कई गो पुरान कोठी रहली सन, जवन पुरान जमाना के दोसरा जिला भा प्रदेश के संपन्न जमींदार भा सेठ साहुकारन के बनावल रहली सऽ। एह कोठियन में, ओकर देखभाल करे वाला पहिले क सेवक, ब्राह्मण भा कोठी वाला के कृपापात्र, बेकिराया, एक ओर सरनागत लेखा रहें आ कोठी क देखभाल करें। हमरो के अइसने एगो सरनागत पंडीजी बीस रुपया किराया प, नीचे वाला कोठरी देले रहले, ई कहके कि सफाई–चूना वगैरह करा के रहे लायक बना लीहीं आ एक बरिस का बाद किराया देबि, जाहे कि ओकरा ले ढेर सफइये में लाग जाई। कोठी के बाहरी आ ऊपरी हिस्सा, पुरान किरायेदार कब्जियवले रहले सऽ। डाक्टर, वकील, बाबू चार पाँच गो समर्थ परिवार रहे। नीचे रहे लायक त रहबे ना कइल, बाकि पाँच–छव दिन का मेहनत, सफाई आ चूनाकली से दू गो दुआरी वाली ऊ दलान टाइप कोठरी हम रहे लायक बना लेले रहनी। सब कब्जियवलहीं रहे, हमसे केहु किराया माँगे ना आवे। हम साल भरका किराया से बेसी सफइये में खरच देले रहली जवन पंडिज्जी हमके देले रहले ऊहो ई कहसु कि साल में एक बेर मुनीम आवेला, ऊहे माँगी। ऊपरी मंजिल पर रहे वाली एगो वृद्ध औरत हमके ढेर मानसु। उनकर विधुर लइका कहीं आफिस में बाबू रहले। सबेरे जासु त रात भइले पर लवटसु। बूढ़ी के एगो सुन्दर पोती रहे बस। ऊहे हमरा के बिजुली के तार आ लाइन एह शर्त पर देले रहली कि हम उनका छोट पोती के पढ़ा दिहल करब। उनकर बेटा कबो मुँह ना खोलसु, एक–दू महीना पढ़वला का बाद एक हाली हमरा बारे में कुछ पुछले रहले। समय क पावन्दी ना रहे। हमहूँ कबो कबो ऊपर जाइ के आधा–एक घंटा उनका पोती के पढ़ाई में मदद कऽ देईं। तीन या चउथा क्लास क पढ़इये का? पढ़ावत खा, बूढ़ी प्रेम से चाह–नास्ता करावसु। छोड़इबो करसु कि हम केतना परिश्रम से पढ़ रहल बानी। सँचहूँ अभाव आ परिश्रम त जइसे हमरा नसीबे में रहे। सब अछइत, कुच्छू ना। बाप के तनखाह, घरे सम्हरला आ मुकदमा लड़ला में बटि जाय। दू चार महीना प अइबो करसु त खाय–पिये क थोर–बहुत इन्तजाम क देसु। टेक्स्ट के किताब त हमसे किनइबे ना कइल। माँगनी के माँगल, कापी में उतारल, कबीर ग्रंथावली, विद्यापति पदावली जइसन कतने हस्तलिखित पोथी तइयार के लेले रहनी। लाइब्रेरी हमार बहुत काम चलवलस, बाकि ओहपो घुसला क मतलब, कोर्स से बेसी आ पढ़े के चीजु ढेर पढ़े के मिले। डिवीजन बनावे खातिर समग्र आ व्यापक ना, कोर्स से संबंधित लिमिटेशन वाली पढ़ाई चाहीं। हम त भक चहले, कालिदास, गालिब, गोर्की, चेखव, सोल्जेनित्सिन, सार्त्र न जाने का–का पढ़े लागीं। साहित्यिक चस्का रहबे कइल।

अखबार पत्रिकन में ओघरी साहित्यिक लेखन के गुंजाइश रहे। कुछ जगह पारिश्रमिको मिले। हम लिखीं, बाकिर ऊहो अनियमित रहे आज, स्वतंत्र भारत, गाण्डीव, जनवार्ता कलकत्ता के सन्मार्ग कुल ढेर अखबार रहे। हमके हर महीना, सौ–सवा सौ, लेखन से मिल जात रहे। ऊहो खाये–पिये आ दोसर जरूरी कामन में खरच हो जाय। ओघरी साँझ का बेरा कवि–लेखकन क जुटान अस्सी आ भदैनी पर खूब होखे। हमहूँ कबो कबो घूमत चलिये जाईं। धर्मयुग, हिन्दुस्तान, दिनमान जइसन पत्रिका, खरीद के ले आईं। हमार सीनियर आ रिसर्च स्कालर लोगन में एगो वाचस्पति उपाध्याय रहले। हास्टल से अवधेश प्रधान का संगे कबो कबो ऊहो आवसु। त्रिलोचन जी ओह समय, बी०एच०यू० में, हैदराबाद कालोनी में, अपना बड़का लड़िका किहाँ रहत रहले। साँझ के ऊहो पैदले बिरला हास्टल होत, कबो वाचस्पति, कबो अवधेश कबो अउर केहु भाषा प्रेमी का संगे घूमत अस्सी, हमरा डेरा पर आवसु। कुछ साहित्य–चर्चा आ चाय का बाद, हमरो के संगे लेले घाट भ्रमण पर निकल जासु। पैदल घूमे में उनका महारत हासिल रहे। कबो कबो तऽ ऊ एकदम सबेरहीं अकेले चल आवसु। सादा पानी माँग के पियसु आ गंगा–घाट का ओरी निकल जासु। उनका कई गो भाषा के ज्ञान रहे। संस्कृत, अंग्रेजी, बँगला, फारसी के ऊ अच्छा जानकार रहले। लोकभाषा अवधी प उनकर जबर्दस्त पकड़ हमके अलग से प्रभावित करे। ओघरी हम भोजपुरी में कुछ सानेट लिखले रहलीं। बाद में, ऊ जनले त सुने के इच्छा प्रगट कइले आ कहले कि सानेट का छन्दविधान में, हम स्त्री–वर्ग के अच्छा उपयोग करके अर्थगर्भ भावन के व्यक्त कर सकीले। यदा–कदा ऊ हमसे भोजपुरी सानेट पूछ के, सुनावे के कहसु आ मार्गदर्शन करसु। त्रिलोचन जी हिन्दी साहित्य के पुरोधा रहले। सरल, सहज आ अनुशासित। जइसन अनलंकृत व्यक्तित्व, ओइसने रचना। उनसे हमके बहुत कुछ जाने–सीखे के मिलल।

साहित्य आ अखबारी लेखन का वजह से हमार टेक्स्ट के पढ़ाई जरूर बाधित होखे। जवन सेमेस्टर, प्रश्नोत्तर वाली पढ़ाई के प्रचलन रहे, हम ओसे अलग राह पकड़ चुकल रहनी। एगो प्रश्न के उत्तर तइयार करे में, लाइब्रेरी से

लगाइत कई गो नॉवल किताब पढ़ीं आ ओंकर नोट्स बनाईं। हमरा विभाग में ओघरी डॉ० विजयपाल सिंह अध्यक्ष रहलें। डॉ० भोला शंकर व्यास, डॉ० शिवप्रसाद सिंह, डॉ० विजयशंकर मल्ल, डॉ० ज्ञानवती त्रिवेदी, डॉ० बच्चन सिंह, डॉ० त्रिभुवन सिंह आदि प्रोफेसर रहलें। कथाकार काशीनाथ सिंह के 'अपना मोर्चा' ओही घरी पढ़े के मिलल रहे। उनका अलावा डॉ० सूर्यनारायण द्विवेदी, हमरा से विशेष स्नेह राखे वाला गुरु लोग रहे। सँगे पढ़े वाला सहपाठियन में राजमणि शर्मा, महेश्वर, रामजी, नरेन्द्र नीरव कई गो लोग रहे लिखन में, कुमार संभव नाँव से लिखे वाला एगो अउर लड़िका रहे। गोरख पाण्डेय रहलें, ऊ फिलास्फी से एम० ए० करत रहलें कुछिनाथ मिश्र अंग्रेजी से। एम्मे महेश्वरे अइसन इयार रहलें हमरा से लाग–डाँट राखे वाला। उनकर बाबूजी उनके अच्छा पढ़ला भेजलु। आज डॉ० महेश्वर, गोरख पांडे आ कुमार संभव में से केहू जीयत नइखे बाकि ओह समय के मिताई आजो इयाद बा। जइसे त्रिलोचन जी सँगे, शिवप्रसाद सिंह, हजारी प्रसाद द्विवेदी आदि बड़ साहित्यकारन किहाँ बइठे के मोका हमके मिलल रहे। पइलहीं पहिले, डॉ० श्याम तिवारी सँगे डॉ० विद्यानिवास जी आदि विद्वानन आ कवियन किहाँ। मूसिल आदि से बात–बतकही त अवसरे हो जात रहे। त्रिलोचन जी का सँग नागरी प्रचारिणी सभा अइला गइला से, ओघरी के अउर विद्वान, लेखक लोगन से परिचय भइल। एह सब कुछ का बादो हम अपना कमजोर आर्थिक आधार आ संसाधनहीनता से, विचलित हो जाइल करीं। भोजन बनावे में लापरवाही का चलते हम अक्सर चना उनका के खा लीं आ चाइ पी के पढ़े बइठ जाईं, जब हमरा एह हाल के जानकारी महतारी के भइल त बहुत खिसियइली। इम्तहान निगिचाइल आवत रहे। गाँव से चिउरा–चबेना लेके चलनी त सँगे हमरा सबसे छोट बहिन के लगावत नाईं कहली, कि ई रही त कम से कम बेरा पर बनावे–खावे में सहूलियत मिली। हमरा मानही के पड़ल।

छोट बहिन ओघरी तीन या चार में पढ़त रहे। ओकरा अइले हमके सुविधान खाये–पिये के भेंटा जाय। हम कबो कबो ओके पढ़इबो करीं। एक बेर के घटना मन परत बा। ओह समय त्रिलोचन जी हमरा किहाँ पहुँचल रहलें। उनका के खोजत, अवधेश प्रधान एगो पातर–दूबर कवि अविनाश चंद विद्यार्थी के लेके पहुँचल। विद्यार्थी जी ऊ अपना काव्य 'कौशिकायन' पर त्रिलोचन जी से लिखवावे के रहे। विद्यार्थी जी ओघरी नर्मदेश्वर सहाय जी पत्रिका 'अँजोर' में उपसंपादक रहलें। भोजपुरी लेखन में सिद्धहस्त रहलें। त्रिलोचन जी का कहला पर हम आपन कुछ भोजपुरी सानेट उनके दिहलीं। काफी दिन बाद, हमके 'अँजोर' के दू गो अंक मिलल, जवना में पन्ना खोलते पहिलहीं हमके आपन सानेट छपल मिलल। विद्यार्थी जी हमके भुलाइल ना रहलें। अपना महाकाव्य के 'आपन–कथ' में त्रिलोचन, अवधेश का सँगे हमरो जिकिर छन्द में कइले रहलें। 'कौशिकायन' सन 1973 में छपल त हमरो के भेजवले। ओकरा पृष्ठ 152 पर हमरो नाँव रेखरियावल रहे।

कवि त्रिलोचन का सँगे विश्वविद्यालय परिसर से साइकिल डगरावत पैदल चलत बतियावला के अलगे आनन्द रहे। पेड़–पौधन आ अपरिचित फूलन के पहिचाने–जाने के भुरहर ज्ञान हमके ओघरी उनहीं से भइल। भाषा के विवेक उनहीं का संग–साथ में जागल। श्री विष्णुचन्द्र शर्मा ओघरी 'सर्वनाम' पत्रिका निकालसु, त्रिलोचन जी का कहला पर ऊ एगो अंक में हमार सात गो कविता प्रकाशित कइलन। बाद में प्रगतिवादी आलोचना पर गुरुवर शिव प्रसाद सिंह, डॉ० विजयशंकर मल्ल आदि के वक्तव्य प्रस्तुति हमसे शर्मा जी करवलें। 'वीणा' आ 'लहर' जइसन ओह समय के साहित्यिक पत्र–पत्रिकन में हमार रचना छपे लागल रहे। एम०ए० के दूसरा साल आवत हमार पढ़ाई जतने गम्भीर भइल, ओतने अवरोधो आ उठुक लागल। हमरा बियाह खातिर गाँवे तिलकहरू धावे लागल रहले सऽ। गाँवे जइबो करीं तऽ तरह–तरह के पारिवारिक झमेला सँग देखनहरुअन का डरे, बनारस भागि आईं। हीत–नात अलगे तंग करे लागल लोग। एगो हीत, जवना पद में चाचा लागत रहलें, श्री दशरथ तिवारी जी, ऊ बनारस हमरा कोठरी प बियाह खातिर समझावे चलि आवसु। ऊ गाजीपुर जखनिया ब्लाक में बड़ बाबू रहलें। फाइनल परीक्षा का पहिले त ऊ अस तिकियवलें कि हमहूँ आजिज आके हामी भर दिहनी।

एम०ए० आखिरी साल में परीक्षा से पहिले हम, पी–एच०डी० करे के पूरा मन बना चुकल रहनी। परीक्षा खतम होखत–होखत आपन शोध के विषयो तय कर चुकल रहनी। 'नई कविता की रचना–प्रक्रिया' आ 'नए काव्य–प्रतिमानों के संदर्भ में नई समीक्षा'। परीक्षा हो गइला का बाद त्रिलोचन जी के विचार रहे कि हम गुरुवर शिवप्रसाद सिंह का अंडर में रिसर्च करीं। हमार मित्र महेश्वरो उनहीं का अंडर में रजिस्ट्रेशन के इच्छुक रहले। रिजल्ट निकले का समय हम गाँवे आइल रहनी। उहाँ जइसे पहिलहीं से सबकुछ तय होखे, आते कुछ लोगन सँग चाचा दशरथ तिवारी पहुँचलें, बाबूजी आ हमरा महतारी पहिलहीं से तइयार रहे लोग, फेरु दूसरे दिन हमार बरइछा हो गइल। बाबूजी हिदायत दिहलें कि बनारस जाके एके हफ्ता में, फेर गाँवे लवटि आवे के बा, बियाह के तारीख जुलाई में पक्का बा। हमार जान साँसत में रहे। हमरा असमंजस का स्थिति देख के बाबूजी खुद सात–दिन बाद बनारस पहुँचले आ हमरा के लेले–देले

घरे आ गइले। फेरु बियाह के ताबरतोर तइयारी शुरू हो गइल। 13 जुलाई 1972 के हमार बरात सकरौंही निकलल। भाई-दयाद, नाऊ-बाभन आ गाँव के लोग सँग बलिया बस से आके, सब हुमहर के भोजन जलपान कइल। हम बियाह भइला का बाद बनारस गइबो कइली त रिजल्ट देखि मन खटाह गइल रहे। पहिला साल में, ज्ञानवती त्रिवेदी अनकुलइला में, प्राचीन-काव्य का पेपर में नंबर खा गइल रहली, डॉ० बच्चन सिंह 'आधुनिक-काव्य' में ऊहे हाल कइले रहले। तबो 57 परसेंट रहे। विषाद, क्षोभ आ निराशा में, हम शिवप्रसाद सिंह जी या अन्य दुसरा का बजाय विभाग के सबसे निरपेक्ष आ सरल सुभाव के प्रोफेसर विजयशंकर मल्ल का अंडर में रजिस्ट्रेशन करावे के फैसला कइली एहस कि ऊ बहुत दयालु, गुनग्राही, अनुभव संपन्न आ सहाय-भाव वाला गुरु रहले। ऊ साफे कहि दिहले कि 'नए काव्य प्रतिमानों के संदर्भ में नई समीक्षा' विषय पर हमार पूरा ना सहायता करिहें। हालाँकि बाद में ऊ कइलन। इहाँ तक कि ऊ हमार फीस तक अपने जमा कइलन।

हमरा फक्कड़पन आ लापरवाह सुभाव का बावजूद गुरुवर डॉ० मल्ल हमके बहुत मानसु, हमरा खइली-पियला के चिन्ता करसु। हमार पूरा समय लाइब्रेरी में बीते। दु-तीन महीना में अपना शोध संबंधी पूरा मैटर के नोट तइयार भइला का बाद हम फेरु गाँवें आके रहे लगनी। थीसिस के पहिला चैप्टर हम गाँवहीं लिखनी। छोट भाइयन सँग खेतीबारी आ रात के बारह-एक बजे ले जाग के लिखाई-पढ़ाई। हमार गवना अबी ना भइल रहे, त बियाह भइला के कवनो विशेष मानसिक उछाह या दबावो ना रहे। बियाह का पहिले भा बादो में, हम अपना घरनी के अबी देखलहूँ ना रहनी। संगी-सँघतिया एकरा खातिर हमार मजाको उड़ावें सऽ। एगो बलिया के मित्र त, ददरी मेला के समय अपना सँग ले जाये खातिर एतना दबाव बनवलस कि हमरा जाहीं के पड़ल। श्रीमती जी ओ समय गुलाब देवी डिग्री कालेज में बी०ए० करत रहली। स्कूल टाइम में देखे के विचार बनल। बाकि बे चीन्हा-परची के ई काम मुश्किल रहे। आखिर बकायदा आपन परिचय देके, स्कूल का कामन रूम में, टीचर्स का मदद से उनके बोलावे के परल तब हमनी के देखा-देखी आ सामान्य परिचय भइल।

हमार श्रीमती गवना भइला पर गाँवे अइली। हमरा सुभाव से तालमेल बनवली, हमरा ओर के रसम-रेवाज देखली, मरजादा का बान्हन में अझुरल काम कइली, सुख-दुख, ताड़ना आ शासन से मुकाबला करत, महीना बीतते बलिया, एम०ए० क पढ़ाई करे चल गइली। हालाँकि हमरा गँवई-समाज आ घर-परिवार में एह पढ़ाई क कवनो भाव महत्व ना मिलल, इहाँ त इहे मान्यता रहे कि कुलिह का बादो, खाना बनावऽ बरतन माँजऽ, झाड़ू लगावऽ, सास-ससुर के सेवा करऽ आ घर भर के हर सदस्य के खेयाल करऽ एह सबसे समय ओटे त पढ़ऽ भा आपन चिन्ता करऽ। असल में, ओघरी गाँव जवन समाजिक ताना-बाना आ सामंती मनोवृत्ति रहे, ओमें स्त्री के बहुत आन्तरिक संघर्ष करे आ अन्याय सहे के परे। नई नवेली बहू क शुरू-शुरू में चाहे जेतना मान जान होखे, बाकि घूँघ उठाई, मुँह देखाई आ रसोई के हाँडी-डाली छुअवला का बाद, क्रमशः घर के लउँड़ी आ सबकर मन राखे, टहल बजावे वाली बहुअरि के हो जाय। अपवाद ओहू घरी रहे, बाकि ज्यादातर घरन में इहे सोच रहे कि बहू सुघ्घर, सुभेख, सुशील आ सगरी गुन-गिहिथान से भरल रहे आ अपना अस्तित्व के दरकाहि के घर के भीतरी जिमवारी उठावे वाली रहे, सबसे खास बात ई कि ओकरा मुँह में प्रतिकार वाली जबान ना रहे। हम एह सबके बहुत गहिरे महसूस करीं।

गजब जमाना रहे, सकोच रहे कि झुठिया मरजाद के दबाव? कि हमनी सोच के संकीर्णता आ पिछड़ापन रहे। पढ़ली-लिखला के आखिर कवन मतलब? कि बियाह भइला का बाद ले लड़िका लड़िकी के देखादेखी ना, बातचीत त फइलोसा बा। ओघरी बेटी आ बहू में भेद होखे, सास आ ननद, बहू पर शासन करें सऽ आ सहूर सिखावे वाली मास्टरनी बने सऽ, भलहीं ऊ सास-ननद, लिख लोढ़ा, पढ़ पाथर रहें, त का? पढ़ली-लिखल कनियाँ लोग के मानर हेठ करे के सतहत्तर गो उपाइ करें सऽ। हमार घर होखे भा टोल-समाज के – ई ऐब अधिकांश घरन में रहे। हमार मेहरारू त, ओघरी के बात मन-पारि के आजु ले डहकेली।

कुछ अइसन परिस्थिति बदलल कि हमके एक बेर फेरु गाँव छोड़ के, एगो अस्थाई नोकरी करे मिर्जापुर जाये के परल। घर-गाँव क माहौल विपरीत रहे आ अपना खरच-बरच आ रिसर्च वर्क खातिर पइसा जरूरियो रहे। डिस्ट्रिक्ट जज का कचहरी में टेम्परवरी नियुक्ति भइल। उहो एगो दुसरे दुनियाँ रहे। गनीमत रहे कि जज साहब हमरा पर दयालु, जनले कि हम रिसर्च छोड़ के नोकरी में आइल बानी त पोस्टिंग रिकार्ड-रूम में कऽ दिहले आ मुआयना में अइले त समझवले कि या त हम आपन रिसर्च पूरा करीं या अच्छा नोकरी क तइयारी करीं। हम उनकर बात मान के, ओही नोकरी-पीरियड में अगिला चैप्टर लिख लेहनी।

डिस्ट्रिक्ट जज मिर्जापुर का कचहरी में नोकरी करत हमार ध्यान अपना गाँव-घर में लागल रहे। गाँव के एगो-दुगो परिवार अइसनो रहे, जे हमरा छोट-छोट भाइयन से बात-बेबात, अनखुन खोज आ दबावे क प्रयास करे। हमरा इहो, ओघरी गँवई परिवारन के ई सोच रहे

कि अगर सम्मान आ चैन से जिए के बा तऽ घर में एगो दुगो देहगर सपाँग चाहीं। कुछ लोग त दूध–घीउ खियाइ के, घर का एगो लइका के पहलवान–पट्ठा खाली इहे सोच के बनावे कि, बकिया लोगन प दबदबा रही। हमरा मझिला भाई के प्रतिरोधी भावना का कारन, ओकर दुश्मनो हो गइलन। ई सब सोच के कुफुत हो जाव कि खेत में आपन टीवुल के पानी लोग बरियाईं काट लेव। बाबूजी ओघरी मिर्जापुर में रहलन, ऊ गाँवे जाके, मझिला भाई के लिया अइलन आ उहाँ का प्रसिद्ध अखाड़ा में कुश्ती के दाँव सीखे आ देह बनावे खातिर भेजे लगलन। हमहूँ अपना भाई के खान–पान आ दिनचर्या के विशेष ध्यान राखीं। सबेरे ओकरा खातिर, एगो ग्वाला किहाँ से, थान तर के दू लीटर दूध आवे। चना–किसमिस बदाम भेंवल जाव। हम साँझ खा जात कचहरी से लवटीं त एक भरुका मलाई आ रबड़ी लेले आईं। ओकर काम सबेरे–शाम दंड–बैठक, आ अखाड़ा में जाके कुश्ती सीखल रहे। एह सब मेहनत क नतीजा ई भइल कि हमार भाई तीने महीना में देह–दशा से बहुत बदल गइल। बाबूजी ओके गाँवे पहुँचावे वाला रहले, तबले हमरा अस्थाई नोकरियो के मीयाद पूरा हो गइल। आखिरकार हमहूँ भाई का संग गाँवे आ गइनी। बाबूजी पइसा–रुपया क जोगाड़ कान्ह के एगो भइँस कीन ले अइलन आ गाँवही मझिला संग, छोटका के देखभाल के जिम्मेवारी हमरा प आ गइल। जवना परिवार का लड़िका से हमरा छोट भाई क तीन महीना पहिले झगड़ा भइल रहे, ऊ लड़िका ओसे उमिर में बड़ आ देहगर रहे, ऊहे छउँकि के ओके खेत में मारहूँ गइल रहे, बाकिर फुर्तीला आ बुधिगर भइला का नाते हमार भइयवे उल्टे ओकरे के पीटि दिहलस। फेर त लउर लाठी लेले ओकर पूरा परिवार आ भाई–सँघाती सभे। एगो छोट लड़िका (हमरा भाई) के मारे चल आइल रहे। हालाँकि ऊ बेचारा अपना बचाव में, अइसन कइले रहे। तीन महीना बाद लवटलो पर ऊ भीतरी तनाव कम ना भइल रहे। एहसे हम ज्यादा सजग रहीं। खेत–बधार, रोपनी वगैरह क काम नधाइल रहे, हम भरसक अकेले कहीं मझिला भाई के ना जाए दीं। ओकर कुश्ती आ दंड–बइठक, दुआरही खोनल अखाड़ा में चालू रहे। छोटका भइयवा का अलावे दू तीन गो टोला का चउधुर लोगन क लड़िका ओकरा संग, सबेर–साँझ जोर करे आवें सऽ।

गाँव में ओघरी पँचइयाँ (नागपंचमी) का दिने, कुश्ती आ कबड्डी होखे। नया निकलल गँवई पहलवान अखाड़ा में जोर करें सऽ। हम ओह दिन निगिचे के एगो खेत से साँवाँ आ लेहना काटे चल गइनी आ एही बीचे मझिला पँचइयाँ क कुश्ती देखे चल गइल। साँवाँ पिटला का बाद हम चारा मशीन में भइँस–बैल खातिर हरियर जोन्हरी के लेहना काटे लगनी,तले दुअरिया में हल्ला–गुल्ला भइल कि, कुश्ती का बजाय, लाठी–लउर निकल गइल। बात शान आ बड़प्पन के रहे। ओघरी एगो राय साहब के लड़िका, कुश्ती में निकलल रहे, भरल–पुरल कसरती देह आ बरियार। सुने में आइल कि जब ओकरा ललकरला पर, ओसे लड़े केहू अखाड़ा में ना उतरल त हमार मझिला, संगी–साथियन का उसकवला पर अखाड़ा में उतर गइल। हालाँकि राय साहेब के ऊ पट्ठा उमिर, देह आ जोर में, हमरा मझिला का तोरी रहे, बाकि कुश्ती में जोर का साथे दाँव–पेंच ढेर महत्व राखेला। जब बाइचान्स, हमार भाई ओके पटक दिहलस, त बात बबुआनन के शान का खिलाफ हो गइल। राय साहेब का कहला पर दोहरउवा कुश्ती भइल। फेरू मझिला उनके मिर्जापुरी–दाँव पर पटकि के चित्त क दिहलस। बस एही बात पर बाम्हन के लड़िका बोसिहा हो गइल कि पटकइला का बजाय ऊ काहें पटक दिहलस? लाठी–लउर आ हुल्लड़बाजी का बाद कुछ बड़ बूढ़ समझदार लोग बचाव त क दिहलन बाकि एगो नया तनाव फेरू पैदा हो गइल। हमार जान साँसत में रहे। हमके कुटी का खेत में बोअल नगीनागाइस–धान आ एगो दूसरा खेत में साठी साठयावे के रहे। हम उपाइ ई निकलनी कि अपना भाइयन का संगे खुरपी–हँसुआ, लाठी–लउर लेके जाईं। केहू के अकेले खेत–बधार जाये ना दीं। पढ़ल–लिखल एकदम रुक गइल रहे। अपना नोट्स का आधार पर थीसिस के दूसरा चेप्टर पूरा कइये चुकल रहनी बाकि तिसरा अध्याय शुरू करे के रहे। भीतर कई तरह के उथल–पुथल मचल रहे, ईहो खेयाल आवे कि अपना निर्देशक प्रोफेसर मल्ल जी से लिखल चैप्टर देखाइ लेवे के चाहीं, फेरू ई सोचीं कि मल्ल जी किहाँ गइला पर फेरू बनारस कई दिन रुके के परी। ए बिच्चे, 'आज' में हमार कहानी 'तीन महीने की नौकरी' दू भाग में छपल।

आखिरस ईहे निश्चय कइनी कि, थीसिस के अगिला चेप्टर लिखे से पहिले बनारस चल जाईं आ दूनो चेप्टर गुरुजी के देखाईं लीं। बनारस गइयो कइनी बाकि गुरुवर युनिवर्सिटी खातिर निबन्ध संग्रह तइयार करत रहलें। अपने घरे रोकि लिहले, दू दिन उनहीं किहाँ रहनी, खइनी–पियनी, घूमनी बाकि गुरुजी एकाध पेरा से बेसी ना देख पवले। एक दिन घूमत फिरत अपना हिन्दी डिपार्टमेन्ट गइनी। गुरुजन लोग के आशीष लिहनी, हालचाल भइल। कुछ लोगन के मालूम भइल कि हम डॉ0 विजयशंकर मल्ल का निर्देशन में रजिस्ट्रेशन करवले बानी त हँसबो कइल। एगो आदरणीय तऽ इहाँ तक व्यंग्य क दिहले कि 'मल्ल जी हैं तो बहुत प्रखर विद्वान, पर वे भाषा को लेकर 'जल्दी संतुष्ट नहीं होते, रिकार्ड यही है छः सात साल में ही थीसिस पूरी होती है।' हमके दुश्मन महसूस भइल त कहिये दिहनी, 'हम रिकार्ड तूरे वाला

साबित होइब आ भगवान चहिहें त दू साल में थीसिस जमा क देइब।' हमरा एह बातो के, जइसे उपहास भाव से लिहल गइल। रात के जिद क के, हम गुरुवर के अपना थीसिस के लिखल देखावल चहनी, बाकि ओह बेरा ऊ अनमनाह रहले, बाकि नेहवश कहले कि हम पढ़ के सुनाईं। दू तीन पेज सुनला का बाद ऊ कहले, 'अब आज रहने दो।' दुसरा दिन हम सकुचाते कहनी, गुरुजी, अब हम जाइब, इहाँ ज्यादा दिन रुकल संभव ना होई त ऊ ना नुकुर–करत दुसरा दिन जाए के सलाह दिहले। उनका घरे हमरा सब सदस्यन से प्यार आ सम्मान मिले, उनकर बेटी डा0 इन्दुमती, बहुत सहज आ संवेदनशील रहली। हमसे सीनियर रहलो पर, बहुत आदर–भाव देसु, गुरुआइन अउरी सिधवा आ सरल रहली। एकरा बादो हमके भितरे–भीतर एगो कसक रहे कि हमके गुरु किहाँ, ढेर ना रुके के चाहीं। हम दुसरा दिन सबेरहीं सबके यथोचित प्रणाम निवेदन क के गाँवे लवटनी त सुरियाइले तिसरा चेप्टर लिखिये के मनली। चउथा चेप्टर के तइयारी करत–करत हमके बुझाइल कि लगातार खेती बारी आ घरवा सँभारे में, हमार पढ़ाई–लिखाई में ऊ तेजी नइखे आ पावत, जइसन चाहीं। हम लाख थाकल माँदल रहलो पर अपना शरीर से बरियाई करीं। नींन आ भूख के दबावत आखिर पन्द्रह दिन बाद जीव उचटल त, पत्नी के हालचाल लेवे बलिया जाए के निश्चय क लिहनी।

पत्नी हिन्दी से एम0ए0 करत रहली ओजरी। सतीश चंद महाविद्यालय में हिंदी के बढ़िया स्टाफ रहे। हमरा बलिया गइले, पत्नी के फायदे भइल, उनकर अधिकांश कठिन चेप्टर पढ़ा दिहनी हम। कुछ नोटो तैयार करा दिहनी। करीब हफ्ता भर रुकला में थीसिस का चउथा चेप्टर के भूमिका आ, प्वाइन्ट्स तइयार हो चुकल रहे। हम फेरु गाँवें लवटि अइनी। मन में आपन लिहल संकल्प कि दुइये बरिस में शोध–प्रबंध पूरा कऽ लेइब, बेचैन कइले रहत रहे। असुविधा, आर्थिक परेशानी आ परिस्थिति अइसन रहे कि हम बनारसो जाके ढेर दिन रह ना सकत रहीं। बनारस वाली हमार कोठरी बहुत दिन से सून परल रहे। उहाँ रहला के मतलब रहे, फेर से चूल्हा–चउका के चक्कर आ भरण पोसन के समस्या। हम बहुत पहिलहीं से महतारी–बाप के मदद माँगल बन्द कर चुकल रहनी। थीसिस के चउथा चेप्टर लिखाए शुरू हो चुकल रहे। मने–मन एह निश्चय पर पहुँचनी कि चेप्टर पूरा होते एक बेर अउर बनारस जाइब। अस्सी वाली अपना कोठरी के सफाई करब आ उहाँ हफ्ता–दस दिन रुकि के अपना गाइड गुरुवर मल्ल जी के लिखल चेप्टर देखाइब। सितम्बर में, छिटपुट कामकाज करत, हम पूरा मनोयोग से थीसिस क चउथा चेप्टर लिख लिहनी। अगताह होखे वाला धान नगीनाबाइस आ साठी–भदई के खेत खाली होत रहे। दिन में एक हाली, उरिद–मूँग आ जोन्हरी के एक दू बोझा लेहना–पताई खातिर काट के आवे। फेर दुरा जाय त हम अपना भइयन सँग मिल के मशीन पर कटवा दीं, फेरु अपना पढ़ाई–लिखाई खातिर खाली हो जाईं। रोपल धान आ करइली अब रेंड़ाए शुरू हो गइल रहे। सोना–खाद–यूरिया ओही खेतन में छिटाइल, जवना में थोर–बहुत पानी आ नमी रहे। रेलवे लाइन का ओह पार वाला खेतन में, जवन तनी उसराह रहले सऽ, उन्हनी में गड़ही–गड़हा के बटुराइल पानी उबिछ के पियाइ चुकल रहे। बाबूजी ओही घरी तीन दिन के छुट्टी आइल रहले। उनका हमरा लिखाई–पढ़ाई के काम एसे बेअरथ आ अनुपयोगी लागे काहे कि हम नोकरी ना करत रहनी। ऊ हमरा से लगभग निराश रहले आ नाजिला के फेर में ज्यादा रहसु। कब ऊ हाईस्कूल पास करे आ ओकर नोकरी लागे। जदिया ऊ नोकरी पर लवटे वाला रहले, हमहूँ बनारस जाए खातिर आपन झोरा–बेग लेके तइयार हो गइनी। उनके सँगे चलियो गइनी।

बनारस पहुँचि के हम अस्सी घाट वाला अपना पुरान कोठरी में ढुकनी त सीलन, झोल आ गंदगी से हमार सामना भइल। सीझ से कोठरी में धइल कापी किताब के सुखावत–सइहारत बीतल। नेवार के बीनल चारपाई, बहरा सूखि गइल रहे। झार–पीटि के कोठरी का बहरा बरामदा में बिछवनी आ तर–तरकारी नून–तेल कीने अस्सी तिराहा पर गइनी। उहाँ आराम से चाय–पान करत सर–सामान लेले लवटनी। स्टोव जराइ के काटल–छोपल तरकारी छोंकला का बाद आटा सान के ताबरतोड़ दू गो हथरोटिया सेंकनी आ खाइ–पी के बी0एच0यू0 साइकिल से निकल गइनी। गुरु डा0 मल्ल से लिखल चेप्टर देखावे के रहे आ पहिले के लिखल एगो समीक्षा–पुस्तक 'घनानन्द और उनकी कविता' के छपवावे के अनुरोधो करे के रहे। गुरुजी देखले त बहुत खुश भइले। हाल–चाल जनला का बाद, चार चेप्टर लिखा गइला पर अउरु विस्मित भइले। हमरा किताब खातिर बनारस के 'मनोहर प्रकाशन' से बतियावहूँ के भरोस दिहले। बाद में ऊ किताब ओही प्रकाशन से छपल।

क्रमशः : जारी.....

गीत

सूर्यदेव पाठक ''पराग''

कहाँ गइल गाँवन के
माटी के गंध!

कोइल के मधुर तान,
चिक्का-कबड्डी में
लड़िकन के प्रान,
झिहिर-झिहिर पुरवा
बाँटेले मकरन्द!

एक साथ मिलजुल के
गावल ऊ रामायन,
भेदभाव भूलि रोज
होत रहे मनसायन!
जीत-हार सुख-दुख से
सबकर संबंध!

जगह-जगह तिरसठ ना
छत्तिस के बा नाता
अपने खातिर जीयल
नीक अब बुझल जाता,
काहे हर आदमी
भइल बा स्वच्छन्द?

ताल तलैयन तक के
सीमा अब टूट रहल,
बूँद-बूँद बिखर-बिखर
धारा से छूट रहल,
लहर-लहर उछलति बा
होके निर्बन्ध।

ईंटा के ईंटे से
आपस में बा झगड़ा
फोरत बा दोसरा के
जे जतना बा तगड़ा
शकुनी का हाथे
सउँपा गइल प्रबंध। ••

गजल

रामेश्वर प्रसाद सिन्हा ''पीयूष''

खोरी में फुतुर फाँय सुनाइल बा रात में
केहू का घरे सेन्ह मराइल बा रात में।

दिन में जे कुछो गाँव में, बा हादसा भइल
सँसरी त हरे सभ के तनाइल बा रात में।

टुकड़ा में बँटल लोग त अउरू बा बेसहाय
केवाड़ देके घर में लुकाइल बा रात में।

हमरा ना पता दिन में चलल बा अँजोर के
कइसे अँजोर उनका लखाइल बा रात में।

बाजार में कुछ एह तरे अदिमी गिरल-परल
दिन में त भइल मोल, बिकाइल बा रात में।

'फूटल बा किरिन, भोर भइल गाँव-गाँव में
सपना उ रहे दिन के, तँवाइल बा रात में।

'पीयूष' हवे खेल ई समये के सब हजूर
दिन में जे बरल नाम, बुताइल बा रात में।

••

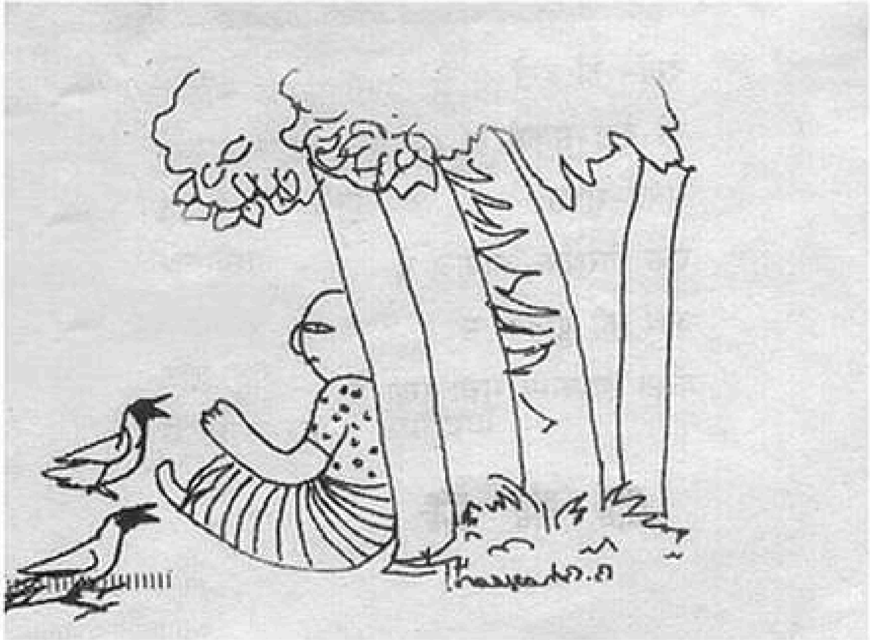

समय के व्यंग्य

बाति के बतंगड़

ओम प्रकाश सिंह

'माया महाठगिनि हम जानी....कबीर त ई बाति कहि के आराम से निकल गइलन. आजु के जमाना रहित त महामाया भा मायावती के चेला चाटी उनुकर खटिया खड़ा कर दिहले रहित लोग। महामाया के माया तनिका पुरान हो गइल से नयका पीढ़ी के लोग उनुका माया का बारे में कम जानत होखी. एहसे सुना देत बानी.

महामाया के माया उनुका कुरता में बसल रहुवे। उनुका बारे में कहात रहे कि सौ गो कुरता के खरचा पर ऊ कवनो चुनाव जीत सकेलें. भाषण देत देत ऊ जोश में आपन कुरता फाड़ देस आ उनुका एह अदा पर लड़िका सयान सभे उनुका माया में आ जात रहुवे. महामाया के पसारल माया ह जे पढ़ाई में बिहार के विद्यार्थियन के पिछड़ा बना दिहलसि. समरथ विद्यार्थी त बिहार का बहरी जाके आपन कैरियर बचा लिहलें बाकिर जेकरा लगे अतना साधन ना भइल कि ऊ बहरी जा सके ऊ बिहार में रुक के बरबाद हो के रहि गइल।

कुछ कुछ अइसने माया अबहियों पसर गइल बा देश का दलितन पर. दलित समाज के एगो वोट बैंक बना के राख दिहल गइल बा. दलितन के सेंचहूँ में आगा बढ़ावे, उपर उठावे के चाव केहू के नइखे। दलित नेता लोग के भरसक कोशिश इहे बा कि दलित दलिते बनल रहो आ ओकरा के वोट डालत रहो, ओकर तिजोरी भरत रहो। कुछ लोग त चन्दा के एगो थैली हमेशा हाथे में लटकवले राखेला कि दलितन के इयाद रहो कि एह थैली के भरत रहे के जिम्मेदारी ओही लोग प बा।

पिछला बेर हम लिखले रहीं कि बाते से आदमी पान खाला आ बाते से लात। आ तुरते एगो नमूनो सामने आ गइल। एगो नेता दोसरका के तुलना बेस्या से क दिहलसि त दोसरका नेता आ ओकर लगुआ भगुआ पहिलका नेता के बेटी बहिन का खिलाफ ओहू ले गलीज भाषा के इस्तेमाल क दिहलसि। ऊ खोजले त एने से भर खँचिया खरकोंच के जवाब दे दीहल गइल। एहबीच खाँचा का भितरे सोचेवाला लोग के लागल कि पहिलका नेता क गोल अब दोसरका के गोल दबा गइल से आ एहसे निकलल मुश्किल बा। बाकिर अइसे में खाँचा से बाहर के सोच राखत एगो अइसन जवाब मिलल कि लोग के ठकुआ मार दिहलसि। दोसरका गोल त एकदमे मकुआ गइल कि ई का दादा, देखते देखत हमनी के जितावत पासा हमनिये के हरा दिहलसि। मामला अब युद्ध विराम का हालत में बा आ पहिलका गोल बाजी जीत लीहल लउकत बा। एकरे के कहल जाला बाति प बतंगड़ भारी।

बाकिर सोचे जाने वाली बाति त इहो होखे के चाहीं कि बेसवा के अतना गलीज काहे मानल जाला? जब सभे केहु कुछ ना कुछ बेचत बा त देह बेचेवाला के अतना गिरल काहे मानल जाला? बेसी लोग आपन मेहनत बेचेला, त कुछ लोग आपन बुद्धि, केहु सपना बेचे में लागल बा त केहु आपन इमाने बेचत बा। ईमान बेचे वालन के त अउरी खराब माने के चाहीं। शायद ई सब कुछ एहसे हो गइल कि बेसवन के खरीददार आपन मुँह लुका के जाले जबकि बाकी धंधन के खरीद बिक्री खुलेआम होखेला। फेर अगर कवनो गोल के मुखिया अगर चुनाव के टिकट बेचत बा त सबले बड़का दाम देबे वाला के काहे ना देव? कहलो जाला कि बेटा के तिलक, जमीन के दाम, आ मकान के भाड़ा अतना मांगी कि अपने लाज लागो। अगर एही तरह टिकटो के दाम केहु लेत बा त का बुराई, काहे बुराई ? टिकटवा खरीदे वाला लोग कवना दूध से धोवाइल बा ? जइसे बेटिहा लोग कवनो लड़िका पर तिलक खातिर जादा उपरी क देला ई जानतो कि एगो दोसरा बेटिहा से बाति तय हो गइल बा ओही तरह टिकटो खरीदे वाला करत बाड़े। त एह लालच में बेचेवाला के मन अगर बेइमान हो जात बा त ओकर दोस का ?

दोसर बाति इहो कि नेतवन के झगड़ा कई बेर पहिले से फिक्स्ड मैच होला. कई बेर दू गो गोल अपना में लड़ि के तिसरका कवनो गोल के पत्ता काटे के काम कर जाले। ले दे के बाति हम कबीर दास के ओही कविता के आखिरी लाइन से करत बानी जवना से शुरु भइल आजु के बतंगड़ –

कहे कबीर सुनो भई साधो यह सब अकथ कहानी.....••

संपर्क :- भोजपुरिका डाट काम

कसौटी/किताब–चर्चा

कठकरेजी काल में मनुजता लहूलुहान : 'खरकत जमीन बजरत आसमान'

भगवती प्रसाद द्विवेदी

['खरकत जमीन, बजरत आसमान' (कविता संग्रह) : डॉ. ब्रजभूषण मिश्र, बनांचल प्रकाशन, तेनुघाट साहित्य परिषद्, सिंचाई कॉलोनी, तेनुघाट–१, बोकारो (झारखण्ड), प्रथम संस्करण: २०१६, पृष्ठ संख्या : १२८, कीमत रु. १५०।]

मौजूदा बाजारवादी दौर में जब जिनिगी के मकसदे बनि गइल बा कवनो अधातम कऽ के अन्हाधुन भौतिक सुख के अन्वार लगावल, तब लहूलुहान मनुजता का ओर देखेके ना त केहू का लगे फुरसत बा, ना जरूरत। अइसन गरदन काट कठकरेजी समय के भयावहता से आगाह करत बाड़न बंधुवर ब्रजभूषण मिश्रजी अपना टटका कविता–संग्रह 'खरकत जमीन, बजरत आसमान' के मार्फत।

ब्रजभूषण जी के रचनाशीलता के कई गो आयाम बा। समालोचना के किताब 'कसौटी पर भोजपुरी कविता' आ काव्य–शास्त्र पर 'भोजपुरी काव्य में अलंकार–रस–छंद' जइसन जरूरी ग्रंथ एकर उदाहरण बाड़न स। बाकिर इहो सोरहो आना साँच बा कि इहाँ के मूलतः कवि हईं आ एकर खुलासा भइल 1982 में, जब विपिन बिहारी चौधरी जी का जयरे मिश्रजी के अठारह गो कविता 'दू रंग' (काव्य संकलन) में प्रकाशित भइलीं स। बतौर गजलगो 1990 में 'असहें कहा गइल' (गजल संग्रह) आ फेरु 'समय के राग' में संकलित गजलन का जरिए इहाँ के अपना दमदार उपस्थिति से अवगत करवनी। एही क्रम में 'हनुमान गाथा', 'महावीर जी सदा सहाय' 2002 में छपिके चरचा में आइल आ अब मुक्तछंद, तितकी, हाइकू–सेनर्‍यू, गीत–नवगीत–जनगीत, दोहा–लुग्गि पाँच खण्डन में बँटल कविता–संग्रह 'खरकत जमीन, बजरत आसमान' खास चरचा के माँग करत बा।

पंजाबी कवि पाश कहले रहलन कि 'बहुत खतरनाक होला सपनन के मुअल'। शायर निदा फाजलियो साहब कहत बाड़न आवे वाला गारद दिनन का बिसे में :

'आस होगी न आसरा होगा,/आने वाले दिनों में क्या होगा!'

अइसहीं, ब्रजभूषण जी आजुकाल्ह के विषम हालात के भयावहता से फिकिरित आ बेचैन बाड़न आउर ओही बेचैन छटपटाहट के नतीजा बा ई संग्रह। जहवाँ गोड़ का नीचे के जमीन खरकल–खिसकल जात होखे आ आसमान से बजरपात होत होखे, उहवाँ हर पल–छिन मनई के जान साँसत ना होई त का होई! कवि के कहनाम बा :

रोज–रोज अँधड़ बा रोजे तूफान
एकरा से लड़त–भिड़त
जिनगी हलकान।
खरकत जमीन बाटे
बजरत आसमान।' (साँसत में जान/94–95)

इहे वोजह बा कि 'बा खड़ा बारुद पर अब गाँव'। फेरु भला केहू कइसे बाँची आ अफदरा में परल जान जब बाँचबे ना करी त केहू रची का! असमंजस आ अलचारी के कलमकस के एगो बानगी :

'आफत में जीव बा घेराइल
कइसे हम खुद के बचाईं
बाटे करेजा के छेदत
कइसे के काँट सहुराईं।'(हाल का सुनाईं/106)

अइसना माहौल में जिनिगी के चालचलन–असर, कवि के कवो शब्दन के शक्ति के एहसास होत बा, त कवो निरास होत कहि उठत बा– 'कहाँ पाँचल बा शब्द/जवन खोल सके अर्थ!' एह से ऊ आवाहन करत बा :

'इयाद के बसिया पानी में डुबा के
शब्द के धार तेज करीं।'(हाल का सुनाईं/106)

इहवाँ कवि 'इयाद के बासी पानी' का बहाना से भुलाइल–बिसरल सांस्कृतिक थाती आ परिपाटी से बेसकीमती मोती चुनि–बीछिके वर्तमान–भविष्य के सनकावे–टनकावे खातिर सार्थक पहलकदमी करत बा। एह में एगो सरंजाम बा 'कउड़ा', जवना के मार्फत भीतर के आगी के जियावे आ सुख–दुख के बाँट–बखरा के जरूरत पर जोर दिहल गइल बा– 'कउड़ा बा त आग बा/आग बा त लहोक बा/लहोक बा त धाह बा, गरमी बा/कउड़ा जरूर लगावऽ/जरूर धनकावऽ/जवना से कायम रही आग/उठत रही लहोक/मिलत रही धाह/आ मन अउर मिजाज बनल रही गरम... कउड़ा पर जुटान होई टोला–पड़ोसा के/जुटान होई त दुखड़ा–धनिया होई/सुख–दुख के बँटवारा होई।'(कउड़ा/70–71) एही तरी, 'भीतर के आग' में टोला–परोस से खपड़ा पर आगी माँगे आ भीतर के आगी के बचावे के उतजोग कइल गइल बा। 'बाबा के खटिया' में कवि जिनिगी के अझुरहट के तुलना बाबा के खटिया के ओरचन से करत बा आ

अतीतजीवी मानुस के जिनिगी के खटिया के बिनावट से। कइसन अबूझ पहेली बिया ई– 'ऊ खटिया में अपना पिछला इयाद के बिनले बाड़न / उनकर खटिया उनकरा जीवनभर के इतिहास–भूगोल बा / जवना के ओर–छोर पता नइखे चलत।' (बाबा के खटिया / 58) संग्रह में 'चिरई आ अदमी' बा, त बदलत गाँव के अपसंस्कृतियो बा। आदमी इहवाँ समय–मछुआरा के जाल में फँसल 'मछरी' बा आ बा 'बिहारी मजदूर' का रूप में 'सड़ाँध मारत बजबजात लाश'। तबे नू चारू ओर अन्हार–अन्हार लउकत बा– 'जिनिगी भइल पहाड़ / आँखिन के लोझा / अन्हार–अन्हार!' बाकिर एह अन्हरियो में अँजोरिया बा ईया नियर अनमोल सांस्कृतिक विरासत– 'हमार ईया / अन्हार में अँजोर / जरत दीया।' दोहन में कवि व्यंग्यपरक ढंग से राजनीति, भ्रष्टाचार, आतंकवाद, समाज आ आजु के मनई पर गहिर चोट कइले बा। गाँवन के लीलत शहरी सुरसा के देखिके कवि आहत सुर में कहत बा–

> उहँवे शहर घुसल मिली, जहँवाँ राउर पाँव।
> गाँवे चलके देख लीं, नइखे बाँचल गाँव।।

तबे नू पीठिका के तहत डॉ. अशोक द्विवेदी के खासतौर से रेघरियावे जोग कहनाम बा– 'ब्रजभूषण मिश्र का कवि चिन्तित और व्यथित है। और, यही संवेदनशील चिन्ता–व्यथा उसकी सृजनात्मक अंतर्निष्ठा को रचना–कर्म के लिए उत्प्रेरित और गतिशील करती है।'

ब्रजभूषण मिश्रजी के कवि के दृष्टिफलक व्यापक बा, जवना में सउँसे समाज के विसंगति–विद्रूपता समाहित हो जात बाड़ी स। ओइसे त पाँचो खण्ड के छंदन में कवि पारंगत बा, तबो मुक्तछंद के समकालीन कविता मूल्यबोध आ प्रभावोत्पादकता का लेहाज से बेजोड़ बाड़ी स। कथ, शिल्प आ संवेदना के हिसाबे बेगर लाग–लपेट के ई सोझे पढ़निहार के दिल–दिमाग में पइसि के उद्वेगो लागत बाड़ी स। इहे उद्वेग, बेचैन छटपटाहट कृति के अनमोल बनावत बा। डॉ. आसिफ रोहतासवी के ई टिप्पणी गौरतलब बा– 'आज भोजपुरी–कविता अपने समय के ज्वलन्त मुद्दों के साथ समाज, परिवार, राजनीति तथा अर्थतंत्र के नग्न यथार्थ को साहस के साथ अभिव्यक्त कर रही है। सुन्दर, लेकिन छद्म आवरणों को सरकाकर आज का भोजपुरी कवि सत्य के वीभत्स, कुरूप, विद्रूप चेहरे को साहसपूर्वक कलमबद्ध करने को संकल्पित है। इस नग्न यथार्थ की साहसिक प्रस्तुति ही वर्तमान भोजपुरी–कविता का सौन्दर्य और कवि का नूतन सौन्दर्य–बोध है।'

एह कसउटी पर 'खरकत जमीन, बजरत आसमान' के कविता काफी हद तक खरा उतरत बाड़ी स। विश्वास बा, निठुर समय के साँच के एह गहिर संवेदना जगावत काव्यात्मक उतजोग के दिल से स्वागत होई। ●●

हास्य-व्यंग्य के सफल कविताई : ''सब ठीक ठाक हौ''

□ डा० सान्त्वना

'सब ठीक ठाक हौ' (व्यंग्य काव्य संकलन)/अजय चतुर्वेदी 'कक्का'। वनांचल प्रकाशन, तेनुघाट, बोकारो। मूल्य-२५०/-

छिछोरा आ सतही हास्य से अलग, शिष्ट हास्य–व्यंग के भोजपुरी काव्य–परंपरा में, चर्चित कवि अजय चतुर्वेदी 'कक्का' क संकलन 'सब ठीक–ठाक हौ' सोनभद्री काशिका 'टोन' वाली भोजपुरी के काव्य–संकलन हऽ। बोलचाल क भाषा में कवि 'कक्का' भाषा, समाज, साहित्य, राजनीति आ एह कुल से बनल व्यवस्था का भीतरी असंगति आ विद्रूप पर त कटु व्यंग्य करते बाड़न, ओह सोच आ मानसिकतो के बार–बार दरसावे क उतजोग करत लउकत बाड़न, जवने कारन हमहन क भोजपुरी–लोक, पिछड़ल बा। आत्मव्यंग्य क 'सेन्स आफ ह्यूमर' एमन साफे लउकत बा। अपने 'लोक' क हाल सुनावत ऊ गाँधीजी के सनेस देत, ओह मानवी अवमूल्यन के सामने रखत बाड़न जवने कारन मानवी–गरिमा गिर रहल बा–

अपने–अपने के सब मालिक आपन बा सब सोचत
जेकरे जेतना दमखम हउवद, लोकतंत्र बा नोचत
लाज–शरम सब छोड दिहे बा, उछड़ करत बा ऐश!
इहाँ सब ठीक ठाक हौ!

देश के आजादी के बाद, लोगन के शिक्षा–दीक्षा, रोजी–रोजिगार, साधन–सुविधा देवे बदे जवन व्यवस्था बनावल गइल, ओम्मे सीधा–सोझबक साधारन जन के ऊ सुविधा कब्बो न भेटल, जवन मिले चाहत रहे। दुसरी

ओर आर्थिक–विपन्नता आ दुख तकलीफ क मारल लोगन क आम–धारना में रौब–रुतबा आ धन कमाए वाला कुछ नोकरी आ काम–धाम क धाक अइसन जमल कि ऊहो अपने बेटवा के उहे बनावे क सपना सँजोवे लागल। दरोगा, तहसीलदार, रजिस्टार ना बने त, कम से कम नेता बन गइला से गरीबी आ कमजोरी दूनों दूर हो जाई। तनखाह भले कम रहे, ऊपरी कमाई से महल–अटारी, गाड़ी घोड़ा का सुख के साथ रोबो–दाब बढ़ जाई। एह बदे ऊ पूजा पाठ, मनौती आ देवता पित्तर के दुअरे मूड़ी पटके के तइयार बा मनकामना इहे बा कि ओकर बेटवा 'करत हवाई सैर साँड़ जस नेता' बन के 'हीक भर खात' या 'थानेदार बनत' त 'सात–पुश्त तर जात' या रजिस्टार बनत त, 'रुपिया ओढ़त अउर बिछावत, रुपियइ खात–नहात!'' (पृ0 21)

सच त ई बा कि सरकार त 'ब्यूरोकेट' चलावेलन–सचिव कलक्टर, आई जी, डी आई जी आ विकास अधिकारी बन के। नेता–मंत्री के मन मोताबिक कुछ फेर बदल होत रहेला। अफसर–कर्मचारी, पुलिस–दरोगा ज्यादातर सरकारी काम संग अपनो फायदा नुकसान देखेले। 'पब्लिक' के काम ओतने होला, जेतना सरकार क मन होला। दरसल अंग्रेजन के समय वाली अफसरशाही, प्रशासन आ पुलिसिया तंत्र के तेजी से भइल विकास में जन सेवकई से 'मलिकई' के बेसी तवज्जो मिलल। भ्रष्टाचार, घूस–रिश्वत आ पक्षपात पनपल। छब्बीस जनवरी आ पन्द्रह अगस्त का औपचारिकता में, सरकारी ऊँट जब जवने करवट चहलस, बइठल–

'सेवक केहू ना, सबै हउवे मालिक।
सब, सबके मुँहें पोतन हौ कालिख।
देश बहरे से कम, भीतर से ज्यादा त्रस्त।
वाह रे पनरह अगस्त!

अजय चतुर्वेदी के संवेदनशील कवि जनता आ ओकरे समाजिक विद्रूप क भीतरी कारकन क सूक्ष्म पड़ताल करत दिखाई देत बा। 'गाँव', गरीब–किसान–मजूर–खेतिहर क सामूहिक उतजोग से जरूर बनल होई, बाकि ओकर हालत बिगाड़े में, दबंगई, असमानता, अराजकता, जातीय विद्वेष आ भेदभाव क बोलबाला बा। विरोध आ असंतुलन का कारन पूरा तंत्र, 'जूतामार तंत्र' में बदल रहल बा–

संसद, ग्रामसभा, पंचाइत सगरौ चलत बा जूता
कवनो जगह बतावा, जूता से होवै जवन अछूता
तोहूँ हाथ में जूता लेके बोलऽ, जूतामार–तंत्र हौ!
का हो कक्का लोकतंत्र हो!

बेहाल जन, तेजी से बदलत माहौल में भकुवाइल सरकारी तंत्र के गोहरावत–गोहरावत थकले के बाद, निराश फरियादी बनल जात बा–

आपै हमें बताई साहेब, हमहन खातिर ठाँव कहाँ हौ
आप कहीला देश हौ पूरा/एहमाँ आपन गाँव
कहाँ हौ?

अजय चतुर्वेदी 'कक्का' के एह काव्य संकलन के पढ़ला से एगो तोष मिलत बा कि उनकर कवि अपने समय–समाज के जथारथ के अपना कवि–कर्म का इमानदारी का साथ, सामने राखत बा। ई किताब पढ़े आ सुने–सुनावे जोग बिया। ●●

मालवीय नगर, नई दिल्ली

गतिविधि

विश्व भोजपुरी सम्मेलन, बलिया इकाई के आठवाँ अधिवेशन आ 'पाती' अक्षर-सम्मान के साझा आयोजन

हीरालाल हीरा

चौदह बरिस पहिले गठित बलिया के विश्व भोजपुरी सम्मेलन इकाई के सांस्कृतिक–साहित्यिक सक्रियता क अन्दाज अतने से लगावल जा सकेला कि एकरा शुरू कइल रचनात्मक आन्दोलन का कारन अब तक इहाँ का कवि–रचनाकारन के 19–20 गो किताब छप गइल बा। अपना मासिक गोष्ठियन का अलावे ई संस्था, 'पाती' मंच से जुड़ के अबले आपन आठ गो अधिवेशन कर चुकल बा।

इहाँ बापू–भवन, बलिया में आयोजित 'पाती' अक्षर–सम्मान समारोह आ अधिवेशन के मुख्य अतिथि डॉ0 अरुणेश नीरन, विशिष्ट अतिथि डॉ0 श्रीमती प्रेमशीला शुक्ल, डॉ0 जयकान्त सिंह 'जय' आदि लोगन सँग दीप प्रज्ज्वलन का बाद 'भोजपुरी भाषा समाज के नवजागरण' विषय पर चर्चा से पहिले 'पाती–अक्षर–सम्मान–2016' भोजपुरी के दू गो यशस्वी कवि–लेखकन के दिहल गइल। भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका 'पाती' के संपादक आ विश्व भोजपुरी सम्मेलन के राष्ट्रीय सचिव डॉ0 अशोक द्विवेदी आ अंतर्राष्ट्रीय महासचिव डॉ0 अरुणेश नीरन का हाथे ई सम्मान ए साल डॉ0 ब्रजभूषण मिश्र आ कन्हैया पाण्डेय के गरिमापूर्ण ढंग से प्रदान कइल गइल। अक्षर–सम्मान में प्रमाण, प्रशस्ति–पत्र, अंगवस्त्र, स्मृतिचिह्न आ इकावन सौ के राशि दिहल जाला।

दीप जरवला, आ सरस्वती जी का चित्र पर माला

जड़फला का बाद मुख्य अतिथि डॉ० अरुणेश नीरन सहित मंचासीन विशिष्ट अतिथियन क्रमशः डॉ० प्रेमशीला शुक्ल, डॉ० जयकान्त सिंह 'जय', डॉ० भगवती प्रसाद द्विवेदी, श्री विजय मिश्र जगदीश उपाध्याय (देवरिया), डॉ० जनार्दन राय, त्रिभुवन प्रसाद सिंह 'प्रीतम' आदि के सम्मेलन के संरक्षक डॉ० अशोक द्विवेदी अंगवस्त्र दिहले आ माला पहिरावल गइल। फेर स्वागत गीत का बाद, पहिल सत्र का कार्यक्रम में चयनित लेखक/कवि लोगन के सम्मान कइल गइल। एही अवसर पर सम्मानित श्री कन्हैया पाण्डेय के हालही प्रकाशित कहानी संग्रह 'जिनिगी के जुआ' के विमोचन मुख्य अतिथि आ विशिष्ट अतिथियन द्वारा भइल।

'भोजपुरी भाषा–साहित्य आ कला के नवजागरण' विषय पर बोलत डॉ० अरुणेश नीरन कहले कि, 'ओइसे त भाषा–साहित्य के जागरण चार–पाँच दशक पहिलहीं से बा बाकि ई समय करोड़न भोजपुरियन के भाषा–साहित्य के नवजागरण के समय बा। आज भोजपुरी क्षेत्र के पढ़ल लिखल समाज खुल के अपना भाषा में सोशल साइटो पर सक्रिय बा। संगीत, कला, साहित्य, फिल्म हर क्षेत्र में अपना भाषा–समाज का साथ, आपन दमदार उपस्थिति दर्ज रहल बा। 'पाती' जइसन कुछ स्तरीय पत्रिकन के योगदान सराहनीय बा। कुछ ई– पत्रिको निकल रहल बाड़ी सऽ।' डॉ० नीरन कहले कि विश्व भोजपुरी सम्मेलन का प्रयास से, शब्दकोश छपल, लोककथा कोश पर काम हो रहल बा। साहित्य अकादमी से भोजपुरी क्षेत्र का कवियन– भिखारी ठाकुर, धरीक्षण मिश्र आ मोती बी०ए० पर अकादमी मोनोग्राफ छपलस। कुछ विश्वविद्यालयन में भोजपुरी टेक्स्ट में शामिल भइल। एह नवजागरण से, संवैधानिक मान्यता मिलला के राह आसान हो गइल बा। ई खेद के विषय बा कि उत्तर प्रदेश में 'भोजपुरी अकादमी' के घोषणा का बावजूद कुछ ना भइल। डॉ० प्रेमशीला शुक्ला भोजपुरी भाषा–समाज के मौलिक प्रकृति आ संस्कृति के चर्चा करत कहली कि ई हमन के जिम्मेदारी बा कि हमहन अपना भाषा–साहित्य आ कला के कवना रूप में परोसल चाहत बानी जा। बहुत कुछ अइसन बा जवन दोसरा पढ़ल–लिखल आभिजात्य आ शहरी समाज में अश्लील मानल जाला मगर्ही हमनी का ओके ओह रूप में ना देखीं, जइसे गारी गीत बा, जोगीरा के दुअर्थी प्रयोग बा, बाकि ऊ अवसर–विशेष के चीज बा। एकर मतलब ई नइखे कि, अपना भाषा के नाँव पर अश्लील, अमर्यादित गीत–संगीत गावल आ फइलावल जाय। डॉ० जयकान्त सिंह 'जय', विश्वविद्यालयन में भोजपुरी साहित्य के महत्व रेखांकित करत कहले कि अध्ययन, अनुसंधान आ पाठ्यक्रम के संदर्भ में भोजपुरी के डेग आगा बढ़ल बा, बाकि जबले ए भाषा के आठवीं अनुसूची में जगह नइखे मिलत, एह सब के ऊ महत्व आ गति ना मिली। भगवती प्रसाद द्विवेदी भोजपुरी साहित्य के सिरजन आ प्रकाशन के चर्चा करत कहले कि 'पाती', 'समकालीन भोजपुरी', 'भोजपुरी माटी', 'सम्मेलन पत्रिका' जइसन कई गो पत्र–पत्रिका, भोजपुरी भाषा साहित्य के सम्मानित स्तर प्रदान कइले बाड़ी सऽ, अब त 'ई–अखबार' आ 'ई पत्रिका' निकल हून से रहल बाड़ी सऽ।

सत्र का समाप्ति का बाद भोजन–जलपान के समय निश्चित रहे। ए बीचे लंच–पाकेट बँटाइल आ आधा घंटा बाद कार्यक्रम के दुसरा सत्र शुरू भइल। पहिला सत्र के अध्यक्षता श्री विजय मिश्र आ संचालन के०के० सिन्हा जी कइलन।

दुसरा सत्र– 'भोजपुरी गायन' के रहे जवना में ओमप्रकाश, शैलेन्द्र मिश्र, पिंकी पाण्डेय, अरविन्द उपाध्याय, कु० अनुमा राय आदि अपना स्तरीय गायन से समाँ बान्ह दिहल लोग, गायन के तबला पर संगत देवे वाला अतुल कुमार राय रहलन। सम्मेलन इकाई का ओर से सब लोगन के अंगवस्त्र आ माला से सम्मानित कइल गइल। विश्व भोजपुरी सम्मेलन बलिया इकाई के हर अधिवेशन में, लेखक, विद्वान आ कवियन का साथ भोजपुरी के गायनो के महत्व आ सम्मान देवे का पाछा मंशा इहे रहेला कि सब, सबका के चीन्हे–जाने आ महत्व देव। प्रायः गायन आ संगीत से जुड़ल लोग अपना, अपना कार्यक्रम तक अपना के सीमित क लेला लोग, एसे साहित्यकार आ कला संगीत साधक का बीचे कम्यूनिकेशन गैप बढ़ेला। एह सत्र के संचालन कौशलेन्द्र कुमार सिन्हा कइलन।

तिसरा सत्र– 'भोजपुरी कवि गोष्ठी' में हर साल लेखा, अन्तर्जनपदीय कवियन के काव्य गोष्ठी भइल। एह कार्यक्रम में डॉ० भगवती प्रसाद द्विवेदी, डॉ० कमलेश राय, श्री दयाशंकर तिवारी, डॉ० अक्षय कुमार पाण्डेय, सौरभ पाण्डेय, मिथिलेश गहमरी, शिवशंकर पाण्डेय, शुभेन्दु बनारसी, शशि प्रेमदेव, कन्हैया पाण्डेय, डॉ० ब्रजभूषण मिश्र, अशोक कुमार तिवारी, शिवजी पाण्डेय 'रसराज', ब्रजेश्वरनाथ शर्मा 'मृदुल', डॉ० शत्रुघ्न पाण्डेय, विजय मिश्र, नवचन्द तिवारी, डॉ० अशोक द्विवेदी आ जनपद के वरिष्ठ कवि त्रिभुवन सिंह 'प्रीतम' आदि काव्य पाठ कइल लोग। कवि गोष्ठी के अध्यक्षता त्रिभुवन सिंह 'प्रीतम' आ विजय मिश्र कइलन आ संचालन डॉ० शत्रुघ्न पाण्डेय। अन्त में इकाई अध्यक्ष श्री विजय मिश्र आगन्तुक कवि, लेखक आ श्रोता लोगन का प्रति आभार प्रगट कइलन। ••

रजि० नं० – आर०एन० 3548/79 (वर्ष 1979) पाती अंक 81-82 सितं० 2016

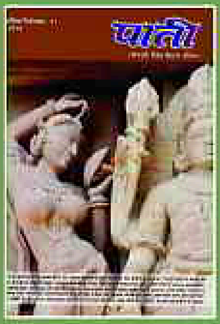

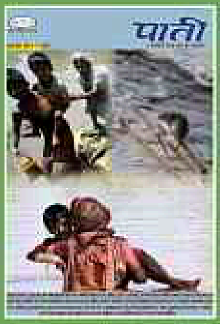

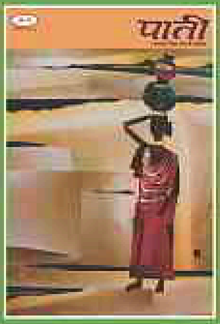

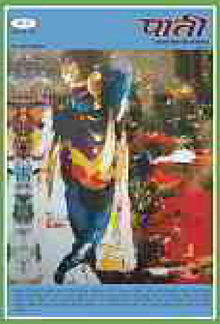

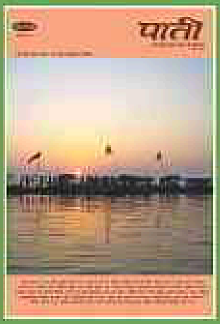

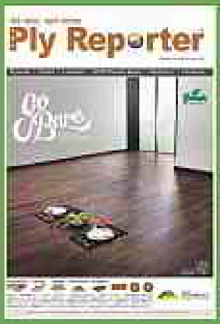

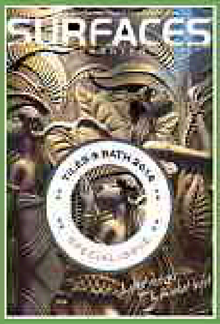

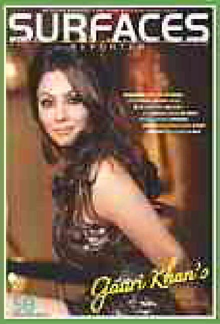

BIG SEA MEDIA PUBLICATION

F-1118, GF, C.R.PARK, NEW DELHI-110019
Ph.: 08373955162, 09310612995
Email: ashok.dvivedipaati@gmail.com, plyreportersubscription@gmail.com

स्वामित्व, प्रकाशक/सम्पादक डॉ० अशोक द्विवेदी, टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया (उ०प्र०)
खातिर माडेस्ट ग्राफिक्स प्रा० लि०, डी०डी० शेड, ओखला इन्ड० एरिया, नई दिल्ली से मुद्रित
आ एफ १११८, आधार तल, चित्तरंजन पार्क, नई दिल्ली-१९ से प्रकाशित।

पिछला <<<<< . . . . (सितम्बर 2016 अंक - 80) . . . . >>>>> अगिला

भोजपुरिका डाटकाम bhojpurika.com का सौजन्य से.